हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

को

पीएच. डी. (हिन्दी) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

कला संकाय

शोधार्थी

कविता मीणा

शोध–निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) कल्पना लाल

व्याख्याता – हिन्दी विभाग

राजकीय महाविद्यालय, कोटा

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

2015

शोध प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कविता मीणा ने हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत **"हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना"** विषय पर कोटा विश्वविद्यालय, कोटा से पीएच. डी. उपाधि हेतु मेरे निर्देशन में पूर्ण अवधि तक शोध कार्य किया है। इन्होंने हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना के स्वरूप का गहराई से अध्ययन, विश्लेषण एवं अनुशीलन करते हुए अपनी मौलिक उद्भावनाएँ प्रस्तुत की हैं।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध सर्वथा मौलिक एवं स्तरीय है। मैं इस शोध–प्रबन्ध को पीएच. डी. की उपाधि हेतु संस्तुत करती हूँ।

शोध निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) कल्पना लाल

व्याख्याता – हिन्दी विभाग

राजकीय महाविद्यालय, कोटा

प्राक्कथन

राष्ट्रीयता वह उदात्त एवं उज्ज्वल मनोभाव है जिससे व्यक्ति स्वनिष्ठ से ऊपर उठकर समष्टि हित से जुड़ता है। एक विशिष्ट भू–भाग, उसमें बसने वाले जन, जन की संस्कृति के प्रति प्रेम, त्याग एवं समर्पण का पावन भाव मानवीय संवेदना को विकसित करता है। वर्तमान भौतिकवादी युग में राष्ट्रीय भावना निरन्तर क्षरित हो रही है। देश–प्रेम व राष्ट्र कल्याण की व्यापक भावना आज जनहृदय में निरन्तर कमज़ोर पड़ने लगी है। कमज़ोर पड़ रही इस राष्ट्रीय भावना को बलवती बनाने का प्रयास करना अतिआवश्यक है। राष्ट्रीय भावना के संरक्षण एवं विकास में हिन्दी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी काव्यकार राष्ट्रीय संदर्भों के प्रति सदैव संवेदनशील एवं प्रतिबद्ध रहा है। राष्ट्रानुरागी रचनाओं ने जनमानस में देश–प्रेम की संवेदनात्मक अनुभूतियों का विकास किया है।

हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों ने भी राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत काव्य सृजन के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करने का महान कार्य किया है। आधुनिक राष्ट्रीयता के सूत्रपात का श्रेय उक्त अंचल के कवि **सूर्यमल्ल मिश्रण** को दिया जाता है। इनके पश्चात् **पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न', सुधीन्द्र, मदनलाल पवाँर, डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय, डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय', डॉ. शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश', द्वारका लाल 'गुप्त', बजरंग लाल "विकल", अम्बिका दत्त चतुर्वेदी** इत्यादि हिन्दी कवियों ने हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा को विकसित किया है। राष्ट्रीय भावों से सम्बद्ध रचनाओं द्वारा उक्त अंचल के हिन्दी कवि देश–प्रेम, उन्नति व विकास की भावनाओं को निरन्तर ताकत प्रदान करते रहे हैं। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में समाविष्ट राष्ट्रीय भावना के स्वरूप से अवगत कराना है। वर्तमान संदर्भ में राष्ट्रीय भावना के संरक्षण व विकास की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए तथा उक्त अंचल के हिन्दी काव्य में निहित राष्ट्रीय भावना से प्रभावित होकर प्रस्तुत शोध विषय को चुना गया है।

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत ऐसे ही महान् कवियों की रचनाओं में चित्रित राष्ट्रीय भावना को दर्शाने का प्रयास किया गया है जिसके माध्यम से जनसमुदाय में निरन्तर क्षय हो रही राष्ट्रीय भावना का उन्नयन एवं विकास हो सकेगा। इस शोधकार्य की उपादेयता इस कारण और भी बढ़ जाती है कि ऐसे अंचल विशेष के कवि जो किसी कारण हिन्दी की राष्ट्रीय काव्य की मुख्यधारा से नहीं जुड़ पाए उन्हें प्रकाश में लाने की दृष्टि से भी यह शोध कार्य सहायक सिद्ध होगा।

प्रस्तुत शोध के **प्रथम अध्याय** के अन्तर्गत पृष्ठभूमि (राष्ट्रीय भावना के अर्थ एवं स्वरूप), हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य का ऐतिहासिक अध्ययन तथा हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना की विकास यात्रा को प्रस्तुत करने का प्रयास रहा है। पराधीनकाल से स्वाधीन काल के उत्थान–पतन का सांगोपांग विवरण उक्त अंचल के हिन्दी काव्य में हुआ है। हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य सम्पदा के वैभव को उक्त अध्याय में दर्शाया गया है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत हाड़ौती अंचल के राष्ट्रीय भावना के प्रमुख हिन्दी रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रस्तुत करने का प्रयास रहा है। कवि के स्वभाव, चिन्तन एवं विचारों का समायोजन उनकी रचनाओं में नज़र आ जाता है। अतः रचनाकार के निजी व्यक्तित्व से रचना में निहित भावों का अनुमान लगाया जा सकता है। इस अध्याय में राष्ट्रीय भावना के प्रतिनिधि रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सही आंकलन करने की कोशिश रही है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में चित्रित स्वतंत्रतापूर्व की राष्ट्रीय भावना के विभिन्न स्वरूपों : अतीत की गौरव गाथा, स्वातंत्र्य भावना, आज़ादी का आह्वान, मातृभूमि के प्रति समर्पण भाव, क्रान्ति का स्वर, शौर्य प्रदर्शन आदि मनोभावों को प्रस्तुत करने का प्रयास रहा है।

चतुर्थ अध्याय में हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में निहित स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्रीय भावना के स्वरूप को प्रस्तुत करने की कोशिश रही है। स्वातंत्र्योल्लास की अनुभूति से लेकर समायानुसार बदलती राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों, समस्याओं एवं उपलब्धियों के साथ राष्ट्रीय एकता व मानवतावाद की भावना के काव्य में समाहित स्वरूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत हाड़ौती अंचल के राष्ट्रीय स्वरूप के हिन्दी काव्य के शिल्प विधान के प्रमुख तत्त्वों : भाषा, सूक्ति प्रयोग, प्रतीक विधान, छन्द विधान एवं अलंकार प्रयोग के स्वरूप को उद्घाटित करने का प्रयास किया है।

छठे अध्याय में प्रस्तुत शोध कार्य के सारांश को उपसंहार के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश रही है।

शोध के अंत में हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों से लिए गए साक्षात्कारों तथा संदर्भ ग्रंथ–सूची को भी संकलित किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य को करने में मेरी शोध निर्देशिका **डॉ. श्रीमती कल्पना लाल** की प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं आत्मिक सहयोग को मैं जीवन भर नहीं भूल सकूँगी। राजकीय महाविद्यालय, कोटा तथा जानकी देवी बजाज राजकीय कन्या महाविद्यालय, कोटा के हिन्दी विभाग के सभी गुरुजनों, सहयोगियों की भी मैं आभारी हूँ जिनके मूल्यवान सुझावों ने मेरा मार्ग प्रशस्त किया। मैं हाड़ौती अंचल के उन हिन्दी रचनाकारों की भी ऋणी हूँ जिन्होंने प्रस्तुत शोध हेतु अपना साहित्य उपलब्ध करवाया साथ ही राष्ट्र के प्रति अपनी मार्मिक संवेदनाओं से भी मुझे अवगत कराया। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध हेतु जिन ग्रंथों एवं पत्र–पत्रिकाओं एवं स्मारिकाओं का सहयोग लिया उन सभी लेखकों व सम्पादकों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। इस शोध प्रबन्ध हेतु मेरे माता–पिता, सास–ससुर की प्रेरणा, प्रोत्साहन, आशीर्वाद तथा जीवनसाथी डॉ. सुरेन्द्र कुमार मीणा से हर कदम पर मिले विशेष सहयोग, छोटे भाई विजय व पुत्र अस्मित के स्नेह को मैं जीवन भर नहीं भूल सकती।

अन्त में उत्तम टङ्कण कार्य के लिए शबनम खान (परम कम्प्यूटर) स्टेशन, कोटा धन्यवाद की पात्र है जिसने मुझे यथा सम्भव सहायता प्रदान की। आभार व्यक्त करने के इसी क्रम में उन सभी का हृदय से आभार जिन्होंने प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहायता प्रदान की है।

शोधार्थी

कविता मीणा

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	**प्रथम अध्याय**	**1–60**
1 : 1	पृष्ठभूमि	
1 : 2	हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य का ऐतिहासिक अध्ययन	
1 : 3	हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना की विकास यात्रा	
2.	**द्वितीय अध्याय : हाड़ौती अंचल में राष्ट्रीय भावना के प्रतिनिधि हिन्दी रचनाकार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व**	**61–117**
2 : 1	पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'	
2 : 2	सुधीन्द्र	
2 : 3	मदनलाल पवाँर	
2 : 4	डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय	
2 : 5	डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'	
2 : 6	डॉ. शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश'	
2 : 7	द्वारकालाल 'गुप्त'	
2 : 8	बजरंगलाल "विकल"	
2 : 9	अम्बिका दत्त चतुर्वेदी	
3.	**तृतीय अध्याय : हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में चित्रित स्वतंत्रता पूर्व की राष्ट्रीय भावना**	**118–167**
3 : 1	अतीत की गौरव गाथा	
3 : 2	स्वातंत्र्य भावना	

क्र.सं.	विषय-वस्तु	पृष्ठ संख्या
3:3	आज़ादी का आह्वान	
3:4	मातृभूमि के प्रति समर्पण भाव	
3:5	क्रान्ति का स्वर	
3:6	शौर्य प्रदर्शन	
4.	**चतुर्थ अध्याय : हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्रीय भावना**	**168-220**
4:1	राजनैतिक परिदृश्य और राष्ट्रीयता	
4:2	सामाजिक परिवेश और राष्ट्रीयता	
4:3	आर्थिक व्यवस्था और राष्ट्रीयता	
4:4	राष्ट्रीय एकता और मानवतावाद	
5.	**पंचम अध्याय : हाड़ौती अंचल के राष्ट्रीय स्वरूप के हिन्दी काव्य का शिल्प-विधान**	**221 - 249**
5:1	भाषा	
5:2	सूक्ति प्रयोग	
5:3	प्रतीक विधान	
5:4	छन्द विधान	
5:5	अलंकार प्रयोग	
6.	**षष्ठम् अध्याय : उपसंहार**	**250 -256**
	साक्षात्कार	**257-268**
	सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची	**269-273**

प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय

1:1 पृष्ठभूमि

साहित्य समाज, संस्कृति और राष्ट्र का संरक्षक होता है। 'स्वान्तः सुखाय' एवं 'सर्वजन हिताय' की समग्रता का समावेश साहित्य में मिलता है। साहित्य में अतीत की संस्कृति, जीवन मूल्य, वर्तमान का यथार्थ एवं भविष्य का चिन्तन समाविष्ट रहता है। साहित्य वह सलिल सरिता है जो व्यक्तिगत अनुभूतियों की भूमि को मानवीय मूल्यों रूपी जल से सिंचित करके शस्य श्यामला बनाती है। सभी भाषाओं का साहित्य मानवीय अनुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। अन्य भाषाओं की भाँति हिन्दी के आराधक कवियों, कथाकारों, चिन्तकों ने भी अपनी संवेदनशील अनुभूतियों, सौन्दर्य–बोध, प्रखर चिन्तन और पारदर्शी दृष्टि के माध्यम से गद्य–पद्य की विविध विधाओं को पल्लवित किया है। हिन्दी साहित्य के इतिहास को समृद्ध बनाने में आंचलिक हिन्दी साहित्यकारों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हाड़ौती अंचल के हिन्दी साहित्यकार भी इससे अछूते नहीं रहे हैं।

दक्षिणी–पूर्वी राजस्थान में प्रकृति की सुरम्य छटा से आच्छादित कोटा, बूंदी, बारां एवं झालावाड़ के सम्मिलित भौगोलिक क्षेत्र का विस्तार लिए यह अंचल हाड़ा राजपूत शासकों की वीरता, शौर्य व पराक्रम, पुरातात्विक सम्पदा, शैली चित्रों की कलात्मकता, इतिहास उद्घाटित करते शिलालेखों, जीवनदायिनी नदियों के साथ–साथ साहित्य की समृद्ध परम्परा के लिए भी विख्यात रहा है। साहित्य साधना में समर्पित उक्त अंचल के साहित्यकारों ने अपने सृजन–कर्म से हिन्दी साहित्य की विभिन्न धाराओं के प्रवाह को गतिशीलता प्रदान की है। हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्यानुरागी कवियों ने भावनाओं से सम्बद्ध एवं वैचारिकता से परिपूर्ण जिस अनुपम काव्य वैभव को स्थापित किया है वह हिन्दी साहित्य–संसार की अमूल्य धरोहर है।

इस अंचल के हिन्दी कवियों ने काव्य सृजन के सागर में आध्यात्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय भावनाओं की सरिताओं को प्रवाहित करने का वह सराहनीय कार्य किया है जिसके लिए हिन्दी साहित्य में सदैव उनका विशिष्ट महत्त्व रहेगा।

राष्ट्रीय भावना का अक्षय भण्डार हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में मिलता है। हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत राष्ट्रीय भाव के दर्शन भले ही आदिकालीन हिन्दी काव्य में हो जाते हैं लेकिन व्यापक राष्ट्रीयता की भाव–भूमि प्रमुखतः हाड़ौती अंचल के महाकवि **सूर्यमल्ल मिश्रण** में दिखाई देती है। मातृभूमि के प्रति समर्पण भावना की सशक्त अभिव्यक्ति सूर्यमल्ल मिश्रण के काव्य में परिलक्षित होती है। इतना ही नहीं देश प्रेम, आत्म–बलिदान, आत्मगौरव एवं राष्ट्रीय एकता का जैसा चित्रण सूर्यमल्ल मिश्रण के काव्य में देखने को मिलता है, वैसा ही कालान्तर में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' सुभद्रा कुमारी चौहान, जयशंकर प्रसाद, मलखान सिंह सिसौदिया इत्यादि हिन्दी कवियों के काव्य में मिलता है। "हाड़ौती की उर्वरा भूमि ने वीर और कवि एक साथ देश को दिये हैं। जहाँ यह भूमि हाड़ाओं की वीर गाथाओं से श्रोताओं को पुलकित करती रही है वहाँ इसके जन्मजात कवि देश की कठिनाईयों और समृद्धि से उसे दिशा दृष्टि देते रहे हैं।"[1] सूर्यमल्ल मिश्रण ही नहीं बल्कि **कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' कवि हरनाथ, महाराज राजेन्द्र सिंह सुधाकर, सुधीन्द्र, शकुन्तला रेणु, हरि वल्लभ 'हरि', मदनलाल पवाँर,** इत्यादि हाड़ौती अंचल की ऐसी महान विभूतियाँ हैं जिन्होंने न केवल राष्ट्रीय आन्दोलन के समय अतीत के गौरव को स्मरण दिलाकर देशभक्ति की भावना का स्वर व्यक्त किया अपितु सुधीन्द्र, दयाकृष्ण 'विजय' जैसे कवियों ने तो राष्ट्रीय आन्दोलन में स्वयं बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। परन्तु खेदजनक स्थिति यह है कि 1857 की गदर क्रांति एवं अगस्त 1942 के स्वतंत्रता आन्दोलन में रक्त–रंजित भूमिका निभाने के पश्चात् भी हाड़ौती अंचल का योगदान भारतीय इतिहास एवं साहित्य में उपेक्षणीय रहा है। "जबकि इस अंचल ने यहाँ के सामन्तों ने, यहाँ के कवियों ने स्वतन्त्रता संग्राम के पुनित अनुष्ठान में अपना सर्वस्व ही होम कर डाला था। हजारों लोगों ने प्राण दिये हैं और उतने ही निरपराध प्राणहरण कर मुंशी जयदयाल और महराब खां के साथ सैकड़ों लोगों को मार कर पेड़ों पर टांग दिया था, उत्पीडन के नाम पर। रामपुरा के पीपल के पेड़ की हर टहनी आज भी उन दिनों को याद कर सिहर उठती है। उसका समकालीन साहित्य में कोई जिक्र

ही नहीं हुआ। उत्पीड़न के शिकार वे सैकड़ों परिवार जो एक सौ पचास वर्ष बाद भी नहीं पनप सके और न ही उन्हें कभी कोई तामपत्र मिला है, न ही स्वतन्त्र भारत सरकार का राज्याश्रय।"[2] स्वतन्त्रता सेनानी ऋषिदत्त मेहता, पं. नयनूराम शर्मा, तनसुखलाल मित्तल, भैरवलाल 'काला बादल' आदि हाड़ौती के ऐसे अनमोल रत्न थे जिन्होंने पराधीनकाल में जागीरदारों के दमन एवं अत्याचारों तथा अंग्रेजी सत्ता के शोषण के विरुद्ध विद्रोह कर राष्ट्र धर्म एवं कर्तव्य का सच्चाई एवं ईमानदारी से निर्वाह किया। स्वतन्त्रता पश्चात् भी हाड़ौती अंचल के समाज सुधारक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं साहित्यधर्मी राष्ट्र प्रेम की इस परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने का प्रयास कर रहे हैं।

हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों ने राष्ट्र की विविधता एवं अखण्डता पर गर्व तो व्यक्त किया ही है साथ ही देश में व्याप्त सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक समस्याओं को चित्रित भी किया है। व्याधियों एवं विद्रूपताओं से घिरे देश के भविष्य की परिकल्पना को काव्य द्वारा प्रस्तुत कर आगामी पीढ़ी को इन कवियों ने राष्ट्र सुरक्षा एवं संरक्षण के प्रति सचेत रहने का आह्वान भी किया है। हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य की राष्ट्रीय भावना की रचनाओं द्वारा हिन्दी साहित्य का विकास तो हुआ ही है साथ ही ये रचनाएँ प्रारम्भ से आज तक देशभक्ति, उन्नति, समृद्धि और राष्ट्र प्रेम आदि की भावनाओं को निरन्तर ताकत भी प्रदान करती रही है। "हाड़ौती अंचल, राष्ट्रीय प्रासाद का वह अविच्छिन्न रूपाकार भू–खण्ड है, जिसकी समस्त उपलब्धियाँ प्रणम्य है, स्मरणीय है एवं संग्रणीय है क्योंकि हाड़ौती अंचल के दर्पण में वह सब कुछ प्रतिम्बित है, जो अतीत में घटा और भविष्य में घटित होगा। इस अंचल की सबसे उत्कृष्ट विलक्षणता यह है कि राष्ट्र के महत्त्वपूर्ण रचनात्मक घटनाक्रम से यह अंचल सदैव कदम से कदम मिलाकर चला है। 'वीरगाथा काल' हो या 'भक्तिकाल' सगुण भक्ति हो या निर्गुण भक्ति, रीतिकाल हो या भारतेन्दु युग हो या आधुनिक काल, हर युग का समाधान हर युग की प्रतिध्वनि, हर युग के चरण चिह्न हाड़ौती अंचल की साहित्य धारा में अवस्थित है।"[3] पराधीन काल से स्वाधीन काल तक के संघर्षों समस्याओं एवं उपलब्धियों का अक्स

इस अंचल के हिन्दी काव्य में अभिव्यक्त हुआ है। धर्म एवं जाति की संकीर्ण मनोवृति को त्यागकर इन कवियों ने मानवता के प्रति अपना रागात्मक जुड़ाव बनाये रखा है। स्वतंत्रतापूर्व परिवेश में **पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न', सुधीन्द्र, मदनलाल पवाँर** जैसे कवियों का आदर्श राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति की भावना ही रहा था। अंग्रेजी शासन के दमन की प्रतिक्रिया व स्वतंत्रता के लिए उनकी गहरी सोच उनके काव्य में दिखलाई देती है। राष्ट्र के लिए प्राण न्यौछावर, अतीत के चरित्र नायकों का गौरव वर्णन, मातृभूमि वन्दना, देश की अभावग्रस्त स्थिति, आज़ादी का आह्वान, राष्ट्र का नव–निर्माण इन कवियों की कविता का मुख्य भाव रहे। राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव इन कवियों की जीवनशैली का अविभाज्य अंग था। स्वतंत्रता के पश्चात् भी राष्ट्रीयता का संस्कार हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों से जुड़ा रहा। स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में हाड़ौती अंचल के कवियों ने नवीन परिस्थितियों के अनुरूप राष्ट्र संबंधी चिन्तन एवं विचारों को काव्याभिव्यक्त किया है। "कवियों ने समसामयिक जीवन की जटिल समस्याओं का विवेचन राष्ट्रीयता और संस्कृति के प्रति यथार्थवादी दृष्टि से किया है। कविता में सामान्य जन की उपस्थिति बढ़ी है। जातीय सांस्कृतिक उभार भी बढ़ा है। नारी के प्रति तथा दलित के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा में दूसरा मोड़ मार्क्सवादी दर्शन तथा समाज में व्याप्त विसंगतियों तथा राजनैतिक–आर्थिक शोषण के विरोध में आया है। यहाँ 'प्रगति' का मूल्य जन संस्कृति से जुडकर और मानवीय हो गया है।"[4] उक्त अंचल में कवि **प्रेमचन्द विजयवर्गीय** ने सामाजिक विसंगतियों को उकेरा हैं तो **दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'** ने सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण पर अधिक जोर दिया है। कवि **शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश'** ने समयानुसार बदलते सामाजिक सरोकारों को प्रस्तुत किया है दूसरी ओर कवि **द्वारका लाल 'गुप्त'** ने वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था के खोखले स्वरूप को प्रकट किया है। स्वदेशानुराग से भरे कवि **बजरंग लाल "विकल"** देश में विद्यमान अन्याय व अत्याचारपूर्ण स्थितियों पर कलम चलाते हुए सर्वजन हित की कामना करता है, वहीं जीवनानुभूतियों के रचनाकार कवि **अम्बिका दत्त चतुर्वेदी** दमित एवं वंचित वर्ग के प्रति संवेदनशील दृष्टि को अपनाकर निर्मम व्यवस्थाओं के बीच

साधारण जन के मन में जीजिविषा के भाव अभिव्यक्त करते हैं। ऐसी ही राष्ट्रीय भावनाओं से सम्बद्ध रचनाओं का सृजन हाड़ौती अंचल के काव्यानुरागी कवियों द्वारा निरन्तर किया जा रहा है। यद्यपि उक्त अंचल में सृजनरत कुछ कवियों की जन्मभूमि भले ही हाड़ौती अंचल नहीं रही हो परन्तु उनकी कर्मभूमि यह अंचल ही रहा है। अतः हाड़ौती अंचल के कवि के रूप में ही इनको जाना–पहचाना गया है।

हिन्दी काव्य ही नहीं इस अंचल के लोक गीतों ने भी राष्ट्रीय जनजागरण के विकास के महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। लोक परम्परा को संरक्षित रखने के साथ–साथ इन गीतों ने समकालीन शोषण एवं दमन के विरुद्ध सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विद्रुपताओं के प्रति जन–जागृति उत्पन्न करने का सराहनीय कार्य भी किया है। "हाड़ौती के इन राष्ट्रीय गीतों में हिन्दी कवियों के गीतों के समान व्यापकता, कलात्मकता एवं भव्यता न हो, पर ये गीत किसी अनुकरण पर नहीं रचे गये हैं, यहाँ की धरती से उपजे हैं। उस पराधीनता के काल में जहाँ नरेशों को असीम अधिकार प्राप्त थे, तत्कालीन सत्ता के विरोध में मुँह खोलना कम साहस का कार्य नहीं था। अज्ञान और अशिक्षा में डूबे हुए हाड़ौती–क्षेत्र में जन–जागरण लाने में इन गीतों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। लोक–भाषा एवं लोक–धुनों से मिलकर स्वतंत्रता प्रेम का संदेश ये गीत जन–जन तक पहुँचा सके हैं।"[5]

साहित्य के साथ हाड़ौती अंचल की साहित्यिक संस्थाओं, संगठनों एवं पत्र–पत्रिकाओं ने भी राष्ट्र के प्रति जागरुकता, उत्साह, प्रेम एवं समर्पण की भावना का संचार करने में सराहनीय भूमिका निभायी है। राष्ट्र भाषा हिन्दी के संरक्षण, नवलेखन साहित्य के प्रसार एवं आंचलिक साहित्य के उत्थान् हेतु संस्थापित साहित्यिक संस्थाओं, संगठनों एवं समितियों–भारतेन्दु समिति कोटा, जनवादी लेखक संघ कोटा, अखिल भारतीय साहित्य परिषद–कोटा, हाड़ौती शोध प्रतिष्ठान–कोटा, सूर्यमल्ल स्मारक समिति–बून्दी, भवानी रंगमंच–झालावाड़, डॉ. सुधीन्द्र काव्य परिषद–रामगंजमण्डी ने युगबोध, युग दर्शन की दीर्घ काव्य–यात्रा को उद्घाटित कर राष्ट्रीयता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को अभिव्यक्त किया है। राष्ट्र भावना की अलख जागने में इस अंचल का पत्रकारिता क्षेत्र भी पीछे नहीं रहा है। "इस क्षेत्र में

इन्द्रदत्त स्वाधीन द्वारा सम्पादित 'आरोग्य मित्र', बाबूलाल इन्दु द्वारा सम्पादित 'निर्भीक' एवं 'धरती के लाल' साप्ताहिक व 'अधिकार' दैनिक पत्र प्रकाशित हुए, जिनकी इस क्षेत्र में पर्याप्त चर्चा रही है। इसी प्रसंग में कतिपय राजनैतिक दलों ने भी अपनी रूचि प्रदर्शित की, फलस्वरूप राजस्थान सोशलिस्ट पार्टी के मुखपत्र के रूप में 'जयहिन्द' साप्ताहिक का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह पत्र सर्वश्री मोतीलाल जैन, श्री हीरालाल जैन, श्री वेदपाल त्यागी, श्री बेनीमाधव, श्री लाड़लीलाल मोहन माथुर, श्री नन्द चतुर्वेदी, श्री महावीर प्रसाद शर्मा के सम्पादकत्व में सन् 46 से सन् 55 तक प्रकाशित हुआ। इसी क्रम में श्री नाथूलाल जैन द्वारा सम्पादित 'दीनबन्धु' श्री विमल कुमार कंजोलिया द्वारा सम्पादित 'युगधर्म', केशवदत्त भूतिया द्वारा सम्पादित 'लोकमित्र', श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी द्वारा सम्पादित 'उत्थान', श्री सदाशिव पाठक द्वारा सम्पादित 'मानवधर्म' श्री हरिकुमार औदीच्य द्वारा सम्पादित 'राष्ट्रशक्ति' एवं श्री दयाकृष्ण विजय द्वारा सम्पादित दीपक का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। ये दोनों पत्र ही जनसंघ पार्टी द्वारा संचालित पत्र रहे हैं। इस क्षेत्र के अन्य प्रकाशित पत्रों में 'स्वदेश', 'आदर्श राजस्थान', 'कामना', 'आरसी', 'देशभक्त', 'खूने शहीद', 'मानव शक्ति' आदि का नाम उल्लेखनीय है।"[6] इन पत्र एवं साहित्यिक पत्रिकाओं ने पराधीन काल से स्वाधीन काल तक अनेक पड़ावों एवं संघर्षों को झेलकर राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता, देश-प्रेम, मातृ-वन्दना, सामाजिक जागरण, सांस्कृतिक समन्वय इत्यादि से सम्बन्धित काव्य के प्रकाशन द्वारा जनमानस में राष्ट्र के प्रति जोश, उत्साह की भावना का विकास कर राष्ट्र के प्रति श्रद्धा भाव प्रस्तुत किया है। यद्यपि उपरोक्त पत्रों में से कईं का प्रकाशन अब बंद हो गया है लेकिन राष्ट्रीय सन्दर्भों से सम्बन्धित साहित्यिक सामग्री के प्रकाशन में इनका योगदान प्रशंसनीय रहा है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राष्ट्रीयता हाड़ौती के साहित्य चिंतन का आधार बिन्दु रहा है राष्ट्र के प्रति एकात्म भाव, आस्था, त्याग, समर्पण इत्यादि मनोभावों से इन आँचलिक कवियों का गहन लगाव रहा है। राष्ट्र के प्रति अपने गहन आत्मीय लगाव के कारण हाड़ौती अंचल के अनेक कवि भारतीय हिन्दी साहित्य जगत् के जाने-माने कवियों में अपना स्थान बना चुके हैं। "महाकवि सूर्यमल्ल को सम्पूर्ण राष्ट्र ने प्रथम राष्ट्रकवि के रूप में स्वीकार किया, तो वैंकटेश्वर समाचार एवं

सर्वहित के सम्पादक लज्जाराम मेहता को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष बनाकर सम्मानित किया गया है। पं. मदनमोहन मालवीय एवं रवीन्द्रनाथ टेगौर के कृपा पात्र गिरिधर शर्मा कविरत्न को उनकी साहित्य सेवाओं के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने 'साहित्य वाचस्पति', 'व्याख्यान भास्कर', 'काव्यालंकार', 'विद्या वाचस्पति' की उपाधियो ंसे अलंकृत किया 'राष्ट्रीय काव्य चेतना' के सन्दर्भ में हम डॉ. सुधीन्द्र को पन्त प्रसाद निराला के साथ प्रतापनारायण पाण्डेय और रामधारीसिंह दिनकर के साथ जुड़ा पाते हैं जिन्हें साहित्य संसार ने अभूतपूर्व सम्मान दिया है।"[7]

वर्तमान भौतिकवादी एवं स्वार्थवादी युग में राष्ट्रीय भावना का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। देश के उत्थान एवं विकास के लिए आवश्यक है कि जनमानस में स्वदेशानुराग, देश–प्रेम एवं आत्मबलिदान की भावना जाग्रत हो, मातृभूति के प्रति समर्पित भाव हो लेकिन विडम्बना यह है कि आज जनहृदय से इन भावनाओं का निरन्तर लोप होता जा रहा है। आज भारतीय जन स्वार्थों एवं जातीयता की संकुचित दीवारों से इतना घिरा हुआ है कि राष्ट्र–प्रेम एवं राष्ट्र कल्याण की विस्तृत एवं व्यापक भावभूमि पर कदम नहीं बढ़ा पा रहा है। इतिहास साक्षी है कि जब–जब जनसमुदाय संकीर्ण विचारों की सीमाओं में जकड़ा है तब हमारे साहित्यकारों ने अपने ओजस्वी लेखन के माध्यम से जनहृदय में राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करने का कार्य किया है। हाड़ौती अंचल के अनेक महान् राष्ट्रवादी कवियों ने जनसमुदाय में राष्ट्रीय भावना का संचार करने का पुनीत कार्य किया है। इनकी कृतियाँ हिन्दी साहित्य की अनमोल निधियाँ तो हैं ही साथ ही जनहृदय की भाव–भूमि में राष्ट्रीयता रूपी पुष्प विकसित करने में उनका असीम योगदान रहा है।

1:2 हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य का ऐतिहासिक अध्ययन

बदलते परिवेश के अनुकूल भावों की अभिव्यंजना हेतु साहित्य के विविध रुपों में से कविता आत्माभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। हृदय की तीव्रतम अनुभूतियों की कोमल एवं मधुर अभिव्यक्ति काव्य द्वारा सहज हो जाती है। कविता ऐसी प्रतिभा है जो कवि की आन्तरिक साधना को समृद्ध करने के साथ–साथ व्यक्ति ,समाज एवं राष्ट्र का मार्गदर्शन कर देश के विकास एवं सृमद्धि में अहम् भूमिका भी निभाती है। परिवर्तित युग के अनुरूप विषय एवं शिल्प दोनो ही दृष्टियों से कविता का स्वरूप बदलता रहा है। खड़ी बोली हिन्दी काव्य की चर्चा करें तो स्पष्ट हो जाता है कि भले ही खड़ी बोली हिन्दी काव्य का प्रारम्भिक स्वरूप आदिकाल में (अमीर खुसरो के काव्य) में दिखाई देता हो परन्तु खड़ी बोली हिन्दी कविता का क्रमबद्ध प्रारम्भ एवं विकास आधुनिक काल में ही दिखाई देता है। प्रारम्भ से अब तक खड़ी बोली हिन्दी काव्य का स्वरूप युगानुरूप परिवर्तित होकर अनेक पड़ावों से गुजर चुका है। पुनर्जागरणकाल–जागरण सुधार काल में राष्ट्रीय एकता , सामाजिक समानता एवं सांस्कृतिक चेतना की आत्माभिव्यक्ति के रूप में जिस खड़ी बोली हिन्दी काव्य रचना का आरम्भ हुआ उसी का धारा–प्रवाह व्यक्तिवादी प्रेम, करुणा, निराशा, वेदना एवं प्रकृति के चैतन्यीकरण के उद्घाटन रूप में छायावादी कविता का जन्म हुआ। तत्पश्चात् मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित समाजव्यापी विद्रुपताओं एवं अभावग्रस्त जन–जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में प्रगतिवादी हिन्दी कविता का स्वरूप सामने आया तो नई कविता के रूप में क्षण के महत्त्व को स्वीकार कर जीवनव्यापी रिक्तता का बिम्ब कविता में उद्घाटित हुआ। इसके पश्चात् समकालीन कविता के अन्तर्गत वर्तमान परिवेश की स्वार्थान्धता, भ्रष्टाचारिता, मूल्यहीनता, तनाव, आक्रोश एवं विद्रोह की भावना का स्वर प्रमुख हो उठा है। खड़ी बोली हिन्दी काव्य की इस दीर्घ यात्रा ने युगानुरुप मार्गदर्शन कर राष्ट्रीय उत्थान में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारतीय हिन्दी काव्य परम्परा के समानुरूप हाड़ौती अंचल में भी खड़ी बोली हिन्दी काव्य की सुदीर्घ परम्परा गतिमान रही है। हाड़ौती अंचल में हिन्दी कविता के प्रारम्भिक दौर में दरबारी कविता के साथ–साथ राष्ट्रीयता एवं सामाजिकता के स्वर

मुखरित करने वाले स्वतंत्र काव्य की भी सर्जना हुई । प्राचीन हिन्दी कवियों में **पण्डित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'**, **कवीन्द्र हरनाथ, कवि महाराज राजेन्द्र सुधाकर, सुन्दर दास भटनागर** इत्यादि प्रतिनिधि कवियों ने ब्रज एवं खड़ी बोली दोनों काव्य भाषाओं में साथ–साथ रचना कर्म का निर्वाह किया। **कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'** ने उमर खैयाम रुबाइयों, रवीन्द्र नाथ ठाकुर की गीतांजलि का हिन्दी पद्य में अनुवाद कार्य तो किया ही **'मातृवंदना'** (1902 में प्रकाशित) जैसी मौलिक रचना के माध्यम से देशभक्ति एवं राष्ट्र प्रेम का ऐसा अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया जिसकी अनुगूँज परवर्ती साहित्यधर्मियों के काव्य रचनाओं में भी सुनाई देती है। "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने इतिहास में द्विवेदी मण्डल के सप्तऋषियों के बीच अर्थात् आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी (सुकवि किंकर), हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त, बदरीनाथ भट्ट, रूपनारायण पाण्डेय और पंडित लोचनप्रसाद पाण्डेय के बीच पं. गिरधर शर्मा को भी ससम्मान याद किया है। पंडित गिरधर शर्मा बहुभाषाविद् तो थे ही वे धर्म, दर्शन नीति, व्याकरण, न्याय और साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उनका अनुवाद कार्य अत्यन्त विशाल है और उनका समाज के उत्थान में स्थायी महत्त्व है। इन्हीं कारणों से काशी की विद्वत मण्डली ने उन्हें 'नवरत्न' की उपाधि से विभूषित किया था।"[8] हिन्दी भाषा के प्रति परम अनुराग रखने वाले कवि 'नवरत्न' ने हिन्दी भाषा को समृद्ध एवं सम्पन्न बनाने में ऐतिहासिक भूमिका का निर्वाह किया था। हिन्दी के इस अनन्य सेवक ने हिन्दी भाषा को राष्ट्रीयता का पर्याय मानकर अपनी कविताओं के माध्यम से हिन्दी के महत्त्व को प्रतिपादित किया। "हिन्दी सेवा के संबंध में पं. सूर्यनारायण व्यास का कथन है कि "यदि द्विवेदी जी, गुप्त जी और नवरत्न जी की त्रिवेणी का संगम न हुआ होता तो हिन्दी कभी उस स्थान पर नहीं पहुंच पाती जिस पर अब पहुँची है।""[9] द्विवेदीयुगीन कवि 'नवरत्न' ने हिन्दी के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा को प्रस्तुत करते हुए कहा था कि :–

"तुम्हारा भी हो यही नारा हमारी है जुबां हिन्दी,
पढ़ो हिन्दी लिखो हिन्दी, करो सब काम हिन्दी में

यही आला सभाओं में तुम्हारी महरबां हिन्दी

जुबां है हिन्दी की हिन्दी पढ़ेगा सब जहाँ हिन्दी,"[10]

हाड़ौती अंचल के ही प्राचीन कवि **महाराज राजेन्द्र सिंह सुधाकर** ने जन-जागरण, स्वदेश प्रेम से संबंधित रचनात्मक कर्म के साथ ईश- भक्ति की निर्मल धारा को भी काव्य में अंकित किया है। **'सुधाकर काव्य कला'**, **'मधुशाला-मधुबाला'** उनकी प्रसिद्ध प्रकाशित रचनाऐं हैं। कवि 'सुधाकर ने स्वयं राज्य शासक होने के बावजूद सामंतवाद का विरोध किया तथा छूत- अछूत, ऊँच-नीच विभेद जैसी तात्कालीन बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया। "राष्ट्रभक्ति की हाला में छका कवि अपनी सुधी बिसर जाता है और उस समय उसे याद रहता है तो पद दलित समाज, गुलाम देश, हरिजनों की तड़पती आझ और करवट बदलते समय के परिवेश में राष्ट्र। राष्ट्र-राष्ट्रीयता का हामी, हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान का पुजारी, युग धर्म की हुँकार करने वाली कलम के धनी कवि सुधाकर कभी मृत राष्ट्र पर अमृत छिड़ककर उससे जाग उठने का आह्वान करते हैं तो कभी हरिजनों के लिए द्वारिकाधीश जी के प्रख्यात मंदिर (पाटन) के किवाड़ खोलकर अपने विचारों के प्रति सुदृढ़ विश्वास का परिचय देने में भी नहीं चूकते। हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य को देखकर कवि का हृदय दो टूक हो रहा था और मस्जिद-मंदिर को एक मानने की प्रेरणा दे हथेली पर शीश लिए देश सेवा की प्रेरणा दे रहा था -

मंदिर और मस्जिद को एक कर मानो सदा
भेद भाव भरे षब्द जीभ पे भी लाओ ना।
चारों वर्ण वालों को जो लौं एक कर पाओ
भारत सपूतों तो लौं चित्त चैन पाओं ना।"[11]

कवि 'नवरत्न' के ही समकालीन कवि **पं. हरनाथ** ने धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत काव्य का सृजन किया। इन्होंने शिवाजी, लक्ष्मीबाई, महाराणा प्रताप जैसे आदर्श वीरों की गुणगाथाओं के माध्यम से जन-जागरण का संदेश देकर देश के प्रति अपना गहन अनुराग व्यक्त किया। झालावाड़ में राजकवि रहे पं. हरनाथ यद्यपि प्रमुखतया ब्रज भाषा के कवि रहे परन्तु कालान्तर में राष्ट्रीय

भावना के विकास की दृष्टि से खड़ी बोली हिन्दी काव्य में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। कवि **सुन्दर दास भटनागर** की रचनाओं का भी खड़ी बोली हिन्दी काव्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। खड़ी बोली में इन्होंने **'सुन्दर रामचरितमानस'** कृति की रचना की। "तत्कालीन समालोचक महा महोपाध्याय पं. गिरधर शर्मा चतुर्वेदी ने इस रामायण की समालोचना में लिखा था–"विशेष कर रामायण के तो कईं एक ऐसे अनुवाद हुए हैं, और हो रहे हैं, किन्तु अधिकांश में ऐसे अनुवाद जिस भाषा में हुए हैं, उन्हें एक प्रकार से उर्दू भाषा ही कह सकते हैं। अरबी, फारसी भाषा के शब्दों की उन में भरमार है, इन से हिन्दी भाषा के रसिक उनसे पूरा आह्लाद प्राप्त नहीं कर सकते। 'सुन्दर रामायण' में यही विशेषता है कि इस की भाषा शुद्ध हिन्दी है, इस में विदेशी शब्द देखने में नहीं आए।""[12] राजस्थान की हिन्दी काव्यधारा को विकसित करने में हाड़ौती अंचल के इन प्राचीन कवियों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

हाड़ौती अंचल के इन प्राचीन साहित्यकारों के काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर ही प्रमुख रहा। इनके उत्तरार्द्ध कवियों के काव्य में राष्ट्रीयता का भाव तो अभिव्यंजित हुआ है ही साथ ही छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद एवं नई कविता के संस्कारों से प्रभावित कविता का स्वरूप भी इनके काव्य में परिलक्षित हैं। वैसे हाड़ौती अंचल के अनेक कवियों ने 'वाद' से मुक्त स्वतंत्र काव्य की सर्जना की हैं। स्वतंत्रता पूर्व भी रचनाकारों की एक पीढ़ी विविध भावों से संपृक्त काव्य रचना द्वारा हाड़ौती के काव्य वैभव को समृद्ध कर रही थी। उक्त अंचल में स्वतंत्रता पूर्व के प्रमुख कवि **ब्रह्मदत्त सुधीन्द्र ने 'शंखनाद', 'जौहर', 'प्रलयवीणा', 'अमृत लेखा', 'प्रेयस' एवं 'सप्तकिरण'** काव्य संग्रहों में परिवेशगत सच्चाई को उजागर करने के साथ ही जीवन दर्शन की परिपक्वता को भी काव्य में स्पष्ट किया है। "गाँधीवादी विचारधारा के कवि तो वे थे ही विनोबा के भूदान यज्ञ में भी उन्होंने अपनी काव्याहुती दी थी। वे किसी 'वाद' से बद्ध नहीं थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उनका आदर्शवाद यथार्थ की और उन्मुख होकर प्रगति–पथ पर अग्रसर हो गया था, परन्तु तथाकथित 'प्रगतिवाद' को वे नहीं अपना सके।"[13] राष्ट्रवादी काव्यकार सुधीन्द्र ने स्वाधीनता संघर्शकाल में स्वाभिमान

एवं स्वाधीनता की रक्षा हेतु काव्य रचनाओं में जिन ओजमय भावों को अभिव्यंजित किया है वह हाड़ौती अंचल में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा में विशिष्ट है। कवि की राष्ट्रीय कविताओं का संकलन 'शंखनाद' ने राष्ट्रीय आदर्शों की ओर ध्यानाकर्षित किया है। स्वाधीनता के संघर्षकाल में देशवासियों से स्वाधीनता हेतु आह्वान करते हुए कवि सुधीन्द्र ने कहा–

"देश–दशा को देख–देख अब हे भारत संतान, जगो!
पतित दलित पीड़ित स्वदेश के अहो अजर वरदान, जगो!"[14]

कवि सुधीन्द्र के समकालीन कवि **मदनलाल पवाँर** ने भी **'क्रांति–किरण'** काव्य कृति के अन्तर्गत समकालीन सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करने के साथ–साथ पराधीनता से उत्पन्न भारतीयों के दुःख एवं कष्ट का भी अंकन किया है। परतन्त्रता के बन्धनों से मुक्त भारत माता के दर्शन की अभिलाषा कवि के हृदय में विद्यमान थी और उसी से प्रेरित होकर कवि पवाँर ने लिखा है–

"आज बन्धन मुक्ति माता हो,
यही अभिलाषा मेरी।
शिव बनूँ पीलू हलाहल,
पक्ष की यही जीत देखूँ।
काल के विकराल मुख को,
चूम लू यदि प्रीत देखूँ।
क्रांति की आराधना में ही
लगे हर श्वास मेरी।
है यही अभिलाष मेरी।"[15]

हाड़ौती की इस काव्य श्रृंखला में सुधीन्द्र के ही समकालीन रचनाकार **कवि हरि वल्लभ 'हरि'** छायावादी चिन्तन से प्रभावित थे। उनकी कृति **'बुदबुद'** में अध्यात्म एवं दार्शनिक चिन्तन की ऐसी निर्मल धारा प्रवाहित हुई है जो आस्था एवं विश्वास का नवीन जगतस्वरूप प्रस्तुत करती है। "'हरि' के काव्य संसार में यह छोटी–छोटी चीजें ही बड़े प्रश्न पैदा करती हैं। उसमें समुद्र, आकाश, वन, हिमालय आदि

कम हैं और पंछी, नीड़, तितली, बूँद, फुहार, दीप, बुद-बुद आदि प्रचुर मात्रा में हैं, और प्रत्येक अपना-अपना प्रश्न लिए हुए है-

बनना मिटना ही क्या जीवन?
बढ़ना ही क्या जीवन का धन?
इन बुद-बुद को देख प्रश्न
ये सहसा मन में आते?
बुद-बुद बन-बन मिट-मिट जाते।"[16]

पराधीन-स्वाधीन युगसंधिकालीन कवियों की शृंखला में ही कवि 'नवरत्न' की सुपुत्री कवयित्री शकुन्तला रेणु ने भी छायावादी, राष्ट्रवादी एवं प्रगतिवादी गीतों के माध्यम से हाड़ौती अंचल की रचनाधर्मिता को विकास पथ पर अग्रसर करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। "जागरण, प्रभाती, अभिनन्दन, मंगलकामना रेणुजी के ऐसे उद्बोधन गीत है जिनमें राष्ट्रीय भावना ओत-प्रोत है। गीतों में स्वतंत्रता-प्रभात के अभिनन्दन के साथ राष्ट्रभूमि एवं भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट प्रतिबद्धता व्यक्त की गयी है।"[17] मीरा एवं महादेवी की भाँति वेदना के स्वरों से कवयित्री रेणु के गीत आप्लावित हैं।

इसी तरह छायावादी संस्कारों में ढली कवि **रामनाथ कमलाकर** की कविताओं में प्रेम एवं सौन्दर्य के आत्मीयतापूर्ण दर्शन होते हैं, इसलिए उनकी कविता पाठक के भावलोक से शीघ्र जुड़ जाती है। "प्रकृति की विराट प्रभुजा, प्रीति का पावन आकर्षण, रहस्य-चिन्तन, वैषम्यपूर्ण जीवन की कुण्ठाएँ और कभी-कभी बीसवीं शताब्दी के कृत्रिम जीवन की ग्लानि, इतना कुछ समेटता है कवि 'कमलाकर'। एक रचना में चाँद के अपरूप सौन्दर्य का यह आत्मीयतापूर्ण वर्णन द्रष्टव्य है-

लो प्रतीची के अधर पर झुका चन्द्रानन
छाँह पलती तम किशोरी का जगा यौवन
सोचता क्या ओंठ पर अँगुली धरे आकाश
चाँदनी में मुस्कुराता चाँद मेरे पास।"[18]

उत्तर-छायावाद का प्रभाव कवि कमलाकर की रचनाओं में नज़र आता है।

हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य परम्परा में छायावादी काव्य का अनुकरणात्मक रूप **डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय** के काव्य में भी दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने वस्तुपरक, आत्मपरक एवं मुक्तक रचनाओं द्वारा नानाविध अनुभूतियों को अभिव्यक्ति दी हैं। "कवि एक ओर 'प्रसाद युग' की अतीन्द्रियता और जीवन से पलायन की भवधारा में कुछ दूर तक बहा है तो दूसरी ओर जीवन संघर्ष को हंस-हंस कर झेलने की तमन्ना उसके हृदय में है-

मैं तो लहरों से खेला हूँ मैं पार उतरना क्या जानूं ?"[19]

'गूँज रही शहनाई', **'युगवीणा'**, **'सुधि भीगा मन'** एवं **'देश का दर्द'** रचनाओं के अन्तर्गत देश प्रेम, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं, जीवन दर्शन एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से सराबोर कविताओं के सृजन द्वारा हाड़ौती की रचनाधर्मिता को विविध संदर्भों से सुसज्जित होने का गौरव प्रदान किया है। इसी परम्परा में झालावाड़ के यशस्वी कवि **गदाधर भट्ट** ने जीवन मूल्यों एवं संस्कृति की उज्ज्वल छवि को काव्य में प्रतिबिम्बित करने के साथ-साथ पर्यावरण,प्रकृति एवं राष्ट्र के प्रति कर्तव्य बोध को भी उल्लेखित किया है। संस्कृत, ब्रज में समृद्ध साहित्य सृजन के पश्चात् हिन्दी रचनाकर्म में भी इनका महत्त्वपूर्ण अवदान रहा है। इसी तरह कवि **अमर सिंह** ने प्रेम एवं करुणा के भावों से संपृक्त काव्य **'निःश्वास'** का सृजन कर एक नये जीवन लोक को उद्घाटित किया है।

छायावादी संस्कारों से इतर नयी कविता की संवेदना एवं सोच से अनुप्राणित कविताओं की रचना भी हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में हुई। कवि **नन्द चतुर्वेदी** हाड़ौती अंचल के ऐसे कवि थे जिन्होंने व्यक्तिगत आकुलता एवं सामाजिक व्याकुलता के समागम से युक्त रचनाधर्मिता के अन्तर्गत शिक्षा, राजनीति जैसी सामयिक आवश्यकताओं के प्रति व्यापक प्रतिबद्धता व्यक्त की। **'यह समय मामूली नहीं'**, **'ईमानदार दुनिया के लिए'**, **'वे सोये तो नहीं होंगे'** काव्य ग्रंथ चतुर्वेदी जी के भावपूर्ण उद्गारों के सजीव एवं मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति प्रस्तुत करते हैं। "इस अंचल में ही नहीं प्रान्त की 'नई कविता' के विकास में उन की महत्त्वपूर्ण देन है। उनकी काव्य-वस्तु सामान्य की विशिष्टताओं से अभिप्रेरित हैं। सामान्य की वापसी, समय की देन है। सामन्तवाद से लोक क्षेत्र में उन के नागरिक मन ने प्रवेश दिया हैं।

'लोकतंत्र' उत्सव है, स्वाधीनता अमृतपन है, राह की चुनौतियाँ, मामूली नहीं हैं, परन्तु नागरिक जो भी जहाँ है, वह जगा है, जागा हुआ है, उस की सजगता उन्हें वांछित है। यह मात्र एक आदर्श नहीं है। यथार्थ के सम्मुख सहज कविता का दृढ़ संकल्प हैं। नई कविता , समय सापेक्ष सजगता को आत्मप्रेरित है।"[20] इसी तरह हाड़ौती साहित्याकाश के सजग सितारे **डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'** ने नानाविध रंगों से सृजित काव्य कर्म द्वारा हाड़ौती अंचल की कविता को नया आयाम प्रदान किया है। "राजस्थान जैसे मरुस्थली प्रदेश में नई कविता–सलिला का निर्मल स्वच्छ प्रवाह आश्चर्य का विषय हो सकता है, लेकिन डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय की निश्छल एवं सशक्त वाणी ने नई कविता के अन्तर्गत 'श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब' एवं 'इन्द्र धनुष का आठवाँ रंग' नामक कृतियों की रचना कर इस काव्यधारा के विकास एवं सृमद्धि में असाधारण योगदान दिया है। जीवन और साहित्य–साधना में सदैव भारतीय मूल्यों के प्रति आस्थावान डॉ. विजय के नये कविता–संग्रह में रूप एवं शिल्प की दृष्टि से इस युग की ऐतिहासिक रचनाऐं हैं। इनमें न तो कहीं 'तार सप्तक' के खेमे का समर्थन है और न प्रशस्ति–पत्र हेतु उसका पिछलग्गूपन, बल्कि रूप और शिल्प तो नई कविता का ही है,किन्तु संवेदना भारतीय है और जीवन के मानवीय मूल्यों से संबंधित है।"[21] डॉ. विजय ने जीवन मूल्य व संस्कृति के वाहक बनकर हाड़ौती अंचल की हिन्दी कविता को गतिशील तो बनाया है ही साथ ही साहित्य कर्म द्वारा परोक्ष एवं राजनीतिज्ञ रूप में प्रत्यक्ष समाज संरक्षण का कार्य भी किया है। इनकी कृतियाँ **'श्रमधरा'**, **'आंतरिका'**, **'मेरे भारत मेरे देश'**, **'आञ्जनेय'**, **'त्रिपादिका'**, **'श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब'**, **'कार्तिकेय'**, **'एक और वामन'** इत्यादि हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य परम्परा की समृद्धि की द्योतक है।

डॉ. विजय की भाँति नयी कविता का प्रभाव कवि **शांतिलाल भारद्वाज** 'राकेश' के काव्य में भी दिखाई देता है। नयी कविता की विशेषता क्षणानुभूति की झलक इनके काव्य में परिलक्षित है। **'समय की धार'** शीर्षक कविता में क्षणानुभूति की इस विशेषता को देखा जा सकता है। यथा :–

"यह समय की धार,
मेरा तोड़ कर संसार,
ले जाती न जाने किस क्षितिज के द्वार–
यह समय की धार।"

मेरा घर–
कि जिसने जन्म दे पाला मुझे।
वह स्वर–
कि जिसने प्यार से मुझको पुकारा था।
नयन की कोर से दिल को दुलारा था।
सभी कुछ छूटता सा लग रहा है–
सपन ज्यों टूटता सा लग रहा है।"[22]

धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं राष्ट्रीयता आदि विविध भावों से सराबोर कवि 'राकेश' के काव्य में नये भाव बोध की अभिव्यक्ति हुई है। इसी तरह **कवि त्रिभुवन चतुर्वेदी, नगेन्द्र कुमार सक्सेना, बशीर अहमद मयूख, ब्रजेश चंचल** आदि कवियों के काव्य में जहाँ कोमल भावानुभूतियों का अंकन हुआ है तो सामयिक विसंगतियों को भी अभिव्यक्त किया गया हैं। राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने वाले कवि बशीर अहमद 'मयूख' ने आध्यात्मिक, दार्शनिक भावों व राष्ट्रवादी विचारों से अपने काव्य को संजोया है। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित इस कवि का हाड़ौती क्षेत्र के प्रति भी आत्मीय लगाव रहा है। अपने कवि होने के उत्तरदायित्व को कवि बशीर अहमद मयूख अच्छी तरह से जानते हैं इसलिए उन्होंने कहा है :–

"शासताओं ! सुनो !!
प्रबुद्ध कलमों ने
बारूद से बगावत करने वाली स्याही भर ली है
रेखाओं की कैद से मुक्त
वर्जित द्वार विलुप्त"[23]

हाड़ौती अंचल के कवि किसी एक विशेष वाद अथवा विचारधारा से बंधकर नहीं रहे हैं यही कारण है कि इनकी रचनाओं में जहाँ छायावाद,प्रगतिवाद नज़र आता है वहीं इनका काव्य नयी कविता से संस्कारित भी नज़र आता है परन्तु राष्ट्रीयता का भाव इनके काव्य में सदैव विद्यमान रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात् के कवियों ने राष्ट्रीयता की भावना को निरन्तर गतिमान बनाये रखा है। हाड़ौती की इस काव्य शृंखला में शृंगार एवं वासन्ती धारा से इतर कवि **गजेन्द्र सिंह सोलंकी** ने साहस, वीरता, शौर्य, त्याग, उत्सर्ग एवं तेजस्विता से परिपूर्ण रचना **'अमर सेनानी ताँत्या टोपे'** के सृजन द्वारा हाड़ौती के हिन्दी काव्य को अनुपम भेंट प्रदान की है। राष्ट्रीय चेतना से पूर्ण उनका काव्य संकलन **'रण-रागिनी'** में राष्ट्रीय चेतना उत्कट रूप में प्रकट हुई है। "सोलंकी जी का लक्ष्य अपनी कविता द्वारा युवकों में राष्ट्रीयता की भावना भरना रहा है। उनके लिए कविता जीवन के लिए है। सोद्देश्य है। जिस कविता से श्रोता या पाठक के हृदय में संस्कृति व देष प्रेम जाग्रत न हो , वह भी कोई कविता है? 'उठो सपूतों', 'शान्तिवादियों','शक्ति जगाओं', 'लो आजादी चिल्लाती है', 'अब तुम सुनो सुनो', 'स्नेह प्राण का मिले तो दीप राष्ट्र का जले', 'राष्ट्र की वेदी को आहुतियाँ चाहिए' आदि रचनाओं में यही अभिप्रेत हुआ है-

मां भारत के सुहाग पर अंगारे बरस रहे हैं।
उठो सपूतो अवसर आया रण से प्यास बुझाओं।"[24]

हाड़ौती अंचल की इस वैविध्यमयी हिन्दी काव्यधारा के अन्तर्गत **कवि रघुराज सिंह हाड़ा** ने लोकतांत्रिक रचनाओं द्वारा स्थानीय रंग-रूप की ऐसी झाँकी सजायी जिसमें गौरवमयी आशा के दर्शन होते हैं। **'बोलते पत्थर'**, **'गौरव राजस्थान'**, **'मौसम और मन'**, **'वृक्ष मित्र'** इत्यादि कवि हाड़ा की शृंगार एवं वीर के चिन्तन से ओत-प्रोत वे रचनाएँ है जिनमें एक ओर राष्ट्रीय आवेग की क्रान्तिकारी वाणी है तो दूसरी तरफ शृंगार का मधुर स्वर विद्यमान है। इसी तरह कवि **बद्री प्रसाद पंचोली** की काव्य रचनाओं में वैदिक सूत्रों का भावानुवाद भी है और राष्ट्र एवं संस्कृति के प्रति चिन्ता के भाव भी समाविष्ट है।

विविध भावों से संपृक्त हाड़ौती अंचल के कवि **द्वारकालाल 'गुप्त'** ने अपनी कृतियों में विशेष रूप मे गीतों में प्रेम में मिलन एवं बिछोह की कोमल भावनाओं के साथ ही जीवन की अनित्यता व भक्ति के सहजानन्द के रंग–बिरंगे पुष्प पल्लवित किये हैं जो अपनी मंगलमयी गंध से पाठक को सहज आकर्षित कर लेते हैं । मानवीय संवेदना एवं सौन्दर्य की प्रेरणादायी मंदाकिनी का सहज प्रवाह भी उनकी काव्य रचनाओं में गतिमान है। 'संकल्प गीत', 'लालकिला बनाम लोकतंत्र', 'जीवन के रंग "सात"', 'पगडंडी', 'राष्ट्र देवो भवः', 'कही–अनकही' कवि 'गुप्त' जी काव्य –कृतियाँ है। 'सड़क का आदमी' शीर्षक कविता में वर्तमान परिवेश का यथार्थ प्रस्तुत करते हुए कवि 'गुप्त' ने लिखा है–

"यह सड़क
काली
चिकनी
कोलतोर से पुती
सजी–संवरी
नई नवेली दुल्हन की तरह
बल खाती
इठलाती
जाती है राजभवन को
इस सड़क पर
बेजान से
मुंह लटकाए
अपने माथे पर
समस्याओं की गठरी उठाए
कईं चेहरे
प्यासी आत्माओं की तरह
भटकते नज़र आ जाएंगे
आपको
प्रतिदिन ।"[25]

वर्तमान शोषणकारी व्यवस्था के विरुद्ध कवि महेन्द्र नेह की कविता विद्रोह हेतु प्रेरित करती है। कवि **महेन्द्र नेह** की **'सच के ठाठ निराले होंगे'**, **'थिरक उठेगी धरती'** रचनाएँ राष्ट्रीयता से प्रतिबद्ध रचनाऐं हैं। वर्तमान दौर का सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन इनकी कविताओं में अभिव्यक्त है। कवि की कविता 'अहिंसक मुल्क में' देश में मुल्यहीनता से उत्पन्न विसंगतियों की छवि को स्पष्ट देखा जा सकता है। कवि ने लिखा है–

"अहिंसक मुल्क में
बहती है अनवरत्
खून की धार
कभी कारखाना बंद होने पर
कभी फसल की तबाही पर
कभी दहेज न जुटा पाने पर
कभी परीक्षा में हुई हार पर
कभी लीक से हटकर चलने पर
कभी जालिमों के आगे सर न झुकाने पर"[26]

भावों के स्तर पर स्वतंत्र काव्य रचना करने वाले कवि **बजरंगलाल 'विकल'** के काव्य में भी राजनैतिक, सांस्कृतिक सोच के साथ–साथ दार्शनिकता का चिन्तन समाविष्ट है। उनके 'शंखनाद' काव्य संग्रह मे जहाँ सम–सामयिक विसंगतियों के प्रति कवि की संवेदनशील मार्मिक भावनाएँ अभिव्यक्त हुई हैं, वहीं **'पयस्विनी'** में दर्शन से जुड़ी कोमल व आनन्ददायी कविताऐं संगृहित हैं। स्वतंत्र भारत में 'आजादी' कितना सार्थक शब्द है ? इस पर व्यंग्य करते हुए कवि **'आजादी (एक प्रश्न चिन्ह)'** शीर्षक कविता में लिखा है–

"आजादी तो तब है कि भारती हो भाषा,
आजादी तो तब है कि अन्न उपजाये हम।
आजादी तो तब है कि मिले रोजी–रोटी,
यह कैसी आजादी है कि माँग कर खाये हम?

कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये किन्तु अभी,

भारत माता की नग्न देह तक ढकी नहीं ।

यह पूछ रहा है खून शहीदों का तुमसे ,

जनता पर लाठी गोली अब तक रूकी नहीं।।"[27]

हाड़ौती अंचल में जीवनानुभूतियों के रचनाकार **अम्बिका दत्त चतुर्वेदी** ने भी अपनी समकाल विसंगतियों को भी बखूबी जाना–पहचाना है। सामान्य जन की विवषता, मजबूरियों ने इस कवि को बहुत प्रभावित किया है। अभावग्रस्त एवं वंचित वर्ग के पक्षधर कवि अम्बिका दत्त ने ग्रामीण प्रकृति व संस्कृति को भी निकटता से देखा है। धरती–पुत्रों (किसानों) में जीजिविषा का संचार कर परोक्ष रूप से राष्ट्रीयता का स्वर व्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है–

"गगन में चमकी तो है बिजली

बादल भी गरज रहें हैं, आएगी बरसात यहां भी?

हवा अगर बरसाती आई है/दूर कहीं बरसा है पानी......

हवा ख़बर ये लाई है।"[28]

समय की गति के साथ–साथ हाड़ौती अंचल में नये कवियों की एक लम्बी श्रृंखला हिन्दी कविता सृजन परम्परा से जुड़ रही है। इन नये कवियों ने नये भाव बोध एवं नवीन उपमानों से कविता को सजाकर हाड़ौती की काव्य सृजन परम्परा को नवीन विषयों एवं नये शिल्प के साथ उन्नति के विकास पथ पर निरन्तर आगे बढ़ाने का सराहनीय कार्य किया है। "श्री कुमार शिव, नरेन्द्र चतुर्वेदी, प्रेम जी प्रेम, बी.एल. अरविन्द, दुर्गादान सिंह, राधामोहन चतुर्वेदी, रामकरण स्नेही, श्रीनन्दन चतुर्वेदी, महावीर जैन, अखिलेश अंजुम, ओम कुमावत, शिवराज श्रीवास्तव, रविन्द्र सिंह सोलंकी, राजेन्द्र जैन, नाथूलाल निडर, गिरधारी लाल, अतुल कनक, इन्द्र सक्सेना, मुकुट मणिराज, अरविन्द सोरल, प्रेम मधुकर, निर्मल पाण्डेय, नागेन्द्र कुमावत, अकील शादाब, बालाराम त्रिवेदी, विश्वामित्र दाधीच, रामकुमार भारद्वाज, लक्ष्मीशंकर दाधीच, मदन मदिर आदि। इस पीढ़ी के कवियों में भोर की ताजगी है तो ज्योति किरणों से अन्धकार को आच्छादित करने की क्षमता भी है।"[29] जीवन

मूल्यों के प्रति आस्था, राष्ट्रीयता, जन–जागरण, भूख, बेबसी, ग़रीबी इत्यादि से संबंधित अनेक मनःस्थितियाँ इन कवियों के काव्य में अभिव्यंजित है। विविध विषयों एवं भावों पर काव्य लेखन इन कवियों द्वारा किये गये लेकिन फिर भी इनके काव्य में राष्ट्रीय भाव ही प्रमुख बना रहा है। समस्याओं से ग्रस्त स्वतंत्र भारत की परिवेशगत सच्चाई कवि **प्रेम 'मधुकर' ने 'घुटन भरी चल रही हवायें'** शीर्षक कविता के अन्तर्गत समाहित है। कवि मधुकर ने लिखा हैः–

"घुटन भरी चल रही हवायें
भरा हुआ शमशान है।
सोया सारा देश पड़ा है
डगर डगर सुनसान है।
हुआ सवेरा किन्तु अभी तक सूरज कहाँ पड़ा दिखलाई ।
ऊषा का चेहरा काला है गिरवी रखी हुई अरुणाई ।
किरण किरण में कालापन है,
चेतना नहीं विहान है ।
सोया सारा देश पड़ा है,
डगर डगर सुनसान है ।"[30]

इन नये कवियों की कविता की अन्तर्वस्तु उनके अपने परिवेश से जुड़ी हैं। परिवेशगत स्थितियों से जुड़े अपने अनुभव, विचार एवं आस–पास के लोगों के जीवन से जुड़े अनेक संदर्भों का सामंजस्य इनकी कविताओं में समायोजित है। व्यष्टि मन के साथ समष्टि मन का चित्रण इनके काव्य में हुआ है। लोक–मंगल के प्रति समर्पित भाव रखने वाले हाड़ौती अंचल के आधुनिक **कवि वीरेन्द्र विद्यार्थी** के **'हवन और हुंकार'** काव्य संग्रह में कवि दिनकर की ओजमयी वाणी सदृश्य देशाभिमान की हुंकार विद्यमान है। कृति की समीक्षा करते हुए डॉ. शान्ति भारद्वाज 'राकेश' ने लिखा है कि– "जीवन की विसंगतियों, दोगली ज़िन्दगी जीते इंसानी शैतानों और मानवीयता के अभिमन्यु की चक्रव्यूह में घेरकर हत्या करने वालों पर वह करारे और मार्मिक व्यंग्य भी करता हैं। राष्ट्रीय–चेतना के सन्दर्भ में वह भारत माँ, राष्ट्र,

संस्कृति, देश के निजत्व और पर–हित के भाव को अभिव्यक्त करता है। प्रताप, जीजाबाई, अनेक शहीदों और राष्ट्र–निर्माता महापुरुषों के सकारात्मक योगदान को जन–हित में प्रचारित करता है। कईं प्रसंगों में वह रचनाकार की सीमाओं का विस्तार करके क्रान्ति–वीरों के अभियान को अपना खुला समर्थन देता है।"[31] **'डिग्री के ताबीज़'** शीर्षक कविता में देश की दुरवस्था के लिए जिम्मेदार विसंगतिपूर्ण कारकों का विद्रोह करते हुए कवि ने लिखा है–

"ये क्रांति–वीर फिर से विप्लव के राग सुनाने आए हैं,
ज़हरीली जिसकी डाल डाल, वह बाग़ जलाने आए हैं–
जिसने रौंदा अरमानों को,
नीलाम किया बलिदानों को,
इनके आँसू को बेच–बेच
जिसने भर लिया ख़जानों को,"[32]

आज हाडौ़ती अंचल में नई–नई प्रतिभाऐं काव्य क्षेत्र में तीव्रता से उन्नति कर रही है। **कवि जितेन्द्र 'निर्मोही, बृजमोहन माथुर, वीना 'जैन', धन्नालाल सुमन, धर्मेन्द्र सोनी, वीरेन्द्र विद्यार्थी, एकता शबनम, हेमन्त गुप्ता 'पंकज', कुंवर जावेद, महेन्द्र नेह, मिठोलिया 'साथी', मुकुट मणिराज, मुरलीधर गौड़, नरेश निर्भिक, ओम नागर, पुरुषोत्तम 'यकीन', शिवराज श्रीवास्तव, सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा', योगेन्द्र मणि कौशिक, राकेश नैयर, गोकुलेश भट्ट, हरिशंकर चतुर्वेदी, राजेन्द्र तिवारी, लक्ष्मी शंकर दाधीच, शंभुदत्त विभाकर** इत्यादि कवियों ने राष्ट्र, जन एवं संस्कृति से जुड़ी प्रत्येक समस्या एवं उपलब्धियों का सार इनकी रचनाओं में समाहित है। स्व बोध से लेकर युगबोध तक की यात्रा इनके काव्य में समायोजित है। हाड़ौती के काव्य को समृद्ध करने में इन प्रतिभाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा है। हाड़ौती अंचल की यह नयी पीढ़ी भारतीय हिन्दी काव्य क्षेत्र को समृद्ध करने में सराहनीय भूमिका निभा रही है। राष्ट्रीयता, प्रकृति, प्रेम, दर्शन व अध्यात्म जैसे विविध भावों से संपृक्त हाड़ौती अचल का काव्य समय के साथ चरण मिलाकर चला है। हाड़ौती का काव्य जगत् आज निरन्तर उन्नतिशील है और इसके उज्ज्वल भविष्य की हम कामना करते हैं।

1:3 हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना की विकास यात्रा

'राष्ट्रीयता' एक पावन एवं निर्मल भाव है। 'स्व' से ऊपर उठकर किसी भू–भाग, उसमें बसने वाले जन, संस्कृति, धर्म, भाषा आदि के प्रति प्रेम, गर्व और समर्पण भावना को राष्ट्रीयता कहते हैं। राष्ट्रीयता सर्वथा आधुनिक धारणा नहीं है, राष्ट्रीयता का स्वरूप उतना ही प्राचीन है जितना राष्ट्र का निर्माण। अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में भी मातृभूमि की वन्दना का उल्लेख मिलता है। आधुनिक राष्ट्रीयता के स्वरूप को प्राचीन रूप से भिन्न अवश्य कहा जा सकता है। प्राचीन राष्ट्रीयता में जातीयता एवं एकांगिकता है जबकि आधुनिक राष्ट्रीयता विश्वजनीनता की ओर उन्मुख है। आधुनिक युग में राष्ट्रीयता का स्वरूप वृहत् एवं व्यापक हो गया है। किसी भी देश की प्रगति, उन्नति एवं विकास तभी संभव है जब जनमानस में राष्ट्रीयता का भाव मौजूद हो। स्वार्थों एवं संकुचित सीमाओं का उत्सर्ग करके जब जनसमुदाय पारस्परिक सहयोग और उन्नति की आकांक्षा से कार्य करता है तभी उस देश का उत्थान होता है। प्राचीन काल से ही व्यापक जनसमुदाय में राष्ट्रीय भावना, देश–प्रेम, राष्ट्राभिमान, देशानुराग को जागृत करने में साहित्य ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य में उल्लेखित महापुरुषों की महिमा, कार्य एवं रचना कृतियों को पढ़कर अथवा सुनकर जनता में राष्ट्र के प्रति गौरव और प्रेम की भावना का विकास सहज ही हो जाता है। हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', मलखान सिंह सिसोदिया इत्यादि ऐसे ही साहित्य रत्न थे जिनके राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत काव्य ने देश में राष्ट्र प्रेम की हिलोर पैदा की। इसी क्रम में हाड़ौती अंचल के अनेक कवियों की राष्ट्रानुरागी रचनाओं ने जनमानस के हृदय को देशप्रेम से उद्वेलित किया हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय भावना के ओजस्वी–तेजस्वी स्वर गूँजते हैं। इस अंचल के काव्य में आज़ादी का आह्वान, विद्रोह का स्वर, स्वराष्ट्रानुराग की भावना, जागरण का संदेश, अतीत की गौरव गाथा और मातृभूमि के प्रति समर्पण परिलक्षित होता है।

हाड़ौती अंचल की इस राष्ट्रप्रेमानुरागी हिन्दी काव्य परम्परा का हिन्दी काव्य जगत् में महत्त्वपूर्ण स्थान है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का हाड़ौती अंचल पर व्यापक प्रभाव पड़ा। दिल्ली और मेरठ में देशभक्त क्रांतिकारियों द्वारा किये गये हमले का असर हाड़ौती अंचल की देशी रियासतों पर भी पड़ा। कोटा में ब्रिटिश एजेन्ट मेजर बर्टन एवं उनके पुत्रों की बागियों द्वारा हत्या तथा अंग्रेज भक्त महारावों एवं जागीरदारों के विरुद्ध विद्रोह का 1857 के स्वाधीनता संग्राम में गौरवपूर्ण स्थान है। "कोटा के लाला हरदयाल और मेहराब खाँ के बलिदान को चम्बल का पानी कभी नहीं भूल सकता। उन दोनों आज़ादी के दीवानों को अंग्रेजी सरकार ने कोटा–महाराव पर दबाव डालकर नयापुरा में उस स्थान पर फाँसी लगवाई जहाँ आज नवरंग–होटल के सामने अदालत के चौराहे पर शहीद–स्मारक बना हुआ है। कालान्तर में इसी हाड़ौती के स्वाधीनता आन्दोलन का प्रारम्भिक मार्ग दर्शन किया क्रान्ति–पुत्र श्री विजय सिंह पथिक ने।"[33] तात्कालीन परिस्थितियों के परिणामस्वरूप हाड़ौती हिन्दी काव्य परम्परा में एक नया भाव बोध राष्ट्रीय चेतना के रूप में उभर कर सामने आया। प्रारम्भ में स्वतंत्रता प्रेम का यह स्वर भले ही गुप्त रूप में दिखाई दे रहा था लेकिन बूंदी की पावन एवं निर्मल भूमि पर पैदा हुए **महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण** ने राष्ट्रीयता का ऐसा बीज मंत्र प्रस्तुत किया जो कालान्तर में जन–जन का कण्ठहार बन गया। राजपूत राजाओं की विलासिता एवं स्वार्थवादिता से क्षोभित होकर मिश्रण ने एक ऐसे अद्‌भुत ग्रंथ 'वीर सतसई' की रचना की जिसमें मातृभूमि के रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग की भावना, स्वतंत्रता संग्राम के प्रति आवेश एवं उत्साह तथा स्वदेश हित की भावना अभिव्यक्त हुई। "गाँव–गाँव में उनकी "वीर सतसई" के दोहे जिस तरह से अनुभूति के स्तर पर चेतना को जाग्रत करते रहे वह कविता के लिए महत्वपूर्ण देन थी। भारतीय साहित्य में भक्तिकाल में जो स्थान गोस्वामी तुलसीदास को दिया जा सकता है, वही समानार्थी स्थान राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि के रूप में महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण को दिया जा सकता है। उनके द्वारा प्रयुक्त किया गया शब्द 'इला' महत्त्वपूर्ण है। जहाँ वे कहते हैं कि माता अपने पालने में झूला झुलाते हुए नन्हें बालक से कहती है कि

भले ही प्राण चले जाऐं लेकिन "इला" नहीं देनी है।"[34] देशहित के प्रति वीरत्व का जो आदर्श सूर्यमल्ल मिश्रण ने प्रस्तुत किया वह हिन्दी काव्य जगत् में शायद ही अन्य कवि कर पाया हो। राजपूत वीर शक्ति को संगठित करने के लिए मिश्रण ने जिस वीरत्व एवं ओज को प्रस्तुत किया उसे भले ही कुछ आलोचकों ने जातीय एकांगिकता का नाम दे दिया हो लेकिन व्यापक दृष्टि से अवलोकन करने के पश्चात् तो यही प्रतीत होता है कि मिश्रण का काव्य प्राणों में स्फूर्ति एवं देश–प्रेम की चिनगारी पैदा कर देता है। शौर्य, पराक्रम, साहस एवं उत्साह से युक्त जिस वीरांगना नारी का चित्रण मिश्रण ने प्रस्तुत किया है वह अन्यत्र दुलर्भ है। **'वीर सतसई'** की वीरागंना पत्नी युद्ध भूमि में पति के प्राणों की रक्षा की कामना नहीं करती अपितु मातृभूमि के रक्षार्थ पति के प्राणोत्सर्ग देखने को आतुर रहती है। उदाहरणार्थ :–

"बिण मरियां बिण जीतियां धणी आवियां धाम।
पग पग चूडी पाछंटू, जे रावत री जाम।।"[35]

यद्यपि मिश्रण की काव्य भाषा खड़ी बोली हिन्दी के स्थान पर डिंगल है तथापि राष्ट्रीय चेतना के काव्य उद्‌बोधन में सर्वोच्च स्थान मिश्रण का ही रहा है। हाड़ौती अंचल ही नहीं सम्पूर्ण हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा में अगर सूर्यमल्ल की चर्चा न की जाये तो राष्ट्रीय काव्यधारा का सम्पूर्ण अध्ययन अधूरा प्रतीत होता है।

सूर्यमल्ल मिश्रण की भाँति **पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'** हाड़ौती अंचल के राष्ट्रीय चेतना के उत्कृष्ट एंव अग्रणी हिन्दी कवि थे। उन्होंने अंग्रेजी शासन के अत्याचार से पीड़ित भारतीय जनता की बेबसी एवं पीड़ा का चित्रण कर भारतीय जनमानस में राष्ट्रीयता का स्वर प्रस्फुटित किया साथ ही **'सौरभ'** पत्रिका के सम्पादन के माध्यम से खड़ी बोली हिन्दी के उत्थान एवं प्रसार में योगदान देकर राष्ट्रीय कर्त्तव्य का निर्वाह भी किया। मातृभूमि के प्रति आत्मीय वन्दना, स्वदेश के प्रति अथाह प्रेम, साम्प्रदायिक सद्‌भाव एवं सहिष्णुता 'नवरत्न' के काव्य में स्पष्ट नज़र आती हैं। परतंत्रकालीन भारतीय परिस्थितियों, विसंगतियों तथा वातावरण का प्रभाव 'नवरत्न' के चिंतन पर पड़ा था। तात्कालीन ब्रिटिश शासन की तानाशाह

नीतियों से प्रताड़ित भारतीयों की दुर्दशा एवं स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु भारतीय जन के संघर्ष को इन्होंने अपनी आँखों से देखा था, यही कारण था कि राष्ट्रवाद एवं देशभक्ति की भावना 'नवरत्न' में गहराई तक जमी हुई थी। गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित पं. 'नवरत्न' स्वराज्य के आकांक्षी थे इसलिए स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु तात्कालीन संघर्षरत भारतीय जनमानस में देशभक्ति की भावना का संचार करने के लिए स्वदेश हित भावों से युक्त गीतों एवं काव्य का सृजन कर कवि कर्त्तव्य का निर्वाह किया। भारतभूमि के प्रति अगाध प्रेम एवं समर्पण भाव से युक्त उनकी कविता '**स्वदेश महिमा**' देश प्रेम का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है।

"मेरा देश, देश का मैं, देश मेरा जीव-प्राण
मेरा सम्मान मेरे देश की बड़ाई में
जियूँगा स्वदेश हित, मरुँगा स्वदेश काज
देश के लिए न कभी करूँगा बुराई मैं
भीषण भयंकर प्रसंग में भी भूल के भी
भूलूँगा न देश-हित, राम की दुहाई, मैं
जब लौं रहेगी साँस सर बस लुटा दूँगा,
ईश को भी झुका लूँगा देश की भलाई में"[36]

तात्कालीन संघर्षमय युग में सांस्कृतिक अनुराग से युक्त कविताओं की रचनाधर्मिता के माध्यम से पं. 'नवरत्न' न केवल स्वाधीनता आंदोलन में नये उत्साह एवं चेतना का संचार कर रहे थे अपितु निराश एवं हताश संघर्षरत देशवासियों में देशोत्थान हेतु पारस्परिक प्रेम, समर्पण एवं त्याग की भावना भी पैदा कर रहे थे। "'मेरो सब लगे प्रभौ देश की भलाई में', जैसी पंक्तियों से सम्पन्न '**मातृ वन्दना**' की रचना राष्ट्रीयता एवं स्वदेश-प्रेम की प्रेरणा से हुई। उस समय तक स्वदेश-प्रेम विषयक, प्रकाशित हिन्दी रचनाओं में वह तृतीय थी। इस विषय में गोपालदास कृत 'भारत भजनावली' (1897 ई.) एवं गुरु प्रसाद सिंह द्वारा रचित 'भारत संगीत' (1901ई.), दो पूर्ववर्ती रचनाऐं और प्राप्त हुई हैं। इन की तुलना में उक्त रचना पुष्टतर और सुन्दरतर है। इस में राष्ट्रीयता के शुद्ध भाव का प्रसार हुआ है। जिस

समय अधिकांश कवि मध्यकालीन वातावरण में ही साँस ले रहे थे और काव्यधारा ह्रासोन्मुखी हो रही थी, स्वदेश–भाव का यह जागरण देश–प्रेम का शंखनाद ही माना जाएगा। आप ने अतीत के प्रति निष्क्रिय मोह एवं प्रतिक्रियात्मक आसक्ति तथा राष्ट्रीयता में अन्तर करते हुए जागरण का जो शंखनाद किया, उसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता।"[37] साम्प्रदायिक दुर्भावनाओं से घिरे हुए भारत देश में सहिष्णुता एवं साम्प्रदायिक एकता पर बल देकर पं. 'नवरत्न' ने राष्ट्रीयता के प्रति अपने समर्पण भाव का परिचय दिया। उन्होंने कविता के माध्यम से विभिन्न धर्मों के आपसी वैमनस्य को दूर कर परस्पर प्रेम, आदर, सम्मान एवं देश प्रेम की भावना जागृत कर राष्ट्रीय एकता को संगठित करने का प्रयास किया। उन्होंने लिखा है–

"पंजाबी, गुजरात निवासी, बंगाली हो या ब्रजवासी
राजस्थानी या मद्रासी सब के सब है भारतवासी
तेरे सुत, प्रिय देश जय देश जय–जय भारत देश
गीता को धारें हम बस, कामनीति से सारे हम सब
जय श्री कृष्ण उचारें हम सब, तन–मन धन सब वारे हम सब
कह कह जय जय देश
जय देश जय देश जय धन्य देश भारत देश"[38]

पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' को मातृभूमि, स्वदेश हित एवं स्वराज्य प्राप्ति से तो अनुराग था ही राष्ट्रभाषा हिन्दी से भी उनका अगाध प्रेम था इसीलिए अनेक हिन्दी साहित्य समितियों एवं पत्रों के माध्यम से उन्होंने हिन्दी भाषा के उत्थान एवं प्रसार हेतु कार्य किया। कवि 'नवरत्न' का मानना था कि भाषा देश का चरित्र दर्शाती है और हिन्दी भाषा के प्रसार द्वारा ही स्वाधीनता प्राप्ति एवं देशभक्ति का संदेश भारतीय जन–जन तक पहुँचाया जाना संभव है। हिन्दी भाषा के प्रति 'नवरत्न' का यह लगाव उनके राष्ट्र के प्रति गहन आत्मीयता को दर्शाता है। यथा :–

"जितनी अनार्य आर्य भाषा जग–जाहिर है।
फारसी, अरबी, तुर्की सब मन आनी हो।

जन्म वृथा है तो भी मेरे जान मानव का

हिन्द में जन्म पा के हिन्दी जो न जानी हो।"[39]

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति नवरत्न जी का अनुराग, निष्ठा एवं अनुरक्त भाव गहन था। हिन्दी भाषा के उत्थान हेतु अनेक हिन्दी संस्थानों की स्थापना में उनका सहयोग सदैव सराहनीय रहा है। "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति नवरत्न जी के अवदान के संबंध में ठीक ही लिखा है "मालवा और राजपूताने में हिन्दी व हिन्दी साहित्य के प्रचार में इन्होंने (नवरत्न जी) बड़ा काम किया है।" जिस युग में हिन्दी की चर्चा करवा राजद्रोह माना जाता था उस समय नवरत्न जी अपनी कविताओं के द्वारा राष्ट्रभाषा की अलख जगा रहे थे। 1918 में कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन में हिन्दी के अनन्य सेवक नवरत्न जी ने अपार जनसमूह के बीच निर्भिकता से कहा "मालवीय जी, जनता आपका आदर करती है तो करे, पर गिरिधर शर्मा से आप उसी समय सम्मान पायेंगे जबकि हिन्दू यूनिवर्सिटी हिन्दी विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित हो जाएगा।""[40]

पराधीनता की जंजीरों में जकड़े देश के नागरिकों में स्वतंत्रता प्राप्ति का स्वप्न स्वाभाविक प्रतिक्रिया स्वरूप क्रांति की भावना उत्पन्न कर देता है। नव राष्ट्र का निर्माण जन साधारण का ही नहीं साहित्य मर्मज्ञो का भी उद्देश्य बन जाता है। गुलामी की बेड़ियों से मुक्त स्वाधीन भारत का स्वप्न देखने वालें ऐसे ही साहित्यधर्मी थे– **कवि सुधीन्द्र**। उन्होंने अपनी '**प्रलय वीणा**' कृति में परतंत्र भारत की सच्चाईयों को उजागर तो किया ही समसामयिक भारतीयों की पीड़ा एवं वेदना को भी अभिव्यक्त किया है। "सुधीन्द्र की प्रलय वीणा काजी नज़रुल इस्लाम की 'अग्नि वीणा' की याद दिला देती है। दोनों ही कवि धरती के कवि हैं, अपनी ज़मीन के सुख–दुख से जुड़े हैं। जब जमीन धू–धू कर के जल रही है, उस समय दोनों की ही वाणी से अग्निनाद अभिव्यक्त हुआ है। अपने परिवेश की पूर्ण सजगता, जिस से जन के प्राणों में सत्व का स्पन्दन हो उठता हो, धमनियों में रक्त–प्रवाह बलिदान हो जाने की प्रेरणा देता हो, यही उस काल के लिए अभीष्ट भी था, यही कवि का दायित्व था जिसे सुधीन्द्र ने ईमानदारी से निभाया।"[41] इतिहास महापुरुषों के

शौर्य, पराक्रम एवं स्वाभिमान का बखान कर कवि सुधीन्द्र ने हज़ारों वर्षों से व्यथित भारतीय जनमानस में क्रांति की चिनगारी उत्पन्न कर देशभक्ति की भावना का संचार किया। स्वतंत्रता पूर्व प्रकाशित अपनी '**जौहर**' कविता में स्वतंत्रता वरण हेतु प्राणोत्सर्ग का संदेश देते हुए कवि कहते हैं कि स्वतंत्रता रूपी अटल वैभव एवं सम्पदा प्राप्त करने के लिए चित्त की अस्थिरता को दूर कर प्राणाहुति के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। यथा–

"स्वतन्त्रता सम्पदा अतुल है, यह जीवन है अल्प अहो !
प्राणों की आहुति देने में, क्यों संकल्प विकल्प अहो !
स्वतंत्रता शाश्वत वैभव है, यह जीवन यह जगत अचिर,
जीवन बलि देने में फिर क्यों नश्वर मन भय से अस्थिर?"[42]

ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हताश एवं निराश भारतीय जनमानस में कवि सुधीन्द्र का ओजमय काव्य नवीन आत्मबल, कर्मकौशल एवं उमंग पैदा कर देने वाला था। सन् 1937 में प्रकाशित '**शंखनाद**' रचना में उदात्त मानव मूल्यों एवं देश–प्रेम का ऐसा स्वर सुधीन्द्र ने प्रतिध्वनित किया था जिसने उस समय जन साधारण में स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु नयी आस्था एवं उत्साह जागृत कर दिया था। राणा प्रताप को समर्पित उक्त रचना में राष्ट्रीयता का शंखनाद कवि ने इस प्रकार चित्रित किया है–

"देश–दशा को देख–देख अब हे भारत संतान जगो !
पतित दलित पीड़ित स्वदेश के अहो अजर वरदान जगो !
माँ को रोता देख आज भारत के हत अभिमान जगो !
शंखनाद सुन–सुन कर अब तो नत–हत–मृत! निष्प्राण! जगो!!"[43]

'**शंखनाद**' काव्य की इन ओजमय पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि कवि सुधीन्द्र हाड़ौती अंचल की राष्ट्रीय काव्यधारा में स्वतंत्रता पूर्व के ऐसे पुरोधा साहित्यमर्मज्ञ थे जिन्होंने पराधीन भारत की दुर्दशा को काव्य में चित्रित कर न केवल अपना कवि धर्म निभाया अपितु देशवासियों को काव्य के माध्यम से जागरण

का संदेश देकर राष्ट्रीयता के प्रति अपनी भावात्मक अनुभूति को भी अभिव्यक्त किया। सुधीन्द्र की इसी राष्ट्रीय भावधारा को गतिशील बनाये रखने का कार्य परवर्ती हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों ने किया। **मदनलाल पवाँर** ने अपनी कृति **'कांति-किरण'** में तात्कालीन सामाजिक दुर्दशा को अंकित किया तो कवयित्री **शकुन्तला रेणु** ने सामान्यजन की पीड़ा को अभिव्यक्त कर राष्ट्रीय धर्म का निर्वाह किया। इसी तरह **हरि वल्लभ 'हरि'** स्वतंत्रता प्राप्ति के आनन्द एवं उमंग को **'विजय पर्व'** शीर्षक कविता के माध्यम से इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

"जन जन मन उल्लसित कर गई सुरभि सनी पुरवाई।
प्राणों में उन्माद भर गई गूंज पर्व से आई।
सदियों बाद स्वतंत्र देश ने विजय घड़ी है पाई।
राम कृष्ण की विजय कहानी आज मूर्त हो आई।।
रावण, कंस, सुबाहु, जरासंध एक साथ चढ़ आये।
शक्ति, नीति आतंक दिखाकर बलपूर्वक सब धाये।
मेरे वीरों ने पर, सब को वह जमीन दिखलाई।
युद्ध भूमि में दुश्मन की मूंछे नीची करवाई।।"[44]

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीयों के संघर्ष, सत्याग्रह एवं जन आन्दोलन की झाँकियाँ हाड़ौती अंचल के इन हिन्दी कवियों ने श्रद्धा के साथ प्रस्तुत की है। अंग्रेजी अत्याचार से मुक्त आज़ाद भारत का अहसास प्रत्येक देशवासी का स्वप्न था। अनेक कष्टों, संघर्षों एवं व्यथाओं को झेलने के पश्चात् जिस स्वतंत्र भारत को भारतीय जन ने प्राप्त किया था वह एक अद्‌भुत अनुभव था परन्तु नयी आजादी के साथ-साथ नयी समस्याओं एवं विकटताओं का आगमन देश में होने लगा। अंग्रेजी अत्याचारों का स्थान सीमावर्ती राज्यों के आतंकी हमलों एवं ईस्ट इंडिया कम्पनी की जगह बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने देश का शोषण करना शुरु कर दिया। "राष्ट्रीय नेतृत्व की दुर्बलता, आदर्शों का अभाव, जीवन के विविध क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार, अयोग्यता, ग़रीबी, बेकारी और उस से शीघ्र मुक्ति पाने के प्रयास में पैदा हुआ 'काला धन' राष्ट्रीय चेतना के स्तर को 'कुण्ठा' तक खींच लाया। नेतृत्व के नाम पर

स्वार्थपूर्ति, प्रगति के नाम पर शोषण और अनैतिकता ने देश में असंतोष और निराशा को प्रोत्साहित कर 'हिंसा' की ओर प्रेरित किया। अभिप्राय यह है कि स्वतंत्रता से पैदा होने वाली आशाओं आकांक्षाओं की अपूर्ति और अतृप्ति ने व्यापक पैमाने पर देश के जनमानस को क्षुब्ध, विक्षुब्ध और कुण्ठित किया, इन सबकी प्रतिक्रिया साहित्य में प्रतिबिम्बित हुई।"[45] हाड़ौती अंचल के काव्यकर्मियों ने भी सनातन बढ़ती आकांक्षाओं से उत्पन्न भारतीय जनमानस के असन्तोष, स्वार्थवादिता एवं असत् मनोवृत्तियों के तले दब रही राष्ट्रीयता को उल्लेखित किया है। हाड़ौती अंचल के प्रख्यात हिन्दी कवि **डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय** ने **'कहा आ गए हम?'** शीर्षक कविता के अन्तर्गत इसी क्षीण होती राष्ट्रीय भावना एवं निरन्तर घट रहे जीवन मूल्यों को उद्घाटित किया है यथा –

"कहाँ से चले थे, कहाँ आ गए हम !
दिया था शहीदों ने लहू इस दिये में,
कि गुलामी का सौंपा अन्धेरा मिटेगा,
बने नींव के थे वे पत्थर इसी हित,
कि स्वतंत्रता का मन्दिर यह ऊँचा बनेगा।
अभी तो खड़ा है अधूरा भवन यह
कि लगे तोड़ने हैं इसे देशद्रोही,
लेंगे क्या इसको ये गिराकर ही दम?
कहाँ से चले थे कहाँ आ गए हम?
गांधी ने दिखाया हमें सत्य का पथ,
चले जा रहे हम असत् के सहारे,
पढ़ाया अहिंसा का सदा पाठ उनने,
बहे जा रहे हम हिंसा के धारे।
नेहरू ने समता की जो राहें बनायीं,
चले जा रहे हम उधर पीठ फेरे,
दिशा खो गयी हैं, घेरे हमें भ्रम।
कहाँ से चले थे कहाँ आ गए हम?"[46]

आज़ादी के पश्चात् देश की सत्ता तो स्वाधीन हो गयी परन्तु राजनीतिक सिद्धान्त कमजोर होने लग गये, विदेशी शासन के आतंक से भारतीय अवश्य मुक्त हो गये लेकिन विदेशी संस्कृति के लबादे में भारतीय जन एवं संस्कृति निरन्तर सिमटते चले गये। देश–प्रेम, एकता, अखण्डता के दावे जरुर किये जाते हैं परन्तु राष्ट्रीय धर्म का दायित्व नहीं निभाया जाता। स्वाधीन भारत की इसी विडम्बना एवं दर्द को **डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय** ने **'देश का दर्द'** कविता में इस प्रकार अभिव्यक्त किया है–

"किसको है अब दर्द देश का
स्वार्थ लिए बस सब जीते हैं;
सत्ता और सम्पत्ति की मदिरा
भर–भर चषक पिए जाते हैं।
धन, सत्ता ही मूल सूखों का
इसी मंत्र का जाप हो रहा;
एक और वैभव का नर्तन
एक ओर दारिद्रय रो रहा।
राजनीतिक सिद्धान्त–हीन है
अर्थनीति परतन्त्र हुई;
संवेदन–सरिताएँ सूखीं
मानवता संयत्र हुई।
वैदेशिक संस्कृति की घातें
तोड़ रही भारत की प्रतिमा;
धूलि–धूसरित हुई जा रही
भारत की उज्ज्वल गरिमा।"[47]

ज्ञान, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास में स्वतंत्र भारत भले ही कुछ चरण आगे बढ़ गया है परन्तु खोखली सामाजिक व्यवस्था का चरमराता ढांचा देश की दुर्दशा अवश्य बयान कर देता है। आज़ाद भारत की दृष्टि आसमान तक पहुँचाने

वाले रॉकेट तक अवश्य पहुँच जाती है लेकिन देश की धरती पर ग़रीबी एवं भूखमरी से जीवन यापन करने वाले लोगों को अनदेखा कर दिया जाता है। स्वतंत्र भारत की यही तस्वीर कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय की कविता '**रॉकेट और रोटी**' में स्पष्ट दिखाई देती है।

यथा – **"चाँद पर रोकेट, धरा पर रोटी नहीं है।**

ओ गगन विजयी ! तनिक रुक सुनले जरा,

प्रेम की दुनिया बसाने के लिये तो–

यह धरा भी देखले, छोटी नहीं है।

चाँद पर रोकेट, धरा पर रोटी नहीं है।

जा रहा है तू कहाँ फिर खोजता,

नये मानव–मानवी की हाट बस्ती

देख तो तेरे मिटाने के लिए क्या,

इस धरा के मानवों की भूख कुछ मोटी नहीं है।

चाँद पर रोकेट, धरा पर रोटी नहीं है।"[48]

पराधीनकाल में जिस 'राम–राज्य' की परिकल्पना भारतीयों ने की थी स्वतंत्र भारत में वह अब एक स्वप्न मात्र बनकर रह गया है। सत्ता–लोलुप राजनीतिज्ञों ने राजनीतिक मूल्यों का हनन करके सत्ता को स्वार्थ पूर्ति का केन्द्र बना दिया है। सत्ताधारियों की स्वार्थवादिता, लोलुपता एवं भ्रष्टाचार से जर्जर हो रही स्वाधीन भारतीय राजनीति की झांकी कवि प्रेमचन्द की कविता '**शासको से**' में स्पष्ट अंकित है। जैसे–

"भूले हो, राज्य तुम्हारा है?

राज्य तुम्हारा नहीं, राज्य तो

उसका है, जो पिसता है, पिलता है,

खेत में, खलिहानों में, और–

निरन्तर काली सी जो चूसा करती

रक्त प्राण का मजदूरों के,

उस मिल में–जिसमें मिलती शांति नहीं,
उस कल में जो स्वयं विकल है,
अपनी ही कल कल में !
राज्य है होरी का धनिया का,
राज्य है भूख–प्यास से तड़प तड़प रह जाने वाले
दूध–मुँहे उपेक्षित बच्चों का,
जो चिपट, चाम से ढकी हुई ठठरी से, माँ के,
सुखे स्तन चूस–चूस रह जाते हैं।
राज्य है उनका, केवल शासन के–
वादों पर, झूठे वादों पर, जीवित हैं जो अब तक भी,
समझ समझ कर शासन अपना है–
अपने शासक हैं, रहम करो–"[49]

सामाजिक विषमता एवं राजनीतिक असंगतियों की अभिव्यक्ति के साथ–साथ डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने देश–प्रेम, स्वदेश वंदना एवं राष्ट्रीय एकता से संबंधित उत्साहवर्धक कविताओं के माध्यम से भारतीय जन में राष्ट्रीय भावना का प्रसार भी किया। '**कौमी एकता**' शीर्षक कविता में कवि प्रेमचन्द ने राष्ट्रीय एकता के महत्त्व को इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

"जिन्दगी साझा सफर है, कौम की हर राह पर,
मञ्जिल–ए–मकसूद तक है पहुँचना प्रिय दोस्तो!

कट जो जाए कण्टकों से भी भरा यह रास्ता,
प्यार के कुछ गीत ऐसे गाते चले हम दोस्तों !

मिलेंगे ऐसे भी हमको सिर–फिरे इस सफर में,
दिल–मिलों को तोड़ना ही, जिनका पेशा दोस्तो!

खबर रखना ही न अपना फर्ज, ऐसे लोग की,
सबक दें उनको कि ऐसा, याद रक्खें दोस्तो !

दुश्मन के विषधरों को, हम न पलने दें यहाँ,
इतिहास लम्बा दोस्ती का, है हमारा दोस्तो!"[50]

इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर युग की बदलती हुई स्थितियों एवं दशाओं पर काव्य सृजन करने वाले डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय, युगीन साहित्यकार थे। राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के इस कवि ने न केवल समाज, राजनीति एवं संस्कृति में उत्पन्न समस्याओं की सच्चाई को उजागर किया अपितु पथ भ्रष्ट युवा पीढ़ी में राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्र–हित के प्रति जोश एवं उत्साह की भावना को काव्य सृजन द्वारा प्रवाहित किया। हाड़ौती अंचल की राष्ट्रीय हिन्दी काव्यधारा में आपका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय के समकालीन संस्कृति और युगबोध के कवि **डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'** का भी हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्यधारा में अद्वितीय स्थान रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लेने वाले इस स्वतंत्रता सेनानी ने अनेक कष्टों एवं यातनाओं को सहन करने के पश्चात् भी राष्ट्रीय धर्म का दायित्व निभाया। देश की राजनीति में सक्रिय कार्यकर्ता रह चुके इस राष्ट्रीय कवि ने समाज सेवा के साथ–साथ समाजोन्मुख काव्य सृजन द्वारा राष्ट्रीय चिंतन एवं विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ. 'विजय' ने वर्तमान भारत की दुर्दशा, घटते सांस्कृतिक मूल्य, जातिगत–हिंसा, लोकतंत्र की कमजोर शासन प्रणाली तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की अंधी प्रगति की छवि काव्य में अंकित कर देश के गिरते चरित्र को प्रस्तुत किया है। राष्ट्रवादी सांस्कृतिक धारा के कवि डॉ. दयाकृष्ण 'विजय' राष्ट्र की वर्तमान समस्याओं का समाधान एवं भविष्य का चिंतन प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्यों में ढूँढते हैं। उनका **'आञ्जनेय'** महाकाव्य मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का दस्तावेज हैं। "समाज परस्पर भिन्न भावों, विचारों, विश्वासों, मान्यताओं, पंथों आदि का जटिल संकुल है। इनकी भिन्नता परस्पर न टकराए और समाज में सुख–शांति बनी रहे, इसके लिए आवश्यक है कि सह–अस्तित्व के मूल्य का विकास किया जाए। परिवार की छोटी इकाई से लेकर, विश्व स्तर पर अनेक राष्ट्रों की बड़ी इकाई तक, केवल यही मानव–मूल्य सच्ची शांति संस्थापित कर सकता है। समीक्ष्य महाकाव्य में डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय ने सह–अस्तित्व को आवश्यक बताते हुए लिखा है–

'सद्भाव शांति हित आवश्यक
स्वीकारों सह-अस्तित्व को;
निर्भय जीने का अवसर दें,
सम्मानें हर व्यक्तित्व को।"[51]

अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सद्भावना के समर्थक डॉ. 'विजय' वर्तमान भौतिकवादी युग में विभिन्न राष्ट्रों में परस्पर होने वाली टकराहट एवं युद्ध को मानवता के लिए अभिशाप मानते हैं, उनका मानना है कि भौतिकवादी संस्कृति राष्ट्रों के बीच प्रतिस्पर्धा, घृणा एवं अशांति को जन्म देकर युद्ध का वातावरण पैदा करती है परिणामस्वरूप मानवता का नाश होता है। **'युद्ध : एक अभिशाप'** शीर्षक कविता डॉ. दयाकृष्ण 'विजय' की मानवतावादी विचारधारा का उदाहरण है–

"हिमालय के पार से आती
घृणामयी, आत्मघाती,
विषैली बारूदी दुर्गन्ध
इसलिए बेचैन करती है–
कहीं मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों में
साष्टांग झुकी हुई प्रार्थनाएँ
झुकी की झुकी न रह जायें,
भाटों की पोथियों में उगी
वंशानुक्रम की वल्लरियों पर सजी
अनखिली कलिकाएँ
अनखिली की अनखिली न रह जाय,
रात की रानी की महक में गरमाये
मखमली सेज पर शरमाये
हाथ में बंधे कंकण-डोरे
हृदय में अनबूझी आग दबाये
बंधे के बंधे न रह जायें,

मां के स्तन से चिपट

दूध पीते शिशुओं के मुंह का दूध

मुंह में ही न रह जाये;

क्योंकि युद्ध एक उन्माद है"[52]

आधुनिक युग में मानवता, सांस्कृतिक जीवन मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं एवं सामाजिक सरोकारों से परे होकर भारतीय जन अन्याय, उत्पीड़न, दमन, निराशा एवं घुटन के जिस परिवेश में जी रहा है उससे भारतीय समाज एवं संस्कृति की संकटग्रस्त स्थिति स्पष्ट परिलक्षित होती है। युवा पीढ़ी में बढ़ता अर्थोपार्जन सम्मोहन, अन्तमुर्खी व्यक्तित्व, प्रतिस्पर्धी आकांक्षाऐं एवं भौतिक चकाचौंध न केवल सामाजिक व्यवस्था के उच्छृंखल रूप को प्रकट करती है अपितु युवा मन में निरन्तर क्षीण हो रही राष्ट्रीय भावना को भी दर्शाती है। भारतीय संस्कृति के पुरोधा कवि डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय ने भारतीय समाज एवं संस्कृति के अधोपतन की इसी सच्चाई को काव्य में उद्घाटित किया है। समसामयिक संवैधानिक संगठनों, सार्वजनिक संस्थाओं, धर्माचार्यों, मानव मूल्यों की दुर्दशा को '**उपलब्धियों का उपसंहार**' शीर्षक कविता में डॉ. 'विजय' ने इस प्रकार उल्लेखित किया है–

"रह गया है शेष

अब राम का नाम

मंदिरों समाधियों पर

लिखने भर के लिए,

न्यायालयों

सवैधानिक संगठनों

सार्वजनिक संस्थाओं में

शपथ उठाने भर के लिए,

संतों

कथोपदेशकों

धर्माचार्यों की प्रतिष्ठा

बढ़ाने भर के लिए
या
अर्थियों के पीछे चलते
सद्भावी स्नेहियों का सोया
सत्य जमाने भर के लिए;
कहा है
किसी के पास
राम के आदर्श चरित्र को
अप्रतिम वीरत्व को
पुत्रत्व, भ्रातृत्व, पतित्व के आदर्श से मंडित
मर्यादा युक्त
पुरुषोत्तम जीवन को स्मरण करने
अपने में उतारने का
थोड़ा भी समय?
फिर कहो
क्यों न होंगे यहाँ
छद्म युद्ध
आगजनी, दुर्घटनाएं
विस्फोट, बलात्कार
राम राज्य आने तक।"[53]

इस प्रकार हाड़ौती अंचल के यशस्वी हिन्दी कवि डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' ने देशभक्ति एवं सांस्कृतिक जागरण की महत्ता को प्रतिपादित कर समसामयिक भौतिकवादी युग में राष्ट्रीय विचारधारा को समृद्ध एवं पुष्ट करने का महान् कार्य किया। "निस्संदेह डॉ. दयाकृष्ण ने केवल राजस्थान की हिन्दी काव्य–साधना को ही नहीं, बल्कि संपूर्ण हिन्दी काव्य की अनुभूति, भाव, कल्पना, जीवन–दृष्टि और भाषा–शिल्प के द्वारा अपनी मौलिकता का अवदान दिया है। आज आधुनिक जीवन भारती, सांस्कृतिक परंपरा, राष्ट्रबोध और हिन्दी भाषा–सब पर पश्चिम –अमेरिका, वामपंथी और अरबों ईरानी का घातक प्रभाव संकट उत्पन्न कर रहा है।

इस सांस्कृतिक द्वंद्व–संघर्ष के युग में डॉ. दयाकृष्ण 'विजय' की काव्य–साधना इस द्वंद्व के शमन और जड़ीभूत नहीं, प्रगतिशील भारतीय जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठा में समर्थ लग रही है।"[54]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आज़ाद भारत में लोकतंत्रात्मक गणराज्य की स्थापना भारतीय जन के लिए स्वप्न साकार होने जैसा अनुभव था। समतापूर्ण, भययुक्त, धर्मनिरपेक्ष सुदृढ़ शासन व्यवस्था आम आदमी के विश्वास एवं आकांक्षा का केन्द्र बिन्दु था परन्तु आज़ादी के कुछ वर्षों बाद ही भारतीय जन का यह विश्वास डगमगाने लगा। देश की सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था में होने वाले नूतन परिवर्तनों से भारतीय लोकतंत्र का ढांचा चरमराने लगा। सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भाई–भतिजावाद, अर्थवाद, अलगाववाद तथा अवसरवाद ने भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था को खोखला कर दिया। स्वार्थी नेताओं, भ्रष्ट अफसरों एवं चापलूस कर्मचारियों ने देश की प्रगति एंव विकास को अवरुद्ध तो किया ही साथ ही अमानुषिक कृत्यों द्वारा देश की सांस्कृतिक गरिमा को कलुषित भी किया। पश्चिम की चकाचौंध एवं भौतिकवादी जीवनशैली की और आकर्षित होने वाले आम आदमी में देश हित की भावना कमजोर होने लगी जिससे देश के प्रति अपने दायित्व तथा कर्तव्यों से विमुख होकर भारतीय युवा पीढ़ी हिंसा, लूट–पाट, अपहरण, बलात्कार जैसे अपराधिक धन्धों में लिप्त होने लगे हैं फलस्वरूप आज़ाद भारत में व्यक्ति यांत्रिक जीवन व्यतीत करने लगा है। स्वतंत्र भारत की यह विकृत छवि अन्नपूर्णा नगरी बांरा के रंगकर्मी साहित्यकार **द्वारका लाल 'गुप्त'** की कविता **'लोकतंत्र'** में स्पष्ट परिलक्षित होती है। लोकतंत्र की बाह्य एवं आंतरिक शासन प्रणाली की सच्चाई को कवि ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

"लोकतंत्र
जादुई तमाशा है
जनता में भारी हताशा है
भूल गए शहीदों की कुर्बानी
फांसी के फंदे और गोलियों की कहानी

सब हो गया बेमानी

संसद में बैठे हैं

चम्बल के डाकू और मसखरे

अंतर्राष्ट्रीय माफिये और सिरफिरे हत्यारे

ये एक–दूसरे को

गोलियों से नवाजते हैं

साड़ियाँ खींचते

और कुर्ते–पजामें फाड़ते हैं

यदि फिर भी न चले काम

वाक युद्ध भी हो जाए बेकाम

तो उतर आते हैं हाथा–पाई पर

शर्म छोड़

नकटाई पर"[55]

वर्तमान भारत की प्रमुख समस्या है– अलगाववाद। सन् 1932 में जन्में कवि 'गुप्त' ने भारत विभाजन की त्रासदी के मर्म को प्रत्यक्ष देखा एवं अनुभव किया था यही कारण है कि बंटवारे का दुःख एवं पीड़ा उनके अंतर्मन की वेदना से जुड़े हुए हैं। विभाजन से उत्पन्न संकटग्रस्त समस्याओं से देश आज भी जूझ रहा है। अनेक अलगाववादी संगठन स्वतंत्र राष्ट्र–राज्य निर्माण की मांग करके देश का विभाजन करना चाह रहे हैं। भय, खौफ, आतंक एवं युद्ध के जिस वातावरण में भारतीय जन साँस ले रहा है वह कवि ह्रदय को विचलित कर देता है। कवि द्वारका लाल 'गुप्त' '**पंजाब**' शीर्षक कविता के अन्तर्गत अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं कि अब विभाजन किसी भी स्तर पर स्वीकार्य नहीं है।

"मत रो माँ,

अब न देश बँटने दूंगा–

बंगाल–सिन्धु दोनों बाजू, दुश्मन ने पहले काट लिए,

केसर की क्यारी काश्मीर, पंजाब की नदियाँ बाँट लिए,

हिन्दु-मुस्लिम बांट लिए, मंदिर-मस्जिद भी बाँट लिए,
विद्रोह नहीं यह देशद्रोह, रेलें-सड़कें भी बाँट लिए,
घायल है आज हिमालय का, नंदन-वन क्रन्दन करता है,
आंसू बन मान सरोवर का, पानी-सा हृदय पिघलता है,
फिर आग लगी आसाम जला, पंजाब गोलियों से छलनी
इतिहास चल रहा चाल वही, मैं चाल नहीं चलने दूंगा,
अब न देश बँटने दूंगा।"[56]

वर्तमान परिवेश में चारों ओर आपाधापी, स्वार्थान्धता एवं भ्रष्टाचार व्याप्त है। धर्म, जाति के आधार पर भारतीय समाज एवं राजनीति में विकृतियों का ज़हर फैल रहा है। धर्मनिरपेक्षता का उल्लेख भारतीय संविधान में भले ही हो गया परन्तु धर्मान्धता में हो रहे जघन्य कृत्यों से समाज घिरा हुआ है। जिस मज़हबी आस्था एवं अध्यात्म से भारत विश्व गुरु बनकर सम्पूर्ण मानवता को सत्य अहिंसा, दया, करुणा, परोपकार, का पाठ पढ़ाता रहा आज उसी भारत में मानवीय संवेदना को भूलाकर धर्म की आड़ में हिंसा अन्याय एवं अत्याचार का ताण्डव हो रहा है। कवि द्वारकालाल गुप्त ने इन्हीं मज़हबी एवं क्रूर वास्तविकताओं को काव्य में व्यंजित कर क्षीण हो रही आध्यात्मिक भावनाओं पर क्षोभ व्यक्त किया है। **'धर्म'** शीर्षक कविता के अन्तर्गत उन्होंने धार्मिक अंधविश्वासों, कर्मकाण्डों, के स्वरूप को उद्‌घाटित करने के साथ-साथ धर्म के सही वास्तविक स्वरूप की व्याख्या प्रस्तुत की है। जैसे-

"धर्म एक आस्था है
विश्वास है
सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, विश्व बन्धुत्व
त्याग, करूणा का संदेश है
धर्म बांटता नहीं
जोड़ता है सदैव
तोड़ता नहीं

प्रेम के मजबूत धागों में बांधता है
धर्म तो गूंगे का गुड़ है
जिसका स्वाद चखा जा सकता है
किसी को बताया नहीं जा सकता
धर्म एक रास्ता है
जो ईश्वर तक पहुँचाता है
यह
नमाज़ और घंटियों में नहीं है
दाढ़ी और चोटियों में भी नहीं
यह तो
मीरा, कबीर, तुलसी की तान में है
रहीम और रसखान में है।"[57]

इस प्रकार अन्याय, अत्याचारों एवं विसंगतियों के विरुद्ध संघर्ष कर मानव धर्म का निर्वाह करने वाले कवि द्वारका लाल गुप्त ने शाब्दिक प्रेम द्वारा आधुनिक विसंगतियों को वाणी देने के साथ-साथ जनतंत्रीय जीवन चेतना के उद्‌गार को अभिव्यक्त कर हाड़ौती अंचल की राष्ट्रीय काव्यधारा के विकास में सराहनीय भूमिका निभाई है।

समय परिवर्तन के साथ समाज, संस्कृति, परिस्थिति, विचार, चिन्तन इत्यादि में बदलाव सुनिश्चित होता है। प्रगतिशील एवं विकासोन्मुख भारत में भी युगानुरूप नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। औद्योगिक उपलब्धियाँ, ज्ञान-विज्ञान में प्रगति, रहन-सहन एवं भाषा में बदलाव, प्रगतिशील सोच युग बदलाव के द्योतक है परन्तु कुछ स्थितियाँ दीर्घ समयान्तराल पश्चात् भी परिवर्तित नहीं हो पायी है। गरीबी एवं भूखमरी की जटिल एवं संकटग्रस्त अवस्था एक ऐसा ही उदाहरण है। वर्तमान बाज़ारवाद एवं भूमण्डलीकरण के युग में देश का एक वर्ग बेबसी एवं लाचारी का जीवन बसर कर रहा है। यह कैसी विडम्बना है कि समाज में जहाँ कुछ लोगों के भाग्य रूपी मस्तक पर संपत्ति रूपी चंदन लगा हुआ है वहीं अभावग्रस्त ज़िन्दगी जी

रहे लोगों को चूल्हें का काला धुंआँ भी नसीब नहीं हो पाता है। हाड़ौती अंचल के प्रख्यात एवं मानवीय संवेदनाओं के कवि **डॉ. शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश'** समाज के इस दीन–हीन जीर्ण–शीर्ण जीवन व्यतीत करने वाले वर्ग के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की 'वह तोड़ती पत्थर' रचना का प्रतिरूप डॉ. 'राकेश' की कृति **'बड़े लोगों की बस्ती'** में दिखाई देता है। उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग की जीवनशैली में फासले का जो स्वरूप इन्होंने प्रस्तुत किया है वह समाज में स्थित वर्ग–भेद का अनोखा उदाहरण प्रस्तुत करता है। जैसे–

"बस्तियां देखीं अनेकों–
किन्तु यह बस्ती
कि जिसके भाल पर चन्दन जड़ा है।–
पार्क छोटा सा–
जहाँ पर खेलते हैं कई आलीशान बच्चे–
दूध के धोये
कि जिनके भाल पर मोती पिरोए।
हर तरफ हर दो कदम के फासले पर
चमकते बंगले शरद की चांदनी में
घास पर शतरंज के मोहरे बिछे से,
चाँद इन सबके बहुत नज़दीक है
क्योंकि–
यह चन्दा नहीं उन बस्तियों को लांघ पाता
जहाँ चूल्हे का धुआँ
देता अमावस की ख़बर है।
जहाँ बदबूदार कीड़े जन्म लेते हैं
धरा पर रेंगते हैं
और सड़–गलकर अचानक आख़िरी दम तोड़ते हैं।
आज भी
दो बस्तियों के बीच कितना फासला है?"[58]

डॉ. शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश' के काव्य में राष्ट्रीयता एवं मानवता का संसार दिखाई देता है। निम्न वर्ग की पीड़ा एवं दर्द, मध्यम वर्ग की उदासी एवं उच्च वर्ग का अहंग्रस्त जीवन उनके काव्य में सहजता से प्रस्तुत हुआ है। देश के उत्थान्–पतन के साथ आधुनिकता की दौड़ में सामाजिक सरोकारों से मुक्त उपभोक्तावादी ज़िन्दगी जी रहे लोगों में गिरते जीवन मूल्य एवं मानवता पर कवि–मन क्षोभित हो जाता है। **'मेरे शहर के लोग'** शीर्षक कविता में आधुनिक स्वार्थी एवं संवेदनहीन लोगों की जीवन दृष्टि को कवि ने इस प्रकार रूपायित किया है–

"मेरा शहर
जीता है नंगेपन की ताज़गी में.
आधुनिकता के संदर्भ में,
अतीत की सिद्धियों
और भविष्य की संभावनाओं से तटस्थ–
अपने–
स्वयं अपने ही अंदेशों के इर्द–गिर्द
घूमते हैं
मेरे शहर के लोग."[59]

डॉ. 'राकेश' ने बाह्य जन–समस्याओं एवं विसंगतियों के साथ वर्तमान भौतिकवादी युग में अन्तर्द्वन्द्व एवं अकेलेपन की मार से व्यथित लोगों की मानसिक स्थिति को भी काव्य में उद्धाटित किया है। "डॉ. शान्ति भारद्वाज 'राकेश' के काव्य के बर्हिलोक तथा अन्तरलोक का उभयतः जो सन्देश देता है उसे राष्ट्रीय एकता का सम्बल माना जा सकता है, उसमें सनातन आकांक्षाओं का उर्ध्वीकरण भी है, सार्वभौम मानव का चिरन्तन स्वरूप भी और "जनानां हृदये सन्निविष्टः" जो जनार्दन है वह भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उनका काव्य मानव वेदना के उदात्त शिखरों पर आरोहण कर विचरण करता प्रतीत होता है। वे साहित्य के ऐसे शलाका पुरुष हैं जो काव्यशास्त्र के नियमों के अनुसार व्याख्यायित नहीं हो सकते क्योंकि उनके साहित्य में नग्न यथार्थ और अतीन्द्रिय यथार्थ एक साथ अनावृत हुए है।"[60]

व्याधियों से ग्रस्त देश की राष्ट्रीय अस्मिता, एकता अखण्डता आज असुरक्षित है। निरन्तर बाह्य एवं आन्तरिक आक्रमणों से हो रहे राष्ट्रीय अधोपतन के जिम्मेदार स्वयं देशवासी ही है। यह सच है कि अंग्रेज सत्ता साम्राज्यवादी सत्ता थी जिसने स्वार्थपूर्ति हेतु देश का शोषण किया परन्तु यह भी निर्विवाद सत्य है कि राष्ट्र गौरव एवं वैभव का जितना पतन देशवासियों ने किया है उतना शायद अंग्रेजों ने भी नहीं किया था। भौतिकवाद की अंधी चकाचौंध में देशवासी यह भूल रहे हैं कि राष्ट्र से ही जन एवं संस्कृति की पहचान व अस्तित्व संभव है। व्यक्तिवाद से ऊँचा उठकर समाजवाद की ओर उन्मुख होने की आवश्यकता को हमें समझना होगा तभी राष्ट्र की उन्नति, प्रगति एवं विकास सम्भव है। खोखले–वादों, झूठी–शान एवं बनावटी राष्ट्रीयता के ढोंग से ऊपर उठकर राष्ट्र के प्रति भावनात्मक प्रेम एवं गहन आत्मीयता के साथ राष्ट्रीय धर्म का निर्वाह कर राष्ट्रीय धरोहर को संरक्षित किया जा सकता है। वर्तमान देश की शोचनीय दशा से त्रासद बूंदी के **कवि बजरंग लाल 'विकल'** अपनी **'राष्ट्र रहा तो सभी रहेंगे'** शीर्षक कविता में राष्ट्र की महत्ता को इस प्रकार प्रतिपादित किया हैं–

"राष्ट्र झुका तो सभी झुकेंगे
राष्ट्र उठा तो सभी उठेंगे
राष्ट्र रहा तो सभी रहेंगे
राष्ट्र मिटा तो सभी मिटेंगे।।

जीवन सदा राष्ट्र की थाती,
जैसे जलती दीपक बाती।
एक एक जन से मिलकर ही,
समरसता निज ज्योति जगाती।।

एक रहे तो राष्ट्र रहेगा,
छिन्न–भिन्न हो सभी लुटेंगे।
राष्ट्र मिटा तो सभी मिटेंगे।।

वर्ग वर्ण भाषा प्रदेश की,

लेकर अपनी अपनी ढपली।

हमने राग अलापे अनगिन,

चाल न बदली, थाप न बदली।।

बंट जायेगा देश हमारा,

यदि हम इसी प्रकार बंटेंगे।

राष्ट्र मिटा तो सभी मिटेंगे।।"[61]

कवि बजरंगलाल 'विकल' का राष्ट्र के प्रति निश्छल भावनात्मक लगाव रहा है। कवि वर्तमान व्यवस्था के विध्वंस रूप से व्यथित तो है ही भविष्य के प्रति भी वे चिन्तित रहते हैं। आणविक प्रगति की दौड़ में देश के सांस्कृतिक गौरव एवं दार्शनिक वैभव की क्षति को देखकर कवि का मन व्याकुल हो उठता है। '**त्रासद**' रचना के अन्तर्गत देश के भविष्य की कल्पना कवि इस प्रकार प्रस्तुत करता है–

"क्या ऐसी त्रासदी आयेगी।

जब पीडियाँ बौनी,

नपुंसक और अपंग पैदा होगी।।

जब एक आदमी,

दूसरे आदमी के,

खून का प्यासा होगा।

जब हर घर बारूद का

दफ्तर बन जायेगा।।

आदमी के हाथ में,

कलम और कुदाली की

जगह होगें बन्दूक बम।

जब मनुष्य की घृणा,

हिंसा में बदल जायेगी।।

परणीता धरती की माँग

भरती फसलें,

कुआँरी जल जायेगी।।"[62]

कवि बजरंग लाल "विकल" की भाँति कवि **अम्बिका दत्त** ने भी देश में व्याप्त आतंकित एवं भयग्रस्त वातावरण को काव्य में उद्घाटित किया है। उन्होंने **'आतंक'** शीर्षक कविता में लिखा है–

"जब कुत्तों ने सूंघ लिया था,
सन्नाटे में तैरता–खतरा
खड़–खड़ बजने लगे थे
हवा के हिलने से
जमीन पर पड़े पत्ते
चलते–चलते शरीरवत्
हो गई थी मेरी परछाईं
गरदन घुमाकर पीछे देखते भी
घबरा रहा था मैं
वह बजबजा कर उतर पड़ा था
शाम को ही–कस्बे के बाजार पर
उदास–सी सिमट गई रोशनी
बिजली के खम्भों के आस–पास
तब अपने घर के किवाड़ बन्द किये
पीली लालटेन के कन्धों से
मैं अकेला ढो रहा था
बहुत सारा अंधेरा,
मैं अकेला था; नितान्त अकेला।"[63]

अपने समय के संकट को पहचानकर कवि अम्बिका दत्त ने लोगों से इस बुरे बखत में परस्पर जुड़े रहने की अपील करते हैं। उन्होंने **'वर्षा से पहले'** शीर्षक कविता में देशवासियों को आपस में मित्रता व विश्वास भाव अपनाने का संदेश देते हुए उनमें राष्ट्रीय एकता के भाव प्रस्फुटित करने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा है–

"यह समय है यहीं खड़े रहने का
यह समय है–वर्षा से पहले का

यह समय है जलावन इकट्ठा करने का
चाक घुमाने का/आग जलाने का
आवा पकाने का
यह समय नहीं है वापस लौटने का
यह समय है–वर्षा से पहले का
पानी जब होगा
उसे सहेजने को पात्र भी तो चाहिए।"[64]

देशवासियों को समकालीन समस्याओं के संकट से जूझने का उत्साह भी हाड़ौती अंचल के कवि ने दिया है। कवि **रघुराज सिंह हाड़ा** ने देश के उज्ज्वल व गौरवपूर्ण इतिहास को काव्य में अंकित कर राष्ट्रीय चेतना को प्रसारित किया है। राष्ट्रीय भावों से ओत–प्रोत कवि की श्रेष्ठ कृतियाँ 'गौरव राजस्थान' एवं 'बोलते पत्थर' में कवि के राष्ट्रीयता के स्वर फूट पड़े हैं। यथा :–

"उज्ज्वल पृष्ठों पर अंकित है यह गाथा अभिमान की।
स्वर्गों का यश फीका करती, धरती राजस्थान की।"[65]

यह सच है कि आज भी आज़ाद भारत अनेक समस्याओं, विसंगतियों एवं अभावों से घिरा हुआ है परन्तु इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि स्वतंत्रता पश्चात् देश ने विकास की कई मंजिले तय की हैं। वर्तमान में विश्व मानचित्र पर भारत का जो स्थान कायम है वह गौरवान्वित करने वाला है। देश के इसी विकासशील रूप को उद्घाटित करने में भी हाड़ौती अंचल के कवि पीछे नहीं रहे हैं। **कवि रशीद अहमद 'पहाड़ी'** की कविता **'विकास के चरण'** में देश की उन्नति एवं विकास की इस छवि को देखा जा सकता है।

"बढ़ चुके हैं योजना के जो चरण विकास में।
आज वह महक उठे हैं भारत भू की साँस में।।
बदल गया है नक्शा मेरे देश का
शहर–शहर गाँव, गाँव–वेश का
बूढ़े पात झड़ चुके हैं रूँख के

मौन भग्न हो गये हैं भूख के

हर तरफ प्रभात की नई किरण का नाम है

कोसों दूर मंजिले भी आ गई है पास में।।

नया–नया प्रभात है गली–गली

घूंघटा उघाड़ झांकती कली–कली

नयी–नयी राह है बढ़ रहे नये चरण

गीत गा वसुन्धरा का कर रहा कवि सृजन

निशि से नाता तोड़कर, सहर ने ली है अलविदा

अतिथियों की भीड़ है मरुधरा के वास में।।”[66]

साहित्यकार का दायित्व होता है कि वह समाज के कल्याण के लिए रचना कर्म करें। “रचनाकार की सदा दोहरी भूमिका होती है। वह भविष्य का द्रष्टा वर्तमान का पथ प्रदर्शक तथा भूत की सांस्कृतिक चेतना को चित्त पर सतत जाग्रत रखने वाला सजग पहरुवा होने के साथ–साथ व्यापाक लोक–हित की आकांक्षा से सम्पृक्त, अवरोधों को उखाड़ फैंकने वाला, बुराइयों को जड़मूल से नष्ट करने का संकल्प वाला क्रांतिदर्शी भी है।”[67] हाड़ौती अंचल के रचनाकारों ने इस दोहरी भूमिका को बखूबी निभाया है। इन कवियों ने जहाँ सामाजिक विसंगतियों अभावों एवं कमजोरियों को बेनकाब किया है वही राष्ट्रीय शक्ति एवं सामर्थ्य से संबंधित रचना कर्म में इनका कवि–कौशल कम नहीं रहा। कवि **रमेश वारिद** भी देशवासियों में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा–हिंसा के स्थान पर मानवता से परिपूर्ण भावों का समर्थन करते हुए कहते हैं–

“अपने ही रक्त से

अपने हृदय में सिंच रहे ईर्ष्या–द्वेष,

घृणा–हिंसा के पौधे उखाड़कर

स्वाधीनता की रजत जयंती पर

अहिंसा से इन्सानियत के बीज उगालो।”[68]

कवि **प्रेम जी प्रेम** भी हाड़ौती के ऐसे कवि हैं जिनका हृदय भी समाज एवं

राष्ट्रीयता से जुड़ा हुआ है। उन्होंने समाज व राष्ट्र को केन्द्र में रखकर अपने भावों को इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

"उस महाप्रलय की रात न हम चुप होंगे
ये अधर मौन, पर रोम रोम बोलेगा।

जब पुरवा के स्वर में स्वर साधे पंछी
अक्षर अक्षर को फिर फिर दोहरायेंगे;
उन मौन तोड़ने वाले बंजारों में
कुछ गीत हमारे शामिल हो जायेंगे;

हर पंक्ति बनेगी जब कोई चिंगारी
हर छंद तिमिर की परतों को खोलेगा।"[69]

हाड़ौती अंचल के समकालीन कवि **अतुल कनक** ने अपने युग के यथार्थ को प्रस्तुत हुए अपने उत्कृष्ट राष्ट्र प्रेम को इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

"गाँधी !
तुम्हारी महानता
प्रदर्शित करने के लिये
हमने तुम्हारे ऊपर एक फिल्म बनाई है,
इसमें तुम्हारी महानता
अद्वितीय, अकथनीय, अतुलनीय बताई है
तुम कितने त्यागी थे,
पूरी फिल्म में यही दिखाया है,
इस फिल्म पर
मात्र सत्रह करोड़ का खर्च आया है
विदेशी सहयोग से बनी यह फिल्म
पूर्ण रूपेण देश प्रेम पर आधारित है
चाँदी की लकुटिया
और रेशम की लँगोट,
बोल प्यारे बापू की जै ! जै। !! जै !!!"[70]

हाड़ौती अंचल के उपरोक्त कवियों के अतिरिक्त उक्त अंचल में राष्ट्रीयता–प्रतिबद्ध अनेक ऐसे रचनाकार हुए हैं जिनका जन्म क्षेत्र भले ही हाड़ौती अंचल नहीं रहा है परन्तु उनका कर्म क्षेत्र हाड़ौती अंचल रहा है और ये रचनाकार हाड़ौती अंचल के कवि के रूप में जाने व पहचाने जाते रहे हैं। कवि **गजेन्द्र सिंह सोलंकी** ऐसे ही रचनाकार हुए है जिनका जन्म जिला गुना (म.प्र.) में हुआ पर अपने जीवन का अधिकांश समय हाड़ौती अंचल में ही व्यतीत किया है। सांस्कृतिक राष्ट्रवादी कवि गजेन्द्र सिंह सोलंकी का काव्य **'अमर सेनानी तॉंत्या टोपे'** उदात्त राष्ट्रीय भावों से परिपूर्ण हैं। "कवि ने तॉंत्या टोपे के माध्यम से, वर्तमान की नैराश्य भरी परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए 'राष्ट्रीयता' के आधार पर समस्याओं के संधान का पथ तलाश किया है। वर्तमान में व्याप्त कटुता, निराशा और दैन्य से उत्पन्न जो तमस है, कवि का सृजनशील मन उस के प्रति सजग है। वह प्रश्नों के उत्तर अतीत में तलाशता है और फिर अतीत की मनोहारी कल्पनाओं में आप का कवि मन डूबता है, फिर भी समाधान न पा कर वर्तमान को झकझोरता है।"[71] कवि गजेन्द्र सिंह सोलंकी का **'रण रागिनी'** काव्य संकलन भी पराधीन व स्वाधीन कालों का गहन अनुभव प्रस्तुत करता है। उनकी **'आजादी की अर्धशती'** शीर्षक कविता में भारत की भौतिक उपलब्धियों व सांस्कृतिक मूल्यों की अधोगति का संगम दिखलाई देता है। उन्होंने लिखा है–

> **"यह तो सच है भौतिक उपलब्धि आसमान को छू रही**
> **आश्वस्त हो गया भवितव्य, है निर्भय सारी भू हुई**
> **कि परमाणु अस्त्रों के दादा शायद अब तो समझ गये**
> **पोकरण परीक्षण सिद्ध हुआ जग के संबंध सहज हुए**
> **प्रतिरक्षा के स्त्रोत अपरिमित अभय हुई भारत माता**
> **कोई भूल न कर बैठे शेष न रह पायेगी गाथा**
> **पर त्याग, तपस्या बलिदानों का युग बोलो कहा गया**
> **युवा वर्ग का शौर्य शील सम्मान बताओं कहां गया**
> **सुख सुविधा का भोग लोभ लिप्सा तेजी से फैल रही**
> **सत्ता के ही इर्द गिर्द हैं पाप पक यूँ ढल रही"**[72]

कवि गजेन्द्र सिंह सोलंकी ने राष्ट्र और मानवता के प्रति समर्पित होकर काव्य सृजन किया है। उन्होंने भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति विद्रोही स्वर व युवा वर्ग के लिए प्रेरणादायी एवं उत्साहवर्द्धक कविताओं की रचना की है। "श्री राधेश्याम धूत, अध्यक्ष, अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, जयपुर ने लिखा है, 'रणरागिनी' पढ़ने का अवसर मिला। सभी कविताएँ बड़ी प्रेरणादायक हैं। ये चाहें जब लिखी गई हों, लेकिन आज भी उतनी ही प्रासंगिक लगती हैं। आपने भारत के सपूतों को झकझोरा है, उसकी आज भी उतनी ही आवश्यकता है।"[73] कवि **बृजेन्द्र कौशिक** भी हाड़ौती अंचल के कवि के रूप में जाने जाते हैं।

देश के सुखद भविष्य के निर्माण हेतु भविष्य द्रष्टा की भूमिका का निर्वाह भी हाड़ौती अंचल के इस कवि ने किया है। कवि बृजेन्द्र कौशिक **'आज नहीं तो कल'** शीर्षक कविता में देशवासियों का मार्गदर्शन करते हुए कहते हैं कि–

"जब तोड़ोगे
अपने चारों ओर
अपने रोम–रोम
अपनी शिराओं के पोर–पोर पुरा
सेक्स–नशा और लफ्फाजी का
यह आत्महन्ता जाल
जब छोड़ोगे
भाग्य–भय–दिग्भ्रम
पलायन–प्रलोभन–अपकर्म
विजय तो तुम्हारी निश्चित है
लेकिन तभी
जब जोड़ोगे
अपने ही जैसे
संकल्पित

स्वाभिमानी

स्वावलम्बन से अपना रिश्ता

अगर एक दम नहीं

तो आहिस्ता–आहिसता।"[42]

कवि गजेन्द्र सिंह सोलंकी की ही तरह कवि **महेन्द्र नेह** राष्ट्रीयता–प्रतिबद्ध रचनाकार है। भले ही कवि महेन्द्र नेह का जन्म क्षेत्र भी हाड़ौती अंचल नहीं रहा हो परन्तु कर्म क्षेत्र की दृष्टि से उन्हें भी हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों में ही जाना जाता है। कवि महेन्द्र नेह ने वर्तमान दौर के राजनैतिक, सामाजिक परिवर्तनों व संघर्षों को काव्य में अभिव्यक्त किया है। देश की भ्रष्ट शासन व्यवस्था से कवि महेन्द्र नेह कसमसाते हैं। इसीलिए जेसिका हत्याकांड को आधार बनाकर उन्होंने **'लोग भूल जाएँगे'** शीर्षक कविता में समाज व देश की भ्रष्ट शासन व्यवस्था व बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति के वास्तविक स्वरूप को उद्घाटित किया है। उन्होंने लिखा है–

"बरस–दो बरस–दस बरस

चलेगा मुकदमा अदालतों में

अपनी रफ्तार से लोग

भूल जाएँगे जेसिका को

जेसिका

जो एक मॉडल थी

बेचती थी शराब

राजधानी की एक अनधिकृत बॉर में

मंत्री का बेटा/लड़ेगा चुनाव

और लोग अपना नाम

ढूँढ़ते हुए वोटर–लिस्ट में

लग जाएँगे पोलिंग–बूथ के आगे

कतारों में

मंत्री का बेटा जीत जाएगा चुनाव
लोग मालाओं से लाद देंगे उसे
लोग याद रखेंगे मंत्री के बेटे को
भूल जाएँगे जेसिका को”[75]

आधुनिक मशीनीकरण व यंत्रीकरण के तले लुप्त हो रहे मानवीय भावों पर चिन्ता प्रकट करते हुए कवि **अतुल चतुर्वेदी** ने कहा कि भविष्य में मानवीय रिश्तों एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अस्तित्व शायद संरक्षित नहीं रह पायेगा। कवि अतुल चतुर्वेदी ने ‘**आने वाले दिनों में**’ शीर्षक कविता में कहा है–

“आने वाले दिनों में
बचेगी नहीं जगह बुजुर्गों और पौधों को
जगह नींद को भी नहीं बची होगी
और निर्मल हंसी तो दिखेगी कभी–कभी बारिश–सी
अटे पड़े होंगे घर भौतिक संसाधनों से
पटी पड़ी होंगी गलियां धूर्त्तताओं
चप्पे–चप्पे पर नंगा फूलदार चाकू लिए
दुर्घटनाएँ टहल रही होंगी”[76]

सारांशतः यह स्पष्ट हो जाता है कि हाड़ौती अंचल का साहित्य वैभव राष्ट्रीयता, कला, संस्कृति एवं धर्म से जुड़ा रहा है। पराधीनकाल से लेकर स्वाधीन काल तक के उत्थान–पतन का सांगोपांग विवरण इस अंचल के हिन्दी काव्य में हुआ है। अंग्रेज शासन के अन्याय–अत्याचारों, स्वतंत्रता हेतु आत्मोसर्ग एवं बलिदान, देश–प्रेम, अतीत–गौरव, मातृ–वन्दना, समसामयिक विद्रुपताएँ एवं समस्याएँ, सामाजिक सरोकार, मानवता, विश्वबन्धुता इत्यादि की सशक्त अभिव्यक्ति का दस्तावेज हाड़ौती अंचल का हिन्दी काव्य है। प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेकर तथा परोक्ष रूप में काव्य सृजन के माध्यम से इस अंचल के साहित्यधर्मियों ने अपने राष्ट्रीय धर्म एवं कर्तव्य का निर्वाह किया है। हिन्दी काव्य जगत् में भले ही

इस अंचल के अनेक कवियों को महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं मिल पाया हो लेकिन उनके काव्य का गहन अनुशीलन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि काव्य सर्जना में इस क्षेत्र के साहित्यकारों को हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकारों से कम नहीं आंका जा सकता है। "इस अंचल में स्वातंत्र्य विहान को रक्त–तिलक किया है, यह आधुनिक इतिहास का उज्ज्वल पृष्ठ है, जिसे अनदेखा करना अक्षम्य अपराध होगा। हाड़ौती अंचल का आत्मबलिदान स्वातंत्र्य संग्राम का वह उज्ज्वल पृष्ठ है जिसमें विगत पीढ़ियों की पीड़ायें, उपेक्षायें, अपमान और बलिदान भावी पीढ़ी को प्रेरणा के लिए सुरक्षित है। क्योंकि आजादी पाने के लिए आत्मबलिदान की आवश्यकता होती ही है और इस दौर से गुजरना पड़ता ही है। पर उसकी रक्षा के लिए उससे बड़े त्याग–बलिदान की आवश्यकता है। यह समय की सीख है कि– इला न देणी आपणी..........।"[77]

इस तरह हाड़ौती अंचल के इन हिन्दी कवियों ने राष्ट्र के प्रति समर्पित अपने भावों को काव्यबद्ध किया है। स्वतंत्रता पूर्व व स्वातंत्र्योत्तर परिवेश की झलक इन कवियों के काव्य में परिलक्षित है।

♦♦♦♦

संदर्भ-सूची

1. हाड़ौती का स्वतन्त्रता आन्दोलन–सम्पादक : शांति भारद्वाज 'राकेश',– पृ.सं.–119
2. राजस्थान साहित्यकार प्रस्तुति : डॉ. ओंकारनाथ चतुर्वेदी–सम्पादक : अतुल कनक–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–पृ.सं.–51
3. स्मारिका : अखिल भारतीय साहित्य परिषद–शाखा कोटा वर्ष 1987 – पृ.सं.–34
4. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–205–206
5. हाड़ैाती का स्वतन्त्रता आन्दोलन – सम्पादक : डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'– पृ.सं.–127
6. हाड़ौती वाणी : समाज एवं संस्कृति की साहित्यिक मासिकी–श्री भारतेन्दु समिति कोटा–पृ.सं.–19
7. स्मारिका : अखिल भारतीय साहित्य परिषद शाखा, कोटा वर्ष 1987 – पृ.सं.–40
8. स्मारिका : पं गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का साहित्य और मूल्यांकन (अखिल भारतीय प्रबुद्ध परिचर्चा) दिनांक 19–20 जुलाई, 1986–पृ.सं.–44
9. चिदम्बरा–श्री भारतेन्दु समिति कोटा–जुलाई, अगस्त, सितम्बर1983– पृ.सं.–07
10. स्मारिका : अखिल भारतीय साहित्य परिषद शाखा, कोटा वर्ष 1987– पृ.सं.–36
11. झालावाड़ का साहित्य वैभव–संरक्षक : एस.एन.गुप्ता–लेखक : गदाधर भट्ट– पृ.सं.–46
12. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास : डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी– पृ.सं.–169–170
13. हाड़ौती अंचल का स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी साहित्य–श्री भाारतेन्दु समिति, कोटा– पृ.सं.–20

15. स्मारिका–अखिल भारतीय साहित्य परिषद शाखा, कोटा–वर्ष1987 पृ.सं.–38
16. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–210
17. झालावाड़ का साहित्य वैभव–संरक्षक : एस.एन.गुप्ता–लेखक : गदाधर भट्ट, पृ. सं.–79
18. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.214
19. हाड़ौती अंचल का स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य–श्री भारतेन्दु समिति ,कोटा–पृ.सं.25
20. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.304
21 अभिनन्दन ग्रन्थ : सारस्वत अनुष्ठान के मृत्युंजय मंत्र–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–प्रबंध संपादक : डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–125
22. समय की धार – डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–31
23. तेवर (काव्य संग्रह)–मुख्य सम्पादक : प्रेम प्रकाश मिश्रा 'रौशन' कानपुरी, पृ.सं.–02
24. हाड़ौती अंचल का स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य–श्री भारतेन्दु समिति,कोटा–पृ.सं.–29
25. लालकिला बनाम लोकतंत्र–द्वारका लाल 'गुप्त'–पृ.सं.–65
26. थिरक उठेगी धरती–महेन्द्र नेह–पृ.सं.–65
27. शंखनाद–बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–11
28. आवों में बारहो मास–अम्बिका दत्त–पृ.सं.–18
29. स्मारिका–अखिल भारतीय साहित्य परिषद–शाखा कोटा–वर्ष1987–पृ.सं.–53
30. चिदम्बरा– श्री भारतेन्दु समिति कोटा–अंक : जनवरी, फरवरी, मार्च1973–पृ.सं.–61

31. हवन और हुंकार–वीरेन्द्र विद्यार्थी–पृ.सं.10/11
32. वही, पृ.सं.–38
33. हाड़ौती का स्वतन्त्रता आन्दोलन–सम्पादक : डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–52
34. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–130
35. वीर सतसई–सम्पादक : डॉ. कन्हैया लाल सहल, ईश्वरदान आशिया, पतराम गौड–पृ.सं.–207
36. मधुमती : गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक–संपादक : प्रकाश आतुर–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–अंक : नवम्बर–दिसम्बर 1985 पृ.सं.–121–122
37. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–158–159
38. नवरत्न–काव्य–शतक–संकलन : सुश्री शकुन्तला रेणु–सम्पादन : युगल किशोर चतुर्वेदी–पृ.सं.–11
39. झालावाड़ का साहित्य वैभव–संरक्षक : एस.एन. गुप्ता–लेखक : गदाधर भट्ट– पृ.सं.–39
40. वही, पृ.सं.–38
41. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–175
42. वही, पृ.सं.–174
43. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी, पृ.सं.–60
44. हाड़ौती अंचल का विजय घोष–श्री भारतेन्दु समिति, कोटा–पृ.सं.–63
45. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–205
46. देश का दर्द – डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–20
47. वही, पृ.सं.–58

48. युग वाणी–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–43
49. वही, पृ.सं.–27
50. देश का दर्द–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–11
51. अभिनन्दन ग्रन्थ : सारस्वत अनुष्ठान के मृत्युंजय मंत्र–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–प्रबन्ध संपादक : डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–71
52. श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–पृ.सं.–13
53. मधुमती–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–अंक : जनवरी 2004–पृ.सं.–73
54. अभिनन्दन ग्रन्थ : सारस्वत अनुष्ठान के मृत्युंजय मंत्र–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–प्रबन्ध संपादक : डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–120
55. लालकिला बनाम लोकतंत्र–द्वारका लाल 'गुप्त'–पृ.सं.–92
56. संकल्प–गीत–द्वारका लाल 'गुप्त'–पृ.सं.–27
57. लालकिला बनाम लोकतंत्र–द्वारका लाल 'गुप्त'–पृ.सं.–54
58. समय की धार–डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–10
59. इतने वर्ष–डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–22
60. साहित्य चन्द्रिका : साहित्यिक–सांस्कृतिक मासिक पत्रिका–अंक : जनवरी–2006– पृ.सं.–01
61. राष्ट्रधर्म–सम्पादक : आनन्द मिश्र अभय–पृ.सं.–29
62. पयस्विनी– बजरंग लाल 'विकल'– पृ.सं.–62
63. लोग जहाँ खड़े हैं – अम्बिका दत्त–पृ.सं.–62
64. दमित आकांक्षाओं का गीत–अम्बिका दत्त–पृ.सं.–84
65. झालावाड़ का साहित्य वैभव–संरक्षक : एस.एन.गुप्ता–लेखक : गदाधर भट्ट–पृ.सं.–112
66. रजत किरण–श्री भारतेन्दु समिति कोटा–पृ.सं.–77
67. चिदम्बरा – श्री भारतेन्दु समिति कोटा–अंक : जुलाई–सितम्बर 1984–पृ.सं.–27

68. झालावाड़ का साहित्य वैभव–संरक्षक : एस.एन.गुप्ता–लेखक : गदाधर भट्ट–पृ.सं.–132
69. कोटा–काव्य–गंधा–सम्पादक : श्री भारतेन्दु समिति कोटा–पृ.सं.–49
70. स्मारिका : जनकवि जमना प्रसाद ठाड़ा 'राही', प्रथम स्मृति समारोह–जनवादी लेखक संघ, कोटा–पृ.सं.–23
71. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–236
72. रण–रागिनी–गजेन्द्र सिंह सोलंकी– पृ.सं.–77–78
73. श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी–सम्पादक : डॉ. सरला अग्रवाल–पृ.सं.–21
74. दूसरों के सहारे नहीं–बृजेन्द्र कौशिक–पृ.सं.–59–60
75. थिरक उठेगी धरती–महेन्द्र नेह–पृ.सं.–38
76. नदी के कछार पर–सम्पादक : अम्बिकादत्त–पृ.सं.–39
77. राजस्थान साहित्यकार प्रस्तुति : डॉ. ओंकारनाथ चतुर्वेदी–सम्पादक : अतुल कनक–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–पृ.सं.–55

द्वितीय अध्याय

हाड़ौती अंचल में राष्ट्रीय भावना के प्रतिनिधि हिन्दी रचनाकार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय

हाड़ौती अंचल में राष्ट्रीय भावना के प्रतिनिधि हिन्दी रचनाकारः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

शौर्य, संस्कृति एवं साहित्य के धनी हाड़ौती अंचल का राजस्थान प्रान्त में विशिष्ट स्थान है। उक्त अंचल के राजपूताना शौर्य व संस्कृति ने अपनी विशिष्ट पहचान तो स्थापित की ही है यहाँ की उर्वरा भूमि में जन्में प्रसिद्ध साहित्य सर्जकों ने भी उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाओं द्वारा यशस्विता अर्जित की है। यहाँ के हिन्दी साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य सम्पदा को निरन्तर सम्पन्नता प्रदान की है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी इन साहित्यकारों ने साहित्य की सभी विधाओं में लेखन–कर्म द्वारा अपनी प्रतिभा को उजागर किया है। काव्य विधा में भावों की विविधता और भाषायी मधुरता देखते बनती है। श्रृंगार, दर्शन, प्रकृति, भक्ति, राष्ट्रीयता, सामाजिकता इत्यादि विविध आयामों के दुःखद और सुखद चित्र इनकी काव्य–रचनाओं में विद्यमान है। इस अंचल के कुछ साहित्य साधकों को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई तो अनेक साहित्यकार राष्ट्रीय हिन्दी काव्य की मुख्यधारा में नहीं जुड़ पाये। प्रारम्भ से वर्तमान तक हाड़ौती की हिन्दी काव्य परम्परा समृद्ध रही है। विशिष्ट रचनाकारों के चिन्तन एवं भाव जगत से जुड़ी कविताओं ने हाड़ौती अंचल को ज्ञानात्मक सम्पन्नता प्रदान की है। इस अंचल की काव्य रचनाओं में राष्ट्रीय भाव प्रमुख विषय रहा है। स्वतंत्रता पूर्व काल में **पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न', सुधीन्द्र** जैसे रचनाकारों ने राष्ट्रीय जागरण का जो शंखनाद किया उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। राष्ट्रीय स्वरूप पर आधारित कवि **मदन लाल पवाँर** की कृति 'क्रान्ति–किरण' ने जनमानस में देश–प्रेम की भावना का विकास किया तथा राष्ट्रीय काव्यधारा को जो गतिशीलता प्रदान की वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। उस समय की सामाजिक स्थितियाँ और नैतिक विश्वास भी इनकी रचनाओं के विषय थे। स्वतंत्रता के बाद हाड़ौती अंचल में हिन्दी रचनाकारों का एक बड़ा समूह रचना कर्म

से जुड़ा। **डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गी 'विजय', प्रेमचन्द्र विजयवर्गीय, डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश', द्वारका लाल 'गुप्त', बजरंग लाल 'विकल'** तथा **अम्बिका दत्त चतुर्वेदी** जैसे राष्ट्रीय भावना के प्रतिनिधि रचनाकारों ने देशभक्ति, उन्नति, समृद्धि और राष्ट्र–प्रेम आदि भावनाओं को निरन्तर ताकत प्रदान की है। इनकी काव्य चेतना सामान्य जन की पीड़ा से भी सम्बद्ध रही है। डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' ने सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए भरसक प्रयत्न किये हैं तो कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने सामाजिक विसंगतियों एवं राष्ट्रीय दुर्दशा से चिन्तित होकर राष्ट्रोद्धार हेतु काव्य–रचनाओं का सृजन किया है। डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश' समय और परिस्थितियों के अनुरूप कविताओं की रचना करते रहे वहीं कवि द्वारका लाल 'गुप्त' ने लोकतांत्रिक व्यवस्था के खोखलेपन का पर्दाफाश करते हुए समकालीन परिवेशगत सच्चाईयों को काव्य में अभिव्यक्त किया है। कवि बजरंग लाल 'विकल' की आंतरिक संवेदना और अनुभूतियाँ राष्ट्रीय समस्याओं से अधिक जुड़ी रही हैं। कवि 'विकल' ने देश की अन्धी प्रगति को सही दिशा प्रदान करने की कोशिश की है। कवि अम्बिका दत्त की संवेदना सामान्य जन की पीड़ा व विवशता से अधिक जुड़ी हुई है। दमित व वंचित वर्ग में उत्कट जिजीविषा के भाव उत्पन्न करने का प्रयास कवि अम्बिका दत्त ने किया है वह उनकी परोक्ष राष्ट्र–सेवा को दर्शाता है। निरन्तर क्षय हो रही राष्ट्रीय भावना के उन्नयन हेतु इन महान् कवियों द्वारा किया गया प्रयास सार्थक एवं सराहनीय है।

हाड़ौती अंचल में राष्ट्रीय भावनाओं के इन प्रतिनिधि रचनाकारों के कृतित्त्व में उनके व्यक्तित्व की छवि भी परिलक्षित हो जाती है। वैसे भी किसी की विशिष्ट साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व का सही आंकलन उसकी रचनाओं के आधार पर ही किया जा सकता है। रचना में निहित भावों से कवि के निजी मनोभावों का अनुमान लगाया जा सकता है। रचनाकार की चितस्थ अनुभूतियाँ उनकी रचनाओं में अवश्य प्रकट होती है। वैसे भी कविता कवि के मनोभावों की सृष्टि होती है। कवि का निजी स्वभाव, चिंतन, सोच व विचारों का समायोजन उसकी रचनाओं में नज़र आ ही जाता है। हाड़ौती के इन साहित्य मनीषियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को

प्रस्तुत करने का प्रयास शोध ग्रंथ के इस द्वितीय अध्याय में किया गया है। हाड़ौती अंचल के काव्य वैभव को समृद्ध करने वाले इन प्रतिनिधि रचनाकारों के योगदान पर हमें गर्व है। दिवगंत साहित्यकार पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न', सुधीन्द्र, मदन लाल पवाँर, प्रेमचन्द विजयवर्गीय, डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश' अपनी साहित्य सेवा से आज भी अमर है। साहित्य सृजन में निरन्तर सक्रिय रचनाकार–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' द्वारकालाल गुप्त, बजरंग लाल ''विकल'' व अम्बिका दत्त चतुर्वेदी की काव्य–कृतियाँ राष्ट्रीय काव्यधारा की विकास यात्रा को और अधिक समृद्ध करेगी ऐसी हम आशा करते हैं।

2:1 पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' – व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हिन्दी भाषा के प्रेमी व उन्नायक श्री गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का जन्म 06 जून 1881 ई. को नागर ब्राह्मण परिवार में झालरापाटन में हुआ था। इनके पिता श्री ब्रजेश्वर शर्मा ने व माँ सोपन्ना देवी के संस्कारों ने गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' को एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के रूप में विकसित किया। इनके पिता श्री ब्रजेश्वर शर्मा ने इनको परिपूर्ण ज्ञान दिलाने के लिए विभिन्न भाषाओं में शिक्षा का प्रबन्ध घर पर ही करवाया था। "नवरत्न जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनका दर्शनीय व्यक्तित जिस व्यक्ति ने एक दफा देख लिया वो इतना प्रभावित हो जाता था कि उन्हें जीवन भर भूल नहीं सकता। लम्बा कद, सुडौल शरीर, गौर वर्ण उन्नत ललाट, दूरदर्शी, विवेकी, धीर–गंभीर, सदैव चिन्तन–मनन में लीन, हाथ में पुस्तक लिए हुए और वेश में धोती, खादी का कुर्ता और गाँधी टोपी। राज दरबार में राजगुरू 'नवरत्न' जब जाते तो उनका पहरावा होता पाजामा, अचकन, सिर पर पगड़ी या साफा और गले में अरीय वस्त्र। 'नवरत्न' जी महाराज राणा राजेन्द्र सिंह जी के काव्य गुरु एवं राजगुरु रहे थे।"[1] महाराजा श्री भवानी सिंह ने इनको 'नवरत्न' की उपाधि प्रदान की थी। साहसी, स्वाभिमानी, भावुक, आत्मनिर्भर गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' समाजसेवी व सच्चे देशभक्त थे। परतन्त्र भारत की कठिन परिस्थितियों को देखकर गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' में देशभक्ति की भावना गहरायी तक जम गयी थी। "परतन्त्र भारत की तत्कालीन अधोदशा को देखकर उनका अन्तर द्रवित हो गया. उन्होंने भारती के द्वारा भारत की सेवा का बीड़ा उठाया. उन्होंने देखा कि प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र की अपनी एक भाषा है और उसी भाषा के माध्यम से बच्चे का परिपूर्ण शिक्षण होता है, भारत ही एक ऐसा अभागा देश है जिसकी अपनी कोई एक राष्ट्रभाषा नहीं है और हिन्दी भाषा में बालकों के–देश की भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण सम्बन्धी कोई सामग्री भी नहीं है. उनका स्वाधीन मन इस ओर संलग्न हो गया. उन्होंने भारत राष्ट्र की एक राष्ट्रभाषा ''हिन्दी'' के प्रचार–प्रसार एवं साहित्य संवर्द्धन का संकल्प लिया. उन्होंने जिस भी साहित्य में सुन्दर कृतियाँ देखी उनका रूपान्तर हिन्दी में किया और दूसरों को प्रेरणा देकर

करवाया."[2] हिन्दी भाषा से परम अनुराग रखने वाले इस व्यक्तित्व ने हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार व उत्थान के लिए भरसक प्रयत्न किया। काव्य रचना के अतिरिक्त अनेक सभा व समितियों के माध्यम से इन्होंने हिन्दी प्रचार का कार्य किया। "हिन्दी भाषा को वे राष्ट्र की एकता का हेतु मानते थे। उन्होंने अपनी पूर्ण निष्ठा के साथ राजस्थान व मध्यप्रदेश के पूर्वांचलों में हिन्दी के प्रचार–प्रसार तथा विस्तार का जीवन भर कार्य किया। उन्होंने सन् 1912 में झालरापाटन में राजपूताना हिन्दी साहित्य सभा की, भरतपुर में हिन्दी साहित्य समिति की, सन् 1914 में मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना की। जयपुर में सन् 1906 में गुलेरी जी व झांवरमल जी को प्रेरित कर 'साहित्य संसद' नाम से संस्था बनवाई।"[3] इनका हिन्दी प्रेम इतना प्रबल था कि बम्बई में हिन्दू महासभा के अधिवेशन में मालवीय जी को यह तक कह डाला था कि– "मालवीय जी हिन्दू यूनिवर्सिटी के द्वारा देश का मान पा सकते हैं किन्तु गिरिधर शर्मा से सम्मान तो वे तभी पा सकेगें जब वे हिन्दू यूनिवर्सिटी से हिन्दी यूनिवर्सिटी बना देंगे।"[4] देशभक्ति एवं हिन्दी भाषा की सेवा में कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' निरन्तर लगे रहते थे। "अत्यधिक काव्य–साधना के फलस्वरूप 'नवरत्न' जी पचास वर्ष की वय–सन्धि में ही अपने नेत्रों की ज्योति खो बैठे थे।"[5] इतना सब होने के बावजूद ये काव्य–साधना में लगे रहे थे।

स्वराज्य के आकांक्षी एवं स्वाधीनता का प्रबल समर्थन करने वाले इस कवि का व्यक्तित्व राष्ट्रीय भावों से परिपूर्ण रहा था। "राष्ट्र–प्रेम के कारण ही नवरत्न जी राष्ट्र–नेताओं के प्रति आदर भाव के साथ समर्पित थे. उनके लिए गोपालकृष्ण, गाँधी, बालगंगाधर तिलक पुरुषों के नाम नहीं थे, दिव्य आदर्श पुंज थे. पंडित जी इन राष्ट्र–नेताओं के महान जीवनादर्शों से अपने हृदय का कोना–कोना प्रकाशित करते रहते थे।"[6] अपने युग में विचारों में असाधारण जीवन जीने वाले इस कवि ने अपना निजी जीवन बहुत साधारण तरीके से बिताया था। ब्राह्मणोचित सादा खान–पान व रहन–सहन इनको पसंद था जीवन की शुरूआत में इनको आर्थिक कष्ट नहीं थे परन्तु जीवन के अंतिम पड़ावों में इनको आर्थिक कष्टों का भी सामना करना पड़ा था। लेकिन जीवन के अंतिम पड़ाव तक अगर कुछ नहीं बदला था तो वह था उनका

पुस्तक–प्रेम। पुस्तकों में विशेष रूचि होने के कारण उनके घर में पुस्तकें प्रचुर मात्रा में दिखाई देती थी। अपने पुस्तकालय को वे स्वर्ण का भण्डार कहते थे–

"अखण्ड भण्डार भरा हुआ है, सुवर्ण का जो मम गेह में ही,
बताइऐ है मम मित्र क्यों लूं किसी के फिर दान को मैं?"[7]

साहित्य के प्रति गहन रुझान का ही परिणाम था कि अंधे हो जाने के बाद भी इनका स्वाध्याय, लेखन एवं चिन्तन मनन् कार्य बंद नहीं हुआ था। "सन् 1935 में वे श्री भारतेन्दु समिति कोटा के अध्यक्ष बने और इस संस्था को आपने पुनर्जीवन एवं स्थायित्व प्रदान किया।"[8] '**विधाभास्कर**' नामक मासिक पत्र को भी कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' ने निकाला था। अपने कवि कर्म द्वारा उन्होंने हिन्दी साहित्य को निरन्तर सम्पन्न बनाया था। अपनी इसी साहित्य सेवा के लिए वे **"साहित्यवाचस्पति"** जैसे सम्मान से भी अलंकृत हुए हैं।

कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का व्यक्तित्व ही नहीं उनका रचना संसार भी बहुआयामी रहा था था। हिन्दी भाषा के अतिरिक्त संस्कृत, अरबी, फारसी, बँगला व उर्दू इत्यादि भाषाओं के भी जानकार थे। कवि 'नवरत्न' ने गद्य और पद्य दोनों में साहित्य सृजन कार्य किया। नाटककार, अनुवादक और कवि के रूप में इन्होंने समृद्ध साहित्य भण्डार का निर्माण किया था। "उमर खैय्याम रूबाईयों एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीतांजलि का सर्वप्रथम हिन्दी पद्य में अनुवाद हिन्दी साहित्य को उनकी अप्रतिम देन है। दिनकर जी, निराला जी, अयोध्या सिंह उपाध्याय जैसे साहित्य मनीषियों ने उनकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। उनके संस्कृत हिन्दी में प्रकाशित–अप्रकाशित ग्रन्थों की संख्या ८३ है। प्रमुख मौलिक ग्रंथ हैं– भवानी सिंह कारक रत्नम्, सद्वृत्त पुष्पगुच्छः, गिरधर सप्तशती, संस्कृत सतसई परम्परा अनुवाद ग्रन्थों में अमर सूक्ति सागर, करुणा निधि, प्रेम पयोधि, नीति सौन्दर्य, कविता कुसुम, अर्थशास्त्र, जैन ग्रन्थावली, गिरधर गरिमा, नवरत्नोप्रदेश, भ्रमरगीत प्रमुख हैं।"[9] हिन्दी में उनकी मौलिक कविताएँ और गद्य लेख तात्कालीन हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं '**सरस्वती**', '**वीणा**', '**कर्मवीर**' इत्यादि में निरन्तर प्रकाशित होती

रहती थी। कवि 'नवरत्न' की हिन्दी की इन मौलिक रचनाओं में देश प्रेम, हिन्दी के प्रति असीम अनुराग, आत्मोसर्ग का भाव एवं जन–जागरण की भावनाएँ अभिव्यक्त हुई है। "'गिरिधर– गरिमा' पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जी की सर्वोत्कृष्ट हिन्दी रचना है। इसमें देशभक्ति का स्वर सर्वोपरि है। उनकी धर्म भावना यहाँ राष्ट्र धर्म के प्रति समर्पित है। यहाँ भारतमाता उनकी आराध्या देवी है। अपनी इस कृति द्वारा वे द्विवेदी युग के राष्ट्रभक्त सत्कवियों–हरिऔध जी, गुप्तजी, माखनलाल जी, सोहनलाल द्विवेदी, सियारामशरण गुप्त आदि की पंक्ति में समादृत हैं।"[10] 'गिरिधर–गरिमा' में संकलित कविताओं में से 'वन्देमातरम' शीर्षक गीत एक ऐसी मौलिक रचना है जिसमें देश के प्रति उत्कृष्ट लगन की भावना विद्यमान है। इस तरह उनकी 'राष्ट्रगान' कविता में देश के प्राकृतिक सौन्दर्य की शोभा व राष्ट्रीय एकता का स्वरूप अद्भूत चमत्कार उत्पन्न कर देता है। कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' अपनी मौलिक कृति '**मातृ वन्दना**' में देश के कल्याण हेतु सर्वस्व समर्पण की भावना को उद्घाटित करते है। सन् 1902 में प्रकाशित इस कृति में अपनी देश प्रेम की भावना को प्रस्तुत करते हुए कवि ने कहा है–

"मेरो धन, मेरो तन, मेरा मन, मेरो जीवन
मेरो सब लगें प्रभो! देश की भलाई में।"[11]

कवि 'नवरत्न' ने '**भारत माता**' शीर्षक कविता में राष्ट्रीय गरिमा और राष्ट्रीय मुक्ति का भावात्मक स्वरूप परिलक्षित होता है। देश की सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रेरणादायी भावों को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने लिखा है–

"राम–कृष्ण के भाई हैं हम द्रोण–भीष्म के भाई हैं हम
अर्जुन, विक्रम के भाई हम, इस नाते सबके भाई हम
इसमें जन्म लिये से पाया ऐसा पद हमने मन भाया
करें सकल सुत ध्वनि सुखदाता जय जय जय जय भारत माता।"[12]

परतंत्र भारतीय परिवेश में देश की आजादी की लड़ाई में भारतीय जन की भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' में उत्साहवर्द्धक

रचनाओं का सृजन किया है। उन्होंने **'देश की भलाई'** शीर्षक कविता में राष्ट्रीयता से संबंधित क्रान्तिकारी सोच एवं विचारों को प्रस्तुत करते हुए आज़ादी का शंखनाद प्रस्तुत किया है। कवि 'नवरत्न' ने कहा है–

"अपने ही लिये जियो मर गयो मानव तो
जी गयो वही जो मरयो देश की भलाई में"[13]

देश की युवा पीढ़ी में देश प्रेम का जोश एवं उत्साह का संचार करते हुए कवि ने उनको देश–सेवा के लिए प्रेरित किया है। यही कारण है कि **'उद्बोधन'** शीर्षक रचना में कवि ने जनजागरण का मंत्र प्रस्तुत किया है। यथा–

"तेजस्वियों, तेज जरा दिखा दो
सम्पूर्ण विद्या सबको सिखा दो
जो सो रहे है उनको जगा दो
आलस्य सारा उनका भगा दो।"[14]

गुलामी के उस संकटकालीन परिवेश में कवि ईश्वर से भी देश की आज़ादी के लिए प्रार्थना करते हैं। उनकी आध्यात्मिक भावना में देशभक्ति का स्वरूप दिखाई देता है। कवि ने **'ईश्वर प्रार्थना'** शीर्षक कविता में ईश्वर के प्रति अपने भक्ति भावना को व्यक्त करते हुए कहा है–

"नगर हमारा अति सुन्दर हो, राज्य हमारा सुन्दर तर।
राज चलावें न्याय नीति से, धर्म मूर्ति न्यायी नृपवर।।
यद्यपि प्रान्त हमें है प्यारा, देश हमारा भारत है।
मानव जाति हमारी जाति, सर्वोत्तम शोभारत है।।"[15]

कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' में देशप्रेम की भावना जितनी गहराई तक विद्यमान थी उतना ही गहन प्रेम हिन्दी भाषा के प्रति भी था। हिन्दी के अनन्य सेवी इस कवि ने भले ही अनेक भाषाओं में ज्ञान अर्जित किया था परन्तु हिन्दी के प्रति उनका विशेष लगाव था। हिन्दी की महत्ता को उन्होंने अपनी कविताओं में भी किया है। **'हिन्दी का महत्त्व'** शीर्षक कविता में उनके विचार इस प्रकार प्रस्तुत हुए है–

"जितनी अनार्य आर्य भाषा जग जाहिर है
फारसी अरबी तुर्की सब मन आनी हो
जनम वृथा है तो भी मेरे जान मानव को
हिन्द में जनम पा के हिन्दी जो न जानी हो।"[16]

कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' ने पद्य साहित्य के साथ-साथ गद्य साहित्य में भी लेखन कार्य था। नाटककार के रूप में भी आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। "आपने 'राई का पर्वत', प्रेमकूल, जयाजयंत व चित्रांगदा आदि को हिन्दी में लिखकर झालावाड़ की इस घाटी को जो अत्यधिक 'सांस्कृतिक' महत्त्व की थी, को गौरवशाली बनाने में अपना योग दिया। भवानी नाट्यशाला को चमकाया।"[17]

साराशंतः कहा जा सकता है कि हाड़ौती अंचल के कवि पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' देशभक्त कवि व हिन्दी भाषा के अनन्य सेवक थे। जीवन के अंतिम क्षणों तक उनका हृदय देश-प्रेम एवं साहित्य प्रेम से जुड़ा रहा था। रुग्णावस्था के कारण भले ही सन् 1961 में उनका देहान्त हो गया था लेकिन अपने विपुल साहित्य सृजन एवं अपने मानवतावादी विचारों द्वारा वे आज भी अमर है। हाड़ौती के इस यशस्वी कवि ने हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य को तो गति प्रदान की ही है साथ ही संपूर्ण हिन्दी साहित्य को भी समृद्ध किया है।

2 : 2 सुधीन्द्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

किसी भी कवि के व्यक्तित्व और कृतित्व का सही आंकलन उसकी रचनाओं के आधार पर ही किया जा सकता है। अपनी काव्य–कृतियों की प्रतिभा से प्रकाश में आये **कवि सुधीन्द्र** हिन्दी के जाने– पहचाने कवि बने थे। 15 मार्च सन् 1917 ई. को खैराबाद में जन्में कवि सुधीन्द्र स्वतंत्रतापूर्व युग के सशक्त व्यक्तित्व थे। सुधीन्द्र के पिता श्री गोकुल प्रसाद व माता चम्पादेवी ने इनको बाल्यावस्था से ही राष्ट्रीयता के भावों से भर दिया था। "पिता–माता उन्हें किसी सतरंगी जिन्दगी के सपने नहीं दिखाते। खैराबाद की गरीब और खामोश बस्तियों के बीच सुधीन्द्र और उनके भाई–बहन, माता–पिता से खादी पहनना सीखते हैं। माँ राष्ट्र प्रेम और बलिदान की कहानियाँ सुनाती हैं। एक छोटे से घर में सिर्फ भोजन के समय जलने वाली चिमनी की रोशनी में पढ़ाई होती है। बाहर एक हलचल भरा स्वाधीनता का संघर्ष चल रहा है।"[18] सुधीन्द्र पाँच बहन–भाइयों में से अपने परिवार में दूसरी संतान थे। बचपन में इनका नाम ब्रह्मदत्त था। ये महाराणा प्रताप के ओजमय, स्वाभिमानी व राष्ट्रप्रेमी व्यक्तित्व से प्रभावित थे। "थोलंबिया जी ने सुधीन्द्र के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि पाँचवी कक्षा में प्रताप नाटक खेला गया। जिसमें उन्होंने पृथ्वीराज का अभिनय किया। उन्होंने ही 'माई एहड़ा पूत जण, जहड़ा राण प्रताप' आदि राजस्थानी दूहों का हिन्दी में रूपान्तरण किया। पाँचवी कक्षा में पढ़ने वाले बालक की काव्य प्रतिभा का यह उल्लेखनीय उदाहरण है।"[19] महाराणा प्रताप के जीवन का ही शायद प्रभाव था कि अन्तर्मुखी स्वभाव वाले कवि सुधीन्द्र ने स्वाभिमान एवं मेहनत को जीवन में पूरी तरह से उतारा था। आर्थिक अभावों के कष्टों में जीवन बीताने पर भी स्वाभिमान एवं देश सेवा हेतु इन्होंने पुलिस की नौकरी को छोड़ दिया था। "एक तरुण और राष्ट्र–भक्त कवि के लिए पुलिस–नौकरी के तनावों को सहन करना आसान नहीं था। वह एक दुर्गम घाटी थी जिसके पार सुधीन्द्र स्वतंत्र भारत के सपने देखते थे। पुलिस देशभक्तों के विरुद्ध मुकदमें चला रही थी, जासूसी कर रही थी। उन्हें हत्याओं के अपराध में फंसा रही थी, दंडित कर रही थी। दरअसल पुलिस आजादी के आन्दोलन को ध्वस्त करने के लिए तरह–तरह

की साजिशों में लगी थी। सुधीन्द्र को खड़े रहने के लिए कोई जमीन नहीं बची थी। उनके लिए ये सबसे बुरे दिन थे।"[20] इसमें कोई सन्देह नहीं है कि देश के प्रति असीम अनुराग उनके मन में था। स्वदेशी वस्तुओं के प्रति वे सदैव आकर्षित रहे थे। उच्च आदर्शों में आस्था रखने वाले इनके परिवार के संस्कारों का ही शायद प्रभाव था कि कवि सुधीन्द्र का सहज सरल चित्त राष्ट्र के प्रति समर्पित रहा था। "जैसा कि उनका स्वभाव था, वे कट्टर राष्ट्रवादी भावनाओं के उद्वेलित सागर-समान थे। वे अपने पहनावे में भी खादी का ही प्रयोग करते थे। कॉलेज के दिनों में भी वे खादी का कुरता धोति और स्वदेशी चप्पलों का प्रयोग करते और यही उनकी प्रिय पोशाक भी थी।"[21] स्वराज्य का आकांक्षी यह कवि स्वाधीनता आन्दोलन में संलग्न रहा था। मन, वचन एवं कर्म से सदैव राष्ट्र के प्रति समर्पित रहते हुए आजादी की चेतना और राष्ट्रीय समस्याओं को इन्होंने अपने जीवन व काव्य का आधार बना लिया था। स्वाधीनता के संघर्षकाल में कवि सुधीन्द्र ने जिन क्रान्तिकारी भावों के द्वारा जनचेतना जाग्रत की थी वह इनके राष्ट्रीय काव्यकार होने का प्रमाण प्रस्तुत करती है। कवि सुधीन्द्र ऐसे व्यक्तित्व थे जो राष्ट्र सेवा हेतु सदैव तत्पर रहते थे। "आप हरीभाउ उपाध्याय के साथ दिल्ली चले गए और जीवन साहित्य नामक राष्ट्रीय विचारधारा के प्रमुख पत्र का सम्पादन किया। आप राजस्थान के मंत्री अभिन्न हरि जी के डेढ़ वर्ष तक सैक्रेटरी भी बने रहे। इस प्रकार यायावरी जीवन यात्रा के मध्य, आपने राष्ट्र, राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता की चेतना को अपनी काव्य रचना का आधार बनाया।"[22]

कवि सुधीन्द्र के व्यक्तित्व और कृतित्व में कुछ खास अन्तर नहीं है। सुधीन्द्र युग चेतना के कवि थे, अतः अपने कवि कर्त्तव्य का निर्वहन करते हुए उन्होंने दिव्य महापुरुषों को काव्याधार बनाकर देशवासियों के कर्म-कौशल को जाग्रत करने का प्रयास किया था। परतंत्र काल में देश की आज़ादी के लिए किये जाने वाले प्रयासों में जन-जागरण का कार्य महत्त्वपूर्ण भी था। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपनी प्रथम कृति '**शंखनाद**' में कृष्ण एवं महाराणा प्रताप जैसे महापुरुषों के माध्यम से उदात्त मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा करते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति का आह्वान व संदेश प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया था। सन् 1937 में प्रकाशित

'शंखनाद' स्वतन्त्रता व स्वाभिमान के भावों से समाविष्ट ऐसा काव्य ग्रंथ है जिसमें संकलित कविताएँ समय की जरूरत थी। "यह दरअसल मानववाद, रवीन्द्र और गांधी का प्रभाव ही है कि 'कामना' जैसी कविता में सुधीन्द्र 'दलितों के दृग से ढलती आँसू की बूंद' बन जाना चाहते हैं। इस कविता का यह अंश उल्लेखनीय हैः

जगत की सेवा कर निष्काम
बने हैं जो अकलुष-अकलंक
चरण रज उनका छू कर जगत
भला रह जाएगा क्या रंक?
मोल है जिनका जग में नहीं,
बोल है जिनका स्नेह-सना
मुझे माँ, दलितों के दृग से ढलती
आँसू की बूँद बना"[23]

कवि सुधीन्द्र ने अंग्रेज शत्रुओं का प्रतिरोध करने के लिए उद्दाम आवेग से परिपूर्ण रचनाओं का सृजन किया था। अपनी **"जौहर"** कृति में उन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध लोगों को क्रांतिकारी संघर्ष की ओर अग्रसर किया था। चित्तौड़ के सम्मान के लिए राजपूतों के द्वारा किये गये ऐतिहासिक युद्ध को आधार बनाकर कवि ने स्वतंत्रता आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयत्न किया था। कवि ने "जौहर" के संदेश और उसकी वर्तमान उपादेयता पर स्वयं टिप्पणी देते हुए स्पष्ट किया है कि- "मुझे तो आज भी लग रहा है कि ठीक वैसी ही परिस्थितियाँ आज हमारे चारों और है जो उस समय मेवाड़ पर घिरी थी अन्तर यही है कि मेवाड़ आज भारत व्यापी है और हिन्दू मुसलमान (अन्य धर्मों सहित) आज एक ही देश के अभिन्न अंग है। हम अपने सामान्य शत्रु के आक्रमण का प्रतिरोध कैसे करें? यह प्रश्न चिन्ह आज भी हमारे जीवन क्रम में लगा है और भविष्य में भी रहने वाला है।"[24] अंग्रेज शासकों के अत्याचारों के विरुद्ध क्रांति की ज्वाला एवं भारतीय जन को राष्ट्रीयता की प्रेरणा देना कवि सुधीन्द्र का काव्याध्येय था। 'शंखनाद' हो या 'जौहर' या फिर उनकी कृति 'प्रलय वीणा' एक व्यापक परिवर्तन लाने की चेष्टा कवि

सुधीन्द्र ने की थी। सन् 1941 में प्रकाशित हुई **'प्रलय वीणा'** देश की शोषित अवस्था के विरुद्ध क्रान्तिकारी ओजस्वी विचारों का प्रस्तुतीकरण है। इस कृति के मंगलाचरण में ही कवि सुधीन्द्र ने अपने मनोभावों को स्पष्ट कर दिया था। यथा–

"आज जगा दे ओ प्रलयंकरि! मेरी अमर प्रलय की वीणा
फूले फले अमरवल्ली–सी, संसृति जीवन–सुधा विहीना
जाग जाग कल्याणि! लगा दे, आग आज इस रक्तोत्सव में
उठ, उठ वीणापाणि! जगा दे, अमर राग भव के जन रव में"[25]

प्रबल राष्ट्रीय आवेगों के अतिरिक्त कवि सुधीन्द्र ने व्यक्तिगत भावों का चित्रण भी अपनी काव्य कृतियों में किया है। उनकी रचनाएँ, **'अमृत लेखा'**, **'प्रेयस'** में अध्यात्म, प्रणय, सौन्दर्य से जुड़ी व्यक्तिगत आकुलताओं व भावनाओं का रूप परिलक्षित होता है। "'अमृत लेखा' में कवि का अपनी व्यक्तिगत बेचैनियों के साथ एकालाप है।"[26] सुधीन्द्र की 'प्रेयस' में भी प्रणय व सौन्दर्य के भाव समाहित है। यथा–

"मैं शक्ति तुम्हारी, तुम सुन्दरता मेरी,
विश्वास तुम्हारा मैं, तुम मेरी आशा!
अव्यक्त भाव मैं प्रिये तुम्हारे मन का,
तुम मेरे प्राणों की चिर–परिचित भाषा!"[27]

कवि सुधीन्द्र ने उपरोक्त मौलिक रचनाओं के अतिरिक्त अनेक रचनाओं का अनुवाद कार्य भी कुशलता से किया था। एक अनुवादक के रूप में उन्होंने अच्छी सफलता अर्जित की थी। "'टैगोर की गीतांजलि' उन्हीं के द्वारा अंग्रेजी में अनुदित होकर (तनिक सहायता उन्होंने यीट्स से ली थी और प्रेरणा एण्ड्रूज से) अपने सौन्दर्य को रक्षित रख सकी; पर डॉ. सुधीन्द्र द्वारा प्रस्तुत अनुवाद में भी उसका सौंदर्य खोया नहीं है–अक्षुण्ण रहा है।"[28] सुधीन्द्र जी के द्वारा किया गया **'गीतांजलि'** का अनुवाद बहुत प्रभावात्मक रहा है।

कवि सुधीन्द्र ने अपनी प्रतिभा द्वारा कुछ नाटक एवं एकांकियों का भी सृजन किया था। "डॉ. सुधीन्द्र कृत 1–6 'राम–रहमान' (1940–45) 2–ज्वाला और

ज्योति (1952) 3–इन्द्रधनुष तथा 'एकांकिनी' इत्यादि नाटक संग्रह प्रकाशित हुए हैं। वनस्थली विद्यापीठ में कन्याओं को अभिनय कराने की दृष्टि से आपने 'राम–रहमान' संग्रह के तथा और नाटक लिखे थे।"[29] इन सभी नाटकों एवं एकांकियों के मूल में राष्ट्र के नव–निर्माण की भावना विद्यमान थी।

अंततः कहा जा सकता है कि कवि सुधीन्द्र हाड़ौती अंचल की राष्ट्रीय काव्यधारा के अन्तर्गत ऐसे सशक्त कवि थे जिनके काव्य–कर्म में प्रखर–राष्ट्रीय भावना का तेज विद्यमान था। राष्ट्रीय भाव को समेटे उनका व्यक्तित्व एंव कृतित्व माँ भारती की सेवा में ही समर्पित रहा। कवि सुधीन्द्र का न केवल हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में अपितु सम्पूर्ण भारतीय हिन्दी काव्य में भी महत्त्वपूर्ण अवदान रहा है। मात्र 38 वर्ष की अल्पायु में ही इस राष्ट्रीय कवि का निधन हिन्दी साहित्य की बहुत बड़ी क्षति थी। परतंत्रता के लिए प्रेरणा प्रदान करने वाले इस कवि का योगदान कभी नहीं भुलाया जा सकता। इनका व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व दोनों दोनों वन्दनीय है।

2:3 कवि मदन लाल पवाँर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हाड़ौती अंचल में स्वतंत्रता पूर्व के कवि श्री मदनलाल पवाँर एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिनकी प्रतिभा का सम्मान स्वातंत्र्योत्तर समाज नहीं कर पाया तथा साहित्य क्षेत्र में भी उनके साहित्यिक योगदान की उपेक्षणीय स्थिति ही अधिक रही। शायद यही कारण है कि उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व के संबंध में अधिक प्रामाणिक जानकारी नहीं मिल पाती हैं। कवि पवाँर के साथ सृजनशील रहे रचनाकारों से ही उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से जुड़ी कुछ जानकारियाँ उपलब्ध हो सकीं हैं। डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' जी से मिली जानकारी के अनुसार कवि मदनलाल पवाँर का जन्म **मण्डाना, जिला कोटा** में हुआ था। मण्डाना में ही इन्होंने अध्यापक पद पर कार्य किया था। डॉ. नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी ने कवि मदन लाल पवाँर से संबंधित अपने लेख 'हमारे पुरोधा मास्साब मदन लाल पवाँर' के अन्तर्गत लिखा है– "वे सन् 1947 से पहले से लिख रहे थे। कोटा के सम्मानित कवि थे परन्तु अचानक राजनीतिक पंडितों के साहित्य में सक्रिय होने से तब से सही साहित्यकर्मियों की उपेक्षा प्रारम्भ होने लग गई थी। मुझे बाद में कुछ मित्रों ने बताया था कि वे नशे में गोष्ठियों में आ जाते थे, उन्हें बाहर निकालना पड़ता था।"[30] उपेक्षणीय जीवन जीते हुए भी कवि का साहित्य के प्रति अनुराग कम नहीं हुआ था। कवि पवाँर का व्यक्तित्व उसकी कविताओं में निहित भावों से अधिक समझा जा सकता है। पराधीनता और तत्कालीन सामाजिक दुर्दशा के प्रति कवि पवाँर को गहरा दुःख था। कवि पवाँर की अभी तक उपलब्ध एकमात्र कृति **'क्रान्ति-किरण'** के आधार पर यह तो स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीयता का भाव कवि पवाँर में गहनता से समाया हुआ था। 'क्रान्ति-किरण' में आत्मकथ्य के रूप में कवि ने लिखा भी है कि– "स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व सदैव ही जननी जन्मभूमि की सजीव प्रतिमा हाथों में हथकड़ी और पलकों में अश्रु बिन्दु लिए मेरी आँखों के आगे झूलती रही है। कुपूत से कुपूत के हृदय में भी अपनी ममतामयी माता की यह दशा देखकर विषाद का उदधि उमड़ उठेगा। यदि नहीं, तो ऐसे प्राणी को मानव की संज्ञा देने में भी प्रत्येक सहृदय को संकोच होगा ऐसा मेरा विश्वास है। यदि पाठक वृन्द कविताओं का पाठ करते समय मुझे कवि के

स्थान पर मातृ–मन्दिर का एक दीन पुजारी समझ सकें तो अधिक उत्तम होगा।"[31] मातृभूमि के प्रति कवि पवाँर का यह गहरा लगाव उनके भावुक हृदय की पहचान करवाता है।

कवि मदन लाल पवाँर की रचना '**क्रांति–किरण**' दो भागों में विभाजित है। स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतन्त्रता पश्चात् की कविताएँ व कृति में संकलित है। स्वतंत्रता पूर्व पराधीनता से उत्पन्न ग्लानि, विदेशी शासन को मिटाने का अदम्य उत्साह एवं जनव्यापी विद्रोह के भावों के साथ स्वतंत्रता प्राप्ति से मिले आनन्द एवं उल्लास के भाव भी कवि की रचना 'क्रांति–किरण' में अभिव्यक्त हुए हैं। स्वतंत्रता पूर्व की सच्चाइयों को उद्घाटित करते हुए कवि पवाँर ने देशवासियों को क्रांति के लिए ललकारा था। "उसके अनेक साथ उसके आह्वान पर सामाजिक क्रांति के पथ पर अग्रसर हो गये थे, दुर्भाग्य से वह तीव्र प्रखर और ओजस्वी स्वर फिर कम सुनाई दिया।"[32] स्वतंत्रता संघर्षकाल में कवि पवाँर ने नरेश, जागीरदार, किसान, युवा, कवि सभी वर्गों से स्वतंत्रता के पावन यज्ञ में अपनी आहुतियाँ देने के लिए आग्रह किया है। देश के युवा वर्ग को संबोधित करते हुए कवि ने लिखा–

"मार ठोकर दासता को
तोड़ जंज़ीरें तड़ांतड़।
उठ तरुण रवि रश्मि रंजित
हो चला आकाश है अब।।"[33]

देश की उन संकट्कालीन परिस्थितियों में कवि पवाँर ने कवियों से भी देशवासियों में ओजस्वी एवं क्रांतिकारी भावों का संचार करने के लिए कहा। यथा–

"ओ चेत चेत युग के प्रतीक!
अब तो गा वह भैरवी राग,
कर श्रवण जिसे जों मसान,
कब्रों में मुर्दे जाँय जाग।"[34]

अंग्रेजों के दमन से कवि हृदय पीड़ित था। उनकी स्वतंत्रता पूर्व की कविताएँ अंग्रेजी शासन के दमन की प्रतिक्रिया थी। कवि की भावनात्मक पीड़ा इनमें अभिव्यक्त हुई हैं। आज़ाद भारत की कामना को प्रकट करते हुए कवि ने लिखा था–

"तड़फाड़ाती हैं रुहें
आज़ाद भारत देख पायें
मूक कण्ठों से सभी
'जय हिन्द' के नारे लगायें।"[35]

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कवि–मन के हर्ष व उल्लासमय भावों की अभिव्यक्ति 'क्रांति–किरण' में देखने को मिलती है। उल्लास और उत्साह के भावों के साथ स्वतंत्रता पश्चात् की विसंगतियों एवं विकृतियों की ओर भी कवि ने ध्यानाकर्षित किया है। स्वतंत्र परिवेश की विसंगितयों के चित्रण में भी कवि मन में वही कसक विद्यमान थी। यथा–

"आजादी मिल गई मगर क्या,
जीने का अधिकार मिल गया।"[36]

यह कैसी विडम्बना है कि हाड़ौती अंचल के जिस कवि का हृदय राष्ट्रीय भावों से परिपूर्ण रहा उसका जन्म कब हुआ, मृत्यु कब हुई आज इसके बारे में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलने के कारण निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता है। हाड़ौती के अंचल के कवि मदन लाल पवाँर की भले ही एक ही कृति 'क्रांति–किरण' ही अभी तक उपलब्ध हो सकी है परन्तु राष्ट्रीय भावना के विकास में कवि की इस कृति का अमूल्य योगदान रहा है।

2:4 डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

काव्य के मर्म तथा समीक्षा कर्म की दृष्टि से विख्यात हाड़ौती अंचल क े वरिष्ठ कवि, समीक्षक, विचारक व चिंतक **डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय** का **जन्म 30 जून 1927** को कोटा (राजस्थान) में हुआ था। इस युगीन साहित्यकार का व्यक्तित्व अपने पिता श्री विष्णु सहाय जी के धार्मिक, दार्शनिक व राष्ट्रीय संस्कारों से बहुत प्रभावित था। "प्रारम्भिक शिक्षा मनोहरथाना–छीपाबड़ौद में लेने के पश्चात ए.वी. हाई स्कूल बारां और हर्बर्ट कॉलेज कोटा से एम.ए. हिन्दी किया। फिर 1952 से 1987 तक वनस्थली विद्यापीठ में प्राध्यापक रहने के पश्चात कोटा में रहते हुए आपने साहित्यिक सांस्कृतिक सामाजिक सन्दर्भों को समर्पित रहते हुए प्रेरणात्मक परिवेश प्रदान किये।"[37] प्रारम्भ से ही कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय राष्ट्रीय विचारधारा और गांधीवाद से प्रभावित थे। इनकी स्वदेश प्रेम की भावना ही थी कि इन्होंने सन् 1942 के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया तथा गाँधीजी द्वारा संचालित कार्यक्रमों के अन्तर्गत ग्रामोत्थान, खादी व हरिजन सेवा में भी भाग लिया। कवि का यह राष्ट्र प्रेम एवं सामाजिक सुधार की भावना इनके काव्य में स्पष्ट परिलक्षित होती है। इन्होंने देश–प्रेम, स्वतंत्रता, राष्ट्रीय एकता तथा सामाजिक विसंगतियों से आत्मसात कविताएँ लिखी। काव्य रचना में अभिरूचि कवि प्रेमचन्द जी की किशोरावस्था से ही थी। युगीन सच्चाइयों एवं भावों की गहराइयों ने कवि के किशोर मानस को काव्य रचना हेतु प्रेरित किया। अनुभवों और अनुभूतियों से संचित कवि हृदय ने इनको निरंतर कर्मशील बनाये रखा, काव्य रचनाओं के अतिरिक्त एकांकी, समीक्षा ग्रन्थों का सृजन भी कवि प्रेमचन्द ने किया। यही नहीं, इन्होंने कईं पत्र–पत्रिकाओं (हाड़ौतिका, वनस्थली पत्रिका) का सम्पादन भी किया। "वे अत्याधिक परिश्रमी और शोध परख दृष्टि के संवाहक थे। उनकी इसी दृष्टि ने साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और साहित्येत्तर परिवेश को ऊँचाईयाँ प्रदान कर अनुसरणीय दिशा प्रदान की है। उन्होंने सहजता–सरलता व विचारशीलता और व्यापक दृष्टिकोण के समन्वय से अपना जीवन जिया और जीने की प्रेरणात्मक ऊर्जा का संचार किया।"[38]

कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय का प्रथम काव्य–संग्रह **'गूँज रही शहनाई'** सन् 1962 में प्रकाशित हुआ। यह काव्य–संग्रह कवि की सन् 1947 से 1961 तक की रचनाओं का संकलन है। कृति में कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय की व्यक्तिगत, राष्ट्रीय एवं आध्यात्मिक अनुभूतियाँ तथा दृष्टिकोण प्रस्तुत हुआ है। कृति की समीक्षा करते हुए डॉ. रामचरण महेन्द्र ने लिखा है– "इन कविताओं में विविधता है। इनमें व्यक्तिगत अनुभूतियों से सामान्य सत्यों, जीवन के यथार्थ अनुभवों से व्यावहारिक आदर्श, स्व से पर की नश्वरता से अमरत्व, निराशा से आशा, विषाद से हर्ष और स्थूल से सूक्ष्म की ओर प्रवृत्ति रही है। विविध रंग और रूपों में लेखक ने अपनी अनुभूतियों को ताल और लय में संजोया है। बौद्धिकता भावात्मक परिधान धारण कर अवतरित हुई हैं और कल्पना यथार्थ की भूमि पर खड़ी है। पर इन सभी कविताओं में एक गुण सामान्य रूप से विद्यमान है–जीवन का संस्पर्श और तीव्र अनुभूति।"[39] जीवन की कठिनाइयों व संघर्षों के बीच आशा का स्वर कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय की इस कृति में मुखरित हुआ है।

सन् 1978 में प्रकाशित **'युग–वीणा'** कविता संग्रह कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय की देशभक्तिपूर्ण रचनाओं का संकलन है। वैसे भी राष्ट्र के प्रति कवि का संवेदनशील घनिष्ठ संबंध था। राष्ट्र को समुन्नत एवं विकसित बनाने के लिए वे सदैव प्रयत्नशील रहे। शायद यही कारण था कि देश की रक्षा, कल्याण और विकास हेतु सर्वस्व न्यौछावर करने वाले आदर्श भावों को कवि ने अभिव्यक्त किया। कृति की भूमिका में कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने लिखा है– "उक्त पच्चीस वर्षों की अवधि में राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय मंच पर अनेक स्थितियाँ और घटनाएँ घटित हुई हैं। मैं उन सबके प्रति यद्यपि बौद्धिक धरातल पर सजग और मानसिक धरातल पर संवेदित रहा हूँ पर सृजन के धरातल पर उन सभी को सम्मूर्तित करने का अवकाश मुझे नहीं मिल सका। राष्ट्रीय स्तर की जिन स्थितियों, घटनाओं, समस्याओं, आदर्शों और अनुभूतियों को इस युग वीणा में झंकृति मिल सकी है वे हैं–राष्ट्रप्रेम, स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय एकता, समानता, स्वावलम्बन, लोकराज, वर्तमान समाज और स्वतंत्र भारत की असफलताओं के प्रति असन्तोष एवं व्यंग्य, क्रान्ति, राष्ट्र–पुनर्निर्माण, समाजवाद, ढोंगवाद और

प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों की उपेक्षा पर व्यंग्य, प्रगति–भावना, युवाओं को उद्‌बोधन, प्रतिरक्षा, सैनिकों पर गर्व, आक्रामकों को ललकार, समसामयिक राजनीतिक स्थिति, सरकारी स्तर पर हिन्दी की उपेक्षा, विभाजित व्यक्तित्व, नेहरू निधन, नवीन नेतृत्व की आकांक्षा, भावी मानव में विश्वास, आदर्शपरक, यथार्थ मानववाद और मानवतावाद, लोकहित आदि।"[40] कवि ने कृति में संकलित '**शहीदो से**' शीर्षक कविता के अन्तर्गत देश रक्षा हेतु प्राण न्यौछावर करने वाले बलिदानी देशभक्तों के माध्यम से देश–प्रेम व मातृभूमि की रक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग और आत्मबलिदान की जो प्रेरणा दी है उससे देश के युवा वर्ग का मानस राष्ट्रप्रेम की राह पर चलने हेतु उद्वेलित हो उठता है। देशभक्त बलिदानी वीरों के गुणों का बखान करते हुए कवि ने लिखा है–

"तुम्हारी वह बलिदान साध, हमारे प्राणों में भर दो।
तुम्हारे ही लोहू का बीज,
खिल रहा इस उपवन में आज,
तुम्हारे स्वप्नों का शृंगार,
सजाता इस धरती का साज;
चढ़ायें हम भी जीवन–फूल, गंध उसमें ऐसी भर दो।
तुम्हारी वह बलिदानी साध, हमारे प्राणों में भर दो।
चढ़ाकर तुमने अपना शीश,
उठाया है भारत का भाल,
पहन कर स्वयं मरण का पाश,
दिया है काट हमारा जाल;
जलें हम बन स्वदेश का दीप, ज्योति हममें ऐसी भर दो।
तुम्हारी वह बलिदान साध, हमारे प्राणों में भर दो।"[41]

राष्ट्र के प्रति कवि की निष्ठा व अगाध श्रद्धा इनकी कविताओं में स्पष्ट नज़र आती है। देश की प्राकृतिक सुषमा, शौर्य एवं गौरव कवि के उद्‌गार '**छीन सकेगा कोई कैसे**' कविता में अभिव्यक्त हुए हैं। कवि की इस रचना से राष्ट्र को नई गति एवं दिशा मिलती है। कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने लिखा है–

"जिसकी राहे बलिदानों की, जिसके पर्वत शौर्य के,
छीन सकेगा कोई कैसे, उस भारत के ताज को?
युग-युग से जो देता आया,
करुणा का संदेश है,
वही आज फिर धर सकता है,
वीरों का शुभ वेश है।
जिसकी नदियाँ समृद्धि की, जिसके खेत सुवर्ण के,
छीन सकेगा कोई कैसे, उस भारत की लाज को!"[42]

राष्ट्रीय भावों से परिपूर्ण कवि की ऐसी रचनाऐं देश पर बलिदान होने व राष्ट्र रक्षा के लिए सन्नद्ध रहने का उपदेश देती हैं साथ ही देश के नागरिकों को राष्ट्र के प्रति संकल्पशील बनाती है।

कवि का तीसरा काव्य-संकलन 'सुधि भीगा मन' में जीवन के विविध भावों की सत्यता अभिव्यक्ति है। सन् 1997 में कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय की **'देश का दर्द'** एवं **'सांध्य-दीप'** रचनाएँ संयुक्त रूप में प्रकाशित हुई। 'देश का दर्द' कृति में जहाँ देश की संकटकालीन स्थितियों, विसंगतियों से क्षोभित कवि-मन का दर्द उजागर होता है वहीं 'सांध्य-दीप' में कवि के आध्यात्मिक एवं प्रेमिल भावनाओं की गहराई नज़र आती है। देश के प्रति सच्चा अनुराग रखने वाले इस कवि का हृदय देश की विसंगतिपूर्ण व्यवस्था को देखकर व्यथित रहा। स्वतंत्र भारत की राजनीति के विकृत स्वरूप एवं पतनोन्मुख चरित्र को देखकर कवि का राष्ट्र प्रेम आहत हुआ। सत्ता प्राप्ति के होड़ की राजनीति का कवि ने कड़ा विरोध किया। नेताओं की पदलोलुपता व आम जन की निष्क्रियता को देखकर कवि का व्यथित मन अपनी पीड़ा व्यक्त करने लगता था। **'रैली'** कविता में कवि की ऐसी ही पीड़ा मुखरित हुई है-

"स्वार्थों में लिपटी राजनीति की
निकल रही है रैली
जिसमें हैं अनेक ऐसे चेहरे,
जो नहीं जानते उसका अर्थ,

उसका प्रयोजन,
वे कुछ देर के लिए खरीद लिए गए हैं
चन्द पैसों पर;
और कई हैं मासूम चेहरे
जिनके हाथ और पैर ले लिए गए हैं
टोपी के प्रलोभर में।"[43]

देश की नाना समस्याओं से पीड़ित कवि के चित्त में फिर भी यह विश्वास कायम था कि संघर्ष की आँच में तपकर, निखरकर आज़ाद भारत समाज में फैली असंगतियों को दूर कर राष्ट्रोत्थान के पथ पर अग्रसर होगा। देशवासियों के साहस एवं मनोबल पर विश्वास व्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है–

"ओ अन्धेरों लौट जाओं, यह उजालों की जमीं है,
हम अमा की रात में दीपक जलाना जानते हैं!

भूचाल बरपा करने वालों से न डरते हम कभी,
हम स्वयं भूकम्प हैं, भूचाल लाना जानते हैं!

हम गरजते बादलों में भी सदा हँसते रहे,
बिजलियाँ चाहे गिरें, हम मुस्कुराना जानते हैं!

ये सितारे टूट जाएँ, आसमाँ रोने लगे,
हम उन्हें उनकी जगह पर, फिर बसाना जानते हैं!"[44]

कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय की 'सांध्य–दीप' में विचारों की उदात्तता एवं गरिमा विद्यमान है। इसमें अभिव्यक्ति जीवनोपयोगी दार्शनिक भाव, प्रकृति–प्रेम तथा अनुराग भाव के सात्विक पक्ष जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाते हैं। '**उसने जान लिया है सबको**' शीर्षक रचना में कवि ने भक्तिकालीन कवियों की भाँति मानव जीवन की सार्थकता को ईश्वर–भक्ति से जोड़ते हुए कहा है–

"जिसने जान लिया है हरि को,
उसने जान लिया है सब को।
वहीं ज्ञान का कोष, ज्ञान का उच्च शिखर है
चिरप्रकाश है वहाँ ज्ञान का

वहाँ न बसता अन्धकार है।
समाविष्ट है सब कुछ हरि मे;
वहीं पूर्ण है, शेष अपूरण;
उस अशेष को जाना जिसने
उसने जान लिया है सबको।

पण्डितों का पण्डित है वह
ज्ञानी जन का ताज वहीं है,
ढाई आखर में बसकर भी
वही वर्णमाला है पूरण।"[45]

कवि का यह जीवन दर्शन ईश्वर के प्रति इनकी निष्ठा एवं भक्ति भाव को तो दर्शाता ही है, साथ ही पाठ्क को अनासक्त योगी की भाँति आत्मबोध की अनुभूति भी करवाता है।

डॉ. विजयवर्गीय ने जिस तरह कवि के रूप में **राष्ट्र, समाज, अध्यात्म, प्रकृति, प्रेम–अनुराग** इत्यादि संबंधी मार्मिक भावों अपनी काव्य रचनाओं में उभारा है उसी तरह समीक्षक के रूप में समीक्षा ग्रंथों में विषयवस्तु की प्रासंगिकता को निष्पक्ष एवं बेबाक ढंग से प्रस्तुत किया है। '**अजित अनुशीलन**', '**स्मृति की रेखाएँ–एक अध्ययन**', '**नाटककार प्रेमी और शपथः समीक्षा**', '**मुञ्जदेव मीमांसा**', '**भूदानः एक अध्ययन**' कवि के प्रकाशित समीक्षा ग्रन्थ है। हाड़ौती के इस वरिष्ठ साहित्यकार ने अपने सृजनात्मक और समीक्षात्मक दृष्टिकोण से सदैव प्रेरणात्मक ऊर्जा का संचार किया। पूर्ण समर्पण भाव के साथ इन्होंने जो साहित्य सेवा की वह अब विरले ही देखने को मिलती है।

हाड़ौती अंचल के युगीन साहित्यकार डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय का भौतिक शरीर आज हमारे मध्य नहीं है परन्तु उनके पुनीत कार्य–अनुष्ठान एवं रचनात्मक योगदान आज भी अभिनन्दनीय हैं। हाड़ौती के इस सरल हृदयी व सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार को शत–शत नमन्।

2:5 डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

माँ सरस्वती के उपासक, मानवतावादी व संस्कारशील डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' कवि, कथाकार, नाटककार व समीक्षक के रूप में हाड़ौती अंचल के चर्चित व्यक्ति रहे हैं। बहुमुखी प्रतिभा वाले डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' का जन्म ग्राम छजावा, तहसील अटरू, जिला कोटा में 8 अप्रैल सन् 1929 को हुआ। इनके पिता का नाम श्री मन्ना लाल तथा माँ का नाम श्रीमती बृजराज कुँवर था। बचपन में ही माँ का देहावसान हो जाने के कारण इनका लालन–पालन इनकी दादी ने किया था। डॉ. दयाकृष्ण 'विजय' को प्रारम्भ से ही पढ़ाई में गहरी अभिरूची थी। इन्होंने एम.ए., एल. एल.बी. तथा पीएच.डी. **'राजस्थानी काव्य में शृंगार भावना'** विषय पर की है। साहित्य के साथ–साथ इस कवि की रूचि सामाजिक कार्यों में भी रही है। देशभक्ति का जज़्बा भी इस कवि में गहराई तक बसा हुआ है। "सन् 1943 के स्वतंत्रता–आंदोलन में छीपा–बड़ौद में मास्टर बद्रीलाल चक्कीपति के नेतृत्व में इन्होंने भाग लिया था। जुलूस के दौरान मिडिल स्कूल में चुपचाप घुसकर इन्होंने घंटी बजा दी और सारे लड़के स्कूल छोड़कर बाहर आ गए।"[46] इस स्वतंत्रता सेनानी का छबड़ा विधानसभा क्षेत्र से विध ाायक पद पर चुना जाना भी गौरव की बात है। "दयाकृष्ण ने जनसंघ द्वारा संचालित 'किसान सत्याग्रहों' तथा 'चक्काजाम आन्दोलनों' के दौरान कई बार जेल यात्राएँ की हैं। पाकिस्तानी आक्रमण के बाद गदरा रोड सत्याग्रह में भी इन्होंने भाग लिया। वहाँ बंदी बनाए गए। जनसंघ के दिल्ली मार्चपास्ट में भी ये गए थे।"[47] देश व समाज की सेवा करने वाले डॉ. दयाकृष्ण 'विजय' ने सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए भी भरसक प्रयत्न किये हैं। हिन्दी भाषा के प्रेमी इस कवि ने हिन्दी के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। उन्होंने लिखा– "देश के हजार साल से आहत पड़ी सांस्कृतिक परंपरा को हिन्दी के प्रचार–प्रसार से नवीन जीवन व नवीन अभिव्यक्ति मिलेगी। हिन्दी का विकास देश की अस्मिता व श्रद्धा का एक बुनियादी प्रश्न है।"[48] अपने कथा साहित्य एवं काव्य कृतियों में मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदनशील यह युगद्रष्टा साहित्यकार हिन्दी भाषा से अगाध प्रेम करते हैं।

यही कारण रहा है कि **'चिदम्बरा'**, **'राष्ट्रभक्ति'**, **'दीपक'** एवं साहित्य अकादमी पत्रिका **'मधुमती'** के सम्पादक एवं प्रखर चिंतक के रूप में हिन्दी भाषा के विकासक्रम को निरन्तर जारी रखा। डॉ. दयाकृष्ण 'विजय' **श्री भारतेन्दु समिति, कोटा के अध्यक्ष** पद पर भी रह चुके हैं। अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद भी आप सुशोभित रहे हैं। अपनी जातीय संस्था अखिल भारतीय विजयवर्गीय वैश्य महासभा की जड़ता को तोड़ आपने उसमें नवजीवन का संचार किया। "डॉ. विजय लोकभाषा एवं लोक साहित्य के शोध एवं अध्ययन के हामी हैं। लोक-संस्कृति के संरक्षण को प्राधान्य देने हेतु आपने ही श्री भारतेन्दु समिति में 'हाड़ौती लोककला संघ' की स्थापना करवाई। बूंदी की सूर्यमल्ल स्मारक समिति की रूपरेखा भी आपके मस्तिष्क की उपज है। आपके परम मित्र डॉ. औंकारनाथ चतुर्वेदी ने आपके परामर्श पर ही बूँदी में इसे पुनर्गठित किया।"[49] कवि दयाकृष्ण 'विजय' का देश, समाज एवं साहित्य सेवा का कर्म आज भी गतिमान है। आज भी वे अपनी पत्नी चाहकुँवर बाई एवं संतानों के साथ सहज, सरल एवं धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

कवि डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' के साहित्य पर दृष्टि डाले तो कहा जा सकता है कि इनमें साहित्यिक अभिरूचि बचपन से ही रही है। पन्द्रह वर्ष की आयु में आपने कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। जब 'विजय' की 8वीं कक्षा में पढ़ते थे तो तुलसी जयन्ती के अवसर पर इन्होंने दो कविताओं की रचना की। एक कविता तो तुलसी पर थी तथा दूसरी 'कहलायेंगे' समस्यापूर्ति लिखी। कॉलेज के दिनों में निबन्ध, नाटक, कहानी विधा का सृजन धीरे-धीरे परवान चढ़ने लगा। आपकी काव्य कृतियों में- **'श्रमधरा'**, **'आंतरिका'**, **'मेरे भारत मेरे देश'**, **'आञ्जनेय'**, **'उत्तर हल्दीघाटी'**, **'श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब'**, **'इन्द्रधनुष का आठवाँ रंग'**, **'कार्तिकेय'**, **'क्षमा नहीं करोगी शकुन्तला'**, **'त्रिपादिका'** इत्यादि प्रमुख हैं। कवि के प्रथम काव्य-संग्रह 'श्रमधरा' में नवीन स्वतंत्रता प्राप्त देश की प्रगति एवं विकास का स्वर मुखरित हुआ है। यथा-

"मशाला-सी उठीं असंख्य बाहुएँ विकास दो
न यंत्र के लिए मनुष्य-शक्ति को विराम दो।"[50]

कवि दयाकृष्ण 'विजय' समाज में मानव–मूल्यों एवं नैतिकता की मौजुदगी को अनिवार्य मानते हैं। शांति, सद्भाव एवं सहअस्तित्व की भावनाओं को कायम रखने हेतु सांस्कृतिक मूल्यों एवं नैतिकता का संरक्षण अति आवश्यक है। '**आञ्जनेय**' काव्य में कवि दयाकृष्ण 'विजय' ने मानवीय मूल्यों की आवश्यकता एवं महत्ता को उद्घाटित किया है। उन्होंने लिखा है–

"नैतिक अवमूल्यन होते ही
होता भाग्य उदास है।
एकमात्र पांतक भी करता
सारे कुल का नाश है।।"[51]

उच्चतर मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण इसी कृति पर कवि दयाकृष्ण 'विजय' को राजस्थान साहित्य अकादमी का '**मीरा पुरस्कार**' से पुरस्कृत किया गया है। हाड़ौती के इस साहित्यसृष्टा ने विविधमुखी काव्य रचनाओं का सृजन किया है। इन्होंने अपनी '**कार्तिकेय**' व '**उत्तर हल्दीघाटी**' रचनाओं में ऐतिहासिक एवं पौराणिक पात्रों के चरित्रों को वर्तमान संदर्भों से जोड़कर आधुनिक बोध को चित्रित किया है। '**श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब**' शीर्षक काव्य–संग्रह में कवि ने स्वातंत्र्योत्तर परिवेश की मूल्यहीन एवं संवेदनशून्य राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को चित्रित कर समाज का मार्गदर्शन किया है। निराश व हताश करने वाली परिस्थितियों के साथ कवि ने आशा, आकांक्षा एवं आस्था का स्वर भी काव्य–संग्रह, में प्रस्तुत किया है। देशवासियों का मार्गदर्शन करते हुए उन्होंने '**दिशा–बोध**' कविता में कहा है–

"मानो हमारी प्रगति
तेल धानी की चाल है
या मेंढक की बावड़ी है।
इससे कौन कहे
परिधि में जीना प्रगति नहीं
रसातल की अंधी यात्रा
अधोगति से अधिक नहीं
आगे बढ़ने का नाम है प्रगति

आगे बढ़ो

आगे बढ़ो।

औरों से आगे बढ़ो।"[52]

कवि दयाकृष्ण 'विजय' की **'क्षमा नहीं करोगी शकुंतला'** रचना के अन्तर्गत कवि का भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं एवं मूल्यों के प्रति आस्था भावों को अभिव्यक्त किया है। कवि 'विजय' की काव्य रचना **'धूप छांही क्षण'** राष्ट्रीय भावों से संपृक्त काव्य कृति है। कृति के अन्तर्गत इन्होंने समसामयिक समस्याओं पर चिन्तन प्रस्तुत किया है। भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के खोखलेपन एवं कमज़ोर स्वरूप को उद्घाटित करते हुए **'जन्मपत्री'** शीर्षक कविता में कहा कि–

"काश उस महालोक तांत्रिक ने

पढ़ी होती

सिद्धान्त की नहीं

यथार्थ की वास्तविक पुस्तक......"[53]

कवि दयाकृष्ण की कृति **'गीतायनी'** भी प्रकृति एवं संस्कृति के विविध स्वरूपों को अभिव्यक्त करती है। कवि के **'त्रिपादिका'**, **'एक ओर वामन'** जैसे हाइकु–संग्रह बहुआयामी काव्य–सृजन के परिचायक हैं।

काव्य–रचनाओं के अतिरिक्त डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' ने कहानी, नाटक एवं निबन्ध विधाओं में भी सृजन कार्य किया है। सन् 1953 में प्रकाशित उनके प्रथम कहानी संग्रह में संकलित कहानियों में मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति मिली है। 'स्वप्न और सत्य' कहानी–संग्रह के अन्तर्गत भावनाओं और सामाजिक सम्बन्धों का यथार्थ चित्रण मिलता है। इसी तरह 'बड़ी मछली' कहानी–संग्रह में भी आधुनिक समाज का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत हुआ है। डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' का 'एक और क्रांति' कहानी–संग्रह नव प्रभात साहित्य, दिल्ली से 1994 में प्रकाशित हुआ। इस कथा–संग्रह में सामाजिक अंधविश्वासों, रूढ़ियों का यथार्थ स्वरूप प्रकट होता है।

डॉ. 'विजय' ने **'आदि सम्राट'**, **'छत्रपति शिवाजी'**, **'सिंहासन'** आदि नाटक लिखे हैं। "राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'राजस्थान का हिन्दी साहित्य'

पुस्तक में श्री मदन मोहन माथुर ने 'राजस्थान का हिन्दी नाटक' शीर्षक लेख में डॉ. दयाकृष्ण 'विजय' के नाटकों को रेखाकिंत करते हुए अपनी विद्वतापूर्ण टिप्पणी में लिखा है– 'डॉ. विजय के नाटक जीवन आदर्शों और मूल्यों के संवाहक हैं। इसीलिए उनमें थोड़ा प्रहसन, फूहड़ या अश्लीलता के लिए कोई स्थान नहीं है। उनकी रोचकता, शैलीबद्धता, संवादों की कसावट, कथ्य की गरिमा और चरित्रों की स्वाभाविकता में है। प्रेम और श्रृंगार सदैव मर्यादित आचरण से बंधे हैं। वे दर्शक श्रोता को आनंदित तो करते हैं, पर कोई उत्तेजना का आभास भी नहीं होने देते। डॉ. विजय के नाटक आत्मदर्शक और बुद्धिजीवी को एक साथ संतुष्ट करने का सामर्थ्य व्यक्त करते हैं।"[54]

सन् 1955 में कोटा बुक डिपो द्वारा आपका 'एकांकिनी' एंकाकी–संग्रह भी प्रकाशित हुआ। सन् 1995 में अर्चना प्रकाशन, अजमेर द्वारा आपके निबन्ध–संग्रह 'विचारों के अमलतास' तथा सन् 2000 में अनिल प्रकाशन, दिल्ली द्वारा 'साहित्य, संस्कृति और युगबोध' संग्रह प्रकाशित हुआ।

साहित्य की विविध विधाओं में रचना कर्म करने वाले इस विद्वत व्यक्तित्व काव्य विधा के प्रति विशेष लगाव रहा है। काव्य रचनाओं में विशिष्ट भावों की सशक्त अभिव्यक्ति हेतु आपके द्वारा अधिकांशतः संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है। काव्य के भावपक्ष के साथ उसका कलापक्ष भी विशिष्ट एवं प्रभावी है।

अंततः कहा जा सकता है कि व्यवसाय के अधिवक्ता, कलम के पुजारी, समाजसेवी, चिन्तक, राजनेता, कवि–कथाकार डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' का व्यक्तित्व और कृतित्व बहुआयामी है। साहित्य के प्रति समर्पित इस व्यक्तित्व ने 40 से भी अधिक साहित्यिक रचनाओं का सृजन किया है। इन्होंने काव्य रचनाओं के अतिरिक्त हिन्दी की नाटक, एकांकी, निबन्ध आदि विधाओं में सामाजिक संदर्भों, सांस्कृतिक परम्पराओं, मानवीय संवेदनाओं के यथार्थ एवं राष्ट्रीय भावनाओं को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' हाड़ौती अंचल के ही नहीं सम्पूर्ण राजस्थान का गौरव है। इनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों अभिनन्दनीय एवं सराहनीय है।

2:6 डॉ. शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हाड़ौती अंचल के सुप्रसिद्ध हिन्दी रचनाकार डॉ. शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश' राजस्थान प्रदेश के कीर्तिमान साहित्य मनीषी थे। इस स्वाभिमानी साहित्यकर्मी का जन्म **24 जून सन् 1932** को राजस्थान प्रान्त के बारां जिले की किशनगंज तहसील के जलवाड़ा गाँव के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इकलौती संतान होने की वजह से इनके पिता श्री कृष्ण गोपाल भारद्वाज व माता श्रीमती सुभद्रा देवी ने बड़े लाड़–प्यार से बालक शांतिलाल का लालन–पालन किया था। डॉ. शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश' की अधिकांश प्रारम्भिक शिक्षा अन्ता (बारां) में हुई थी। "कोटा में रहकर डॉ. राकेश ने महाविद्यालय में पढ़ाई की, बी.ए. किया। हिन्दी व राजनीति शास्त्र में एम.ए. किया। यहीं राजनैतिक और साहित्यिक क्षेत्रों का द्वन्द्व जागा और अंततः साहित्य को ही डॉ. राकेश ने अपना श्रेय–प्रेय बनाया। डॉ. राकेश कोटा में अपनी सक्रियता के कारण राजकीय महाविद्यालय के अध्यक्ष बने। उस समय राजस्थान विश्वविद्यालय के अध्यक्ष बने। उस समय राजस्थान विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों का भी एक संघ बनाया था, प्रांतीय स्तर पर। डॉ. राकेश उसके भी उपाध्यक्ष थे। उस समय किसी बात को लेकर छात्रों व स्थानीय पुलिस अधिकारी में तकरार हुई प्रतिक्रिया में एक छात्रान्दोलन हुआ, जिसकी गूंज राजधानी तक गई। तत्कालीन मुख्यमंत्री ने डॉ. राकेश से बात की। संभवतः यही सक्रियता उनको राजनीति में प्रवेश के आमंत्रण का कारण रही होगी, जिसे डॉ. राकेश ने स्वीकार नहीं किया क्यूंकि नियति उनके लिए दूसरा रंग वितान तैयार कर रही थी।"[55] छात्र जीवन से ही डॉ. शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश' ने साहित्य सृजन करना आरम्भ कर दिया था हाड़ौती अंचल के इस स्वाभिमानी रचनाकार का मन भौतिक संसाधनों की ओर आकर्षित नहीं होता था शायद यही कारण था कि इनकी प्रतिभा की चमक इनकी रचनाओं में दिखाई देती हैं। जीवन में इन्होंने जो देखा समझा, भोगा व महसूस किया उन्हीं स्वानुभूतियों से रचना निर्माण की शक्ति इनको मिली थी। अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् डॉ. 'राकेश' कोटा से जयपुर चले गए थे। जयपुर में अनेक साहित्यकारों, कलाधर्मियों व पत्रकारों के सम्पर्क में ये रहने लगे तथा

अपने रचना कर्म को निरन्तर बढ़ाने लगे परन्तु कुछ समय पश्चात डॉ. 'राकेश' जयपुर से उदयपुर आ गये और यहाँ साहित्य सृजन के साथ-साथ अध्यापन कार्य भी करने लगे। "उदयपुर प्रवास का काल डॉ. राकेश के लिए कईं मायनों में महत्त्वपूर्ण रहा। जनुभाई बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। ऐसे रचनात्मक व्यक्तित्व का सान्निध्य, संसर्ग, अकादमी में सक्रियता/महत्त्वपूर्ण, राष्ट्रीय साहित्यकारों से सम्पर्क, परिचय आदि घटनाएँ जीवनचर्या में सम्मिलित हुईं। निस्संदेह इन सबने डॉ. राकेश की रचनात्मकता और प्रकाशन में महती भूमिका अदा की।"[56] उदयपुर में ही कवि 'राकेश' ने राजस्थान साहित्य अकादमी की पत्रिका '**मधुमती**' का भी सम्पादन किया था। इसके अतिरिक्त कईं रचनात्मक संस्थाओं, संगठनों से भी कवि 'राकेश' जुड़ रहे। इन्होंने **राजस्थानी भाषा-साहित्य संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष** पद पर कार्य किया तथा 'हाड़ौती शोध प्रतिष्ठान, कोटा' जैसे संस्थानों से भी सम्बद्ध रहे थे।

डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश' का साहित्य कर्म भी संघर्ष और उपलब्धियों के अनेक पड़ावों से गुजरा था लेकिन हाड़ौती के इस यशस्वी कवि ने अपनी जिंदादिली व सक्रियता से सभी पड़ावों को सहजता से पार किया था। डॉ. 'राकेश' की रचनात्मक वृति बहुत व्यापक थी। इन्होंने शोध, उपन्यास, कविता, जीवनी, नाटक आदि साहित्यिक विधाओं में सृजन कार्य किया था। सन् 1962 में डॉ. 'राकेश' ने '**आधुनिक राजस्थानी साहित्य, एक शताब्दी**' शोध प्रबन्ध लिखा। कवि के रूप में डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश' का कविता संसार समयानुसार परिवर्तित सामाजिक सरोकारों का प्रतिबिम्ब है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश की राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक परवशताओं का यथार्थ चित्रण इनकी काव्य रचनाओं में है। डॉ. 'राकेश' का प्रथम काव्य-संग्रह '**समय की धार**' सन् 1962 में अंजलि प्रकाशन, अजमेर से प्रकाशित हुआ था। इस काव्य-संकलन के अन्तर्गत कवि ने आज़ादी के बाद की बदलती राष्ट्रीय परिस्थितियों से प्रभावित होकर अपने मनोभावों को अभिव्यक्त किया था। '**शहीद की मौत पर**', '**बिगुल बज गया**', '**सैनिक के नाम**' इत्यादि कविताएँ राष्ट्रीय भावों से जुड़ी हुई है। राष्ट्रीय भावों के अतिरिक्त इस काव्य-संकलन में प्रकृति एवं प्रेमानुभूतियों के चित्र भी दिखाई देते हैं। "ये कविताएँ

समय को पहचानने का प्रयास है। राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्य–धारा में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए भी यह कृति आधुनिक भाव–बोध, शिल्प तथा भाषा सौन्दर्य से अपनी स्पष्ट पहचान बनाती है।...आजादी के बाद जो सपनों का भारत था, उसके स्वप्न टूटने लगे थे। सामाजिक सरोकारों में आया बदलाव और परिवर्तित जीवन दृष्टि की अनुगूंज इस संग्रह की कविताओं में स्पष्ट दिखायी पड़ती है।"[57] उक्त संकलन की **'चाँदनी है और तुम हो'** शीर्षक कविता में रूमानी भावों का स्वरूप इस प्रकार व्यक्त हुआ है–

> **"आज–कितना प्यार है उजली किरन में?**
> **आज का मौसम, सभी कुछ भा गया है**
> **चाँदनी है और तुम हो।**
> **एक दिन जब था अकेला**
> **चाँद की काया बड़ी सी अनमनी थी–"[58]**

स्वातंत्र्योत्तर समाज की बदलती व्यवस्था में लोगों की संवेदना जिस तरह खत्म हो रही थी उससे कवि का मन उदास व हताश था। कवि ने 'समय की धार' शीर्षक कविता में कहा है–

> **"सोचता था–दर्द बाँटूगा किसी का–**
> **घड़ी को दो घड़ी को हाथ थामूँगा किसी का–**
> **पर न ठहरी साँस की रफ्तार,**
> **मेरी प्रीत का स्वर खा गई मझदार।**
> **झंझा से डरा–चुपचाप बहता हूँ–**
> **हवाएँ चल रही है–**
> **और मेरा छूटता संसार–**
> **ले जाती है न जाने किस क्षितिज के द्वार**
> **यह समय की धार।"[59]**

कवि 'राकेश' ने अपने **'इतने वर्ष'** काव्य–संकलन को युवा पीढ़ी को समर्पित किया है। गीतांजलि प्रकाशन, कोटा से सन् 1985 में प्रकाशित हुए इस

काव्य–संकलन में कवि ने युगीन महापुरुषों के जीवन–चरितों द्वारा युवा पीढ़ी को प्रेरित किया व मार्गदर्शन दिया। इसके साथ ही कवि ने देश की साम्प्रदायिकतावाद, आर्थिक विषमता व हिंसात्मक झगड़े जैसी समस्याओं के प्रति विद्रोह का क्रान्तिकारी स्वरूप भी प्रस्तुत किया। इस काव्य–संकलन की **'गांधी–स्मृति'**, **'धर्म के प्रश्नकर्ता से'**, **'बड़े लोगों की बस्ती'**, **'एक दिशाहीन यात्रा'** शीर्षक कविताओं में कवि ने सामाजिक सरोकारों से जुड़े विचारों को अभिव्यक्त करने का प्राधान्य रहा है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के प्रति उनके असंतुष्ट भाव **'एक दिशाहीन यात्रा'** शीर्षक कविता में स्पष्ट दिखाई देतो हैं। यथा–

"शिक्षा ने दिये प्रमाण–पत्र
जीवन की व्यर्थता को
न स्वीकारने की दिलासा के लिए
और समूह–प्रमुखों ने दिये
भविष्य के सपने–
वर्तमान की रिसती रगों को
सहलाते चले जाने के लिये"[60]

एक नये युग की आकांक्षा भी कवि के इस कविता–संग्रह में समाविष्ट हुई है।

डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश' की नई कविताओं का संग्रह **'द्वार खुले हैं'** सन् 1999 में कवि प्रकाशन, बीकानेर से प्रकाशित हुआ। इस काव्य–संग्रह में कवि की चिन्तनधारा ने राष्ट्रीयता के साथ आध्यात्मिकता व जनवादिता को भी स्पर्श किया है। इस कविता संग्रह में संकलित कविताओं के विषय में कवि ने काव्य संग्रह में की भूमिका में कहा है– "समझ में नहीं आता, इन रचनाओं को किस भूमिका के साथ प्रस्तुत करूँ? काव्य की सार्थकता, वर्गीकृत वैचारिकता, लौकिकता, अलौकिकता और भाव–शबलता जैसे अनेक संदर्भों को छूती और विलग होती यह यात्रा, भोगे हुए और सोचे हुए यथार्थ का आंशिक शब्दावरण ही कही जा सकती है।"[61] कवि 'राकेश' के इस काव्य–संकलन में व्यक्तिगत एवं समष्टिगत संवेदनाओं का मिला–जुला स्वरूप प्रकट होता है।

डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश' के खण्डकाव्य **'परीक्षित'** में पुराण कथा के माध्यम से युगीन चेतना का स्वरूप प्रस्तुत हुआ है। "'श्रीमद्भागवत महापुराण' के इतिवृत्तात्मक आधार को कवि ने प्रतीकार्थ व्यंजना के स्थूल माध्यम के रूप में अधिगृहीत किया है। कवि ने अलौकिक कथा प्रसंगों का संस्कार युग चेतना के परिपार्श्व में किया है। पुराणा–कथा के युग सम्वेद्य भाव–बोध और प्रतीक व्यंजना में कवि का प्रयास निश्चयतः अभिनन्दनीय है।"[62] जीवन–मूल्यों के विघटन एवं नैतिक मूल्यों के ह्रास को कवि ने इस कथा–काव्य में प्रस्तुत किया है।

डॉ. 'राकेश' को कवि के साथ–साथ एक उपन्यासकार के रूप में भी ख्याति मिली। सन् 1962 में चित्रगुप्त प्रकाशन, पुरानी मण्डी, अजमेर से प्रकाशित हुए उनके **'सूर्यास्त'** उपन्यास को राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत किया गया तो राजस्थानी उपन्यास **'उड़ जा रे सुआ'** को केन्द्रीय साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर ने 'राकेश' को **विशिष्ट साहित्यकार सम्मान** से सम्मानित भी किया था।

डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश' ने हिन्दी के अतिरिक्त राजस्थानी भाषा में भी रचनाकर्म किया है। "उनका राजस्थानी गीत 'सावणी तीज' कवि सम्मेलनों में सराहा गया, काफी लोकप्रिय हुआ। डॉ. सा. ने राजस्थानी कविता में छंदबद्ध और छंदमुक्त दोनों ही तरकीबों को काम में लिया। कहन का मुहावरा और तुक की लय दोनों को डॉ. सा. ने अपनी हाड़ौती कविता में भली प्रकार साधा। रसीले, मधुरगीत, तो चुटीले हास्यापरक व्यंग्य, ग़ज़ले, दोहे, क्षणिकाएँ।"[63] राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति के प्रति कवि का अनुराग राजस्थानी भाषा से उनके आत्मीय संबंध को दर्शाता है।

अंततः कहा जा सकता है कि डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश' की साहित्यिक रचनाओं का अनुशीलन करने के पश्चात अनुभव होता है कि विविध विधाओं एवं शैलियों में रचना करने वाले इस रचनाकार ने तात्कालीन–चर्चित विषयों के विभिन्न आयामों को अपने कौशल एवं सामर्थ्य से उत्तम रूप में प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीयता

और जनवादिता से जुड़ा इनका लेखन प्रेरणा और प्रभाव उत्पन्न किये हुए बिना नहीं रह सकता। इनकी स्वतंत्र भावाभिव्यक्ति ने जीवन की क्षणानुभूतियों की झलकियों को प्रकट किया है। हिन्दी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में सृजनरत रहे यह विशिष्ट साहित्यकार वर्षों तक साहित्य–सृजन में रमे रहे। हाड़ौती अंचल के इस असाधारण रचनाकार का बीमारी के कारण 18 जनवरी 2010 को देहान्त हो गया। हिन्दी के इस सच्चे, मौलिक एवं स्वतन्त्र रचनाकार के रचनात्मक योगदान को साहित्य–जगत में कभी भुलाया नहीं जा सकता। साहित्य के प्रति उनकी निष्ठा और आत्मीय लगाव के कारण ही हाड़ौती अंचल के इस यशस्वी साहित्यकार को राजस्थान के अग्रणी रचनाकारों की श्रेणी में गिना जाता है।

2:7 द्वारका लाल 'गुप्त' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हाड़ौती अंचल के हिन्दी साहित्य में बहुमुखी प्रतिभा के धनी गीतकार, ग़ज़लकार, कहानीकार व कवि **द्वारका लाल 'गुप्त'** का जन्म राजस्थान की अन्नपूर्णा धरती बारां में **01 जनवरी सन् 1932** को मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। इनके पिता श्री मांगीलाल अग्रवाल एवं माता श्रीमती रमकू बाई के वात्सल्य एवं स्नेह की छाया में द्वारका लाल गुप्त का बचपन बड़े लाड़ प्यार से गुजरा। द्वारका लाल गुप्त को उनके पिता से सरल, संतोषी और धार्मिक प्रवृत्ति माता से विरासत में ही मिली है। बचपन में ही इनकी माँ का देहान्त हो जाने के कारण बालक द्वारकालाल गुप्त तन्हा एवं अकेलापन महसूस करते थे। इस अकेलेपन का दर्द उनके हृदय में सागर की तरह उमड़ता रहता था और शायद इसी दर्द ने इनके अन्दर के सोए हुए साहित्यकार को जगा दिया था। माँ सरस्वती का यह अनन्य साधक विद्यार्थी जीवन से ही साहित्य साधना में रत रहे हैं। समय गुजरने के साथ–साथ अपने जीवन की तन्हाई को दूर करने के लिए एक ओर इनको जीवनसाथी (पत्नी) मिल गयी थी तो दूसरी ओर साहित्यिक रचनाओं के प्रति प्रेम द्वारा इनका दर्द बाहर निकल रहा था। गीत, ग़ज़ल, कविता, लेख, यात्रा संस्मरण और कहानी आदि विधाओं के लेखन में इनका मन रम गया।

हिन्दुस्तान में जिस समय आज़ादी की लड़ाई चल रही थी तब भी किशोर द्वारकालाल 'गुप्त' ने घर–घर आजादी का पैगाम देकर देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना सहयोग देने की कोशिश कर रहा था। किशोरावस्था से हृदय में पैदा हुआ वतन परस्ती का यह जज़्बा इनके जीवन में आज तक बना हुआ है। आज़ादी के पश्चात् भी देश के बिगड़ते हालातों के प्रति इस संवेदनशील साहित्यकार ने अपने भावों एवं विचारों को प्रस्तुत करते हुए मानवता को संरक्षित करने का प्रयास किया है। "कॉमर्स की पढ़ाई व बैंक की नौकरी के साथ भी आपका साहित्य के प्रति रुझान सदैव बना रहा। बारां नगर की अग्रवाल लाइब्रेरी की सारी की सारी किताबें आपने विद्यार्थी जीवन में ही पढ़ डाली थीं। फिर अन्य पुस्तकालयों व साहित्यकारों से लेकर अध्ययन अनवरत जारी रखा। कालांतर में प्रसिद्ध कवि/गीतकार

डॉ. रघुराज सिंह 'हाड़ा' से आपका परिचय अंत में श्रमदान के दौरान हुआ तथा उनके जादुई व आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर गुप्त जी स्वयं भी गीतों की रचना करने लगे तथा गोपालदास 'नीरज', हरिवंशराय 'बच्चन', शिवमंगल सिंह 'सुमन' जैसे महान् गीतकारों से प्रेरित होकर गीत–सृजन को पूर्णतः समर्पित हो गए। परिणामस्वरूप आपने अपनी विशिष्ट साहित्यिक प्रतिभा से जो गीत रचे, वे बहुत लोकप्रिय हुए तथा जन–जन के कण्ठ से मुखरित हो अविस्मरणीय बन गये।[64] अपनी साहित्यिक अभिरूचि के कारण ही कवि द्वारकालाल गुप्त अनेक साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थानों से भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं।

कवि द्वारकालाल 'गुप्त' मूल रूप से भले ही गीतकार माने जाते हैं लेकिन हाड़ौती अंचल के इस संवेदनशील साहित्यकार ने कहानियों एवं कविताओं की भी रचना कर हिन्दी साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इनका प्रथम काव्य–संकलन **'संकल्प–गीत'** 1989 में प्रकाश में आया। इनका प्रथम कहानी संग्रह 'बहु, जल्दी आना' सन् 1999 में सृजनदीप प्रकाशन समिति, बाराँ से प्रकाशित हुआ। कवि द्वारकालाल गुप्त ने 'अयोध्या की ओर' जैसे यात्रा संस्मरण तथा 'धुएँ में डूबा शहर' शीर्षक ग़ज़ल संग्रह का भी सृजन किया है। कवि गुप्त ने **'लालकिला बनाम लोकतंत्र'** काव्य–कृति में कवि कर्म का निर्वाह करते हुए अपने हृदयोद्‌गारों एवं क्रांतिकारी विचारों को अभिव्यक्त किया है। कवि गुप्त की **'जीवन के रंग "सात"'** शीर्षक काव्य कृति बाबा पब्लिकेशन, जयपुर से प्रकाशित हुई है। जिसमें इनकी ईश–भक्ति, देशभक्ति तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़ी भावनाओं को सहज रूप में देखा जा सकता है। कवि के **'कही–अनकही'** कविता संग्रह में भी राष्ट्रीय भाव प्रमुखतया परिलक्षित होता है।

कवि रूप में द्वारका लाल 'गुप्त' का सृजन–संसार राष्ट्रीय भावनाओं से अधिक जुड़ा हुआ है। देश के सर्वांगिण विकास का स्वप्न इनकी काव्य रचनाओं में समाहित है। **'संकल्प गीत'** व **'लालकिला बनाम लोकतंत्र'** काव्य–संग्रह में संकलित कविताओं में वर्तमान लोकतंत्र में व्याप्त विसंगतियों के साथ राष्ट्र गौरव के उदात्त भावनाओं व विचारों का स्वरूप परिलक्षित होता है। वर्तमान परिवेश में खो रही

भारतीय परम्पराओं के संरक्षण का प्रयास भी कवि गुप्त जी करते हुए दिखाई देते हैं। भ्रष्ट्राचार, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, अपहरण, हत्या, छुआछूत जैसी देश की कलंकपूर्ण घटनाओं व समस्याओं को कवि ने इन कृतियों में प्रस्तुत कर जन–जागृति एवं मातृभूमि प्रेम को विकसित करने की कोशिश की है। स्वतंत्र भारत में धर्म के नाम पर होने वाले अपराधों एवं दंगों पर कटाक्ष करते हुए कवि द्वारका लाल गुप्त ने '**धर्मनिरपेक्ष**' शीर्षक कविता में कहा है–

"आज कल
कुछ अधिक ही हो गए हैं लोग
धर्म निरपेक्ष
और
इसी कारण अधिक होते हैं धमाके
पटाखों की तरह
खूब फूटते है बम
गली–चौराहों पर बिछी हैं
बारूदी सुरंगे
हर रोज हो जाता है कत्ले आम
चली जाती हैं सैकड़ों जानें
बह जाता है खून
सड़कों पर
और
लोग जश्न मनाते हैं लाशों पर
क्योंकि
धर्मनिरपेक्ष हैं"[65]

आधुनिक स्त्री के सबल एवं सशक्त रूप का भी कवि गुप्त जी ने प्रतिपादन किया है। नारी को सबला रूप में देखने की कवि की आकांक्षा उनकी '**नारी**' शीर्षक कविता में स्पष्ट नज़र आती है। यथा–

"उसे भी आता है लेना
प्रतिशोध

पुरुष के

अशिष्ट, पाशविक, दंभी व्यवहार का

वह कब तक

बनी रहेगी अबला

वह दुर्गा है

उसने

जीते हैं कई महासमर"[66]

कवि द्वारका लाल 'गुप्त' के 'लालकिला बनाम लोकतंत्र' काव्य संग्रह के अतिरिक्त **'कही-अनकही'** अतुकान्त कविता संग्रह भी समसामयिक समाज का जीवन्त दस्तावेज है। बाबा पब्लिकेशन, जयपुर से प्रकाशित हुए उक्त कविता-संग्रह में समय के अनुसार बदलते समाज का स्वरूप, सामाजिक रूढ़ियों व अंधविश्वासों का जाल, राजनीतिक भ्रष्ट्राचारिता, आर्थिक परवशताओं एवं जटिलताओं का चित्रण विद्यमान है। इस कविता-संग्रह में संकलित कविताओं- **'आस्था या अंधविश्वास'**, **'जाग रहा है राष्ट्र'**, **'दामिनी'**, **'ये नेता नहीं व्यापारी हैं'**, **'संकल्प सब कुछ बदलने का'**, **'बिगड़ता सामाजिक सन्तुलन'** इत्यादि में वर्तमान परिवेश का यथार्थ दिखलाई देता है। भारतीय समाज में विद्यमान अंधविश्वास और व्यर्थ के आडम्बरों को नकारते हुए **'आस्था या अंधविश्वास'** शीर्षक कविता में अपना मन्तव्य स्पष्ट करते हुए लिखा है-

"झुंड के झुंड
भाग रहे हैं लोग
गंगा घाट की ओर
चाहते हैं
सबसे पहले
लगाना गंगा में डुबकी
धोना चाहते हैं
जन्मों के पाप
गंगा में।"[67]

वर्तमान जन–जीवन की जटिलताओं को पूरी तरह से बदलने का संकल्प कवि गुप्त जी में नज़र आता है। समाज में व्याप्त जटिलाताओं–विसंगतियों के अतिरिक्त कवि गुप्त ने प्रकृति–पर्यावरण के प्रति जन–जागरुकता पैदा करने की भी कौशिश की है। **'पेड़ बोलते हैं'** शीर्षक कविता में पर्यावरण संरक्षण के प्रति कवि का संदेश स्पष्ट परिलक्षित होता है।

"पेड़ बोलता है
जब
उसके नंगे बदन पर
कोई करता है कुल्हाड़ी से वार
अलग करता है
हरी–हरी नरम टहनियाँ
उसके शरीर से
कर देता
उसका अंग–भंग
हो जाता
वह लहुलुहान क्षण भर में
तब
बोलता हैं पेड़।"[68]

कवि द्वारका लाल 'गुप्त' मूलतः गीतकार है। इनके **'पगडंडी'**, **'जीवन के रंग सात'** व **'राष्ट्र देवो भवः'** जैसे गीत संग्रहों में भी प्रेम में मिलन व बिछोह जैसी कोमल भावनाओं के अतिरिक्त राष्ट्रीय भावों की प्रधानता है तो मानवतावादी व्यवस्था की स्थापना में बाधक तत्त्वों के विरोध में विद्रोह के स्वर भी प्रस्फुटित हुए हैं। 'जीवन के रंग सात' गीत संग्रह में श्रृंगार के मनोरम भावों से परिपूर्ण गीतों में प्रेम की एकरूपता व विरह भावना के मनोरम चित्रण उपस्थित है। इस गीत संग्रह में संकलित **'सजन रे, तू दीया मैं बात'** गीत में प्रेम की एकरूपता को सहजता से देखा जा सकता है। जैसे–

"सजन रे,
तू दीया मैं बात
प्रमुदित करते सारे जग को, जलते हैं दिन–रात।
तेरे बिना अधूरी, तू भी
मेरे बिना अधूरा
दोनों मिलकर करते हैं हम
जग का दूर अंधेरा
घृत में सनी रहूँ मैं निस–दिन
तिल–तिल जलती गात।"[69]

कवि द्वारका लाल 'गुप्त' ने 'राष्ट्र देवो भवः' गीत संग्रह में अपनी देशप्रेम से संबंधित संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। देश के अतीत, वर्तमान और भविष्य का समग्र चित्र इस कृति में मिलता है। अपने मन में बसे भारत के भविष्य की छवि को गुप्त जी ने '**भारत सपनों का**' शीर्षक गीत में इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

"मेरे सपनों के भारत में, रावण का क्या काम जी
हर नारी हो सीता जैसे, पुरुष बनें श्री राम जी।"[70]

कवि 'गुप्त' जी की रचनाओं के उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इन्होंने समाज व देश की आर्थिक, पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। समाज व देश के प्रति कवि द्वारका लाल गुप्त ने अपने कवि कर्त्तव्य का भली–भाँति निर्वहन किया है। देश के प्रतिष्ठित विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं जैसे– '**मधुमती**', '**साहित्य परिक्रमा**', '**गुर्जर राष्ट्रवाणी**' इत्यादि में इनकी कविताएँ प्रकाशित होती रही है। राष्ट्र सेवा में समर्पित इस कवि ने इन कविताओं में भी समाज–सेवा तथा राष्ट्र सेवा का भाव समाया हुआ है। "अपने साहित्यिक व सामाजिक अवदान के लिये श्री द्वारकालाल गुप्त को विभिन्न संस्थाओं द्वारा कई बार समादृत किया गया है जिसमें माण्डवी प्रकाशन (गाज़ियाबाद) अखिल भारतीय साहित्य परिषद् (बाराँ इकाई), बज़्मे–सुखन (छबड़ा), भारतेन्दु समिति (कोटा), आर्य समाज (बाराँ), वैष्णव अग्रवाल पंचायत (बाराँ) प्रमुख हैं।"[71]

सारांशतः कहा जा सकता है कि हाड़ौती अंचल के परम सम्माननीय कवि द्वारका लाल 'गुप्त' आज भी अपने हृदयस्पर्शी एवं सरस रचनाओं के द्वारा आप युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन कर रहे हैं। आपके कोमल एवं मधुर गीतों से तो पाठक रससिक्त होता ही है साथ ही कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त आपका देश–प्रेम युवा पीढ़ी में आशावादी संदेश निरूपित कर रहा है। हाड़ौती अंचल के हिन्दी साहित्य के विकास में कवि गुप्त जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। हिन्दी की अनेक विधाओं में सृजन उनकी बहुमुखी प्रतिभा की परिचायक है।

2:8 बजरंगलाल "विकल" : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

राष्ट्रीय भावों से भरे सरस हृदयी, संवेदनशील व प्रतिभा सम्पन्न **कवि बजरंगलाल "विकल"** का जन्म **06 जनवरी सन् 1938** को श्योपुरकलां (म.प्र.) में हुआ। यह संयोग मात्र ही था कि इनकी माताजी अपने पीहर मिलने गई हुई थी और वहीं ननिहाल में कवि का जन्म हुआ। इनके पिता श्री बद्रीलाल जी मूलतः कनवास के रहने वाले थे बाद में वे केशोरायपाटन में बस गये थे। कवि "विकल" का बचपन यहीं गुजरा था। इनकी माता श्रीमती सुन्नी बाई के त्यागमय जीवन ने कवि "विकल" को बहुत प्रभावित किया था। कवि बजरंगलाल "विकल" की प्रारम्भिक शिक्षा केशोरायपाटन में हुई। राजकीय महाविद्यालय, कोटा से इन्होंने बी.ए. व एम.ए. किया। कठिन आर्थिक परिस्थितियों का सामना करते हुए इन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की तथा अध्यापक पद पर नियुक्त हुए। बचपन से ही काव्य पढ़ने एवं लिखने में कवि की गहरी अभिरूचि थी। सातवीं कक्षा में ही इन्होंने कविताएँ रचना शुरू कर दिया था। एक बार पड़ौस में रहने वाले गोपाल जी (दाई साहब) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ शाखा के कार्यालय में बालक बजरंग लाल को ले गये। कार्यालय के अन्तर्गत उच्चकोटि का साहित्य विद्यमान था। संघ कार्यालय में कवि ने कुछ किताबों को पढ़ा तो साहित्य के प्रति उनका रुझान बढ़ने लगा। कवि बजरंग लाल "विकल" के अनुसार उनके जीवन की इस घटना ने उन्हें साहित्य सृजन की प्रेरणा प्रदान की है। संघ कार्यालय में कवि ने प्रसाद, पंत, निराला इत्यादि रचनाकारों की रचनाऐं बड़े चाव से पढ़ते थे व कविताऐं लिखते थे। कवि बालचन्द जी ने उनकी इस काव्य प्रतिभा को पहचाना और बालक बजरंगलाल को काव्य रचना हेतु प्रेरित किया। कवि "विकल" ने अपनी पहली कविता '**चन्द्रग्रहण**' पर लिखी थी।

सहज एवं सरल स्वभाव वाले इस कवि की आंतरिक संवेदना व चितस्थ अनुभूतियाँ देश की राष्ट्रीय समस्याओं से अधिक जुड़ी रही है। राष्ट्र प्रेम की भावना इनकी कविताओं में कूट–कूटकर भरी हुई है। राष्ट्र को उन्नत और उदात्त बनाने की आकांक्षा कवि मन में सदैव विद्यमान रही है। स्वदेशानुराग से प्रेरित कवि का हृदय जन–मन में हिन्दी भाषा के प्रति अनुराग बढ़ाना चाहता है। हिन्दी के प्रति प्रेम इनके

हृदय में बसा हुआ है। केशवरायपाटन में चम्बल नदी किनारे निवास कर रहे कवि "विकल" को प्रकृति से भी गहन लगाव है। सहज एवं सादगी भरे इस व्यक्तित्व की सांस्कृतिक एवं दार्शनिक सोच भी बहुत गहरी है। समकालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों से उद्वेलित कवि का हृदय अन्याय का प्रतिकार व उदात्त मानव मूल्यों का समर्थन करता है। समकालीन परिस्थितियों से जुड़ी कवि की स्वानुभूतियों पर आधारित कविताओं का मार्मिक प्रस्फुटन पाठक को बहुत प्रभावित करता है। कवि का सहज, सहिष्णु, देश–प्रेमी और मानवतावादी व्यक्तित्व की प्रभावपूर्ण झलक उनके काव्य में भी दिखाई देती है।

राष्ट्रभावापन्न कवि "विकल" की कवितायें '**चिदम्बरा**', '**मधुमती**', '**राष्ट्रधर्म**', '**शारदा की चेतना**' आदि विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशत होती रही है। साहित्य के प्रति अपने अगाध प्रेम के कारण कवि श्री भारतेन्दु समिति, कोटा तथा अखिल भारतीय साहित्य परिषद जैसे साहित्यिक संस्थाओं से भी जुड़े रहे हैं। कवि "विकल" को उनके साहित्यिक अवदान के लिये श्री भारतेन्दु समिति, कोटा द्वारा '**साहित्य श्री**' **सम्मान** से भी सम्मानित किया गया है।

कवि बजरंगलाल "विकल" का व्यक्तित्व जहाँ सहजता एवं सरलता का पर्याय है। वहाँ इनका कृतित्व आत्मविश्वास एवं मनोबल प्रदान करने की संजीवनी है। कविता, गीत, ग़ज़ल, रूबाईयाँ, कहानी आदि विधाओं में साहित्य–कर्म करने वाले इस बहुआयामी व्यक्तित्व की रचनाओं का अधिकांश स्वरूप समसामयिक परिवेश के सापेक्ष है। राष्ट्रीयता, प्राकृतिक दृश्यों, प्रेम, दर्शन इत्यादि स्वरूपों का समावेश इनकी कृतियों में मिलता है। कवि "विकल" के प्रथम काव्य–संकलन 'पयस्विनी' में वर्तमान ज्वलंत समस्याओं का चित्रण हुआ है। उक्त काव्य–संकलन में कविताओं के अतिरिक्त गीत, ग़ज़ल एवं गीतिका विधाऐं भी संग्रहित है। कृति में संकलित गीत कवि के प्रकृति प्रेम को प्रकट करते हैं तो गीतिका में प्रेमिल संवेदनाओं का समायोजन हुआ है। कविताओं के अन्तर्गत कवि के राष्ट्र भाव व सांस्कृतिक दृष्टि की निश्छल छवि परिलक्षित होती है तो ग़ज़ल विधा में कवि के मन के दुःख–दर्द की अभिव्यक्ति हुई है। डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' ने भी उक्त

कृति की समीक्षा करते हुए भूमिका में लिखा है– "कविताओं में आंचलिकता का तो प्रभाव है ही, कविता के अधुनातन रूपों से भी कवि अपरिचित नहीं है। संग्रह में गीत ग़ज़ल से लेकर नई कविता तक के पुष्ट उदाहरण हमें मिलते हैं। भावना के स्तर पर कविताएँ किसी प्रतिबद्धता से नहीं बंधी हैं। आक्रोशी भी नहीं है। कहीं प्रकृति है तो कहीं दर्शन। कहीं रागात्मकता है तो कहीं प्रयोगात्मकता। कहीं पुरातन दोहा अपनी छवि दिखाता है तो कहीं कई कवितायें अपनी रूपाकृति। वैविध्य संग्रह का सौन्दर्य है। राष्ट्रभाव, सांस्कृतिक दृष्टि तथा निश्छल सात्विक सृष्टि इस संग्रह की पूंजी है।"[72] इस काव्य–संकलन की '**भारती वन्दना**', '**मातृभूमि हित**', '**भारत माँ मेरी माँ**', '**जागरण**' शीर्षक कविताओं में कवि के देशप्रेम की भावना का प्रस्फुटन है। '**मातृभूमि हित**' शीर्षक कविता में कवि "विकल" ने मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की कामना व्यक्त की है। कवि ने कहा है–

"जियो तो मातृ भूमि हित, मरो तो मातृ भूमि हित।
सुकर्म धर्म नेम व्रत, धरो तो मातृ भूमि हित।।
भारती महान् तुम, अमर प्रकाशवान तुम।
ओज तेज शौर्य में भी सूर्य के समान तुम।।
प्रबुद्ध पुण्यवान तुम, विकास के विहान तुम।।
अखंड शक्ति साधना
करो तो मातृभूमि हित।।"[73]

देश की वर्तमान भयावह स्थितियों को अभिव्यक्त करते हुए कवि ने '**आजादी की स्वर्ण जयन्ती**' शीर्षक कविता में लिखा है–

"इस राजनीति का क्यों अपराधीकरण हुआ,
क्यों नैतिकता की लाश सड़क पर सड़ती है।
क्यों राष्ट्र विभाजन की तीखी तीखी कीलें,
भारत माता के अन्तस्थल में गढ़ती है?"[74]

कवि "विकल" के '**शंखनाद**' कविता–संकलन में भी देश में विद्यमान अन्याय एवं अत्याचारपूर्ण स्थितियों के विरुद्ध आक्रोश एवं विद्रोह के स्वर समाहित है। पड़ौसी देशों की दोगली नीतियों एवं विस्तारवादी लिप्सा से कवि का अन्तर्मन घृणा भाव से भर उठता है। '**चीन के नाम पाती**' शीर्षक कविता में चीनी आक्रमण से व्यथित कवि मन के आक्रोशित भावों की छवि को देखा जा सकता है। यथा–

"बिन सोचे समझे बारूदी संगीनों से,
भारत माता पर तूने बोला धावा है।
मत भूल कि यह जितनी शीतल है ऊपर से,
उतना ही भीषण इसके भीतर लावा है।।"[75]

अकाल, गरीबी, बेरोजगारी जैसी ज्वलंत समस्याओं पर कलम चलाते हुए कवि ने सर्वजन हिताय की भावना के संदेश को भी काव्य में निरूपित किया है। '**सर्वजन हिताय**' शीर्षक कविता में मानवतावादी भावों व विचारों को अंकित करते हुए कहा–

"कभी न कोई भूखा सोये कभी न कोई दुख से रोये।
सोना बरन देश की माटी सबका प्यार सँजोये।।"[76]

कवि "विकल" के इस काव्य–संकलन में देश–प्रेम की मनमोहन भावधारा आद्योपांत दिखाई देती है। देश को समस्त विषमताओं, उलझनों और समस्याओं से मुक्ति की कामना लिए कवि ने कृति में संकलित कविताओं का सृजन किया है।

सन् 2013 में राघव पब्लिकेशन्स, जयपुर से प्रकाशित कवि "विकल" की रचना '**वाग्मिता**' तीन खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में कवि ने लघु राम कथा कथ्य को नये शब्दों में प्रस्तुत किया है। द्वितीय खण्ड के अन्तर्गत कवि ने भारतीय इतिहास के कुछ प्रणय–प्रसंगों द्वारा भारतीय नारी के उच्चादर्शों को अभिव्यक्त किया है। तृतीय खण्ड में कवि ने उन महान् साहित्यकारों का स्मरण किया है जिन्होंने हिन्दी भाषा के विकास में योगदान दिया।

कृति के प्रथम खण्ड में कवि ने राम व सीता के प्रति श्रद्धा भाव को तो प्रस्तुत किया ही है साथ ही रामकथा के कुछ अंशों का हृदय द्रवित करने वाला मार्मिक

वर्णन भी किया है। सीताहरण के पश्चात राम की वेदना का जो कारूणिक चित्रण कवि "विकल" ने किया है वह तुलसी के 'रामचरितमानस' की याद दिला देता है। राम के विलाव का भावपूर्ण चित्रण कवि "विकल" की काव्य प्रतिभा का अनूठा परिचय देता है। कृति में राम विलाप का भावपूर्ण चित्रण इस प्रकार हुआ है–

"हे मोर चकोर कपोत सुभग सारस सुन्दर।
जो तुम्हे चुगाती उषःकाल झोली भर–भर।।
क्या तुमने देखा कहीं, बाल मृगनयनी को।
सौन्दर्यमयी विधु वंदनी को, पिक बयनी को।।
मैं हार चुका जैसे जीवन सर्वस्व आज।
मुझ वनवासी अनिकेत राम पर गिरी गाज।।
वह सरल बिरल अपनी तनया अति भीरू मना।
कैसे रहती होगी एकाकी राम बिना?"[77]

'वाग्मिता' के द्वितीय खण्ड में प्रणय–प्रसंगों पर आधारित कविताओं में कवि "विकल" ने ऐतिहासिक नायिकाओं के प्रेमभाव को त्याग एवं अध्यात्म के पथ पर अग्रसर दिखाया है। **'स्वयंम्बरा'** शीर्षक कविता में राजकुमारी संयोगिता को पृथ्वीराज की प्रतिमा को माला पहनवाकर कवि ने प्रेमभाव को सम्मान दिया है तथा इसे आत्मा के उच्चादर्श के रूप में स्थापित किया है। यथा–

"फिर देखी मिट्‌टी की प्रतिमा,
चहुँ आन नृपति की सी उपमा।
ठहरे पद जड़वत् उठे न फिर,
बढ़ गये स्वतः ही संयत कर।
प्रतिमा के गले डाल माला,
अपलक देखती रही बाला।
नृप सभा हुई विस्मय विमूढ़,
देख कर प्रेम का भाव गूढ़।"[78]

कवि बजरंगलाल “विकल” ने ‘पयस्विनी’, ‘शंखनाद’ व ‘वाग्मिता’ हिन्दी काव्य कृतियों के अतिरिक्त **राजस्थानी भाषा में ‘जागजवानी’ कृति** का सृजन भी किया है। उक्त काव्य वीर रस की की कविताओं का संग्रह है। कृति में महाराणा प्रताप, वीर कुम्भा, वीर दुर्गादास, झाँसी की रानी, की युद्धवीरता के साथ–साथ पन्नाध ााय की धर्मवीरता को भी कवि ने अंकित किया है। कवि की यह रचना पाठक के हृदय में उत्साह व आत्मबल का संचार करती है।

कवि “विकल” की उपरोक्त रचनाओं के अतिरिक्त और कृतियाँ भी प्रकाशित होना शेष है। हाड़ौती के इस प्रतिष्ठित रचनाकार ने राष्ट्रीय और मानवतावादी भावों को गतिशील करने का जो प्रयास किया है वह परम सम्माननीय है। मानव मन को प्रेरित करने के कवि के अवदान के लिए सहृदय पाठक का मन इनको नमन् करता है और इनकी दीर्घायु की कामना करता है।

2:9 अम्बिका दत्त चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

राजस्थान के साहित्य–जगत में हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ख्यातनाम साहित्यकार श्री अम्बिकादत्त चतुर्वेदी का जन्म हाड़ौती अंचल के बाराँ जिले के अन्ता कस्बे में 20 जून सन् 1956 को हुआ। इनके पिता श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी पुस्तकालय प्रभारी तथा माता श्रीमती चंचल देवी एक कुशल गृहिणी थी। कवि अम्बिकादत्त की प्रारम्भिक शिक्षा पिता के स्थानान्तरण के कारण अलग–अलग कईं स्थानों पर हुई। बी.ए. करने के साथ ही इन्होंने एल.डी.सी. की नौकरी भी की थी। अवैतनिक अवकाश लेकर बी.एड. किया और उसी समय आर.टी.एस. की परीक्षा में सफलता अर्जित कर तहसीलदार पद पर नियुक्त हुए। पदोन्नत होकर ये राजस्थान प्रशासनिक सेवा में सेवारत हुए। कवि अम्बिकादत्त का बचपन बहुत आर्थिक संकटों में गुजरा था। भोजन की उपलब्धता का अभाव भी इन्होंने देखा था परन्तु इनकी माँ ने जिस सुदृढ़ता के साथ संघर्ष करते अच्छे संस्कारों से परिवार को संभाले रखा उसने कवि को सदैव प्रभावित एवं प्रेरित किया है। गरीबी के संकट, माँ के परिश्रम व साहस को शायद वे कभी भुला नहीं पाये हैं इसीलिए समाज के दबे–कुचले एवं दीन–हीन, दमित व्यक्ति की संवेदनाओं को आत्मीय भाषा के साथ अपनी रचनाओं में अधिक अभिव्यक्त किया है। साहित्य की ओर कवि का रूझान बाल्यावस्था से ही था। पिता के साथ पुस्तकालय जाकर ये उच्च कोटि का साहित्य पढ़ा करते तथा रचनाओं का सृजन भी किया करते थे। सन् 1977 में 'मधुमती' पत्रिका में इनकी कविता छप गयी थी व आकाशवाणी से भी इनकी कविताओं का प्रसारित होना आरम्भ हो गया था। वरिष्ठ साहित्यकारों के सम्पर्क में रहकर कवि ने अपने रचना कर्म को अधिक प्रभावी बनाने का भी प्रयास किया है। हाड़ौती अंचल के इस कवि ने अपने जीवन में जो अनुभव किया उसी में डूबकर अपनी काव्य रचनाओं का सृजन किया शायद इसी कारण वे जीवनानुभूतियों के कवि के रूप में अधिक पहचान रखते हैं। सरकारी अफसर होते हुए भी हर दृष्टि से उनका व्यक्तित्व एक कवि के रूप में अधिक निकट जान पड़ता है। कविता और मानव जीवन के बीच जुड़ाव की जो सघनता इन्होंने दिखायी है वह बहुत बेहतर है। शायद यही कारण है कि उनकी कविताओं की संभावना हर जगह हो सकती है।

अपने समकाल विसंगतियों को कवि अम्बिका दत्त ने बखूबी पहचाना है। कवि की सारी चिन्ताऐं उनके काव्य में नज़र आती है। समाज व राष्ट्र से संबंधित विविध पहलुओं पर चिन्तन प्रकट करता हुआ कवि समाज के कमजोर एवं दमित वर्ग के दुःख दर्द को मिटाने की सार्थक कोशिश करता है। कवि का मानना है कि जब वे इस वंचित एवं दमित वर्ग के लिए समानता तथा गरीबी से मुक्ति की बात करते हैं तो वह परोक्ष रूप से राष्ट्र को बचाने की ही बात करते हैं। कवि की यही जनध ार्मिता उन्हें अन्य रचनाकारों से भिन्न दर्शाती है। कवि विसंगतियों के प्रति कड़ा आक्रामक रुख नहीं अपनाते हैं बल्कि मनुष्य के तौर पर वे सदैव निर्मल होना चाहते हैं। एक जादुई आशावादिता के साथ वे मनुष्य को अपनी ताकत पहचानने एवं विकसित करने का संदेश देते हैं। कवि अम्बिकादत्त में सहज, सरल मिलनसार एवं संवेदनात्मक स्वभाव के साथ ऐसी अद्भुत प्रतिभा है जिससे उन्होंने विविध विषयों पर विविध शैलियों में रचनाएँ की है। कवि के हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में अद्यावधि तक पाँच कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी की अनेक साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में भी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। हाड़ौती के साहित्य जगत के इस भिन्न व्यक्तित्व को इनके साहित्यिक अवदान के लिए राजस्थान साहित्य अकादमी ने **सर्वोच्च 'मीरां पुरस्कार'** प्रदान कर सम्मानित भी किया है। राजस्थानी काव्य कृति 'सौरभ का चितराम' पर इनको सन् 1994 में **'गौरीशंकर कमलेश स्मृति पुरस्कार'** प्रदान किया गया। श्री भारतेन्दु समिति, कोटा के **'साहित्य श्री सम्मान'** से भी कवि अम्बिकादत्त सम्मानित हुए है। इसके अतिरिक्त राजस्थान पत्रिका, जयपुर द्वारा सन् 1998 में 'कारखाना उजड़ जाने के बाद' कविता पर **'पत्रिका सृजनात्मक पुरस्कार'** से सम्मानित भी किया गया।

कवि अम्बिका दत्त की काव्य-कृतियाँ अपने समकालीन रचनाकारों की काव्य रचनाओं से पृथक पहचान स्थापित करती है। उनके व्यक्तित्व में जिस तरह सरलता, सहजता एवं उदाहरता विद्यमान है उसी तरह इनके कृतित्व में मानव जीवन की सहजता एवं उत्कट जिजीविषा के चित्र अंकित है। "उन की कविता, संघर्ष के कार्य कारणों की व्याख्या नहीं करती, वरन् संघर्ष में अकिञ्चन का भी जो

अपेक्षित सहयोग है, उसकी जो उद्दाम आकांक्षा है, एवं अपनी सीमाऐं जानते हुए भी सामर्थ्य के विसर्जन की जो ललक है, उसे वह अपनी अनुभूतियों से, जो निजी हैं, सार्वजनीन करते हुए रूपायित करते हैं।"[79] वर्तमान सामाजिक विसंगतियों एवं मानव जीवन की परेशानियों से संबंधित अनेक जीवन्त रचनाओं का सृजन कवि ने किया है। कवि अम्बिकादत्त का प्रथम कविता–संग्रह **'लोग जहाँ खड़े हैं'** सन् 1987 में प्रकाशित हुआ। प्रकृति, प्रेम, दर्शन, जीवन–संघर्ष, राग, विराग, द्वेष, राष्ट्रीयता सभी अनुभूतियों का समावेश इस कविता संग्रह में हैं। कृति में संकलित **'उस रात'** शीर्षक कविता में ध ार्मोन्माद का जो दिल दहलाने वाला किया है वह देश में मौजूद सम्प्रदायवाद की पाशविकता को प्रकट करता है। यथा–

"सड़क पर अस्पष्ट से
नज़र आ रहे थे
खून के पदचिह्न
चुपचाप रो पड़ा मेरा मन
सचमुच!
मेरी आत्म आत्मा के साथ
बलात्कार किया था धर्म ने
उस रात!"[80]

सम्प्रदायवाद जैसे देश के बड़े संकटों एवं निर्मम व्यवस्थाओं पर आक्रामक प्रहार करने के बजाय व्यवस्था की विसंगतियों के प्रति लोगों के मन में शक्ति एवं साहस का संचार करने का प्रयास किया है। कवि अम्बिकादत्त ने प्रकृति के जरिए मानव–मन की ताकत को विकसित करने की कोशिश करते हैं। **'लोग जहाँ खड़े हैं'** कविता संग्रह की भूमिका में कवि नंद चतुर्वेदी ने कवि अम्बिकादत्त के काव्य की समीक्षा करते हुए लिखा है– "अम्बिका दत्त की कविताओं में मनुष्य की उपस्थिति उसके लाचार या गरीब होने के कारण नहीं है और न इस कारण है कि वह कोई सलीब उठाये हुए मसीहा है और न इस वजह से ही कि उसके पास मनुष्य को दुःख–मुक्त करने के 'राहत कार्य' हैं। बल्कि इन सबसे अलग उस शक्ति के कारण

जिसे वह 'नदी की पत्थर काटने की ताकत की' तरह अनुभव करता है और उसी को प्रणाम करता है–

अब मैंने नदी को देख लिया है
और पहचान लिया है
नदी की पत्थर काटने की ताकत को
बिना घिसे–जमीन के ऊपर बहते रहकर
मैं नदी को अभिवादन करता हूँ
प्रणाम करता हूँ
नदी की पत्थर काटने की ताकत को।"[81]

कवि अम्बिका दत्त के कविता–संग्रह **'दमित आकांक्षाओं के गीत'** कविता संग्रह में सामान्य जन की विवशता, पीड़ा, कमजोरियों एवं जिजीविषा को चित्रित किया गया है। दीन–दुखी बच्चे एवं कमजोर बुजुर्ग वर्ग से कवि की संवेदना अधिक गहराई तक जुड़ी हुई है। बुजुर्ग वर्ग की पीड़ा के प्रति संवेदना तो अनेक हिन्दी कवियों ने व्यक्त की है परन्तु इस वर्ग में उत्कट जिजीविषा के भाव पैदा करने का काम बहुत कम कवियों ने किया है। **'पार्क में बूढ़ा'** शीर्षक कविता में जिस तरह पार्क में खेलते बच्चों को देखकर एक बुजुर्ग में सुखद भावना के अहसास को चित्रित किया गया है वह कवि की एक भिन्न एवं सार्थक सोच को दर्शाता है। यथा–

"शाम के बाद
रात होने से पहले
घर चले गए बच्चे–बड़े भी
अकेली ठंडी सीमेंट की फिसलनी पट्टीको
छूता है वह
चारों तरह देखकर
चौकन्ना
एक बार चढ़ता है–ऊपर
सुखद आश्चर्य से भर जाता है
फिसलकर सकुशल नीचे आने पर"[82]

'नंगे पांव' व **'डर'** शीर्षक कविताओं में आम जन की विपन्नता विवशता और भयावहता को भी कवि अम्बिकादत्त बड़े आत्मीय ढंग से काव्याभिव्यक्त किया है। **'डर'** शीर्षक कविता में कवि ने वर्तमान बर्बर व्यवस्था से भयभीत आमजन की विवशता एवं पीड़ा को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है–

> **"जब घिसा जा रहा था चाकू**
> **पता नहीं किसके लिए**
> **मुझे सिर्फ अपनी पड़ी**
> **मैंने डरकर अपनी गर्दन पर अंगुलियाँ फिराईं**
> **मसलकर कुछ बस्तियाँ उतारी**
> **शरीफाना ढंग से कटे नाखूनों में मैल भर गया**
> **मैं डरा–अपनी हैसियत के लिए**
> **चाहा–अपना बीमा करा लूं**
> **बीमे से, मरने के बाद**
> **घर वालों को धन मिलता है**
> **डर तो दूर नहीं होता।"**[83]

आम जन के प्रति कवि की यह संवेदनात्मकता उसके प्रति उदात्त प्रेम को दर्शाता है।

कवि अम्बिकादत्त का चर्चित काव्य–संग्रह **'आवों में बारहों मास'** जिसे राजस्थान साहित्य अकादमी, उदपुर ने **'मीरां पुरस्कार'** प्रदान कर सम्मानित किया वह अभावग्रस्त एवं वंचित वर्ग की पक्षधर कृति है। 'आवों में बारहों मास' को हिन्दी में मूल्यवान कृति के रूप में लिया गया। प्रख्यात कथाकार स्वयं प्रकाश ने लिखा है कि– "अम्बिकादत्त पेशे से राजस्व अधिकारी हैं, इस नाते भी उन्हें राजस्थान के दूर देहातों, कस्बों के ठेठ धरती–पुत्रों की ठोस ज़मीनी पीड़ा से निरन्तर साक्षात् करने का दुलर्भ अवसर प्राप्त हुआ है। उनकी कविताओं में इसी जीवन के सच्चे और टटके चित्र हैं। अम्बिका दत्त का प्रकृति से भी बड़ा गहरा नाता रहा है और इसलिए गाँव देहात के ऐसे चित्र उनकी कविता में सहज उपलब्ध हो जाते हैं, जो समकालीन कविता में अन्यत्र दुर्लभ है।"[84] कृति में ग्रामीण वन–वनस्पतियों के चित्रण के

अतिरिक्त किसानों के शहरों की ओर पलायन करने की स्थिति और उनकी दारूण दशा के कारणों को कवि ने बखूबी जाना–पहचाना है। ग्रामीणों के दुःख–कष्टों एवं अभावों में जीवन जीने की व्यथा को कवि ने **'गाँव में'** शीर्षक कविता में अभिव्यक्त करते हुए लिखा है–

> **"ईश्वर भी आखिर कब तक, रह सकता है विपन्नता में**
> **वह भी अपने सारे वरदान समेटकर**
> **शहर में आ गया, उसके अभिशापों की छाया ही बची है अब वहां**
> **रुदन है/ मौन गूंगा–सा आक्रोश है**
> **या बची है सिर्फ अपने आंसुओं की नमी शेष जीवन में**
> **सिवा और इसके अब बचा ही क्या है, गाँव में"**[85]

विषादग्रस्त लोगों के कवि अम्बिका दत्त ने हिन्दी के अतिरिक्त राजस्थानी भाषा में भी जन–जीवन और लोक–संस्कृति का चित्रांकन किया है। कवि के राजस्थानी काव्य–संग्रह **'सौरभ का चितराम'** व **'आंथ्यौई नहीं दिन'** प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। कवि ने कुछ व्यंग्य लेख, समीक्षाऐं व स्वतंत्र लेख भी लिखे हैं। आम बोलचाल की भाषा में अनुभूतियों को चित्रित करने की महारत कवि को हासिल है।

जीवनानुभूतियों के रचनाकार कवि अम्बिकादत्त के बारे में कहा जा सकता है कि राष्ट्र को कमज़ोर करने वाले विविध पहलुओं पर कविताओं का सृजन कर कवि ने देश की निर्मम व्यवस्थाओं को सुधारने का प्रयास किया है। देश के लिए कुर्बान होना, आन्दोलन करना ही राष्ट्रीयता नहीं है। कवि ने कमज़ोर एवं दबे–कुचले, वंचित वर्ग के दुःख दर्द को जो स्वर दिया है वह भी परोक्ष रूप में राष्ट्रीयता का ही स्वर है। हम आशा करते हैं कि आने वाले समय में कवि की उत्कृष्ट रचनाओं से समाज व राष्ट्र को सही दिशा तथा आम आदमी को संघर्ष, धैर्य एवं मन की शक्ति प्राप्त होगी।

♦ ♦ ♦ ♦

संदर्भ-सूची

1. चिदम्बरा-प्रकाशक : श्री भारतेन्दु समिति, कोटा-अंक : अप्रैल-मई, वर्ष 21-पृ.सं.-45-46
2. मधुमती : गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक-सम्पादकःप्रकाश आतुर-अंक : नवम्बर-दिसम्बर 1985-पृ.सं.-12
3. स्मारिका-पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का साहित्य और मूल्यांकन-अखिल भारतीय प्रबुद्ध परिचर्चा-दिनांक 19-20 जुलाई 1986-पृ.सं.-41
4. मधुमती : गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक-सम्पादक : प्रकाश आतुर-अंक : नवम्बर-दिसम्बर 1985- पृ.सं.-12
5. चिदम्बरा-प्रकाशक : श्री भारतेन्दु समिति, कोटा-अंक : अप्रैल-मई, वर्ष 21-पृ.सं.-46
6. मधुमती : गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक-सम्पादक : प्रकाश आतुर-अंक : नवम्बर-दिसम्बर 1985- पृ.सं.-165
7. चिदम्बरा-प्रकाशक : श्री भारतेन्दु समिति, कोटा-अंक : अप्रैल-मई, वर्ष 21-पृ.सं.-49
8. मधुमती : गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक-सम्पादक : प्रकाश आतुर-अंक : नवम्बर-दिसम्बर 1985-पृ.सं.-13
9. झालावाड़ का साहित्य वैभव-संरक्षक : एस.एन. गुप्ता-लेखक : गदाधर भट्ट-पृ.सं.-36
10. स्मारिका : पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का साहित्य और मूल्यांकन-अखिल भारतीय प्रबुद्ध परिचर्चा-दिनांक 19-20 जुलाई 1986-पृ.सं.-35
11. नवरत्न-काव्य-शतक-सम्पादन : युगलकिशोर चतुर्वेदी-पृ.सं.-17
12. वही, पृ.सं.-13
13. वही, पृ.सं.-16
14. वही, पृ.सं.-20
15. वही, पृ.सं.-07
16. वही, पृ.सं.-25
17. चिदम्बरा-प्रकाशक : श्री भारतेन्दु समिति, कोटा-अंक : अप्रैल-मई, वर्ष 21-पृ.सं.-50

18. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–28
19. वही, पृ.सं.–21
20. वही, पृ.सं.–24
21. साकेत (वार्षिक पत्रिका)–राजकीय महाविद्यालय, रामगंजमण्डी (कोटा)–सत्र 2000–2001–पृ.सं.–11
22. वही, पृ.सं.–11
23. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–36
24. साकेत (वार्षिक पत्रिका)–राजकीय महाविद्यालय, रामगंजमण्डी (कोटा)–सत्र 2000–2001–पृ.सं.–12
25. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–85
26. वही, पृ.सं.–47
27. वही, पृ.सं.–53
28. हाड़ौती वाणी–प्रकाशक : श्री भारतेन्दु समिति, कोटा–अंक : जून, 1968–पृ.सं.–36
29. हाड़ौती वाणी–प्रकाशक : श्री भारतेन्दु समिति, कोटा–अंक : जून, 1968–पृ.सं.–40
30. मधुरम ब्लॉग : हमारे पुरोधा मास्साब मदन लाल पवाँर (लेख)–डॉ. नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी–बुधवार 4 दिसम्बर 2013
31. क्रान्ति–किरण–मदनलाल पवाँर–पृ.सं.–(आत्मकथ्य)
32. मधुरम ब्लॉग : हमारे पुरोधा मास्साब मदन लाल पवाँर (लेख)–डॉ. नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी–बुधवार 4 दिसम्बर 2013
33. क्रान्ति–किरण–मदनलाल पवाँर–पृ.सं.–06
34. वही, पृ.सं.–10
35. वही, पृ.सं.–28
36. स्मारिका : अखिल भारतीय साहित्य परिषद–शाखा कोटा–वर्ष : 1987–पृ.सं.–39
37. हाड़ौतिका (त्रैमासिक पत्रिका), कोटा–जनवरी से मार्च 2009–पृ.सं.–05
38. वही, पृ.सं.–05
39. गूँज रही शहनाई–प्रेमचंद विजयवर्गीय–पृ.सं.–(भूमिका)
40. युग–वीणा–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–(भूमिका)

41. वही, पृ.सं.–51
42. वही, पृ.सं.–50
43. देश का दर्द–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–28
44. वही, पृ.सं.–32
45. वही, पृ.सं.–76
46. अभिनन्दन–ग्रंथ : सारस्वत अनुष्ठान के मृत्युंजय मंत्र, डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–प्रबंध संपादकः डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–प्रकाशक : डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय अमृत महोत्सव समिति, कोटा–पृ.सं.–184
47. वही, पृ.सं.–184
48. वही, पृ.सं.–185
49. वही, पृ.सं.–186
50. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–219
51. अभिनन्दन–ग्रंथ : सारस्वत अनुष्ठान के मृत्युंजय मंत्र, डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' –प्रबंध संपादकः डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–प्रकाशक : डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय अमृत महोत्सव समिति, कोटा–पृ.सं.–69
52. श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–पृ.सं.–120
53. स्मारिका : सहस्त्र चन्द्र दर्शनम्, डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' जीवेम शरदः शतम्–अखिल भारतीय साहित्य परिषद राजस्थान, शाखा कोटा–पृ.सं.–49
54. अभिनन्दन–ग्रंथ : सारस्वत अनुष्ठान के मृत्युंजय मंत्र, डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'प्रबंध संपादकः डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–प्रकाशक : डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय अमृत महोत्सव समिति, कोटा–पृ.सं.–93
55. हमारे पुरोधा : डॉ. शान्तिलाल भारद्वाज 'राकेश'–सम्पादक : अम्बिका दत्त–पृ.सं.–13–14
56. वही, पृ.सं.–21
57. वही, पृ.सं.–33
58. समय की धार–शांति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–09
59. वही, पृ.सं.–31
60. इतने वर्ष – डॉ. शान्ति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–17–18

61. द्वार खुले हैं–डॉ. शान्ति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–(भूमिका)
62. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–318
63. हमारे पुरोधा : डॉ. शान्तिलाल भारद्वाज 'राकेश'–सम्पादक : अम्बिका दत्त–पृ.सं.–41
64. मरु गुलशन(त्रैमासिक लघु–पत्रिका)–सम्पादक : अनिल अनवर–पृ.सं.–03
65. लालकिला बनाम लोकतंत्र–द्वारकालाल 'गुप्त'–पृ.सं.–41
66. वही, पृ.सं.–63
67. कही–अनकही–द्वारका लाल 'गुप्त'–पृ.सं.–17–18
68. वही, पृ.सं.–85
69. जीवन के रंग सात–द्वारका लाल 'गुप्त'–पृ.सं.–92
70. राष्ट्र देवो भवः–द्वारकालाल 'गुप्त'–पृ.सं.–64
71. मरु गुलशन (त्रैमासिक लघु–पत्रिका)–सम्पादकः अनिल अनवर–पृ.सं.–05
72. पयस्विनी–कवि : बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–(भूमिका)
73. वही, पृ.सं.–07
74. वही, पृ.सं.–27
75. शंखनाद–बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–04
76. वही, पृ.सं.–52
77. वाग्मिता–बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–32
78. वही, पृ.सं.–73
79. हाड़ौती अञ्चल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–374
80. लोग जहाँ खड़े हैं–अम्बिका दत्त–पृ.सं.–61
81. वही, पृ.सं.–(भूमिका)
82. दमित आकांक्षाओं का गीत–अम्बिकादत्त–पृ.सं.–18
83. वही, पृ.सं.–54
84. अम्बिका दत्त–सम्पादक : विनोद पदरज–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–पृ.सं.–14
85. आवों में बारहों मास–अम्बिकादत्त–पृ.सं.–19

तृतीय अध्याय

हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य
में चित्रित स्वतंत्रता पूर्व की राष्ट्रीय भावना

तृतीय अध्याय

हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में चित्रित स्वतंत्रता पूर्व की राष्ट्रीय भावना

साहित्यकार का रचना कर्म युगीन संदर्भों से जुड़ा रहता है। युगीन स्थिति, परिस्थिति उसके भाव एवं संवेदना को उद्वेलित अवश्य करती है। स्वतंत्रता पूर्व का हिन्दी काव्य भी तात्कालीन परिस्थितियों से प्रभावित था। परतंत्र भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक छवि तात्कालीन साहित्य में विद्यमान है। राष्ट्रीयता का जो स्वर उस समय चारों ओर फूट रहा था वह साहित्य कर्म को भी प्रभावित किये हुए था। यही कारण है कि उस समय 'राष्ट्रीयता' काव्य का प्रमुख वर्ण्य विषय बना हुआ था। "राष्ट्रीय सांस्कृतिक नवजागरण के जिस काल में प्रथम स्वातंत्र्य-समर का बिगुल बजा और कांग्रेस की नींव पड़ रही थी और जिस समय स्वामी दयानंद प्रभृति समाज सुधारकों की सांस्कृतिक सरणि देश में निर्मित हो रही थी, उसी समय आधुनिक हिन्दी साहित्य के पुरोधा अपनी भारती का आह्वान कर रहे थे कि वह 'हिन्दी', 'हिन्दू' और हिन्दुस्तान के लिए समर्पित हो जाय। देशव्यापी नवजागरण के स्वर में स्वर मिलाकर चलने वाली हिन्दी कविता की धारा को आलोचकों ने 'आधुनिक कविता' कहकर संबोधित किया।"[1] आधुनिक कविता के प्रारम्भ से अब तक 'राष्ट्रीयता' का भाव कविता का प्रमुख विषय रहा है। स्वतंत्रता पूर्व यह भाव जहाँ देश के अतीत गौरव गान, मातृभूमि के प्रति लगाव, स्वातंत्र्य भावना एवं क्रान्ति के स्वर से जुड़ा हुआ था, स्वतंत्रता पश्चात् यह राष्ट्रीय मनोभाव लोकतांत्रिक व्यवस्था के खोखलेपन, सामाजिक असमानता, गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, आतंकवाद, साम्प्रदायिकतावाद इत्यादि विसंगतियों के यथार्थ अंकन एवं देशव्यापी उपलब्धियों के चित्रण से जुड़ी रही है। स्वतंत्रता पूर्व की निराशापूर्ण परिस्थितियों में देश के साहित्यकारों ने अपनी प्रभावपूर्ण देशभक्ति रचनाओं द्वारा राष्ट्रीयता का ऐसा बीज मंत्र प्रस्तुत किया जिसने नवजागरण एवं नयी चेतना उत्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। "उन्होंने भारत के गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण करके उसे पुनः वापस लाने की कामना की। अंग्रेजी राज्य के आर्थिक शोषण पर मीठा

प्रहार किया। राष्ट्रभाषा हिन्दी, राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावनाओं से ओत–प्रोत उनकी खड़ी बोली की कविताओं ने काव्य को युग की नवीन चेतना का धरातल प्रदान किया। यहाँ वायवी उड़ानों के स्थान पर यथार्थवादी स्वर की गूंज सुनायी पड़ी। सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य–प्रहार व्यवस्था के सड़ेपन पर दृष्टि–निक्षेप तथा देश की अधः पतन और निर्धनता पर क्षोभ इसी भावना के व्यंजक थे। भारतेन्दु में अंग्रेजी राज्य के प्रति भक्ति के साथ ही देश–भक्ति की भावना थी। वे भारत में अंग्रेजों के उन्नतिशील कार्यों के प्रशंसक थे, पर भारतीय समाज के आर्थिक शोषण एवं परानुकरण से चिंतित भी थे। उनकी कविता में आधुनिकता के बीज पड़े, जो कालान्तर में पल्लवित और पुष्पित हुए।"[2] हिन्दी साहित्य में पं. प्रताप नारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', श्रीधर पाठक, रामचरित उपाध्याय, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त इत्यादि कवियों का काव्य राष्ट्रीय एवं देशभक्तिपूर्ण भावनाओं से संबद्ध था।

हाड़ौती अंचल में भी राष्ट्रीयता से संबंधित विविध मनोभावों को प्रस्तुत करने वाले कवि हुए हैं। स्वतंत्रतापूर्ण इस अंचल के कवियों का काव्य–विषय राष्ट्रीयता से जुड़ा हुआ था। "हाड़ौती काव्य के वर्ण्य विषय हैं– जागीरदारी का विरोधी, बेगार प्रथा का उन्मूलन, लगान का अनौचित्य, रिश्वत, नौकरशाही, पुलिस के अत्याचारों को कोसना, अंग्रेजी साम्राज्य का उन्मूलन आदि। वह काल ही ऐसा था जिसमें विरोध और विद्रोह देश का मूल स्वर था इसके अतिरिक्त रचनात्मक पक्ष भी है, जिसमें खादी पहनना, सूत काटना, प्रजामण्डल के सदस्य बनाना तथा संगठित हो जाना आदि आते हैं।"[3] देशभक्ति, समाज–सुधार, मातृभूमि के प्रति समर्पण भाव एवं आज़ादी का भावांकन उनके काव्य में व्यंजित है। अतीत गौरव–गान के साथ क्रांति और स्वराज्य भावना के दर्शन भी इनके काव्य में होते हैं। अनशन, धरना, हड़ताल आदि को काव्य का अंग बनाकर इस अंचल का कवि उस समय स्वदेशी आन्दोलन का प्रचार कर रहा था। हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने हाड़ौती गीतों के साथ हिन्दी काव्य में भी अंग्रेजी शासन के विरोध में उग्र रोष प्रकट किया। परतंत्र भारतीयों की मनोवेदना को इन कवियों ने काव्य रूप में अभिव्यक्त किया है।

ब्रिटिश शासकों द्वारा भारतीयों के शोषण विरुद्ध अनेक आन्दोलन उस समय हो रहे थे। "हाड़ौती क्षेत्र में इस भीषण शोषण के विरोध में सत्याग्रह भी हुए। बरड़–आन्दोलन के साथ ही लोगों में जागृति आई। यह आन्दोलन अहिंसात्मक था। सभा की आवाज उठाने और शोषण एवं दमन के प्रति लोगों में जागरुकता उत्पन्न करने में नारी जाति भी पीछे नहीं रही है।"[4] हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने ऐसे समय में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध संघर्ष में भारतीय जनता के मनोबल को ऊँचा उठाकर आन्दोलन को अधिक उद्वेलित किया। इन कवियों ने जहाँ अतीत गौरव गान के माध्यम से भारतीयों के हृदय में परतंत्रता से उत्पन्न विषाद को दूर कर वीर भावना का संचार किया वहीं अंग्रेज कूटनीतिज्ञों द्वारा राष्ट्र का किये जा रहे विनाश पर क्षोभ प्रकट करते हुए देशवासियों में प्रतिरोध की भावना उत्पन्न कर उनके आत्मबल को मजबूत बनाने का प्रयास किया। अपने काव्य में इन कवियों द्वारा मातृभूमि के प्रति समर्पित भाव को अभिव्यक्त किया गया साथ ही क्रांतिकारी प्रयत्नों द्वारा आज़ादी को प्राप्त करने का उद्बोधन भी इन्होंने प्रस्तुत किया। स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीयों द्वारा किये गये संघर्षों एवं भरसक प्रयत्नों की सराहना करने में भी ये कवि पीछे नहीं रहे। स्वतंत्रता पूर्व स्थितियों में इस अंचल के कवियों ने राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करने में अग्रणी भूमिका निभायी। कवि **पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'** ने देश–सेवा में ही अपनी काव्य प्रतिभा को समर्पित किया था। "देश के प्रति पूर्ण निष्ठा उनके काव्य का केन्द्रीय स्वर है वे देश को आराध्य की तरह पूजते थे. रसखान ने 'मानुष हों तो वही रसखानि'– सवैये में जिस प्रकार हर स्थिति में अपने आराध्य कृष्ण के सान्निध्य की कामना की है, उसी उत्कटता के साथ नवरत्न जी देश–हित में सर्वस्व समर्पण की कामना करते है।"[5] पं. 'नवरत्न' की भाँति ही **कवि सुधीन्द्र** भी हाड़ौती अंचल के राष्ट्रीय भावनाओं के प्रख्यात कवि थे। उन्होंने ऐतिहासिक चरित्रों के माध्यम से भारतीयों के कर्म कौशल को जाग्रत किया। स्वतंत्रता के भाव जगाने वाली सुधीन्द्र की रचनाएँ वीरोन्तेजना पैदा करती है। " 'शंखनाद', 'प्रलय वीणा', 'जौहर' उनकी मानसिकता को प्रकट करते हैं। वे अपने मौन में भी एक धधकती आग सहेजे थे। वे अपने

एकान्त में भी भीड़ का कोलाहल जिये थे। वे अपनी गंभीरता में भी सामाजिक सरोकारों से जुड़े थे। वे सही अर्थों में मसिजीवी क्रांतिधर्मा थे।"[6] कवि सुधीन्द्र की रचनाओं को पढ़कर ऐसा लगता है मानों वे जन–जन में वीरता को जगाना चाहते थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारतीयों को असाधारण शक्ति कौशल, साहस एवं एकता का परिचय देना होता था। हाड़ौती के कवि **मदनलाल पवाँर** ने भारतीयों की इस आवश्यकता को समझते हुए देश के प्रत्येक वर्ग में जागरुकता उत्पन्न कर अंग्रेज सरकार के विरुद्ध क्रांति का आह्वान किया। देश की आज़ादी के लिए वे सभी वर्गों से सहयोग एवं सामंजस्य की अपेक्षा करते हुए कवि पवाँर मातृभूमि की रक्षार्थ त्याग एवं बलिदान का संदेश भारतीयों को देते हैं। उनकी रचना '**क्रांति–किरण**' में परतंत्रता की प्रतिकूल अवस्था में सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए प्रेरित करती है।

हाड़ौती अंचल के कवियों को पढ़कर इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता पूर्व हाड़ौती अंचल का हिन्दी काव्य राष्ट्रीय मनोभावनाओं से अधिक जुड़ा हुआ था। आत्मोत्सर्ग, स्वतंत्रता तथा देशभक्ति के भाव उस समय के काव्य में मुखरित है। इन कवियों के काव्य पढ़ने के पश्चात ऐसा प्रतीत होता है कि इन कवियों को अपने देश से अत्यधिक लगाव था। जिन राष्ट्रीय भावों से भरकर उन्होंने काव्य रचना की उसने देश को गुलामी से उबरने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। हाड़ौती के इन कवियों का यह सहयोग गौरव करने योग्य है। हिन्दी साहित्य की राष्ट्रीय काव्यधारा के विकास में इन कवियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

3:1 अतीत की गौरव गाथा

स्वतंत्रता पूर्व कवियों ने देश की दशा पर क्षोभ व्यक्त करते हुए भारत के गौरवमयी इतिहास का बखान कर देशवासियों को स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु उत्साहित करने का कार्य किया। हताश एवं निराश भारतीय जन के मन में स्वातंत्र्य प्राप्ति का उल्लास जाग्रत करने के लिए यह आवश्यक भी था। "अंग्रेजी हुकूमत और हुक्मरानों के दंभ से संघर्ष करते हुए हमारा अतीतानुराग जातीय स्वाभिमान को बचाने का यथार्थ पक्ष था। एक विदेशी शक्ति जब पूरी ताकत से देश की 'सांस्कृतिक-विरासत' को चौपट करती हुई हमारी अन्दरूनी दुनिया को तहस-नहस करने में लगी थी तब हमें अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं को याद करने, उनके महत्त्व को प्रतिपादित करने और उन्हें बचाने के लिए एक व्यापक जन-आन्दोलन की शुरुआत करने के महत्त्व ही को तो समझना था। कहीं समझाने में साहित्यकार सगे थे। भारत की सभी भाषाओं में बलिदानी पुरुषों के कथानकों को नाटक, उपन्यास, कहानी कविता में रूपान्तरित किया गया। वे हमें सगे-सम्बन्धियों से लगने लगे। वे जाने-माने लोग थे। उनके माध्यम से मानव मूल्यों की गरिमा प्रतिष्ठापित हुई थी। उन्होंने अपनी ज़िन्दगी स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए दाव पर लगाई थी जिनकी इस देश को इस समय सबसे ज्यादा जरुरत थी।"[7] देश के अतीत का गुणगान कर उस समय कवियों ने भारतीयों की प्रसुप्त अस्मिता को तो जगाया ही साथ ही अपने हृदय में छिपे राष्ट्र-प्रेम को भी उद्घाटित किया। जिस भाँति हिन्दी कवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' रचना में भारत की श्रेष्ठता की घोषणा की है उसी प्रकार हाड़ौती अंचल के कवि पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' ने भी काव्य में भारत के अतीत की गौरव गाथा को मुखरित किया है- "भारत और भारत की सन्तति आर्यों के प्रति 'नवरत्न' जी के मन में एक गौरव का भाव छिपा था। आर्य जाति की वीरता पर वे विमुग्ध थे। **'आर्य जाति को सम्बोधन'** शीर्षक रचना में यह भाव मुखरता से प्रकट हुआ है।

कौन महारानी लक्ष्मी सा था युद्धवीर
कौन माता अहिल्या सा कही दानवीर था?
कौन प्रेम मतवाली मीराँ सा था धर्मवीर

कौन शिवि का सा विश्व बीच दयावीर था?
जाकर विलोक जाति जातियों का इतिहास–
आर्य जाति तेरे जैसा किसमें खमीर था?"[8]

देश के अतीत के प्रति इस कवि में असीम श्रद्धा थी, इसलिए देश के भौगोलिक सौन्दर्य एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का भी प्रेरणादायी स्वरूप उनके काव्य में नज़र आता है। '**भारत माता**' शीर्षक कविता में देश के गौरवमयी स्वरूप के प्रति उनकी श्रद्धा स्पष्ट दिखाई देती है। यथा :–

"शोभा पुंज हिमालय इसमें विन्ध्याचल, उदयाचल इसमें
इसमें मलयाचल भाता है, जग में सौरभ फैलाता है
गंगा जमना बहती इसमें, सरस्वती लहराती इसमें
इसमें सिन्धु सोनभद्रा है और चन्द्र भागा क्षिप्रा है
सुजल सुफल है मही यहाँ की शस्य श्यामला मही यहाँ की
मलयज शीतल मही यहाँ की विबुध मनोहर मही यहाँ की
लता का फल पुष्प यहाँ है सुखदायक सब वस्तु यहाँ है
हरे भरे सब वृक्ष यहाँ है जड़ी बूटियाँ बहुत यहाँ है
दिव्य अब है निर्मल जल है, सभी प्रकार रम्य भूतल है
वायु यहाँ का अति हितकर है, और पदार्थ सभी सुख कर
लोहा तांबा चाँदी सोना माणिक नीलम हीरा पन्ना
स्थान–स्थान पर धरा हुआ है मानो भीतर भरा हुआ है
रामकृष्ण की है यहाँ माता द्रोण भीम की है यह माता
अर्जुन विक्रम की यह माता, व्यास पंतजलि की यह माता"[9]

हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप के प्राणों की रक्षा करने वाले झाला सरदार और उनकी जन्म भूमि झालावाड़ का गुणगान करने में भी कवि 'नवरत्न' पीछे नहीं रहे हैं। उन्होंने अपने हृदयोद्गार इस प्रकार व्यक्त किये हैं–

"श्री नवनीत प्रिया पद सेवक पृथ्वी सिंह नरेस
विश्व शक्ति शालिनी जयवन्ती सुधि नय शौर्यविधान

सागर सिन्ध सरोवर शोभित श्री शोभा की खान
ज्ञान भक्ति सत्कर्म विलासिनी नव फल नव सा पूर्ण

सुरपुर से अधिकात रत्नमयि असुर दर्प कर चूर्ण
महावीर परिशोभित जय ध्वज पंचरंग विजय निशान

प्रजा प्रेम मय भूप छत्रपति करे सदा सम्मान
सदा भवानी रहे सहायक करत लोक कल्याण

अटल झाला राज हो तपो भानुकुल भान
जय जय झालावाड़ महान्।"[10]

स्वाधीनता संग्राम एवं स्वराज्य प्राप्ति के संघर्ष के दिनों में कवियों ने ऐतिहासिक आदर्श पात्रों के ओजस्वी एवं प्रेरणादायी जीवन को आधार बनाकर काव्य रचना की, जिससे की देशवासियों के हृदय में देशभक्ति की भावना प्रबल बनाने का कार्य कर सकें। "अपने युग के अनुकूल कवियों ने अपनी लेखन-शक्ति द्वारा भारत के विगत गौरव, आध्यात्मिक और दार्शनिक नैतिक आदर्शों, शारीरिक बल तथा भौतिक ऐश्वर्य का चित्रण, ऐतिहासिक, अनुसंधान तथा प्रामाणिक धर्म ग्रंथों के आधार पर किया है। धर्म-ग्रंथ से उन विषयों को चुना, जो कि संपूर्ण राष्ट्र के एकीकरण के मुख्य तंतु हैं। इतिहास के उस चेतन स्वरूप को अपनाया, जो पुनः राष्ट्र की रग-रग में नवीन जीवन संचार करने वाला था।"[11] हाड़ौती अंचल में **कवि सुधीन्द्र** भी ऐसे कवियों में से एक थे। उन्होंने महाराणा प्रताप जैसे इतिहास पुरुषों पर प्रशस्त भाव वाली कविताओं की रचना की। देशवासियों में आत्म-सम्मान, आत्म-बल, कर्मठता, कर्म-कौशल के भावों को जाग्रत करने हेतु ऐसे ऐतिहासिक महापुरुषों को माध्यम बनाया है। उदाहरण के लिए 'शंखनाद' कविता का अंतिम अंश द्रष्टव्य है-

"व्यामोहित भारत-रथ तरणी
के हे कर्णधार धृतिमान!

आज तुम्हारा पांचजन्य दे

पुनः अमरता का वरदान!

पांचजन्य लेकर कर में फिर

और सूत्र भारत–रथ का

शंखनाद कर दो कि दृगों से

तिमिर दूर हो सत्पथ का!"[12]

कवि सुधीन्द्र महाराणा प्रताप के ओजस्वी एवं स्वाभिमानी जीवन के माध्यम से देशवासियों में स्वाधीनता प्राप्ति हेतु त्याग, बल एवं बलिदान की भावना का आह्वान करते हैं। **'प्रताप के प्रति'** शीर्षक कविता का उदाहरण द्रष्टव्य है–

"तुम पर फेंका जाल, किन्तु था तुम में गौरव गर्व।

तुम थे अटल–अडोल, रहे थे खोज रणोचित पर्व।।

देश–दीपक पर मुग्ध पतङ्ग!

आर्य–भू के अभिमान!!

भला कैसे कहकर 'सुल्तान'!

उसे करते तुम लज्जा–दान?

तुम्हारी आन–सदृश ही आर्य!

तुम्हारी थी वह आन महान

रही वह जब तक अक्षत, जाति

रही पाती तब तक उत्थान

आज खो बैठी साधन सर्व!"[13]

पराधीनता के विरुद्ध असफल होते संघर्ष से उत्पन्न विषाद, अवसाद के वातावरण में कवि सुधीन्द्र ने नयी ऊर्जा का संचार करने वाले काव्य **'जौहर'** का भी सृजन किया। कवि कर्त्तव्य से बंधकर रची गयी इस रचना अन्तर्वस्तु मात्र ऐतिहासिक आख्यान तक सीमित नहीं है। यह कृति स्वदेश–प्रेम की जागृति का उत्कृष्ट उदाहरण है। "'जौहर' की कविता में इस बात की और भी कवि लगातार ध्यान आकर्षित करता है कि 'जौहर' की ज्वाला में कूदने वाले नर–नारी स्वतंत्रता की दीप–शिखा के

परवाने हैं। दरअसल 'जौहर' उन्हीं स्त्री–पुरुषों का उत्सव है जो स्वतंत्रता के मर्म को जानते हैं। इस प्रसंग में ही सुधीन्द्र राजस्थान के लिए 'तीर्थ–भूमि', 'पुष्प–रेणु', 'पाप–पावनी' जैसे भावुक सम्बोधनों को काम में लेते हैं। उन्होंने लिखा हैः

विदित किसे है नहीं भला वह भारत भू की ढाल महान्
शौर्य–वीर्य का अविरल निर्झर पुण्य–तीर्थ वह राजस्थान।"[14]

स्वतंत्रतापूर्व की संकटकालीन परिस्थितियों में कवि ने इतिहास के इन आख्यानों को काव्य में समेटकर राष्ट्रीय एकता का मंत्र प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्त्वों को कवि हृदय ने निर्बल बनाकर स्वाधीनता संघर्ष से उदासीन युवकों में राष्ट्रीय शौर्य एवं देश–प्रेम जैसे भावों को प्रस्फुटित किया। 'जौहर' में वर्णित काव्य के अन्तर्गत जिस तरह मेवाड़ राजपूत चित्तौड़ सम्मान के लिए केसरि बाना पहनते हैं, पद्मिनी स्वाभिमान की रक्षा के लिए स्वयं को जौहर की अग्नि में समर्पित कर देती है तथा रत्नसिंह मातृभूमि के रक्षार्थ शत्रु के आक्रमण का प्रबल प्रतिरोध करते हैं। उसी तरह सम्मान, स्वाभिमान एवं स्वदेश प्रेम की भावना कवि देशवासियों में जगा देना चाहते हैं। "अस्तु जौहर हमारे अतीत की थाती है। जो अतीत से वर्तमान का मार्ग प्रशस्त करता है। उसका भाव बोध हमें स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करता है। दासता परवशता है उससे मुक्ति का मार्ग बलिदान पथ से गुजरता है। हमारे प्राणेत्सर्ग के पावन–पर्व के पश्चात ही आदर्श मानव मूल्यों की गरिमा स्थापित रह सकती है। इन्हीं समस्त प्रेरणाओं का पुन्ज "जौहर" (काव्य) हिन्दी साहित्य की अमूल्य थाती है।"[15] स्वतंत्रतापूर्व कवियों द्वारा ऐसे प्रेरणादायी काव्य सृजन के पीछे एक मनोवैज्ञानिक सत्य निहित था। "मानव मनोविज्ञान के अनुसार इसका रहस्य यह है कि जाति और समाज के वर्तमान को अपेक्षाकृत मलिन देखकर वह अपने स्वप्नों के कल्पना लोक में उज्जवल पक्ष की ओर भागता है और उसके स्तवन, अर्चन, पूजन और प्रशस्ति द्वारा महान व्यक्तियों या सामान्य व्यक्तियों के आदर्श तत्त्वों के प्रत्यक्षीकरण से आत्मा–सन्तोष अर्जित करता है। तब पीड़क, शोषक, आक्रामक विदेशी सत्ता के प्रति उसका आक्रोश बैरी से जूझते हुए वीर पुरुषों की ललकार में सुनाई देता है।"[16] उस समय कवियों ने इस मनोवैज्ञानिक सत्य को पहचाना इसलिए देशवासियों में एकता व अखण्डता की भावना उत्पन्न करने के लिए प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के उज्ज्वल पक्ष

को काव्य में समेटा। हाड़ौती अंचल के कवि **मदनलाल पवाँर** ने भी अपनी कृति 'क्रांति-किरण' में स्वतंत्रतापूर्व स्थितियों में रानी लक्ष्मीबाई, प्रताप, भगतसिंह जैसे ऐतिहासिक चरित्रों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए भारतवासियों के प्रत्येक वर्ग को जाग्रत करने का प्रयास किया। यथा-

"जागें 'सुल्ताना चाँद' और
झट जाग उठें 'लक्ष्मी बाई'
रण चण्डी का पहिनें आना
बन जाय शीघ्र शोणित पायी।

जागें 'प्रताप' और 'भगतसिंह'
'आजाद' और 'अशफाक' वीर,
जागें 'यतीन्द्र' जागें 'शचीन्द्र'
जागें तलवारें और तीर।

जागे भारत का भाग्य दीप
कण-कण में ज्वाला उठे जाग
चिर विश्व क्रान्ति की आवाह्न
प्याले में हाला उठे जाग।"[17]

राजस्थान के वीर-सपूतों के शौर्य, साहस एवं वैभव को काव्य में अंकित कर कवि पवाँर देश के तरुणों से निराशा को त्यागकर स्वाधीनता प्राप्ति हेतु बलिदान के लिए पुकारता है। राजस्थान की वीर भूमि का अंकन करते हुए कवि ने लिखा है-

"वीर प्रसविनी भूमि जहाँ की
भारत माता का सन्मान,
भू लुंठित हो पड़ा रो रहा
वही हमारा राजस्थान।

यही वही कानन है जिसमें
सिंह सदा विचरण करते थे,
यही वही उपवन है जिसमें
जग विख्यात सुमन खिलते थे।

यही वही समराङ्गण जिसमें
रुण्ड–मुण्ड उठ उठ लड़ते थे,
यही वही आंगन है जिसमें
सब स्वतन्त्रता से बढ़ते थे।"[18]

पराधीन भारत की क्षोभित अवस्था को मिटाने के लिए कवि द्वारा अतीतानुराग से सुवासित प्रेरणादायी काव्य का सृजन उस युग की ज़रुरत के अनुकूल थी। यह सच है कि निराशा के अंधकार को मिटाने के लिए आशा की एक सुनहरी किरण का होना आवश्यक होता है। अतीत का गौरवमयी इतिहास राष्ट्रीय चेतना पैदा करने वाली एक ऐसी ही सुनहरी किरण बनी हुई थी। डॉ. गुलाबराय ने भी स्वीकार किया है कि– "अतीत के सहारे ही गौरवमय भविष्य के निर्माण की आशा की जा सकती थी। राष्ट्रीय चेतना ने हमारा ध्यान प्राचीन गौरवगाथा की ओर आकर्षित किया।"[19] स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात भी अतीत गौरवगान की यह परम्परा बनी रही। कवियों द्वारा देश के ऐतिहासिक एवं पौराणिक गौरव को मार्गदर्शक के दीप के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। किसी ने देश के प्रति अपने प्रबल अनुराग का स्फुरण करने तथा उज्ज्वल व वैभवपूर्ण भविष्य के निर्माण के उद्देश्य से अतीत की गाथा को प्रस्तुत किया। कवियों द्वारा प्रस्तुत यह गौरव गाथा हृदय में नवीन साहस का संचार कर संघर्ष करने की प्रेरणा प्रदान करती है और उन्नति एवं उत्थान् के पथ पर अग्रसर करती है। डॉ. रामकुमार वर्मा के मतानुसार– "अतीत के माध्यम से हृदयों में ओज्ज्वल्य का आविर्भाव होता है।"[20]

स्वतंत्रतापूर्व एवं स्वतंत्रता पश्चात् कवियों ने अतीत की इस महत्ता को समझा। उन्होंने बलिदानी महापुरुषों, आदर्श धार्मिक चरित्रों से जुड़े त्यागपूर्ण भावों से युक्त काव्य सृजन द्वारा देशवासियों के हृदय को उद्वेलित एवं उत्साहित कर राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। आशा है भारत के अतीत गौरवगान की यह परम्परा आगे भी बनी रहेगी और देशवासियों का पथ–प्रदर्शन करती रहेंगी।

3:2 स्वातंत्र्य भावना

पराधीन काल में गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहे भारतीय जन की स्वतंत्रता प्राप्ति की संघर्ष यात्रा विस्तृत रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु त्याग एवं बलिदान की धारा का इतिहास सदैव प्रेरणादायक रहा है। अंग्रेजी शासन के बढ़ते अत्याचार से गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहे भारतीय जन के मन में परतंत्रता से घृणा एवं स्वातंत्र्य भावना का सूत्रपात हुआ। भारत की दुर्दशा से व्यथित भारतीयों के मन में अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह की भावना उत्पन्न होने लगी। भारतीय जन को यह समझ में आ गया था कि भारत की उन्नति स्वाधीनता प्राप्ति से ही सम्भव है। देश के प्रति बढ़ते अपनेपन की भावना उनके हृदय में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध प्रतिरोध भावना जाग्रत कर रही थी। भारतीयों के हृदय में बढ़ती यह स्वातंत्र्य भावना परिस्थितियों के अनुकूल सहज एवं स्वाभाविक ही थी। डॉ. सुधाकर शंकर कलवड़े का यह मत उद्धरणीय है कि– "देशभक्ति का सबसे प्रबल विस्फोट पराधीनता और दमन के विरुद्ध संघर्ष में ही मिलता है। भारत हमारा देश है, वह हमारी जन्मभूमि है, उस पर हमारा स्वत्व है। हमारी जन्मभूमि पर विदेशी आकर शासन करें, अपने घर में हम ही बन्दी रहें, यह घोर लज्जा की बात है, इन लौह–शृंखलाओं को प्राणों की बलि देकर छिन्न–भिन्न करना होगा, यह देशभक्तों की भावना रही, परन्तु देशवासियों में जब तक अपनी दासता की अनुभूति न हो, राष्ट्रीय चेतना को प्रोत्साहन प्राप्त होना कठिन था।"[21] समय के साथ स्वातंत्र्य भावना का यह आवेग बढ़ता ही गया। भारत के गौरवपूर्ण अतीत के स्मरण से उत्साहित होकर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध कई जन–आन्दोलन उठ खड़े हुए। जन–आन्दोलनों की असफलता से भारतीयों का मन अवसाद एवं निराशा से अवश्य ग्रस्त हो उठता था फिर भी उनके तन–मन की शक्ति स्वातंत्र्य प्राप्ति हेतु बढ़ती गयी। आज़ादी का यह संघर्ष और स्वातंत्र्य भावना का प्रसार सम्पूर्ण भारत में व्याप्त था। हाड़ौती अंचल भी इससे अछूता नहीं था। "हाड़ौती के जन साधारण और कार्यकर्ताओं द्वारा किये गये स्वातंत्र्य योगदान एक गौरवमयी इतिहास की कड़ियाँ हैं– इसमें सैंकड़ों व्यक्तियों ने 1857 से 1948 तक अनवरत रूप से कार्य किया

है, जो गर्व एवं गौरव की वस्तु है। इस भूमि के युवक ने स्वतंत्रता के लिए त्याग एवं बलिदान की धारा को सतत प्रवाहित रखा है और इतिहास के पन्नों में क्षेत्र के नाम को गौरवान्वित किया है।"[22] स्वातंत्र्य भावना का उफान इस अंचल के जनमानस में भी था। स्वाधीनता की आग जनहृदय में धधक रही थी। कईं जुलूसों एवं आन्दोलनों का संगठ्न हाड़ौती की इस भूमि पर किया गया। जन–जागृति लाने का प्रयास यहाँ के स्वतंत्रता सेनानी कर रहे थे। "कोटा की सन् 1942 की क्रांति राजस्थान में अपना अद्वितीय स्थान रखती है। तीन दिन तक कोटा शहर पर जनता ने अधिकार रखा और शहर कोतवाली पर तिरंगा फहराता रहा था। 8 अगस्त से ही जुलूस, सभाओं का तांता बंध गया था। 14 तारीख को भारी लाठी चार्ज एवं गोलियों का जनता को सामना करना पड़ा और जनता ने बड़ी बहादुरी से सरकार के इस अत्याचार को झेला। जन–समूह ने भी स्वतंत्रता सेनानियों को अपार सहयोग किया। सहर्स्तीं लोगों ने खुद को कानून के हवाले कर दिया।"[23] कोटा ही नहीं बूंदी, बाँरा व झालावाड़ में भी लोगों ने स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी थी। बूंदी के श्री नित्यानन्द एवं उनके पुत्र श्री ऋषिदत्त मेहता का स्वतंत्रता के प्रति त्याग एवं बलिदान सम्पूर्ण राजस्थान के लिए गर्व करने योग्य रहा है। देश की स्वतंत्रता हेतु इस कुटुम्ब के हर सदस्य को कारावास की यातना को भोगना पड़ा था। बूंदी राज्य की राज सेवा को छोड़कर जनजागरण एवं स्वाधीनता आन्दोलन के प्रति जो उत्साह, जज़्बात एवं भावनात्मक लगाव श्री नित्यानन्द एवं रिषिदत्त मेहता का रहा वह बहुत कम राष्ट्र सेवकों में दिखाई देता है। "सन् 1942 में 'भारत–छोड़ो' और 'करो–मरो' का भयंकर और अन्तिम शस्त्र का बापू ने शंखनाद किया और सेन्ट्रल तथा रियासती सरकार के वारन्ट पर श्री नित्यानन्द जी नागर और श्री रिषिदत्त जी मेहता को बून्दी में गिरफ्तार कर नज़रबन्द कर दिया गया। श्री नित्यानन्द जी नागर ने तो बून्दी में एक जुलूस का नैतृत्व भी किया था जिस पर आपको गिरफ्तार करके निर्दयतापूर्वक लाठीचार्ज भी किया गया। सन 1944 के अन्त तक दोनों ही पिता–पुत्र, श्री नागर जी बून्दी के प्रसिद्ध किले में और श्री मेहता जी अजमेर की सेन्ट्रल जेल में नज़रबन्द रहे। नज़रबन्दी से छूटने के पश्चात्

श्री मेहता जी को अजमेर मेरवाड़ा सरकार ने अजमेर मेरवाड़ा में और बून्दी सरकार ने बून्दी राज्य में प्रवेश निषेध कर दिया। परिणामतः 2,3 महिने की लिखा पढ़ी और अन्त में सत्याग्रह की चुनौती देने पर बून्दी पधारे। सन् 42 में ही नागर जी ने अपनी पैतृक जागीर को असामयिक समझकर सरकार को लौटा दिया और अपने ऊपर से जागीरदारी कलंक भी दूर कर दिया।"[24] स्वातंत्र्य भावना का यह आवेग यहाँ के साहित्यकारों में भी विद्यमान था। कवि मन की स्वातंत्र्य भावना साहित्यिक मंचों पर प्रकट हो रही थी। स्वातंत्र्य भावना की प्रेरणादायक रचनाओं का निर्माण इनके द्वारा किया गया। रचनाकर्म के अतिरिक्त अनेक कवियों द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रत्यक्ष रूप से भी भाग लिया गया। तात्कालीन परिस्थितियों में स्वाधीनता के प्रति अपनी ललक को कवियों ने अपनी कविता के माध्यम से अभिव्यक्त किया। राष्ट्रीय भावनाओं के आवेग से संबद्ध इनकी कविताऐं राष्ट्रीयता का शंखनाद कर रही थी। राष्ट्रहित हेतु ऐसा करना आवश्यक भी था। श्री मैथिलीशरण गुप्त की 'रंग में भंग', कवि माखनलाल चतुर्वेदी का 'हिमकिरीटिनी' काव्य संग्रह व 'पुष्प की अभिलाषा' कविता राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत ऐसी ही रचनाऐं हैं। हाड़ौती अंचल के कवि **पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'** ने भी कविता के माध्यम से तात्कालीन सरकार के क्रूर शासन की सच्चाईयों को उजागर किया व भारत के लिए स्वतंत्रता की कामना व्यक्त की है। "लार्ड कर्जन ने भारतीयों का शोषण करने तथा स्वतंत्रता संग्राम की भेद भरी नीति से कुचलने में अपनी अहम् भूमिका निभाई थी उस समय बड़े-बड़े क्रान्तिकारी शूरवीरों तक में इतनी हिम्मत नहीं थी कि अपनी लेखनी से तत्कालीन धूर्त अंग्रेज सरकार पर सीधा आक्रमण कर सकें। लेकिन 'नवरत्न' जी ने बन्दूक की गोली से भी गहरी मार करने वाला आक्रमण किया उन्होंने निर्भिकतापूर्वक लिखा-

एलगिन गिन-गिन दे गया हरामी दुःख,
दुरजन कर्जन में क्रूरता पसार ली।
एमर्सन लगा गया सभा तोड़ने का ताँता,
फूलर ने फूल शाही अपनी बघार ली।

एवट्सन पाजी ने, लाजपत दूर किये,

फ्रेजर ओ हेयर ने धूम-धाम धार ली।

कहे काल कवि दुष्ट मिन्टो ने तो घोटा दम,

भारत की जान, जॉनमार्ले ने मार ली।"[25]

झालावाड़ जैसे छोटे से नगर में बैठे इस कवि का चित्त राष्ट्रीयता के भावों से भरा हुआ था। 'नवरत्न' का जीवन और राष्ट्र-हित एक-दूसरे से गहन रूप से जुड़े हुए थे। स्वदेश-प्रेम का भाव उनके हृदय में गहराई तक बैठा हुआ था। **'जीवन्मृत'** कविता में देशवासियों को आत्मगौरव, स्वाभिमान का संदेश देते हुए कवि ने लिखा है :-

"जो आत्म-पौरुष नहीं जन धारते हैं

द्रव्यार्थ हाथ सब ठोर पसारते हैं

वह आत्मगौरव महा जड़ मारते हैं

मनुष्य जन्म अपना ह-ह हारते हैं"[26]

कवि 'नवरत्न' के जीवन में राष्ट्र-हित सदैव सर्वोच्च स्थान पर रहा है। मातृभूमि के प्रति प्रेम भावना के साथ-साथ आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे राष्ट्र नेताओं के प्रति भी उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव समाहित था। स्वतंत्रता की तीव्र अभिलाषा इनकी अंतरात्मा में विद्यमान थी। यही कारण था कि स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहे तिलक, गाँधी, गोरवले के प्रति उनके हृदय में श्रद्धामय एवं प्रेरणादायी स्थान विद्यमान था। "उनके लिए गोपालकृष्ण, गाँधी, बालगंगाधर तिलक पुरुषों के नाम नहीं थे, दिव्य आदर्श के पुंज थे। पंडित जी इन राष्ट्र-नेताओं के महान् जीवनादर्शों से अपने हाथ का कोना-कोना प्रकाशित करते रहते थे। यही कारण है कि गोपाल कृष्ण गोखले और तिलक की मृत्यु पर उन्होंने हृदयविदारक कवितायें लिखी। इन दोनों राष्ट्र-नेताओं पर लिखी रचनायें उनके प्रति पंडित जी के उत्कट प्रेम को ही व्यक्त नहीं करती बल्कि स्वतंत्रता-संग्राम में उन दोनों (गोखले और तिलक) की महत्त्वपूर्ण तथा रचनात्मक भूमिका को भी संकेतिक करती है। गोखले के लिए उन्होंने लिखा-

बुद्धिधन! नीतिधन!! पूत भारत माता के!!!
राजनीति तत्त्व-वेत्ता, अर्थ-विद्या पारावार
चला कहां गया कहां? माँ के जने प्यारे भाई
गोखले गोपाल कृष्ण मचाकर हाहाकार।"[27]

हाड़ौती अंचल के कवियों में स्वतंत्रता के प्रति यह आवेग व उत्साह मात्र कविता सृजन तक सीमित नहीं था, स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रति उनकी सक्रिय सहभागिता भी स्पष्ट होती है। स्वतंत्रता हेतु सर्वस्व त्याग और बलिदान की भावना उनकी अंत-प्रवृत्ति में समाविष्ट हो चुकी थी। देश की स्वतंत्रता के लिए वे कुछ भी करने के लिए तैयार थे। किसी भी तरह देश की स्वतंत्रता प्राप्ति ही इनके जीवन का ध्येय बन गया था। कवि **सुधीन्द्र** देश के प्रति समर्पित भाव रखने वाले ऐसे ही काव्यकार थे। "सुधीन्द्र के समय में स्वराज्य की गूंज, महात्मा गाँधी की जय और वन्देमातरम की अनुगूंज दसों दिशाओं में विकीर्ण थी। सम्पूर्ण राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भाव सरिता अपने पूर्ण वेग से प्रवाहित थी। तब समाज में राष्ट्र, राष्ट्रीयता और उसकी अस्मिता के प्रश्न मुँह बाएँ खड़े थे। कवि सुधीन्द्र! मनसा, वाचा और कर्मणा तीनों ही दृष्टियों से राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में संलग्न थे। इस हेतु आपको जहाँ भी अवसर मिलता समर्पित रहते।"[28] स्वाधीनताकामी संस्कारों से भरे कवि सुधीन्द्र में राष्ट्रवाद की यह विचारधारा इतनी प्रबल थी कि स्वतंत्र रूप से स्वाधीनता संघर्ष में भाग लेने हेतु वे पुलिस विभाग में लगी अपनी नौकरी छोड़ देते हैं। स्वाधीनता प्राप्ति हेतु मर मिटने की ईच्छा उनके हृदय में सदैव विद्यमान रही थी। कवि-कर्त्तव्य का निर्वाह करने में भी सुधीन्द्र पीछे नहीं रहे थे। उनका हृदय एवं रचनाकर्म दोनों माँ-भारती के रंग में पूरी तरह रंगे हुए थे। "राष्ट्रीय चेतना जहाँ कविता का सफल रूप ग्रहण कर सकी है, वहाँ हमें अंगुलियों पर ही गिने जाने लायक हिन्दी भारती के कवि प्राप्त हुए। सर्व श्री भारतेन्दु, प्रताप नारायण से लगाकर मैथिलीशरण, माखनलाल जी चतुर्वेदी, सनेही आदि के कंठों के मध्य से जो कविता धारा प्रवाहित होती हुई, देश के तप्त प्राणों को सींचती हुई, आश्वासन देती हुई, 'भैरवी' बनती हुई चली आ रही है, वही आज अंततोगत्वा निराला, पंत, दिनकर और सुधीन्द्र के अनेक

स्वरों में आप्लावित हो रही है।"[29] कवि सुधीन्द्र ने 'शंखनाद' में जहाँ राष्ट्रीय आदर्शों की ओर ध्यान आकर्षित किया है, वहीं 'जौहर' काव्य के अन्तर्गत कवि ने स्वदेश प्रेम, स्वाभिमानी जीवन, बल, बलिदान से संबंधित भाव व्यक्त किये हैं। इस काव्य में कवि ने स्वतंत्रता के मर्म को उद्घाटित किया है। इसी तरह 'प्रलय वीणा' कृति विद्रोह की ज्वाला और क्रांति की गर्जना जैसे भावों से संचित है। **'जौहर'** में देशवासियों को स्वतंत्रता संबंधी उद्बोधन देते हुए कवि सुधीन्द्र ने लिखा है–

"किसे वरोगे वर वीरों
स्वतंत्रता या परवशता का ग्रहण करोगे वर वीरों।

हो शूलों का मुकुट शीश पर ज्वाला की हो जयमाला,
तब स्वतंत्रता स्वयंवरा की पाओगे तुम वरमाला।
आत्माहुति की बलिवेदी पर कालकूट पी तिक्त तुम्हें।
करना होगा उसे प्राण के अमृत से अभिषिक्त तुम्हें!
उससे आलिंगित होकर तो मरोगे न मर–मर वीरो!

परवशता तो खड़ी सामने लिये 'हार' का आकर्षण!
डाल दुखभरे अपने मुख पर सुख–वैभव का अवगुंठन।
पाशों के मधु बंधन होंगे, पीड़ाओं के परिरंभण,
लय हो तब असत मरण में, यह सत् शिव सुन्दर जीवन!
जीना है क्या विमल भाल पर यह कलंक धर–धर वीरों!
स्वतंत्रता या परवशता का ग्रहण करोगे वर वीरों!
किसे वरोगे वर वीरों।"[30]

स्वाधीनता–संघर्ष काल में लिखी गयी कवि की ये पंक्तियाँ प्रेरणादायक भूमिका का निर्वहन कर रही थी। **'प्रलय वीणा'** में भी कवि स्वातंत्र्य–भावना अग्नि की भाँति धधक रही है। स्वतंत्रता के अभाव में कवि मन इतना विचलित हो उठता है कि 'कोकिल' से भी कवि मीठी तान छोड़कर स्वतंत्रता के ओजस्वी गाना गाने के लिए कह रहा है। अपने उग्र विचारों को अभिव्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है–

"अन्तर में आज तूफान उठा

जीवन में है तूफान उठा

री, रंगमहल की वीणा से

है आज क्रांति का गान उठा

वैभव से फटते महलों में,

तू प्रलय-लहर लहरा कोकिल!

अब छोड़ प्रलय की तान अरी,

अब गीत प्रलय के गा कोकिल!

विभ्रम है आज दिशाओं में

विष धुला शरीर-शिराओं में

आसव से जड़ता-सी छायी

आँखों की इन रेखाओं में

अब कालकूट की लहरों में

अमृत का स्पन्दन ला कोकिल!

अब छोड़ प्रलय की तान अरी,

अब गीत प्रलय के गा कोकिल!"[31]

स्वतंत्रता की ऐसी ही आकांक्षा का स्वरूप कवि **मदन लाल पवाँर** की कृति '**क्रांति किरण**' में भी परिलक्षित होता है। यद्यपि उनकी यह कृति सन् 1953 में प्रकाशित हुई थी परन्तु काव्य में व्यक्त पराधीनकालीन परिवेशगत सच्चाई को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि कवि ने कृति के प्रथम भाग 'स्वतन्त्रतापूर्व' के काव्यांश पराधीन काल में ही रचे होंगे। स्वतंत्रता प्राप्ति की अभिलाषा में कवि सर्वस्व न्यौछावर करने को तत्पर है। 'क्रांति-किरण' में स्वतंत्रता के प्रति कवि का रुझान इस तरह अभिव्यक्त हुआ है-

"आज बन्धन मुक्त माता हो, यही अभिलाष मेरी।

आज अपने ही करों से

लूँ मिटा अस्तित्व अपना,

शीश के बदले कहीं यदि
पा सकूँ मैं स्वत्व अपना।
एक क्या शत जन्म लेकर
शीश हँस-हँस कर चढ़ाऊँ
निज करों से चंडिका का
रिक्त खप्पर भर बढ़ाऊँ।"[32]

स्वतंत्रता पूर्व में जहाँ एक और विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए भारत संघर्ष कर रहा था तो दूसरी और मुस्लिम लीग द्वारा देश के पश्चिमोत्तर तथा पूर्वी क्षेत्रों में मुसलमानों के लिए 'स्वतंत्र राज्यों' की माँग से आन्तरिक गृह-कलह का वातावरण उत्पन्न हो रहा था। विभाजन से संबंधित विषय पर हिन्दू व मुसलमान संगठ्नों के बीच तनाव बढ़ता ही जा रहा था। लीग में 'पाकिस्तान' की माँग बराबर चलती रही। देश के विभाजन की यह माँग विदेशी शासन से ज्यादा घातक सिद्ध हो रही थी। कवि मदनलाल पवाँर देश के बँटवारे के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों एवं संगठ्नों को कोसते हुए राष्ट्रीय एकता का प्रतिपादन करते हैं। 'क्रान्ति-किरण' में अपनी स्वातंत्र्य भावना को उद्घाटित करते हुए कवि ने लिखा है-

"तड़फड़ाती हैं रुहें
आजाद भारत देख पायें
मूक कण्ठों से सभी
'जय हिन्द' के नारे लगायें।
रंज है सारे बिरादर
भूल बैठे रास्ता हैं
फ़कत उनको तो 'जिन्हा'
'पाकेस्ता' से वास्ता है।
हम रहे मिलकर रहे
पर ये अलग जाकर रहेंगे,
हिन्द मादर के जिगर के
ओह! दो टुकड़ें करेंगे।"[33]

पराधीनकाल की इन बाह्य एवं आंतरिक संकटकालीन स्थितियों से सारा देश असंतोष से भर उठा था। हिन्दू-मुस्लिम के बढ़ते साम्प्रदायिक दंगों एवं विदेशी सरकार के दमन से देश की जनता का आत्मविश्वास डगमगाने लगा था। स्वाधीनता आन्दोलनों की असफलताओं से भारतीय जनमानस निराशा एवं अवसाद से ग्रस्त हो गया था परन्तु फिर भी भारतीय जन आज़ाद भारत की परिकल्पना कर रहा था। भारत का गौरवमय उज्ज्वल एवं स्वर्णिम अतीत स्वराज्य की प्राप्ति हेतु जनमानस में जोश, उत्साह एवं प्रेरणा के भाव संचारित कर रहा था। यही कारण था कि इतनी विषम परिस्थितियों में भी भारतीयों का एकमात्र लक्ष्य भारत की स्वतंत्रता, एकता एवं अखण्डता थी। देश में जातीय एकता स्थापित करने का कवियों ने भरसक प्रयत्न किया। अंग्रेजी शासन के प्रति प्रतिशोध भावना से इनके हृदय में आजादी का बिगुल बज रहा था। प्रत्येक भारतीय अपने राष्ट्रीय धर्म एवं कर्त्तव्य का पालन कर रहा था। इस समय का साहित्यकर्मी भी राष्ट्रीय कर्त्तव्य का निर्वहन करने में पीछे नहीं था। तात्कालीन कवि के मन में कविता 'कविता के लिए' भाव प्रमुख नहीं था। उनका काव्य लेखन राष्ट्रीयता से अधिक प्रतिबद्ध था। देश के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति ही उस युग की कविता का प्राण थी। पराधीनकाल की कठिन परिस्थितियों ने कवि के भावुक हृदय को स्वाधीनता संघर्ष के पथ पर ला खड़ा कर दिया था। डॉ. सुधाकर शंकर कलवडे ने लिखा है- "धर्म के नाम पर हिन्दू-मुस्लिम का जितना लहू बहाया गया है, शायद ही अन्य संघर्षों में बहाया गया हो। यह देखकर कवियों को असीम दुःख हुआ और उन्होंने आग्रहपूर्वक हिन्दू-मुस्लिम को "राम रहीम" तथा "भारतमाता" की दो आँखे कहकर एकता का प्रचार किया। इस एकता में बाधा पहुँचाने वाले का भी उन्होंने यथार्थ चित्रण कर एकता की आवश्यकता का प्रबलता से प्रतिपादन किया है।"[34] परतंत्रता के कष्टों को देखकर उस काल में कवि ने राष्ट्रोद्‌बोधन के स्वर व्यक्त किये और स्वतंत्रता-चेतना के लिए आत्मबलिदान के राग अलापे हैं। देश में समन्वयवाद की भावना से सुवासित पुष्प की सुगंध बिखेरने का कवियों का प्रयास सम्मानजनक था। कवियों के हृदय में बसी यह राष्ट्रीय भावना आज भी हमारे लिए गौरव एवं अभिमान का विषय है।

3:3 आज़ादी का आह्वान

आज़ादी एक ऐसा मनोभाव है जो किसी भी देश के नागरिकों के लिए एक मुक्त चेतना का अहसास होती है। सम्पूर्ण भारत में अंग्रेजों का एकाधिपत्य स्थापित होने के बाद देशवासियों को विदेशी शासन रास नहीं आया। विदेशी शासन की स्वार्थपूर्ण नीतियाँ और उनके बढ़ते अत्याचार से जनता में असंतोष एवं विद्रोह की अग्नि धधक रही थी। विदेशी शासन की सत्ता को जनता स्वीकार नहीं कर पा रही थी। यही कारण था कि स्वराज्य प्राप्ति की आकांक्षा लिए जनता आज़ादी की लड़ाई लड़ना चाह रही थी। "1857 ई. में सर्वप्रथम भारतीय समाज ने अपनी दीर्घकालीन पराधीनता से मुक्ति पाने के लिए योजनापूर्वक अँगड़ाई ली। झाँसी की रानी, नाना साहब पेशवा, तात्या टोपे, बहादुरशाह ज़फर, बाबू कुँवर सिंह आदि ने सामूहिक रूप से अंग्रेजी सत्ता का तख़्ता पलटने के लिए संग्राम का बिगुल बजाया। सेना के जवानों से लेकर गाँव की जनता तक ने आज़ादी की लड़ाई लड़ने वाले इन रण–बाँकुरों का जी–जान से साथ दिया। 1858 ई. तक उत्तराचंल के विभिन्न भागों में इस प्रथम स्वातंत्र्य–समर की रणभेरी बजती रही। इस समर में भारतीयों को सफलता तो नहीं मिली, पर आज़ादी के लिए मचलने वाली भावना का वेग आगे भी प्रबल ही होता गया।"[35] देश की आजादी के लिए उठा यह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम दिल्ली व मेरठ तक सीमित नहीं रहा था, इसका असर राजपूताना के अनेक जगहों पर भी पड़ा था। कोटा में भी अंग्रेज अफसरों एवं अंग्रेज भक्त महारावों के प्रति विद्रोह स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किया गया। विद्रोहियों द्वारा अंग्रेज अफसर मेजर बर्टन की क्रूरता से हत्या कर दी गयी जो देश की आज़ादी से जुड़ी एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थी। "इसके बाद सारे कोटा नगर पर विद्रोहियों ने कब्जा कर लिया। महाराव गढ़ में अपने कुछ राजपूत सरदारों के साथ असहाय अवस्था में बन्द हो गये। यह भी एक संयोग की बात है कि सन् 1857 की धनतेरस के दिन मेजर बर्टन मारा गया और उस वर्ष की दीपावली कोटा ने अंधकार, मार काट, खूनखराबी के बीच मनाई। विद्रोहियों का कब्जा कोटा नगर पर 20 अप्रेल सन् 1858 तक रहा। इन 6 माहों में महाराव की सेना तथा विद्रोहियों

एवं अंग्रेजी सेना और विद्रोहियों के बीच घमासान लड़ाईयाँ कोटा नगर की सड़कों और गलियों में होती रही।"[36] अंग्रेज फौज की मदद से कोटा महाराव को मुक्त करवाया गया था परन्तु विद्रोहियों और अंग्रेज सरकार के मध्य कईं दिनों तक संघर्ष का यह दौर चलता रहा।

आजादी की इस लड़ाई में विद्रोहियों को भारी यातनाओं का सामना करना पड़ा। धन–सम्पत्ति से लेकर विद्रोहियों के जीवन को अंग्रेज सरकार द्वारा कठोरता से कुचल दिया गया था। अंग्रेज विद्रोहियों एवं क्रान्तिकारियों द्वारा इतना दुःख एवं कष्ट सहन करने के बाद भी आज़ादी का संघर्ष स्वतंत्रता प्राप्ति के सुखद भविष्य के स्वप्न को पूरा नहीं कर पाया। यह देश का दुर्भाग्य ही था कि प्रतिकूल कारणों और परिस्थितियोंवश आज़ादी का यह संघर्ष असफल ही रहा। भारतीय स्वतंत्रता का यह प्रथम प्रयास भले ही सफल नहीं रहा लेकिन इससे इसका महत्त्व कम नहीं समझा जा सकता क्योंकि देश की जनता में स्वतंत्रता के भाव जाग्रत करने में इस आन्दोलन का महत्त्वपूर्ण स्थान था। आन्दोलन की असफलता से भारतीय जनमानस में निराशा अवश्य उत्पन्न हो गयी थी परन्तु देशवासियों का मन विदेशी शासन को पलटने के लिए आकुल हो उठा था। लोगों में स्वतंत्रता प्राप्ति की जिज्ञासा उत्पन्न हो रही थी।

सन् 1857 की संकटकालीन परिस्थितियों में साहित्य–कर्म पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होता है कि हाड़ौती अंचल के कवि सूर्यमल्ल मिश्रण उस समय राष्ट्रीयता के भावों का उद्गार करने वाले शुरुआती कवियों में से एक थे। "गदरकालीन राजनीतिक परिस्थिति का कवि पर बड़ा स्फूर्तिदायक प्रभाव पड़ा था। उनकी इच्छा थी कि वे प्रेरणा देकर बिखरी हुई राजपूत–शक्ति को एक सूत्र में बाँधकर विदेशियों के विरुद्ध मोर्चा लेने के लिए खड़ी कर दें। लोगों को प्रेरणा देने के लिए जो कुछ उन्होंने लिखा–पढ़ी की, वह सब तात्कालिक परिस्थितियों के दबाव के कारण पोशीदा रूप में हुई। काव्य की व्यंजना–शक्ति का प्रयोग इस पोशीदेपन को बनाये रखने के लिए प्रचुर मात्रा में किया गया। इस उद्देश्य को लेकर सं. 1914 में सूर्यमल्ल जी ने उस महान् कृति का निर्माण शुरू किया, जिसका नाम है वीर सतसई।"[37]

सन् 1857 की क्रांति की असफलता से देश में स्वतंत्रता–प्रेम थोड़े समय के लिए सुप्त अवश्य हो गया था परन्तु उसके बाद अंग्रेजों के व्यापक दमन चक्र के विरुद्ध पुनः विद्रोह भाव जागृत हो गया था। दिनोंदिन विद्रोह का यह आवेग तीव्र होता चला गया। कहीं तोप, तलवार और बन्दूक के प्रबल बल से विरोध हो रहा था तो कहीं सत्याग्रह के आत्मबल से अंग्रेजी शासन का प्रतिरोध किया जा रहा था। "सन् 1913 ई. में बिजौलिया में स्वतन्त्रता आन्दोलन का शंखनाद हुआ था। इतिहास में यह समय महत्त्वपूर्ण है, उस समय महात्मा गाँधी का किसी भी प्रकार का सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ नहीं हुआ था। छः वर्ष की सफलता के बाद सत्याग्रह शब्द भारतीय इतिहास का अंग बन चुका था। सन् 1917 ई. में हरियाली अमावस्था पर बिजौलिया में 'किसान पञ्च' की स्थापना हुई और 1920 ई. के अगस्त माह में 'पञ्च बोर्ड' की स्थापना की गई थी। बूँदी दरबार और उनके सामन्त यहाँ शिकार खेलने आते थे और गरीब किसानों से बेगार ली जाती थी। विजय सिंह पथिक के नेतृत्व में किसानों ने फिर आन्दोलन किया। केसरी सिंह बारहठ, गोपाल कोटि्या, भँवर लाल स्वर्णकार प्रज्ञाचक्षु, हरिभाई किङ्कर, वे प्रसिद्ध नाम हैं, जिन्होंने घर–घर जाकर आन्दोलन को आगे बढ़ाया था। 1921 ई. में ही नैनूराम शर्मा, तनसुखलाल मित्तल, गौरीलाल घड़ी साज़, प्रभुदयाल कोटा में राजनीतिक आन्दोलनों को प्रारम्भ करने में लगे थे।"[38] राजनीतिक आन्दोलनों का यह सिलसिला निरन्तर आगे बढ़ता रहा।

आज़ादी का यह आह्वान देश में चारों और फैल रहा था। साहित्यकारों की लेखनी भी आज़ादी के आह्वान को शब्दबद्ध कर रही थी। कलम के द्वारा देशवासियों में स्वातंत्र्य भावना का विकास इन कवियों द्वारा किया जा रहा था। देश की पराधीन स्थिति से क्षुब्ध इन कवियों द्वारा राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह भली–भाँति किया गया। हाड़ौती अंचल में भी साहित्य की इस उज्ज्वल परम्परा का निर्वहन अनेक कवि कर रहे थे। देश की आज़ादी की भावना रखने वाले **पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'** ने आज़ादी हेतु कई उद्बोधन प्रस्तुत किये हैं। "यह तथ्य रेखाकिंत करने योग्य है कि पंडित जी की काव्य रचना का समय साधारण नहीं था स्वदेश प्रेम की बात करना खाँडे की धार पर चलना था उस समय कांग्रेस पार्टी तक अपना कार्य प्रस्ताव पारित करने तक सीमित किये थी लेकिन पंडित जी निर्भीकता के साथ

जन–चित्त से कायरता का भाव निकालने का काम कर रहे थे–

उठो–उठो शीघ्र करो न देरी
है एक ही तो यह बात मेरी
स्वदेश सेवाव्रत को उठाओ
प्रधान कर्त्तव्य सपूत का है
प्रसन्न माँ को रखना सदैव
हे भाइयो! भारतभूमि माँ की
सेवा करो धर्म यही तुम्हारा।"[39]

आज़ादी पाने का स्वप्न पाले यह कवि देशवासियों में अपनी भारत भूमि के प्रति पावन अनुराग उत्पन्न करने का महान् कार्य कर रहे थे। देश की सभ्यता, संस्कृति के प्रति यह प्रेम एवं लगाव उनके व्यक्तित्व में समाहित था। पराधीनता के समय में देशवासियों की संकीर्ण मनोवृतियों को दूर कर उनमें राष्ट्रहित को स्थापित करने का प्रयत्न कवि 'नवरत्न' कर रहे थे। परतंत्रता के दिनों में अंग्रेजों ने जिस चतुराई एवं योजनापूर्ण तरीके से अपने इरादो एवं अपनी सभ्यता को देशवासियों पर लाद दिया था, 'नवरत्न' जी ने अंग्रेजों के उस भाव को तोड़ने का प्रयत्न किया। गरीब, संत्रस्त, धर्मभरू, जातिगत रूढ़ियों में जकड़े लोगों को उन्होंने ललकार कर कहा– "तुम्हारा असली अन्नदाता भारत है, यहाँ की मिट्टी है इसलिए विदेशियों की चाटुकारिता छोड़कर गुलामी की चादर को उतार कर फेंक दो कोई काम करने में अपमान नहीं है वे लोग जो अपनी शान–शौकत का प्रदर्शन करते हैं, वे देश जो अपने धन–दौलत पर इतराते हैं उनके खजाने हमने भरे हैं।"[40] आज़ादी की जंग हेतु क्रांतिकारी सपूतों का आह्वान करते हुए कवि 'नवरत्न' ने **'देश की भलाई'** शीर्षक कविता में कहा है कि दुख एवं कष्ट को भोगने के पश्चात् ही आज़ादी का सूर्य उदय होगा। व्यक्ति द्वारा स्वयं के लिए ही जीवन जीना निरर्थक है, मातृभूमि के लिए मरने वाले सपूत ही सार्थक जीवन जीते हैं। कवि 'नवरत्न' ने लिखा है–

"अपने ही लिये जियो मर गयो मानव तो
जी गयो वही जो मरयो देश की भलाई में[41]

पराधीन युग में कवि के ये मनोभाव देशवासियों को सतत् प्रेरणा देने का कार्य कर रहे थे। राजनीतिक परतंत्रता से उत्पन्न देश की दयाजनक परिस्थितियों ने

कवि हृदय को राष्ट्रीय भावनाओं से भर दिया था। यही कारण था कि आज़ादी की चिनगारियाँ वे जन हृदय में पैदा करना चाह रहे थे। परतंत्रता के दुखों को देखकर समकालीन कवियों ने स्वतंत्रता के स्वर बुलंद किये और स्वतंत्रता का आह्वान किया। जिस तरह राष्ट्रीय कवि–मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर' स्वतंत्रता प्राप्ति का बिगुल बजाते रहे और काव्य रचना द्वारा देशवासियों को स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु उत्साहित किया उसी तरह हाड़ौती अंचल के कवि **सुधीन्द्र** ने भी आज़ादी के शंखनाद द्वारा जन–मानस को स्वातंत्र्य हेतु उद्वेलित किया। "यह सुधीन्द्र के लिए महत्त्वपूर्ण सुयोग था कि पूरा देश उनकी कविता के संकल्पों के साथ था। उनसे बहुत पहले बड़े कवियों–लेखकों ने स्वाधीनता–कामी चित्त और संघर्ष के लिए विशद भाव–भूमि तैयार कर दी थी। देश के छोटे–से–छोटे समाचार पत्रों से लगाकर बड़े से बड़े समाचार पत्र स्वतंत्रता के संघर्ष को निर्णयात्मक स्थिति तक पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध थे। भारतीय स्वाधीनता का पक्ष एक ऐतिहासिक दायित्व का प्रश्न बन गया था।"[42] सुधीन्द्र ने पराधीनता को भारतीयों के लिए सबसे बड़ा कलंक बताया और इस कलंक से मुक्ति पाने के लिए भारतीय जन को प्रोत्साहित भी किया। भारतीय जन को उत्साहित करते हुए उन्होंने लिखा हैं–

"शंखनाद हो रहा, जगो अब
उठो वीर! आँखे खोलो!
अपनी जड़ता–मेरी कालिख
मेरे इस पय से धो लो!!"[43]

राष्ट्रीयता का उद्दाम वेग सुधीन्द्र में विद्यमान था। महाकवि दिनकर की राष्ट्रीयता का वेग सुधीन्द्र में नज़र आता है। उनकी देशभक्तिपूर्व रचनाओं में व्यक्त यह आवेग उनके राष्ट्रीय प्रेम की द्योतक है। स्वदेश–प्रेम, बल–बलिदान, जन–जागरण के भावों से सजी उनकी कविता सर्वोत्कृष्ट राष्ट्रीय मनोभाव का रूपक प्रस्तुत करती है। अंग्रेजी सत्ता के प्रति विद्रोह की ज्वाला और आज़ादी को प्राप्त करने की उल्लासमय कामना उनके हृदय में विद्यमान थी। स्वतंत्रता के आकांक्षी इस कवि के लिए देश की आज़ादी से बढ़कर कोई अन्य वस्तु नहीं थी। "स्वतन्त्रता! मात्र

स्वतन्त्रता ही कवि का अभिष्ट सत्य है और 'जौहर' के मुख्य पृष्ठ पर स्वतन्त्रता का आह्वान करते हुए कवि कहता है–

स्वतन्त्रते! लो आज बिराजो,
कवि वाणी पर आओ।
कल्याणी वाणी! वाणी में,
कला कलित स्वंरभर जाओ।
मेरे कवि! तुम स्वाभिमानमय,
भाव भरा अन्तर लाओ।
लेखनि! अपनी अमर मसी से
अमर कथा लिखती जाओ!"[44]

कवि सुधीन्द्र के समान स्वतंत्रता की यह आकांक्षा कवि **मदनलाल पवाँर** के हृदय में भी पनप रही थी। देश की आजादी के लिए कवि पँवार क्रान्ति करने की बात करते हैं। न्याय के लिए कवि क्रान्ति का आह्वान करते हैं, ऐसा करने के पीछे उनका उद्देश्य पराधीन देश के जनमानस में छिपी चिनगारी को बाहर निकालना था। देश में व्याप्त अंग्रेजी अत्याचार को दूर करने के लिए कवि क्रांति का सहारा लेना चाहते है। पराधीनता के पाशों से देश की जनता की यातनाओं और बेबसी का रूप बढ़ता ही जा रहा था और पराधीनता के इसी दर्द को कवि ने महसूस किया, ऐसे में कवि पवाँर का क्रांति रूप को समर्थन देना परिस्थितिजन्य उपज थी। कवि पवाँर की कृति **'क्रान्ति–किरण'** में उनका क्रान्तिकारी स्वर स्पष्ट नज़र आता है। देश की आज़ादी हेतु क्रांति का आह्वान करते हुए कवि लिखता है–

"और कर्त्ता के करों को
काट कर धड़ दूर फेंके,
उस विनाशी की चिता की
आँच में जग हाथ सेके।
उस चिता के तीर बैठे
भेड़िए मातम मनावें,
देश के स्वातन्त्र्य के फिर

गीत हम जग को सुनावें।
और बुझ जाये युगों की एक जलती प्यास मेरी।
है यही अभिलाष मेरी।।"[45]

कवि पवाँर ने पराधीनयुग की परिवेशगत सच्चाइयों को यथारूप अभिव्यक्ति देने के साथ देश की आज़ादी हेतु सभी भारतीयों से नैतिक आग्रह भी किया है। देश के तरुणों, कवियों, किसानों जागरीदारों से कवि स्वतंत्रता निमित्त सहयोग चाह रहे हैं। देश के नवयुवकों में स्वतंत्रता के प्रति जोश, उत्साह एवं शक्ति का संवर्धन करते हुए कवि युवाओं से अपने पराक्रम के द्वारा भारतमाता को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कराने का आह्वान करते हैं। कवि ने लिखा है–

"सुभट भारत भूमि का है
तो दिखा दे आज जग को,
क्रान्ति की हुँकृत हिलोरों
से हिला दे आज नभ को।
बिज्जु बन, लोहित शिखा से
दे गला ये क्रूर कड़ियाँ।
तू तरुण सुलझा न पाया
ओज माँ की अश्रु लड़ियाँ।।"[46]

कवि पवाँर के लेखन–कर्म के समय अधिकतर कवियों की कलम राष्ट्रीय भाव–बोध से जुड़ी हुई थी फिर भी कुछ कवि व्यक्तिगत प्रेमानुभूतियों को अभिव्यक्ति देने में मसगूल थे। ऐसे कवियों को कवि पवाँर ने देश के प्रति उनके कर्त्तव्य को समझाते हुए स्वतंत्रता के यज्ञ में आहुति देने के लिए प्रेरित किया। कवि पवाँर ने **'क्रान्ति–किरण'** कृति में लिखा है–

"ओ कलि के कवि! ओ कलाकार!
क्या देख सका बन्दी–खाना?
माता के प्यारे पुत्रों का
क्या कभी सुना है अफसाना
क्या देखा फाँसी पर लटके

हँसकल मिटते दीवानों को?
अन्यायी भट्टी में जलते
देखा जन दीन किसानों को?
देखा माता का प्यारा सुत
दो दो दानों को तरस रहा,
भीतर ज्वाला बाहर ज्वाला
ऊपर से आतप बरस रहा?
यदि 'हाँ' तो तेरी आँखों में
क्यों नहीं चिताएँ सुलग उठी?
क्यों नहीं अनल बरसाने को
बन लोहित आँखे फड़क उठी?"[47]

आज़ादी का यह आह्वान पराधीनकाल में भारत भूमि के कण-कण में समाहित था। कवि पवाँर के काव्य स्वर की ही भाँति तात्कालीन समय में अनेक कवियों ने आज़ादी प्राप्ति हेतु जनमानस में जोश उत्साह के भाव भरने का कार्य किया। उनके काव्य में आज़ादी का स्वर ही प्रमुख बना हुआ था। "अंग्रेजों के द्वारा किये गये अन्याय-अत्याचारों और गुलामी के वे केवल गवाह ही नहीं, शिकार भी थे। परिणामतः उन्होंने विद्रोह की अग्नि में त्याग, बलिदान और समर्पण की छवि देकर स्वतन्त्रता-यज्ञ को सम्पन्न किया था। उनकी कविता इसी इतिहास का प्रतिबिम्ब है। त्याग, बलिदान और समर्पण के भाव उसमें सर्व-व्याप्त हैं। विद्रोह अगर इन कवियों का मूल स्वर है, तो बलिदान और समर्पण उनका प्राण-ध्वनि है।"[48] स्वतंत्रता पूर्व देश के प्रति उदात्त भावनाओं की यह छवि हाड़ौती अंचल के कवियों के काव्य में भी झलकती है। कवि 'नवरत्न', सुधीन्द्र, मदनलाल पवाँर के अतिरिक्त **कवि हरिवल्लभ हरि, अभिन्न हरि, इन्द्रदत्त स्वाधीन, बालकृष्ण थोलम्बिया** इत्यादि कवियों ने आज़ादी के लिए देशवासियों को जागृत रहने का संदेश दिया। **भैरवलाल 'काला बादल'** जैसे कवियों ने राष्ट्रीयता से संबंधित हाड़ौती गीतों की रचना द्वारा आज़ादी का आह्वान किया। इन कवियों ने स्वतंत्रता के लिए असहनीय कष्टों की झाँकी प्रस्तुत करने के साथ आज़ादी का आह्वान एवं अंग्रेजों के प्रति तीव्र आक्रोश भाव व्यक्त किया तथा राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वहन किया। हाड़ौती अंचल के इन कवियों के काव्य की उपादेयता एवं महत्त्व आज भी उतना ही श्रेष्ठ है।

3:4 मातृभूमि के प्रति समर्पण भाव

प्रत्येक व्यक्ति का अपनी मातृभूमि से संवेदनात्मक संबंध रहता है। किसी भी देश के नागरिक के हृदय में अपनी मातृभूमि के लिए गौरवपूर्ण एवं सम्मानजनक स्थान होता है। देश की भूमि के भौगोलिक गौरव से लेकर उसके ऐतिहासिक गौरवशाली स्वरूप से जुड़ा भावपुष्प उस देश के नागरिक के हृदय में महकता रहता है। मातृभूमि के प्रति परम आदर एवं सम्मान भाव उसके हृदय में बसा रहता है। अपनी मातृभूमि के प्रति ऐसा ही अथाह मोह, लगाव, आदर व सम्मान भारतवासियों ने अपनी मातृभूमि को सदैव माता के रूप में सम्मानजनक स्थान दिया है। भारत माँ के दैवीय स्वरूप की वंदना, प्रशस्ति तथा गौरवगान देशवासियों ने सदैव किया है। स्वतंत्रतापूर्व भी मातृभूमि के प्रति ऐसा ही असीम लगाव देशवासियों के भीतर मौजूद था। भारत–भूमि को विदेशी शासक अंग्रेजों से मुक्त करवाकर उसकी रक्षा का भाव उस समय भारतवासियों के मन–मस्तिष्क में समाहित था। देशवासियों में इस मनोभाव की उद्भावना स्वाभाविक भी थी। "जिस देश ने हमें जीवन दिया है, जिसकी धूल में पलकर हम बड़े हुए हैं, क्या हम उसके दुःखों की उपेक्षा करके जीवन को सार्थक कर सकते हैं ? स्पष्ट है कि स्वतंत्रता के संघर्ष–काल में प्रत्येक भारतवासी का सबसे महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य था–देश की स्वाधीनता के लिए साधना करना।"[49] मातृभूमि के प्रति प्रेम एवं सर्वस्व न्यौछावर करने का भाव देशवासियों के हृदय में छिपे देश–प्रेम को व्यक्त कर रहा था। अंग्रेजों ने भारत भूमि में रहकर यहाँ जिस तरह देश का शोषण किया उसके प्रति भारतीयों का विद्रोह स्वाधीनता–संग्राम के रूप में फूट पड़ना स्वाभाविक था। जिस भारतभूमि पर देशवासियों का अधिकार था उसका उपयोग विदेशी लोग अपने रंग–ढंग से कर रहे थे, वह भारतीयों के लिए असहनीय था। "अंग्रेजों ने पुरानी आर्थिक संरचना को बदला, जमीन का नया बन्दोबस्त किया। जमींदारी और इस्तमरारी बन्दोबस्त के कारण जमीन को क्रय–विक्रय करने की खुली छूट मिल गयी, वह व्यक्तिगत सम्पत्ति के रूप में बदल गयी। व्यावसायिक खेती को बढ़ावा मिला। कच्चा माल प्राप्त करने के लिए अंग्रेजों ने कपास, पटसन, जूट और नील की खेती को प्रोत्साहन दिया। लोगों को नील बोने

के लिए बाध्य किया जाता था। जौ, गेहूँ, धान के स्थान पर डर के मारे किसान नील बोते थे। इससे खाद्यान्न कम पड़ जाता था। बंगाल में इसका विरोध हुआ। चंपारन में महात्मा गाँधी का सत्याग्रह आन्दोलन भी मुख्यतः नील की खेती के विरोध में ही हुआ था। कच्चा माल विलायत भेजा जाता था और वहाँ से पक्के माल के रूप मे बदलकर भारत के बाजारों में पहुँच जाता था।"[50] अंग्रेजों द्वारा भारत भूमि का यह दमन चक्र बढ़ता ही गया। अंग्रेजों के इस कुचक्र को तोड़ने के लिए मातृभूमि के रक्षार्थ सभी भारतवासी प्राणों की बाजी लगाने में जुट गये। कवियों के संवेदनशील हृदय में भी मातृभूमि के रक्षार्थ विद्रोह की अग्नि भड़क उठी। मातृभूमि से प्रेम उसकी वंदना एवं महिमा का गुणगान करने एवं भारतभूमि को विदेशी अत्याचार से मुक्त करवाने हेतु त्याग, बलिदान एवं समर्पण भाव को जनमानस तक प्रसारित करने में उस समय का कवि पीछे नहीं था। डॉ. सुधाकरशंकर कलवड़े का वक्तव्य अत्यन्त प्रासंगिक ही है– "इस युग के कवियों के हृदय में भारतवर्ष की प्राकृतिक सुषमा की झाँकी अंकित जान पड़ती है, जिससे प्रेरित होकर वे उसका गुणगान करते हुए नहीं अघाते। उनके लिए मातृभूमि का कण–कण पावनता से ओतप्रोत है। अपनी भूमि के विषय में यह देवी एवं पुनीत धारणा भारतीय कवियों की अपनी विशेषता है। कवियों द्वारा प्रस्तुत भूमि का सांस्कृतिक शुचितम स्वरूप देवो–देवेशों के समान धर्मनिष्ठ भारतीय जनता को अर्चना तथा वंदना के लिए बाध्य करता है। इस अर्चना और वंदना का प्रवृत्तियों को कवियों ने समुचित रूप में वाणी प्रदान की है।"[51] मातृभूमि के प्रति प्रेमाभाव प्रकट करते हुए इन कवियों ने भारतभूमि का गौरवगान प्रस्तुत किया। मातृभूमि की वंदना एवं गौरवगान के माध्यम से इन कवियों ने पराधीन युग में राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास किया था। "इस काल के कवियों ने भारत देश की शस्यश्यामला धरती का अनेकशः गुण–गान किया ही है, साथ ही उसे विश्वभर में सर्वश्रेष्ठ भी सिद्ध किया है। चित्तौड़, पंचवटी, पानीपत, काशी, गया, वैशाली इत्यादि की सांस्कृतिक महत्ता का तो इन्होंने बखान किया ही है, साथ ही अर्जुन, प्रताप, भीम, शिवाजी इत्यादि शत–शत वीरों के प्रति भी श्रद्धा–सुमन भेंट करते हुये सब भारतीयों को अपने देश को

(भारतमाता को) परतंत्रता की बेड़ियों से पूर्णतः मुक्त कराने के लिए महात्मा गाँधी और महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय जैसे राष्ट्रीय महापुरुषों के पद–चिन्हों पर अनुभावन करने के लिए प्रेरित किया है। देशवासियों को इस स्वातंत्र्य प्राप्ति के लिए कहीं "इतिहास" के नाम प्रोत्साहित किया है और कहीं धर्म के नाम पर एक "तिरंगे" तले आकर एकत्र हो जाने के लिए प्रेरित किया है।"[52] मातृभूमि की स्वाधीनता हेतु कवियों द्वारा किये गये ये प्रयास मातृभूमि के प्रति उनके उत्कट लगाव को दर्शाता है।

हाड़ौती अंचल की बात करें तो कवि सूर्यमल्ल मिश्रण का धरती प्रेम संपूर्ण हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। 'इला न देणी आपणी' की बात कहकर उन्होंने भारतीय जन–जन के हृदय में मातृभूमि के प्रति प्रेम एवं समर्पण भावना को प्रतिध्वनित किया था। इसी तरह हाड़ौती के ही कवि **पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'** ने जिस हृदय विशालता से अपनी जन्मभूमि के प्रति प्रेमाभाव प्रकट किया वह उनके समर्पित भाव को परिलक्षित करता ही है साथ ही पाठक वर्ग के अन्दर भी मातृभूमि के प्रति गौरव भाव उत्पन्न करता है। उन्होंने लिखा है–

"ईश के प्रपंच सार्वभौममण्डल है,
व्योममण्डल भांति सूर्यचक्र बलिहारी है,
सूर्यचक्र बीज भारतभूमि है सुहानी सारी,
सारी भूमि भांति एशिया की भूमि न्यारी है,
एशिया में भारत और भारत मांहि राजस्थान,
राजस्थान बीच झालावाड़ शोभा वारी है,
झालावाड़ गेंहू सार जननी महाजनों की,
जन्मभूमि प्राणप्यारी "पाटन" हमारी है।"[53]

कवि 'नवरत्न' ने अपनी 'मातृवंदना' कृति के अन्तर्गत मातृभूमि के प्रति अपने श्रद्धा भाव को व्यक्त करने के साथ ही देशवासियों में भारतमाता की मुक्ति के लिए उत्साह एवं आवेग का संचार भी किया है। कवि प्रत्येक भारतीय जन से मातृभूमि हित हेतु त्याग, बलिदान एवं समर्पण की अपेक्षा रखता है। जिस समय

स्वशासन की सार्वजनिक आकांक्षा जनवाणी से प्रकट हो रही थी उस समय कवि का मातृभूमि हितार्थ उद्बोधन प्रत्येक वाणी में उत्कट चेतना जागृत कर देने वाला था। भारतवासियों को मातृभूमि के प्रति उद्बोधन देते हुए कवि ने अपने मनोभाव इस प्रकार अभिव्यक्त किये हैं–

"हे क्षत्रियों! क्षत्रियता तुम्हारी
छिपी नहीं है जन–ताप–हारी
मालिन्य सारा उसका उड़ा दो
अनैक्य आमूल सभी मिटा दों।
स्वराज्य में क्षत्रिय भूमिपाल
विद्या कला कौशल की कला को
सर्वत्र है वीर वरो! बढ़ा दो
यश–पताका जग में उड़ा दो।"[54]

हाड़ौती अंचल का कवि राष्ट्रीय सन्दर्भों के प्रति हमेशा संवेदनशील रहा है। एक सच्चे भक्त की भाँति ही वह भारतभूमि के देवीय रूप को स्वीकार करता है, उपासना करता है। वह मातृभूमि की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी चुनौतियों एवं बाधाओं का सामना करने के लिए तैयार रहता है। अत्याचारी अंग्रेज शासकों के सम्मुख शीश झुकाना उसे किसी भी स्तर पर स्वीकार्य नहीं रहा। आत्मविश्वास से परिपूर्ण उसका मन विपदाओं में भी मातृभूमि के प्रति समर्पित भाव व्यक्त करता है। कवि सुधीन्द्र का ऐसे ही भावों से परिपूर्ण काव्य में मातृभूमि की रक्षा का संदेश इस प्रकार प्रस्तुत हुआ है–

"मर जायें जो, मातृभूमि को होने दें पददलित नहीं!
विचलित हो न विघ्न बाधा से, लोभनों से चलित नहीं!
शत्रु आततायी के आगे अपना शिर न झुकायें जो!
मान और मर्यादा अपनी बेच न पाप कमाये जो!

संघर्षण में जुट जायें ये तन–मन के साधन!
पर परतंत्र न देखे पल भर मातृभूमि को कभी नयन!
स्वर्ण–रजत की तमसा में मन भामसान ध्रुव भानु बने!
तूल जलाने को अनीति का तन ये क्रूर कृशानु बने!

मातृभूमि! तू विदा मुझे दे मैं लय हो जाऊँ तुझ में
मुझ जैसी ही प्रकट यहाँ मैं और हुई पाऊँ तुझ में
तेरी मिट्टी से उपजी मैं तेरे पय का पान किया
तेरे नभ नीचे प्राणों से अनुप्राणित यह प्राण किया"[55]

शिवाजी, राणा प्रताप इत्यादि बलिदानी चरित्रों के गौरवपूर्ण इतिहास से हाड़ौती अंचल के कवियों का मातृभूमि के प्रति प्रेम दृढ्तर होता गया और स्वतंत्रता संग्राम की हर चुनौती को कवि सहर्ष स्वीकार करता है। कवि सुधीन्द्र ने भी राणा प्रताप के ओजस्वी चरित्र को आधार बनाकर '**शंखनाद**' काव्य की रचना की है जिसमें प्रताप को कवि ने स्वाधीनता के मसीहा के रूप में चित्रित किया है। "सुधीन्द्र की रचनाओं में ही नहीं बल्कि भारत भर के विख्यात रचना-धर्मियों ने प्रताप के वैयक्तिक जीवन को सामन्ती अभिजाल और विलास से मुक्त करने का प्रयत्न किया है। इन कृतियों में प्रताप को स्वाधीनता के लिए मर मिटने वाले अजेय योद्धा की तरह चित्रित किया गया है। वे अकेले आततायी विदेशी आक्रांताओं के सामने स्वाभिमान के प्रतीक बनकर संघर्ष करते हैं। किशोर अथवा तरुण कवियों के लिए एक आदर्श की तलाश करना कविता को लोगों के नजदीक ले जाना तो था ही, शायद उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण ऐसे कथानकों की राष्ट्रीय तलाश थी जिसमें वृहत्तर मानवीय संवेदनाओं की पहचान असंदिग्ध और पूरी तरह प्रामाणिक हो।"[56] कवि सुधीन्द्र ने प्रताप के चरित्र द्वारा मातृभूमि की रक्षा हेतु अदम्य उत्साह, समर्पण और राष्ट्र के प्रति निष्ठा भाव को व्यक्त किया। उन्होंने प्रताप के चरित्र का अंकन करते हुए लिखा कि प्रताप के हृदय में आज़ादी का दीवानापन, मातृभूमि हित मर मिटने की चाह, स्वाभिमानी जीवन एवं त्यागमय भावना समाहित थी। भारतीयों की सुप्त चेतना को जगाने के लिए कवि प्रताप जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता महसूस करता है। कवि सुधीन्द्र ने लिखा है-

"था तुम में अमन्द मलवालापन, अदम्य उत्साह
आजादी का दीवानापन मर मिटने की चाह
धधकती थी जी ने विकराल
तुम्हारे तप की आग
रमा था रोम रोम में शौर्य
हृदय में स्वाभिमान से राग

आर्य कुल–आर्य, विरागी वीर
भरा था तुम में अतुलित त्याग
देख तब नयनों की खर ज्योति
उठी थी सुप्त चेतना जाग
जूझ पड़ने की लगन अथाह!"[57]

पराधीनता के उस संकटकाल में हाड़ौती अंचल का कवि भारतमाता से असीम प्रेम करता है यही कारण है कि **कवि मदनलाल पवाँर** जैसे कवि तो स्वयं अपना अस्तित्व मिटकार भारतमाता को बन्धन मुक्त करना चाहते हैं। मातृभूमि की मुक्ति हेतु कवि पवाँर प्राणों का उत्सर्ग करने को तैयार रहते हैं। कवि पवाँर के ये मनोभाव उनके काव्य में स्पष्ट नज़र आते हैं। यथा–

"सींच दूं निज रक्त से
यदि हो हरा उद्यान मेरा,
कायरों में शक्ति का
संचार कर दे गान मेरा।"[58]

परतंत्र अवस्था में हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने ईश भक्ति के समानुरूप मातृभूमि के प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त किया है। मातृभूमि के प्रति अपनी भावात्मकता को इन कवियों ने मातृभूमि के प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं भौतिक स्वरूपों के वर्णन द्वारा अभिव्यंजित किया है। "इस भारत–भूमि की दशा पराधीनता के उत्पीड़न और पारस्परिक संघर्ष के कारण बड़ी दयनीय हो गयी थी। हमारे संस्कारों में आत्माभिमान के स्थान पर परानुकरण समा गया था। हम अपनी भाषा, अपने धर्म, अपनी वेश–भूषा आदि को छोड़कर विदेशियत की ओर बह रहे थे। इसे भी कवियों ने कोसा।"[59] मातृभूमि के प्रेम में अनुरक्त इन कवियों ने युग परिस्थिति अनुरूप अपने स्वर्गोपम देश के सन्ताप को देर करने का प्रयास किया साथ ही मातृभूमि के प्रति अथाह मोह एवं लगन द्वारा देश के प्रति अपनी भावनिष्ठा को भी प्रस्तुत किया। मातृभूमि के प्रति इसी लगाव के कारण हाड़ौती अंचल के कवियों को देशभर में ख्याति प्राप्त हुई। "नवरत्न जी की स्वदेश प्रेम रचनाओं ने उनको झालावाड़ से उठाकर पूरे राष्ट्र का कवि बना दिया। विद्वानों का विचार है–गुप्त जी को 'भारत–भारती' की रचना की प्रेरणा नवरत्न जी की 'मातृ वन्दना' से प्राप्त हुई।"[60] हाड़ौती अंचल के ये कवि अंचल विशेष का नहीं संपूर्ण राष्ट्र का गौरव है।

3:5 क्रान्ति का स्वर

प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष का उद्दाम आवेग विद्रोह एवं क्रान्ति भाव को जन्म देता है। विषम परिस्थितियों में व्यक्ति की सोच, मान्यताओं एवं विचारों में प्रतिशोध एवं प्रतिहिंसा का भाव व्यक्ति मन में पनपने लगता है। पराधीन काल में अंग्रेज शासकों ने पराधीन भारत की जो अधोगति एवं दुर्दशा की उससे भारतीयों का अन्तःकरण अंग्रेजों के प्रति विद्रोही हो उठा। गुलामी और दासता का जो जीवन पशुत्व से बदतर था वह विरोध उत्पन्न कर रहा था। गुलामी की दयनीय और असहाय अवस्था से जनमानस कराह उठा, बैचेन हो उठा गुलामी की इसी वेदना से भारतीय जनमानस में क्रान्तिवादिता का जन्म हुआ। स्वतंत्र भारत निर्माण हेतु इस क्रान्ति चेतना का उद्‌घाटन आवश्यक भी था। उदाहरणार्थ आचार्य नरेन्द्र देव जी का कथन– "क्रांति नये समाज की प्रसव–वेदना है। एक समाज से नये उन्नत समाज की ओर जाने के लिए क्रांति एक अनिवार्य सीढ़ी है। समाज में विकास इसकी आंतरिक अनुभूतियों के जरिये होता है। ये असंगतियाँ जब अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती हैं, तो सामाजिक क्रांति घटित होती है।"[61] अंग्रेजी अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिए भारतीयों ने गाँधी जी के विचारों का अनुगमन किया। सत्याग्रह जैसे अहिंसक साधनों द्वारा अंग्रेजी शासन का प्रतिरोध भी किया परन्तु देश की स्वतंत्रता हेतु जब इन प्रयासों से सफलता नहीं मिलती तो लोगों के मन में उग्र विचारों का प्रादुर्भाव हो उठता था। उनके मन में छिपा गहरा असंतोष प्रतिक्रिया स्वरूप क्रांति के रूप में सामने आता था।

परतंत्र अवस्था में क्रान्तिकारिता का रूप तात्कालीन कवियों के काव्य में भी नज़र आता है। गुलामी के बंधनों में जकड़ी भारत माता की असहाय अवस्था इन कवियों के मन क्रांतिकारी विचारों को उत्पन्न कर रही थी। क्रान्तिकारी विचारों द्वारा विदेशी सत्ता से संघर्ष करते हुए मातृभूमि हेतु बलिदान देने के लिए प्रेरित करने हेतु ये कवि तत्पर थे। माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर' इत्यादि क्रान्तिकारी संस्कारों में ढले कवि थे। "बाहर से आकर हमारी स्वतन्त्रता छीनने वालों विदेशियों पर वे जितना क्रोध व्यक्त करते हैं उससे कई गुना

अधिक उन देशी गद्दारों पर क्रोधित होते दिखाई देते हैं, जिन्होंने चन्द स्वार्थीं के लिए परवशता स्वीकार की है, और खिताबों–खैरातों के खातिर लाचार ही कर अंग्रेजों की मदद की है।"[62] देश के दुश्मनों पर प्रतिरोष व्यक्त करते हुए इन कवियों ने अपनी विद्रोह भावना के रूप में क्रांति का आह्वान किया। देश की फूट, स्वार्थ व आलस्य को इन कवियों द्वारा कोसा गया और देशवासियों को झकझोरने का प्रयास किया। "युगों से शोषित भारतीय जनता को विज्ञान से प्राप्त नये साधनों से युक्त ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के साथ संघर्ष के लिए प्रेरित करना कोई आसान काम नहीं था। जन–मानस में जागरण और संघर्ष के भावों का संचार करने क लिए कवियों ने जनता को मुख्य रूप से यह बताया कि प्रत्येक व्यक्ति असीम–अक्षय शक्ति का स्त्रोत है; आवश्यकता इस बात की है कि वह इसे पहचाने और आत्मविश्वास के साथ संघर्ष के लिए तैयार हो जाए।"[63] कवियों का यह राष्ट्रप्रेम युक्त ओजस्वी भाव एवं पुरुषार्थ भावना को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

हाड़ौती अंचल में भी अंग्रेजी दासता का पुरजोर विरोध करने वाले क्रांतिकारी कवि मौजूद थे। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह की ज्वाला से भरी एवं क्रांतिकारी विचारों से परिपूर्ण कवि सूर्यमल्ल मिश्रण की महान कृति 'वीर सतसई' को भूलाया नहीं जा सकता है। " 'वीर सतसई' में कवि का तात्कालीन परिस्थितियों से उत्पन्न आक्रोश ही तीव्रता से मुखरित हुआ है। राष्ट्र प्रेम तथा जन की आकुलता का विशद चित्रण हुआ है। कवि वीर सतसई के प्रारम्भ में ही कहता है कि 'समय ने पलटा खाया है, अर्थात् यह क्रांति का पदार्पण सिर पर ही हो रहा है।"[64] कवि मिश्रण ही नहीं **पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'** के हृदय में भी राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की लहर उठ रही थी। पराधीन भारत के दुःख दर्द एवं अंग्रेज शासकों के विकराल रूप ने कवि हृदय में इतनी अकुलाहट भर दी कि कवि 'नवरत्न' जनक्रांति का आह्वान कर उठते हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा समकालीन भारतवासियों की तंद्रा तोड़ी, जड़ता की परत उधेड़ी थी और उन्हें आज़ादी की आशा किरण का अग्रिम दर्शन कराया था। वे क्रांतिकारी थे या अहिंसाव्रती ? जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि उनका गांधीजी से परोक्ष संपर्क था। ऐसे में, वे गाँधी जी के अंहिसा–दर्शन के

कायल हो सकते थे। किन्तु, वीरप्रसु राजस्थान के लाल होने के कारण उनमें जब-तब सशस्त्र क्रांति की ज्वाला भी फूट पड़ती थी। **'सद्बोध'** शीर्षक उनकी कविता की इन पंक्तियों में-

> **"उठो शस्त्र लो, जीवन रण है, सन्मुख दुर्गम रिपु का गण है।**
> **रण जीतो रिपुगण को मारो, मित्रों की विपदा की टारो......।**
> **- इसी खूनी क्रांति की ललकार है।"**[65]

नवरत्न जी को इस बात का बहुत दुःख था कि पराधीन भारत माँ की सेवा के लिए राष्ट्रीय एकता का अभाव नज़र आ रहा था। समकालीन राजाओं और सामन्तों की राष्ट्र की स्वतंत्रता के प्रति उदासीन रुख से वे परेशान थे। देशी रियासतों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में नवरत्न जी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। चाटुकार देशी सामन्तों पर कड़ा प्रहार करते हुए कवि नवरत्न उन्हें अंग्रेजों की चाटुकारिता छोड़कर देश की आज़ादी हेतु वीरत्वपूर्ण मंत्रणा देते हैं। कवि 'नवरत्न' ने देशी सामन्तों के प्रति कड़ा रुख अपनाते हुए लिखा है-

> **"होती क्या है मज़बूती, जानते ही नहीं कुछ**
> **बड़े ही मुलायम हैं, नज़ाकत छाए हैं।**
> **मरदानगी की वेशभूषा की है बात कैसी**
> **माँग कढ़वाए डाढी-मूँछ मुडवाए हैं।**
> **हाँ-ना का इन की नहीं किसी को भरोसा कुछ**
> **ताली दे-दे हँसने के मन्त्र सीख पाए हैं।**
> **गले थे हिमालय में हींजड़े हज़ार कई**
> **आज हिन्द बीच वही राजा हो-हो आये हैं।"**[66]

अंग्रेजों के घातक अत्याचारों से भारत माता की अपमानित अवस्था को देखकर तात्कालीन कवि मन का भावावेग उग्र एवं विद्रोही रूप में प्रकट होता है, जो परिस्थितिजन्य था। हाड़ौती अंचल के **कवि सुधीन्द्र** ने भी अपनी कृति 'प्रलयवीणा' में देश की आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक विषमता के प्रति विद्रोही भावधारा को प्रस्तुत किया है। "प्रलय वीणा का वादक कवि, स्वप्न लोक में, नीरव निर्जन में

उस पार, संसार बसाने वाला कवि नहीं, वह है एक प्रबुद्ध नागरिक, अपने समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व समझने वाला, उगते राष्ट्र का क्रान्तदर्शी तरुण, आँधी से लड़ने वाला एक योद्धा, गुमराह होते हुए, गुमराह करते हुए बंधुओं के बीच में, सगर्व एवं अडिग खड़े होने वाला एक विद्रोही, विद्रोह फूँकने के लिए, विद्रोह दबाने के लिए और पहले अपने देश को बंधन मुक्त करने, पीछे विश्व प्रेम के गान में लय मिलाने के लिए।"[67] देश की विषम परिस्थितियों के अंधकार में कवि सुधीन्द्र स्वतंत्रता का उजास देखना चाहते थे। यही कारण है कि अंग्रेज शासकों के विरुद्ध प्रतिशोध उनमें दिखाई देता है। अंग्रेजों द्वारा देशवासियों को पहुँचायी जाने वाली पीड़ा से कवि का मन इतना व्यथित और व्याकुल हो उठता है कि कवि कोकिल से भी प्रणय की मीठी तान छोड़कर विदेशी शासन के प्रति विद्रोह एवं क्रांति करने का आह्वान करता है। **'कोकिल'** शीर्षक कविता में कवि सुधीन्द्र के विचार इसप्रकार अभिव्यक्त हुए हैं–

"जग में आकुल स्वर बोल रहा
जग घुली ग्रन्थियाँ खोल रहा
इस घने अँधरे में जीवन
उजियाली राह टटोल रहा
झनकाकर जड़ जीवन–वीणा,
नवजीवन–स्वर सरसा कोकिल!
अब छोड़ प्रणय की तान अरी,
अब गीत प्रलय के गा कोकिल!"[68]

कवि सुधीन्द्र जिस समय काव्य सृजन कर्म कर रहे थे वह विघ्नों एवं जटिलताओं से घिरा हुआ युग था। कवि देश की इन संकटकालीन स्थितियों को दूर करना अपना दायित्व समझता था। अपने इस दायित्व की पूर्ति के लिए वह भारतीय जन–मन के स्वाधीनता से जुड़े तारों को झनझना देना चाहते थे ताकि बंधनों से मुक्ति की चिनगारी जन मन में उत्पन्न हो सके। उन्होंने अपनी 'प्रलय वीणा' कृति में इसी भावना को अभिव्यक्त किया है। "उसका हृदय मानवता और संसृति की

वेदना से व्यथित है और लोक में मंगल प्रभात को आमंत्रित करने के लिए ही वह अपनी प्रलय वीणा को जगाता है।

जाग जाग कल्याणी लगा दे आग आज इस रक्तोत्सव में
उठ उठ वीणापाणि ! जगा दे अमर राग मन के जन रव में
उठ, उठ ओ कविते! मदालसे! जग-प्रासाद ध्वस्त होता है
ओ कल्पनारते! रतिनिरते! मानव आज त्रस्त होता है
सिसक रही चुपचाप धरित्री बनी सभ्यता मूक अरसना
आज पड़ी संस्कृति महीयसी-दलित मुक्तकेशा, दिग्वसना
आज मरण के थिरक-थिरक से मानवता है नत-हत दीना
करुणा पड़ी-कराह रही है कुंठित-लुंठित खिन्न-मलीना
काल पुरुष की बजे भैरवी प्राण-प्राण अनुरणव कर उठे
आज विश्व की यह भंगुरता अभरण का निक्वणन भर उठे
आज मधुर मुरली पर मुग्धा राधा बने प्रलय-रचयित्री
गिरधर की दीवानी-मीरा बने क्रांति की अब कवयित्री
आज रोम तारों पर गा दे प्रलय-गीत करुणा-कल्याणी
मानवता का भरे अमर स्वर उसमें वीणापाणि वाणी।"[69]

पराधीनता की संकटकालीन परिस्थितियों ने कवि सुधीन्द्र की ही भाँति **कवि मदनलाल पवाँर** के हृदय को भी स्वाधीनता संघर्ष के क्रान्तिकारी पथ पर लाकर खड़ा कर दिया था। कवि ने अपनी कृति 'क्रान्ति-किरण' में विदेशी शासन की विकृतियों के आघात विरुद्ध क्रान्ति करने का संदेश प्रस्तुत किया। अपने मनोभाव व्यक्त करते हुए कवि पवाँर लिखते हैं-

"लाल जिह्वा लपलपाते
पान करने रक्त रिपुका,
बढ़ चले निर्भय सुनाते
नांद फहराते, पताका।

क्रान्ति की आराधना में ही लगे हर श्वास मेरी।
है यही अभिलाष मेरी।।"[70]

कवि पवाँर देश के नवयुवकों देश के स्वाभिमान की रक्षा करने के दायित्व को समझाता है। सत्य एवं साहस के पथ पर चलकर देश की आन व शान की रक्षा करने के लिए प्रेरित करते हुए कवि पवाँर उन्हें क्रान्ति द्वारा अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह करने का आह्वान करते हैं। देश के तरुणों को संबोधित करते हुए व उन्होंने लिखा–

"क्रान्ति वीणा पर प्रलय के
गान गाता तू चला चल,
आन पर अभिमान पर बस
बेधड़क बढ़ता चला चल–
सत्य–साहस–साधना को
तरुण चिर सहचर बना ले,
मोह निद्रा त्याग कर
विद्रोह की ज्वाला जगाले–
हो न विचलित कर्म से तू
पायगा रे जय समर मे,
दुष्ट दलन को दुधारा
बाँध ले कसकर कमर में–"[71]

कवि पवाँर क्रान्ति के द्वारा ही देश में भारी परिवर्तन की संभावना देखता है। उनका मानना था कि क्रान्ति द्वारा ही विदेशी सत्ता के तख्त को उखाड़ा जा सकता है। देशवासियों को कष्टों से मुक्ति व आज़ादी के सुख का अनुभव कांति द्वारा ही सम्भव प्रतीत होता है। कवि पवाँर कहते हैं–

"हो क्रान्ति क्रान्ति बस अमर क्रान्ति
हो युग में भारी परिवर्तन,
उठ जाँय तख़्त मिट जाँय छत्र
हो अग–जग में मधु का वर्षण

लहलहा उठे सूखे उपवन

छाये फिर से मधुमय बसन्त,

मंगल मय वाद्यों की ध्वनि से

मुखरित हो जावें दिग् दिगन्त।"[72]

हाड़ौती अंचल के इन कवियों के काव्यानुशीलन के पश्चात् यह तो निश्चित हो जाता है कि स्वतंत्रता संघर्ष की यात्रा का मार्ग बहुत जटिल रहा है। पराधीन युग की भयंकर त्रासदी ने विदेशी शासन के प्रति जनव्यापी विद्रोह को जन्म दिया। विदेशी शासन की गुलामी के परिणामस्वरूप भारतीय जन की निराश एवं कुंठित अंतरात्मा में आज़ादी के संघर्ष हेतु क्रान्तिकारी भाव उत्पन्न हुए। तात्कालीन कवियों ने भी अपने काव्य में क्रान्तिकारी भावों को प्रस्फुटित किया जो उस युग की आवश्यकता थी। काव्य में व्यक्त कवियों के ये क्रांतिकारी मनोभाव उनके राष्ट्रप्रेम के द्योतक है।

3:6 शौर्य प्रदर्शन

भारतभूमि जो 'आर्यावत' नाम से भी प्रसिद्ध रही है, उसमें राष्ट्रीयता एवं वीर भावों का स्फुरण सदैव विद्यमान रहा है। आर्यावर्त के गौरव के लिए अभूतपूर्व शौर्य एवं बलिदान युक्त अनेक राष्ट्रनायक एवं राष्ट्रनायिकाएँ यहाँ उत्पन्न हुए। वीर पुरुषों के साथ वीरांगना नारियों की शौर्य गाथाऐं भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध रही हैं। अर्जुन, महाराणा प्रताप, शिवाजी, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद के साथ–साथ पतिव्रता सावित्री व राजपूत स्त्रियों की निर्भयतापूर्ण शौर्य गाथाओं का अंकन भारतीय इतिहास में अंकित है। इन वीरोचित स्त्री–पुरुषों का शौर्य एवं पराक्रम का भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। डॉ. सुधाकर शंकर कलवड़े के अनुसार– "राजपूत स्त्रियाँ भी पुरुषों से कम वीर न थीं। उन्होंने अद्भूत शौर्य और वीरता से अनेक युद्ध किए और कितनी बार शत्रुओं को परास्त किया। फिर पराजय की देखकर उनका "जौहर" व्रत तो वीरता की चरम सीमा है।"[73] आर्याजाति की नारियों की निर्भयता और वीर पुरुषों की शूरवीरता का गान हिन्दी कविता में अनेक कवियों द्वारा किया गया। "कुछ कवियों यथा सर्वश्री श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध", स्वयं आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, स्वयं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपनी कविताओं में प्राचीन आर्य जाति के गौरव का बखान करके भारतीयों को एकता के सूत्र में पिरोने का महान् कार्य और सामाजिक दायित्व पूरा किया था।"[74] इन कवियों द्वारा चित्रित वीर महापुरुषों की शौर्य गाथाओं ने स्वतंत्रता पूर्व की कठिन परिस्थितियों में भारतीय जन को बल–बलिदान हेतु प्रेरित किया। कवियों ने भारतीय शूरवीरों के पराक्रम का गुणगान द्वारा भारतीयों के मनोबल को ऊँचा उठाने का कार्य किया। आज़ादी हेतु प्राणोत्सर्ग करने वाले वीरों पर इन्होंने गौरव भाव व्यक्त किया है।

आज़ादी के सुख की चाह में सैकड़ों लोगों द्वारा प्राण त्याग दिये गये थे। माँ भारती को पराधीनता के बंधनों से मुक्त कराने में भारतीय जन सशस्त्र अंग्रेज सेवा से मुकाबला करने में पीछे नहीं रहे थे। आज़ादी की प्राप्ति हेतु भारतीय जन ने अपना शौर्य प्रदर्शन दिखलाया व मन में छिपी हुई देश प्रेम की भावना को अभिव्यक्त किया था। भारतीयों के इसी शौर्य एवं पराक्रम के बल पर भारत आज़ाद हो सका।

तात्कालीन कवियों ने भारतीयों के इसी शौर्य प्रदर्शन को काव्यबद्ध किया व अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य एवं दायित्व को पूरा किया। "स्वाधीनता संग्राम के प्रेरक मूल्य थे–सत्य और अहिंसा। इनके साथ ही गाँधी–दर्शन में सामान्य जनता की समूह–शक्ति के उपयोग का प्रयास दिखाई देता है। युगों से शोषित भारतीय जनता को विज्ञान से प्राप्त नये साधनों से युक्त ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के साथ संघर्ष के लिए प्रेरित करना कोई आसान काम नहीं था। जन–मानस में जागरण और संघर्ष के भावों का संचार करने के लिए कवियों ने जनता को मुख्य रूप से यह बताया कि प्रत्येक व्यक्ति असीम अक्षय शक्ति का स्त्रोत है; आवश्यकता इस बात की है कि वह इसे पहचाने और आत्मविश्वास के साथ संघर्ष के लिए तैयार हो जाए।"[75] भारतीय जन के सुप्त आत्मबल को जाग्रत करने के लिए स्वतंत्रता पूर्व के कवियों द्वारा प्राचीन भारतीय वीर महापुरुषों की शौर्य एवं वीर गाथाओं का अंकन किया गया। हाड़ौती अंचल के कवि भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रहे थे।

स्वतंत्रता आन्दोलन में भी अनेक भारतीयों द्वारा अपना सर्वस्व त्यागकर पूरे जोश एवं उत्साह द्वारा स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया गया था। शारीरिक पराक्रम एवं आत्मबल के शौर्य का प्रदर्शन करते हुए इनके द्वारा माँ भारती के बन्धन मुक्त करने का कार्य किया। स्वतंत्रता की आकांक्षा हृदय में पाले हुए एक ऐसे ही जोशीले राष्ट्र नेता थे–बाल गंगाधर तिलक। भारतीय स्वतंत्रता समर में स्वतंत्रताकांक्षी नेता तिलक के आत्मबल का शौर्य चित्रण हाड़ौती अंचल के कवि **गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'** की रचना में दिखाई देता हैं उनकी कविता **'बाल गंगाधर तिलक के निर्वाण पर'** शीर्षक कविता में तिलक का आत्मिक शौर्य इस प्रकार अंकित है–

"वह रहस्य प्रकाशक, बुद्धिमान
वह महासुत भारत मात का
वह शिरोमणि मानव जाति का
तिलक आज गया......उठ ही गया
कलम के बल से लड़ता रहा
प्रबल गर्जन भी करता रहा

सुभट केसरि जोन हटा कभी

तिलक आज गया....उठ ही गया"[76]

स्वतंत्रता आन्दोलन में देशवासियों के मनोबल को ऊँचा उठाने के लिए, अंग्रेज शासन सत्ता उखाड फेंकने हेतु उत्साहित करने के लिए **कवि सुधीन्द्र** ने पराक्रमी महाराणा प्रताप के साहस, शौर्य एवं बलिदान को गौरव भाव से व्यक्त किया है। प्रताप के शौर्य को आर्य भूमि का अभिमान मानकर जनमन को देशोत्थान हेतु उत्साहित किया। उन्होंने कहा कि एक क्रूर सल्तनत के सामने जिस प्रकार प्रताप अडिग रहे वही अडिग भावना वहीं अडिग भाव देशवासियों की अपनाने की आवश्यकता है। कवि सुधीन्द्र **प्रताप के शौर्य** का वणर्रन करते हुए लिखते हैं–

"शत्रु कांपते थे करते थे जब तुम समर–प्रयाण।
शर–आहत–खग–प्रतिम छटपटाते थे उनके प्राण!
कि जैसे ज्योति उषा की देख
छटपटाती है रात
इधर तुम करते थे पद–पात
उधर होता था वज्राघात
इधर होता था भ्रू–चालन
उधर वे होते थे भ्रू–सात्
तुम्हारा देख देख शल तीक्ष्ण
थरथराता था उसका गात
हृदय हो जाते थे म्रियमाण!"[77]

स्वतंत्रता पर मर मिटने वाले स्त्री–पुरुषों का शौर्य कवि सुधीन्द्र की कृति 'जौहर' में नज़र आता है। एक ऐतिहासिक आख्यान को अपनाते हुए कवि सुधीन्द्र ने उन लोगों के वीरता की झांकी प्रस्तुत की है जिन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए दांव पर लगायी थी। 'जौहर' में स्वतंत्रता से संबंधित भावों के। कवि सुधीन्द्र ने व्यक्त किये हैं। "हो सकता है अब स्वाधीनता के लिए लोग केसरिया बाना न पहनें या कि स्त्रियाँ सामूहिक रूप में 'जौहर' की

ज्वालाओं में न कूदें लेकिन समय आने पर अपने सर्वोत्कृष्ट जीवन–मूल्यों को बचाने के लिए वे कोई–न–कोई अकल्पित उपाय आविष्कृत करेंगे। 'जौहर' या युद्ध करके नहीं तो आमरण अनशन करके, सेना में भर्ती होकर या और किसी रोमांचकारी विधि द्वारा वे प्राणोत्सर्ग करेंगे और जीवन–मूल्यों को बचायेंगे।"[78] कृति में युद्ध कौशल वर्णन में भारतीयों वीरोचित कर्म की झलक दिखलाई देती हैं। यथा–

"लगे फड़कने पल–प्रति–पल पर वीरों के भुज–वज्र प्रबल,
खनक उठे लो कवच खनाखन झमक झनाझन शल झलमल!
आयुध आगारों पर उस पल कौंध गयी मानों बिजली,
घर घर में, ओठों–ओठों पर गरज उठी धन की अवली!

मत मतंग तुरंग अंग पर स्फूर्त–सजग प्राणित अपना,
घोर स्वरों से गरज–तरज कर उठे हुए उल्लसित मना
सजे तुरंग–पीठों पर सैनिक सैनिक पीठों पर ढालें
कर–कर में कौशल बलशाली विद्युत–सी वर करवालें

'शुडों सी चंचल वाहों में आज फणी फुंकार उठें।
प्रत्यंचाओं में टंकारें, कंठों में हुंकार उठें'।
शंख–ध्वनि के साथ विभिषण, रणित हुई यों रणभेरी,
रणस्थली–गा उठी कि आओं प्रस्तुत है छाती मेरी!"[79]

इन पंक्तियों में अंग्रेजी शासन से मुक्ति पाने हेतु भारतीयों ने जिस वीरता एवं साहस से अंग्रेजी सेना का विरोध किया उसका स्वरूप 'जौहर' के युद्ध–कौशल में देखा जा सकता है।

मन की दृढ़ता एवं मजबूती भी शौर्य की परिचायक होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु देशवासियों के प्रत्येक वर्ग में दृढ़ संकल्प होना जरुरी था। कवि मदनलाल पवाँर ने भारतीयों के प्रत्येक वर्ग की आत्मशक्ति को पहचाना और स्वतंत्रता के समर में मजदूर, किसान सभी की आत्मशक्ति की आवश्यकता को महसूस किया। किसानों के आत्मबल का चित्रण कवि मदनलाल पवाँर इस प्रकार वर्णन प्रस्तुत करते हैं–

“यदि तूने निज बाना बदला
जो कंपित इन्द्रासन होगा,
हल-चल अवनीतल में होगी
अम्बर भी चल-विचलित होगा।
तेरे आँसू के अम्बुधि में
लय हो जायेंगे शोषक गण,
तेरी आँहों की ज्वाला से
धधकेगा पापों का प्रागंण।
जो तूने करवट पलटी तो
टूट गिरेंगी महल-अटारी
तेरे भू भंगों को लखकर
हिल जायेगी गद्दी सारी।”[80]

कवि पवाँर की ये पंक्तियाँ किसानों के साहस एवं शौर्य की परिचायक है।

उपरोक्त काव्यांशों से स्पष्ट हो जाता है कि स्वतंत्रतापूर्व भारतीयों में एकता स्थापित कर स्वतन्त्रता आन्दोलन में सर्वस्व न्यौछावर हेतु प्रोत्साहित करने के लिए कवियों ने प्राचीन वीर महापुरुषों की शौर्य गाथाओं को काव्य का विषय बनाया साथ ही स्वतन्त्रता आन्दोलन में भारतीयों ने जिस पौरुषता, साहस एवं बलिदान का प्रदर्शन किया उसका भी वर्णन काव्य में किया। हाड़ौती अंचल के कवि भी काव्य में शौर्य प्रदर्शन की श्रृंखला में पीछे नहीं रहे। उनके काव्य में व्यक्त शौर्य-प्रदर्शन के काव्यांश गौरवान्वित करने योग्य है।

♦ ♦ ♦ ♦

संदर्भ-सूची

1. राष्ट्रीय काव्यधारा–सम्पादक – डॉ. कन्हैया सिंह–पृ.सं.–12
2. वही, पृ.सं.–13
3. हाड़ौती का स्वतंत्रता आन्दोलन – डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–122
4. वही, पृ.सं.–124
5. मधुमती : गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक–सं. : प्रकाश आतुर–अंक : नवम्बर–दिसम्बर 1985, पृ.सं.–155
6. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–10
7. वही, पृ.सं.–34–35
8. स्मारिका : पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का साहित्य और मूल्याकंन (अखिल भारतीय प्रबुद्ध परिचर्चा) दिनांक 19–20 जुलाई 1986–पृ.सं.–38
9. नवरत्न–काव्य–शतक–संकलन : सुश्री शकुन्तला रेणु–सम्पादक : युगलकिशोर चतुर्वेदी, पृ.सं.–12
10. वही, पृ.सं.–09
11. पूर्व स्वतंत्रता कविता में राष्ट्रीय एकता–डॉ. कृष्ण भावुक–पृ.सं.–49
12. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी– पृ.सं.–35
13. वही, पृ.सं.–66
14. वही, पृ.सं.–40
15. साकेत (वार्षिक पत्रिका)–राजकीय महाविद्यालय, रामगंजमण्डी (कोटा)–सत्र 2000–2001– पृ.सं.–13
16. हिन्दी कविता में युगान्तर–लेखक : डॉ. सुधीन्द्र–पृ.सं.–130
17. क्रांति–किरण–मदनलाल पवाँर–पृ.सं.–11
18. वही, पृ.सं.–35
19. पूर्व स्वतंत्रता कविता में राष्ट्रीय एकता–डॉ. कृष्ण भावुक–पृ.सं.–49
20. पूर्व स्वतंत्रता कविता में राष्ट्रीय एकता–डॉ. कृष्ण भावुक– पृ.सं.–132
21. पूर्व स्वतंत्रता कविता में राष्ट्रीय एकता–डॉ. कृष्ण भावुक–पृ.सं.–85

22. हाड़ौती का स्वतंत्रता–आन्दोलन– डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'– पृ.सं.–178
23. वही, पृ.सं.–182
24. वही, पृ.सं.–186
25. मधुमती : गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक–सम्पादक : प्रकाश आतुर–अंक नवम्बर–दिसम्बर 1985–पृ.सं.–167
26. वही, पृ.सं.–164
27. वही, पृ.सं.–165–166
28. साकेत (वार्षिक पत्रिका)–राजकीय महाविद्यालय, रामगंजमण्डी (कोटा)–सत्र 2000–2001–पृ.सं.–11
29. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–30
30. वही, पृ.सं.–74
31. वही, पृ.सं.–89
32. क्रांति किरण – मदनलाल पवाँर–पृ.सं.–01
33. वही, पृ.सं.–28
34. पूर्व स्वतंत्रता कविता में राष्ट्रीयत एकता–डॉ. कृष्ण भावुक–पृ.सं.–60
35. राष्ट्रीय काव्यधारा–सम्पादक : डॉ. कन्हैया सिंह–पृ.सं.–10–11
36. हाड़ौती का स्वतन्त्रता आन्दोलन–सम्पादक : डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश' –पृ.सं.–03
37. महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण कृत वीर सतसई–सं. : डॉ. कन्हैयालाल सहल– पृ.सं.–73
38. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी– पृ.सं.–112–113
39. मधुमती : गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक–सम्पादक प्रकाश आतुर – अंक नवम्बर–दिसम्बर 1985–पृ.सं.–164
40. वही, पृ.सं.–165
41. नवरत्न–काव्य–शतक–सम्पादन : युगल किशोर चतुर्वेदी–पृ.सं.–16

42. सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी– पृ.सं.–29
43. वही, पृ.सं.–64
44. स्मारिका–अखिल भारतीय साहित्य परिषद–शाखा कोटा–वर्ष 1987–पृ.सं.–37
45. क्रांति–किरण–मदनलाल पवाँर–पृ.सं.–03
46. वही,पृ.सं.–05
47. वही, पृ.सं.–09
48. माखनलाल चतुर्वेदी और वि.दा. सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना–डॉ. सुभाष महाले–पृ.सं.–259
49. हिंदी साहित्य का इतिहास–सम्पादक : डॉ. नगेन्द्र–पृ.सं.–545
50. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास–बच्चन सिंह–पृ.सं.–278
51. पूर्व स्वतंत्रता कविता में राष्ट्रीय एकता–डॉ. कृष्ण भावुक–पृ.सं.–75
52. वही, पृ.सं.–210
53. मधुमती : गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक–सम्पादक : प्रकाश आतुर–अंक नवम्बर–दिसम्बर, 1985–पृ.सं.–130
54. नवरत्न–काव्य शतक–सम्पादन : युगल किशोर चतुर्वेदी–पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्म शताब्दी समारोह, समिति–पृ.सं.–20
55. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–77
56. वही–पृ.सं.–22
57. वही–पृ.सं.–68
58. क्रान्ति–किरण–मदनलाल पवाँर–पृ.सं.–01
59. राष्ट्रीय काव्यधारा–संपादक : डॉ. कन्हैया सिंह–पृ.सं.–20
60. झालावाड़ का साहित्य वैभव–संरक्षक : एस.एन. गुप्ता, लेखक : गदाधर भट्ट–पृ.सं.–10–11
61. पूर्व स्वतन्त्रता कविता में राष्ट्रीय एकता – डॉ. कृष्ण भावुक–पृ.सं.–78
62. माखनलाल चतुर्वेदी और वि.दा. सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना–डॉ. सुभाष महाले–पृ.सं.–223

63. हिन्दी साहित्य का इतिहास–सम्पादक : डॉ. नगेन्द्र–पृ.सं.–541
64. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–84
65. स्मारिका : पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का साहित्य और मूल्यांकन (अखिल भारतीय प्रबुद्ध परिचर्चा) दिनांक 19–20 जुलाई 1986–पृ.सं.–35
66. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–102–103
67. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–84
68. वही–पृ.सं.–89
69. वही–पृ.सं.–82
70. क्रान्ति–किरण–मदनलाल पवाँर–पृ.सं.–02
71. वही–पृ.सं.–04
72. वही–पृ.सं.–12–13
73. पूर्व स्वतंत्रता कविता में राष्ट्रीय एकता–डॉ. कृष्ण भावुक–पृ.सं.–54
74. वही, पृ.सं.–50
75. हिन्दी साहित्य का इतिहास–सम्पादक : डॉ. नगेन्द्र–पृ.सं.–534
76. नवरत्न काव्य–शतक–सम्पादन : युगल किशोर चतुर्वेदी–पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्म शताब्दी समारोह समिति–पृ.सं.–14
77. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–66 व 67
78. वही–पृ.सं.–40–41
79. वही–पृ.सं.–77–78
80. क्रान्ति किरण–मदनलाल पवाँर–पृ.सं.–16

चतुर्थ अध्याय

हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्रीय भावना

चतुर्थ अध्याय

हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्रीय भावना

परतंत्रता के संकटों से जूझकर जिस स्वतंत्रता को प्राप्त किया गया वह भारतीयों के लिए एक स्वप्न साकार होने जैसा अनुभव था। पराधीनता की जिस यातना को देशवासियों ने भोगा और उससे मुक्ति पाने का जो प्रयास किया उससे स्वाभिमान का बल भारतीयों में उत्पन्न हो गया था। उस समय देश की समृध्दि एवं विकास का स्वप्न भारतीयों की आँखों में बसा हुआ था। स्वतंत्रता का अर्थ केवल अधिकारों की प्राप्ति नहीं था अपितु राष्ट्र को पूर्णता प्रदान करना जन–मन का उद्देश्य था। भारत की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को समृध्द एवं सम्पन्न बनाना भारतीयों का ध्येय था परन्तु विडम्बनीय स्थिति यह थी कि भारतीयों की यह राष्ट्रीयता स्वाधीनता प्राप्ति के कुछ वर्षों पश्चात् धूमिल होने लगी। "स्वातंत्र्यपूर्व भारतीयों ने जिस स्वर्णिम भविष्य की कल्पना में विदेशी साम्राज्य से जूझने का संकल्प किया था, जिस शान्तिसुख की खोज में विश्वविश्रुत आंग्लसत्ता को स्वतंत्रता का बिगुल बजाकर नकारा था, वे रोमांचक कल्पनाएँ, सुखद आकांक्षाएँ राजनीतिज्ञों के भ्रष्ट आचरण की वजह से व्यावहारिक रूप में प्रभावकारी नहीं हो पाईं। राजनीति का दायित्व था, व्यक्ति–व्यक्ति, व्यक्ति–जाति, जाति–वर्ग और वर्ग–समाज के पारस्परिक संबंध सूत्रों की नव्यतम संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में व्याख्या करना लेकिन राजनीति कूटमंत्रणाओं की दलदल में फंसी रही। राजनीतिज्ञों का संकल्प था चरमराते मूल्यों को पुनरुज्जीवित करना परन्तु उनका अन्तर्विरोधी आचरण होकर आत्मपोषी एवं आत्मकेन्द्रित होकर संकीर्ण दायरों में कैद हो गया। लोकतांत्रिक परिवेश में कुर्सी हथियाने और कुर्सी बनाए रखने के मध्य ही टकराव होता रहा। विरोधी पार्टियाँ भी कुर्सी पाते ही स्वार्थलिप्सा, मिथ्या आश्वासन, भाई भतीजावाद और भ्रष्टाचार से ऊपर न उठ सकी।"[1] राजनीतिक व्यवस्था की तरह ही देश का सामाजिक स्वरूप और आर्थिक व्यवस्था भी धीरे–धीरे जर्जर हो रही थी। समाज में व्यक्ति भीतरी और बाहरी लड़ाइयों से जूझने लगा। संबंधों की कृत्रिमता एवं मूल्यहीनता की भावभूमि पर अस्तित्व की लड़ाई लड़ी जा रही थी। बेरोजगारी,

वैमनस्यता और गुटबंदी में उलझे समाज में प्रेम, त्याग, सेवा, परोपकार इत्यादि मूल्यों से दूर रहकर अर्थकेन्द्रित दृष्टि को अपनाया जा रहा था। व्यक्तिगत स्वार्थवादिता से सामाजिक विकास अवरुद्ध हो रहा था। देश की आर्थिक व्यवस्था भी निरन्तर कमजोर होती जा रही थी। "जमींदारी प्रथा के उन्मूलन, सामुदायिक विकास के कार्यक्रमों, हरित क्रांति के प्रयासों, कुटीर धंधों की स्थापनाओं, सिंचाई की सुविधाओं एवं परिवहन साधनों से ग्रामीण जीवन की आर्थिक स्थिति समुन्नत तो हुई लेकिन पूंजीवादियों द्वारा श्रमिक शोषण और एकाधिकार की भावना के कारण समाज में आर्थिक अन्तराल और अधिक भयावह स्थिति तक पहुँच गया। बढ़ती हुई बेतरतीब जनसंख्या और व्यावसायिक ढंग की शिक्षा की कमी ने देश की आर्थिक स्थिति को जर्जर कर दिया। यद्यपि देश में वैज्ञानिक शिक्षा, कृषि-उद्योग की शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में शिक्षा का प्रसार हुआ है लेकिन शिक्षित युवकों के अनुपात में रोजागरों की व्यवस्था न होने के कारण बेरोजगारी एक गंभीर संकट बनकर खड़ी हो गई।"[2] स्वतंत्रता के पश्चात् आर्थिक विषमता, साम्प्रदायिकतावाद, जातिवाद इत्यादि विसंगतियों से भारतीय शासन व्यवस्था की स्थिति निरन्तर शोचनीय होती रही। आज भी स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में नये-नये आयामों के उद्‌गम, नयी चिन्तनधाराओं का विकास एवं विघटित समाज व्यवस्था व आर्थिक विषमता के बीच देश की शासन व्यवस्था उलझ सी गयी है। जहाँ एक ओर औद्योगिकरण विज्ञान एवं तकनीकि क्षेत्रों में कुछ उपलब्धियाँ हासिल हो रही है वहीं राजनीति में स्वार्थवादिता और समाज में अनैतिकता का वर्चस्व बढ़ता ही चला जा रहा है जो देश की प्रगति के मार्ग को निरन्तर अवरुद्ध करता रहा है। यह देश का दुर्भाग्य ही है कि विभाजन की त्रासदी से लेकर पड़ौसी देशों के आक्रमणों का सामना भी करना पड़ा। पड़ौसी मुल्कों से युद्ध के साथ आंतरिक गृह-युद्ध का वातावरण भी देश में बनता रहा है। जुलुस, हड़ताल, तोड़-फोड़ जैसे उपद्रवों से हुई क्षति को देश द्वारा निरन्तर भोगा गया। आश्चर्य की बात तो यह है कि देश के दुर्भाग्य का यह सिलसिला आज भी नहीं थम रहा है।

स्वतंत्रता पश्चात् देश की ऐसी पारिवेशिक विडम्बना में साहित्यकर्मियों का कर्त्तव्य था कि देश की इन विसंगतिपूर्ण समस्याओं को सुधारकर एक नयी चेतना के साथ देश को विकास पथ पर अग्रसर करने हेतु प्रेरित करना। देश के प्रति

साहित्यकारों द्वारा अपने कर्त्तव्य का निर्वहन भी भली–भाँति किया गया। "नयी कविता ने स्वाधीनता–प्राप्ति के बाद के भारतीय समाज के यथार्थ को सही अर्थ में अनुभव के स्तर पर भोगा और अभिव्यक्त किया है। उसने सत्य का अनुभव ही नहीं किया, वरन् अपनी बौद्धिक दृष्टि से अनुभवों का मूल्यांकन भी किया है।"[3] विसंगतियों के प्रति इस समय के कवियों ने विद्रोह एवं आक्रोश का स्वर व्यक्त किया। सामयिक समस्यओं का यथार्थ अंकन करना उनका उद्देश्य रहा है। आम आदमी के सुख–दुःख की अभिव्यक्ति को उन्होंने काव्यकर्म बना लिया। उन्होंने अपने काव्य में विचार तत्त्व को प्रमुखता दी ताकि एक नयी सोच के साथ समस्याओं से ऊबरकर देश प्रगति की ओर आगे बढ़ सकें। अगर बात करें हाड़ौती अंचल के स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य की तो इतना अवश्य कहा जा सकता है कि स्वातंत्र्योल्लास की अनुभूति से लेकर समयानुसार बदलती स्थितियों, समस्याओं एवं उपलब्धियों को काव्य में समाहित करने में ये कवि पीछे नहीं रहे हैं। राष्ट्रीयता इस अंचल के कवियों के काव्य का प्रमुख विषय बनी हुई है। इतना ही नहीं देश के प्रति जन–मन की आस्था एवं विश्वास को काव्य रूप देने में भी इस अंचल के कवि पीछे नहीं रहे। "स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय जनमानस में नवनिर्माण के स्वर प्रमुख रहें। कवि इस युग को नयी चेतना के रूप में स्वीकार करता है। वह कोटि–कोटि जनमानस को नव निर्माण की ओर उन्मुख करना चाहता है, तथा इस जागरण की बेला में अपने स्वरों को ध्वनित करता है।"[4] स्वतंत्र्योत्तर परिवर्तन का स्वरूप इन कवियों के काव्य में परिलक्षित हुआ है।

देशवासियों के त्याग एवं बलिदान से प्राप्त हुई स्वतंत्रता रूपी उपलब्धि की रक्षा की कामना हाड़ौती के कवि **प्रेमचन्द विजयवर्गीय** सभी भारतवासियों से करते हैं। आजादी के पश्चात् देश में उत्पन्न हो रहे संकटों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए कवि देशवासियों को देश–प्रेम हेतु प्रेरित करते हैं। उनकी **'स्वतंत्रता की रक्षा'** शीर्षक कविता में अनेक मनोभाव स्पष्ट नज़र आते हैं। यथा–

"बलिदानों से मिली स्वतंत्रता हमको आज बचानी है।
आज हो रहे दसों दिशा से, अपनी आजादी पर हमले,
छीन रहे स्वातंत्र्य हमारा, कुछ स्वर्णिम सिक्कों के बदले,
ईस्ट इण्डिया नहीं आज तो बहुराष्ट्रीय कम्पनियां आईं,

अपने रिक्त कोष को भरने का मायावी सपना लाईं।
उनके इस आर्थिक हमले से स्वायत्तता हमें बचानी है
बलिदानों से मिली स्वतंत्रता हमको आज बचानी है।"[5]

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत के जनतंत्रात्मक परिवेश में भ्रष्ट शासन व्यवस्था एवं अन्तर्विरोधात्मक स्थिति राजनीतिक विकास के किसी भी परिवर्तन को उभरने नहीं दे रही है। सत्ताधारी स्वार्थी नेताओं के बनावटी आचरण एवं लूट–खसोट की प्रवृत्ति के कारण आज़ादी के सुख को भारत के आम–जन नहीं भोग पा रहे हैं। राजनीति में समस्याओं का यह जाल बढ़ता ही जा रहा है। राजनीतिक व्यवस्था की इन विसंगतियों को कवि **दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'** ने बख़ूबी पहचाना और अपनी कविता **'गणतंत्र'** में स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक परिवेश की सच्चाइयों को चित्रित कर देशवासियों में स्वस्थ राजनीतिक चेतना उत्पन्न करने की कोशिश की। कवि दयाकृष्ण 'विजय' ने अपने भावों को कविता में इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

"हड़ताल, सत्याग्रह, प्रदर्शन, घेराव, बन्द का तांता
खोल रहा अराजकता, अव्यवस्था का खाता।
खिसियाई पंगु सत्ता,
रासुका, आंसुका का हण्टर थामे
खेल रही तुष्टिकरण के वीभत्स जातिवादी ड्रामे।
वोट की चोट से घबराई
बोल नहीं पाती है
आसाम का मूल निवासी हो या अल्पसंख्यक
विदेशी होने लगे विधायक, मंत्री, बहुसंख्यक।
ऐसे बालिग मताधिकार को सौ–सौ नमन,
ओ मेरे गणतंत्र,
सड़क पर खड़ा युवक पढ़ रहा बेरोजगारी का मन्त्र,
भुखमरी, गरीबी तरसाई आंखों से देख रही बड़े–बड़े यंत्र
केवल यन्त्र।"[6]

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय सामाजिक व्यवस्था के बारे में कहा जा सकता है कि स्वातंत्र्योत्तर भारतीय सामाजिक परिवेश की सर्वोपरि विडम्बना है– पारस्परिक

संबंधों में अप्रत्याशित परिवर्तन। प्रेम, विश्वास एवं स्नेह से फलीभूत होने वाले रिश्तों में दुराव–छिपाव की भावना दरार उत्पन्न कर रही है। समाज में असुरक्षा, संशय एवं आशंका का माहौल चारों ओर फैल रहा है। जाँत–पाँत, जुलूसों, आपसी झगड़ों से समाज की विकासोन्मुखी योजनाओं को नुकसान पहुँचाया जा रहा है। आपसी भाईचारे की सुखद भावना का अहसास आज दब सा रहा है। आत्मीयता का स्थान गुटबंदी ने ले लिया है। एक ही शहर में रहने वाले लोग आपस में अनजान बने रहते हैं। हाड़ौती अंचल के कवि **डॉ. शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश'** की कविता **'मेरे शहर के लोग'** में समाज से जुड़ी इन समस्याओं को अभिव्यक्त किया गया है। कवि कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुए डॉ 'राकेश' ने समाज–सुधार हेतु चेतना जाग्रत करने के लिए कविता में इस सामाजिक परिदृश्य को उद्घाटित किया है। उन्होंने लिखा है–

"मेरे शहर में
नित्य नये उठते इन्कलाब
हड़ताले–प्रदर्शन–जुलूस
बंटते हैं नित्य समस्याओं के इश्तहार,
मांग–पत्र लेकर गुज़रती है नित्य नई पंक्तियां,
कहीं मज़हब
कहीं भाषा–
कहीं झंडों के पक्ष में गूंजते हैं शंख,
फैलते हैं नारे,
जिन्हें देखते हैं खिड़कियों से,
बात करते हैं यन्त्रों से,
हलचलों से अनछुए,
ज़लज़लों से अपरिचित बने रहते हैं
मेरे शहर के लोग।"[7]

राजनीतिक एवं सामाजिक परिवेश ही नहीं हाड़ौती अंचल के कवियों ने स्वातंत्र्योत्तर आम आदमी के जीवन से जुड़े दुःख–दर्द को भी काव्य में चित्रित किया है। आर्थिक विषमता से उत्पन्न वर्ग भेद का स्वरूप उनके काव्य में स्पष्ट नज़र आता है। उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग के बीच की खाई को कवि **द्वारका लाल 'गुप्त'** ने

पहचाना और निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति पर संवेदना प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि आज भी निम्न वर्ग के लिए आज़ादी का कोई अर्थ एवं महत्त्व नहीं रहा है, आज़ादी का उपभोग उच्च एवं पूंजीपति वर्ग द्वारा ही किया जा रहा है। कवि 'गुप्त' ने '**सड़क का आदमी**' शीर्षक कविता में अपने इन विचारों को इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

"अपनी समस्याओं का
बोझ उठाए
लौट आता है घर
कौन सुनेगा उसकी
किसे फुर्सत है इतनी
जो सुने
किसी के दुःख दर्द की बात
शायद
आज उत्सव है
राजभवन में
रंग–रोगन से संजा–संवरा है वह
रात को
रोशनी में नहा जाएगा
अन्दर–बाहर
शराब व शवाब के
दौर चलेंगे
देर रात तक
और फिर
कुछ मोटी चमड़ी वाले लोग
नशे में झूमते हुए
निकलेंगे बाहर
राजभवन से
और हिकारत की नज़र से

देखते हुए कालू को
बढ़ जाएंगे
अपनी शानदार विदेशी कारों की ओर
बेचारा कालू
देखता रहेगा कारों का काफिला"[8]

यह सच है कि आज़ादी मिलने के बाद हम भारतीयों ने बहुत कुछ खोया है, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक स्थितियों में अप्रिय परिवर्तन हुए हैं परन्तु सच्चाई यह भी है कि स्वतन्त्रता पश्चात् देश प्रगति एवं उन्नति की राह पर आगे बढ़ा है। औद्योगिक विकास एवं वैज्ञानिक उन्नति ने देश को समृद्ध एवं उन्नत बनाने का कार्य किया है। हाड़ौती के कवियों ने समकालीन विषमताओं को काव्य में उद्घाटित करने के साथ–साथ देश के विकास की छवि को भी काव्य में अंकित किया है। "राष्ट्र नव निर्माण के पथ पर अग्रसर हो रहा है। प्राकृतिक वन सम्पदाओं को मनुज ने अपने कल्याण के हित प्रयोग करना प्रारंभ किया। वेगवती नदियों के प्रवाह को रोककर जनहित के लिए प्रयोग किया गया। बड़ी–बड़ी विशाल परियोजनाऐं प्रारम्भ हुयीं। कवि की इन निर्माणकारी योजनाओं के प्रति गहरी आस्था है।"[9] इस अंचल का कवि देश के बिगड़ते हालातों और स्थितियों के आलोचनात्मक उद्घाटन में ही नहीं रमा अपितु राष्ट्र के विकासोन्मुख स्वरूप पर भी दृष्टि डाली है। **कवि बजरंग लाल 'विकल'** ने **'उन्नति की डगर'** शीर्षक कविता में देशोन्नति से जड़े आस्थावादी भाव को अभिव्यक्त किया है। यथा–

"आज उन्नति की डगर है।
ले सुनहले दीप उतरी नील नभ में पुण्य प्राची।
प्रगति का संकेत कर कर, अप्सरायें आज नाची।।
अभ्युदय आलोक में अभिषेक करती मातृ भू का।
बंज रही झंकार मधुमय, नीड़ में मुरली मधुर है।।
आज उन्नति की डगर है।"[10]

हाड़ौती अंचल के कवियों की राष्ट्रीय भावना देशहित तक सीमित नहीं रही है। कवियों की विचार व्यापकता मानवतावादी स्वरूप से भी जुड़ी हुई है। अन्तर्राष्ट्रीय

चेतना का यह रूप कवि कवि **अम्बिका दत्त चतुर्वेदी** की कविता **'विश्वयुद्ध'** में दिखाई देता है। कविता में कवि ने राष्ट्रों की बीच हो रहे निरन्तर युद्धों को आवश्यक बताते हुए विश्व प्रेम को स्थापित करने की भावना को अभिव्यक्त किया है। उन्होंने लिखा है–

> **"यह आवश्यक तो नहीं**
> **कि सभी युद्धों का आधार**
> **सिर्फ घृणा हो**
> **क्या प्रेम की आकांक्षाओं के लिए**
> **निर्णायक युद्ध नहीं लड़े जा सकते?**
> **पूर्णता से परिपूरित**
> **ओ गंधाश्वरोहियों**
> **आओ!**
> **प्रेम की उदात्त भावनाओं से प्रेरित**
> **एक घमासान**
> **विश्वयुद्ध रचें**
> **"अप्रेम" के खिलाफ।"**[11]

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में हाड़ौती अंचल के कवियों द्वारा राष्ट्र के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता का निर्वाह किया गया है। इनके द्वारा समकालीन युग की विसंगतियों एवं कमज़ोरियों का पर्दापाश करने के साथ–साथ देश–सुधार की आकांक्षा भी व्यक्त की है। देश की उपलब्धियों पर गर्व करते हुए कवि मानवतावाद में भी अपनी आस्था को प्रकट करता है।

हाड़ौती अंचल के इन कवियों की राष्ट्रीय भावना का आयाम बहुत विस्तृत है। अतः इनके काव्य में निहित स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्रीय भावना को पूर्णतया समझने हेतु कुछ बिन्दुओं के रूप में इनकी राष्ट्रीय भावना को विभक्त किया गया है–

1. **राजनैतिक परिदृश्य और राष्ट्रीयता**
2. **सामाजिक परिवेश और राष्ट्रीयता**
3. **आर्थिक व्यवस्था और राष्ट्रीयता**
4. **राष्ट्रीय एकता और मानवतावाद**

4:1 राजनैतिक परिदृश्य और राष्ट्रीयता

स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की संरचना, प्रक्रिया एवं क्रियाविधि में अनेक परिवर्तन हुए हैं। सुदृढ़ लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना हेतु संविधान का निर्माण किया गया लेकिन कुछ वर्षों पश्चात् ही इस लोकतांत्रिक व्यवस्था की उपादेयता पर सवाल खड़े होने लगे। जनतंत्रात्मक व्यवस्था के प्रति लोगों में असंतुष्टि के भाव पनपने लगे क्योंकि कहीं न कहीं यह व्यवस्था व्यक्तिगत लाभांश का जरिया बन रही थी। आज भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के इन हालातों से भारतीय नागरिक विक्षुब्ध है। "संसद का संविधान सर्वहारा वर्ग के कल्याणकारी होने का दावे करता है, बहसें करता है लेकिन व्यावहारिक रूप में इन दावों और वक्तव्यों से सर्वहारा वर्ग लाभान्वित नहीं होता। सिद्धान्त और व्यवहार के इसी अन्तर्विरोधी आचरण के कारण मार्क्स ने संसद को बातचीत की दुकान कहा था। भारतीय साम्यवादियों ने भी जनतंत्रात्मक संविधान को बुर्ज्वा संस्था की संज्ञा दी है।"[12] हाड़ौती अंचल के कवि आज़ाद भारत के इस राजनैतिक माहौल से ख़ुश नहीं है। आज़ादी के इतने वर्षों पश्चात् भी जब हालातों में कोई खास परिवर्तन नहीं आया तो कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय का हृदय जनतंत्रात्मक व्यवस्था के प्रति निराश हो जाता है। इन्होंने **'आजादी के सत्रहवें वर्ष'** शीर्षक कविता में भारतीय राज–व्यवस्था के प्रति अपने असंतुष्ट भावों को अभिव्यक्त किये हैं। इन्होंने लिखा है कि–

"उस दिन आजादी के अनगिन दीपक,
जो हमने आपने,
राष्ट्रपति भवन, सचिवालय,
मीनारों, महराबों,
छत और छज्जों,
घर और द्वारों पर जलाये थे,
आज जैसे धुआँ रहे हैं!
काले काजल की परतों पर परतें
उन पर जम रही हैं!
और....................
उनका उपधान लगाए

दीप शिखाएँ सो रही हैं,
एक अँधेरा,
आपके और हमारे मन में उतर रहा है,
गहरा गहरा और गहरा!
जिसमें डूबते जा रहे हैं,
हम सबके,
सपने, आशा, आकांक्षाएँ,
टूटे पोत के टुकड़ों से!"[13]

भारतीयों की उज्ज्वल भविष्य की आकांक्षा धूमिल होने के कारण बाह्य है और कुछ आन्तरिक भी। आज़ादी के कुछ वर्षों पश्चात् ही अपने पड़ौसी देशों से हुए युद्धों ने भारतीय राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित किया। विद्रोह, आक्रोश एवं साम्प्रदायिक वैमनस्य का वातावरण उत्पन्न करने में इन युद्धों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। युद्धजन्य विषमताओं और विकृतियों ने असुरक्षा की भावना को जन्म दिया परिणामस्वरूप देश के शासनाधिकारियों का अधिकतर ध्यान सीमा सुरक्षा में उलझा रहा है। पड़ौसी देशों से शान्ति-समझौतों एवं वार्ताओं को निश्चित करने में सत्ताधारियों का समय बर्बाद हो जाता है। देश की इन बाह्य परिस्थितियों के अतिरिक्त कुछ आन्तरिक कारण भी है जिन्होंने देश की राजनीतिक व्यवस्था को कमज़ोर बनाया है। स्वतंत्रता के पश्चात् देश में औद्योगिक विकास पर बल दिया गया। औद्योगिकीकरण की इस प्रवृत्ति से देश को विकासशील बनाने में मदद तो की परन्तु इसका सबसे बुरा असर भारतीय कृषि व्यवस्था पर पड़ा और समाज में पूँजीपति वर्ग को जन्म दिया। इस पूँजीपति वर्ग ने राजनीतिक तंत्र को बहुत प्रभावित किया है। राष्ट्रनेताओं के आचरण एवं नीतियों को भ्रष्ट करने में पूँजीपति वर्ग का असर रहा है। सत्ताधारियों द्वारा भ्रष्ट आचरण अपनाकर पूँजीपति वर्ग के हित में नीतियाँ निर्धारित की जाती है। पूँजीपति वर्ग द्वारा दिये जाने वाले प्रलोभन के कारण ही लोक-कल्याण की शपथ लेने वाले नेता भी पूँजीपति वर्ग के हितों की पूर्ति करने में तथा ग़लत नीतियाँ बनाने में लगे रहते हैं। "लोकतांत्रिक परिवेश में हमेशा लोकसभा के अन्तर्गत पूँजीपति वर्ग ही बहुमत में होता है। यद्यपि सर्वहारा वर्ग की सीटें सुरक्षित होती हैं परन्तु ये निर्वाचित सांसद भी निर्वाचनोपरान्त केवल

नाम मात्र के लिए सर्वहारा वर्ग के पक्षधर बनते हैं। पूँजीपति वर्ग से उपकृत हो, व्यवस्थाधर्मी आचरण करते हुए ये उनके साथ ही जुड़ जाते हैं और इनके अवसरवादी आचरण से सर्वहारा वर्ग की स्थिति पूर्ववत बनी रहती है।"[14] राष्ट्र नेताओं के ऐसे स्वार्थवादी रवैये पर कवि **प्रेमचन्द विजयवर्गीय** रोष व्यक्त करते हैं। **'शासकों से'** शीर्षक कविता के अन्तर्गत उन्होंने शासकों के स्वार्थी आचरण का यथार्थ प्रस्तुत करते हुए कहा है कि आजकल शासक वर्ग अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना भूल रहा है। जन–कल्याण पर उसका ध्यान कम रह गया है। उन्होंने देश के शोषित एवं कमजोर वर्ग में भी चेतना जागृत करने का संदेश दिया है। यथा–

"भूले हो, राज्य तुम्हारा है?
राज्य तुम्हारा नहीं, राज्य तो
उसका है, जो पिसता है, पिलता है,
खेत में, खलिहानों में, और–
निरन्तर काली सी जो चूसा करती
रक्त प्राण का मजदूरों के,
उस मिल में–जिसमें मिलती शांति नहीं,
उस कल में जो स्वयं विकल है,
अपनी ही कल कल में!
राज्य है होरी का धनिया का,
राज्य है भूख–प्यास में तड़प तड़प रह जाने वाले
दुध–मुँहे उपेक्षित बच्चों का,
जो चिपट, चाम से ढकी हुई ठठरी से, माँ के,
सूखे स्तर चूस–चूस रह जाते हैं।"[15]

कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय की उक्त कविता में शासन व्यवस्था के प्रति नफरत एवं तिरस्कार की भावना व्यंजित है।

वर्तमान राजनीति में सत्त प्राप्ति की होड़ एवं आपाधापी इस क़दर मची हुई है कि झूठे आश्वासनों के माध्यम से सत्ता हथियाने में राजनीतिज्ञ अभ्यस्त हो गये हैं। सत्ता की बागडौर पर वंशवाद का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है। "कुर्सीधारी व्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता होती है कि कुर्सी पाने के पहले वह कुर्सी के लिए घर–घर

वोटों की भीख मांगता है और मतदाताओं से तरह–तरह के वायदे करता है। इतना ही नहीं वह उनसे अपने आत्मीय संबंध स्थापित करता है। पुरानी पहचान बताता है। उनके पूर्व पुरुषों को नमन् करता है किन्तु चुनाव जीतने और कुर्सी प्राप्त करने के बाद उसकी दृष्टि बदल जाती है। जानते हुए भी वह लोगों को नहीं पहचानता है।"[16] चुनाव एवं कुर्सी की यह राजनीति आज के युग का सत्य है। कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने इस सत्य को पहचाना है। कवि ने देश की राजनीति की उत्तरोत्तर बिगड़ती दशा एवं चुनावों के दौरान राजनीति में जनतांत्रिक मूल्यों के हनन पर क्षोभ प्रकट किया है। उनकी **'युग–सत्य'** शीर्षक कविता में सत्ता–लिप्सा का यथार्थ रूप अभिव्यक्त है। कवि ने लिखा है–

"सत्य न्याय के सूर्य चन्द्रमा हुए दृष्टि से ओझल।
पद की भूखी राजनीति, यह करती कितना छल–बल।।
घिरा हुआ है तमस कलुष का आज नभो–मण्डल में।
लगे हुए हैं दाग अपरिमित, सत्ता–लिप्सा के अंचल में।।
उजला उजला बना हुआ है, रूप सभी के तन का।
असत् कर्म ही किन्तु बना है, धर्म सभी के मन का।।
झूठे आश्वासनों के उगते, पौधे राजपथों में।
केवल धोखेबाज सारथी, बैठे राज–रथों में।।"[17]

राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत प्रशासकीय भ्रष्ट्राचार भी इस तरह फैल रहा है कि आज कार्य को तत्परता से करवाने के लिए भी रिश्वत देनी पड़ रही है। इसी भ्रष्ट्राचारिता के कारण आम–जन को अत्यधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अर्थाभाव के कारण रिश्वत न दे सकते के कारण उनके हितों एवं लाभों से संबंधित कागज़ फाइलों में दबकर ही रह जाते हैं। **डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'** की कविता **'गणतंत्र'** में भ्रष्टाचार का यह स्वरूप देखा जा सकता है। उन्होंने लिखा है–

"आज हर आदमी अपने सीमित दायरे में सोचता है
पग–पग पर रिश्वत काला बाज़ार खोजता है।
उसका भारत, उसकी भारतीयता
उसका अध्यात्म, उसकी आध्यात्मिकता,

उसके अपने चश्में की नज़र हुई
या उसके पांव की जूती।
दुरभिमान की उड़ती पतंग,
छू रही है आसमान"[18]

लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था को वैसे तो जनता का, जनता के लिए शासन कहा जाता है लेकिन राष्ट्र नेताओं की स्वार्थपरता एवं प्रशासकीय कार्यों की भ्रष्टता ने इस धारणा को मिथ्या साबित कर रखा है। सत्ताधारियों एवं जनता के बीच दुराव–छिपाव की स्थिति बनी हुई है। सत्ता प्राप्ति के पश्चात् राजनेता तो स्व–सुख को ही महत्त्व देने लगते हैं। जनता से किये गये आश्वासनों एवं वादों का स्मरण उसे अब नहीं रह जाता। जनता के हित में चिन्तन करना एवं जन–कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता को वह सत्ता प्राप्ति के पश्चात् विस्मरण कर देता है। युगीन शासकों की कथनी–करनी का यह अन्तर राजनीतिक व्यवस्था की सबसे बड़ी विडम्बना है। हालात यह है कि इस जनतंत्रात्मक शासन व्यवस्था में साधारण जन को कोई विशेष महत्त्व नहीं मिल पाता है। राजनीतिक व्यवस्था के इस बदलते स्वरूप ने सम्पूर्ण भारतीय परिवेश को प्रभावित किया है। जनता का इस शासन व्यवस्था से मोहभंग हो रहा है। राजनीति के इस दमघोंटू वातावरण में जनता की आस्था डगमगाने लगी है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के प्रति अनास्था का स्वरूप **कवि द्वारका लाल 'गुप्त'** की कविता '**लोकतंत्र**' में दिखाई देता है। कविता के अन्तर्गत कवि ने अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है–

"लोकतंत्र
हां, भाई साहब–लोकतंत्र
विश्व का सबसे बड़ा
भ्रष्टाचार की नींव पर खड़ा
देख रही है जनता,
भूख–गरीबी का तांडव–नृत्य
बेरोजगारी से संतप्त

लोकतंत्र

जादुई तमाशा है

जनता में भारी हताशा है"[19]

राजनेताओं द्वारा निजी स्वार्थपूर्ति हेतु जाति, धर्म, भाषा के आधार पर लोगों के बीच वैमनस्यता की गहरी खाई खोदी जा रही है उसका पर्दापाश करते हुए कवि द्वारका लाल 'गुप्त' ने **'ये नेता नहीं व्यापारी हैं'** शीर्षक कविता में कहा है–

"वोटों के लिए
ये छद्म सेक्युलरवादी
बढ़ा रहे हैं
गहरी खाइयाँ
जाति–धर्म–भाषा के नाम पर
समाज में।
आज
धर्म बन गया हैं
वोट का परिचायक
अब
पट परिवर्तन का
समय आ गया हैं"[20]

भारतीय राज–व्यवस्था में हालात इस क़दर बदतर हो रहे हैं कि दागी, अनुशासनहीन एवं चरित्रहीन व्यक्तियों को भी शासन व्यवस्था में स्थान मिल रहा है जिससे राजनीति में अनुशासनहीनता बढ़ती जा रही है। राजनीति इन आपराधिक प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों की वजह से तानाशाही का वातावरण पनपने लगता है। "ये स्वार्थ लोलुप नेता कुर्सी के लिए कुछ भी कर सकते हैं। गरीब जनता इनके अत्याचारों का शिकार होती है। ये रंगे सियार से सभ्यता का झूठा आवरण ओढ़े अपने घृणित कार्यों को पूरा करने में लगे रहते हैं।"[21] जातिवाद और सम्प्रदायवाद को आधार बनाकर सत्ता हथियाने वाले इन स्वार्थी नेताओं से राष्ट्रीय एकता को नुकसान पहुँच रहा है। ऐसे स्वार्थी, भ्रष्ट एवं समाजद्रोही नेताओं के राजनीति में

आने से देश में असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो रही है। कवि **बजरंग लाल "विकल"** ऐसे भ्रष्ट एवं स्वार्थी नेताओं पर रोष प्रकट करते हैं। उन्होंने अपनी कविता **'भ्रष्टाचारियों को निकालों'** में अपने मनोभावों को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है–

"संसद में घूसखोरों का ही बोलवाला है।
किस पै करे विश्वास जब हर चेहरा काला है।।
हमने पिला के दूध, इन साँपों को पाला है।
ऐसे समाज द्रोहियों को,
जेल में डालों।।
इन भ्रष्टाचारियों को.......।।"[22]

आज के जनतंत्रात्मक परिवेश में राजनीतिज्ञ दल–बदल की राजनीति अपना रहे हैं। अर्थकेन्द्रित दृष्टि के कारण वे न तो किसी एक सिद्धान्त एवं आदर्श पर टिके रहते हैं और न ही उनके विचारों में स्थिरता रहती है। ऐसे अवसरवादी नेताओं में जन–हित के कार्यों के प्रति प्रतिबद्धता भी दिखाई नहीं देती है। दल–बदल की राजनीति अपनाने वाले ये अवसरवादी राजनीतिज्ञ सत्ता पक्ष से जुड़ने के लिए अपने नीति एवं आदर्श की परिभाषा परिस्थितिनुकूल बदलते रहते हैं। कवि बजरंग लाल "विकल" ऐसे अवसरवादी राजनीतिज्ञों का विरोध करते हैं। इन्होंने **'आजादी के बाद (व्यंग्य)'** शीर्षक कविता में इन अवसरवादी नेताओं पर व्यंग्य करते हुए लिखा है कि–

"नारों के वारे–न्यारे हैं, पिटवा रहे मुनादी लोग।
कितने दल में निष्ठा रखते, कितने अवसरवादी लोग।।

संसद में जूते चलते हैं, गाँव नगर दंगम् दंगा,
बेच रहे हैं सत्य अहिंसा, बेच रहे हैं गांधी लोग।।

डंडे झंडे हथकंडे, छल कपट झूँठ से भरे हुए,
राजनीति के भव्य भवन में घुस आये अपराधी लोग।।

माल विदेशी, चाल विदेशी, ठाठ–बाट के क्या कहने?
रोज हवाई किले बनाते ये कुर्सी के आदी लोग।।"[23]

राजनीतिक व्यवस्था के इस भ्रष्ट एवं अनुशासनहीन स्वरूप के प्रति विद्रोह एवं आक्रोश का भाव जन–मन में पनप रहा है। राजनेताओं के झूठे आश्वासनों एवं राजनीतिक व्यवस्था की विसंगतियों के विरुद्ध जनता में क्रांति भाव दिखाई दे रहा है। "सर्वहारा वर्ग खेत–खलिहान, गाँव, कल–कारखानों से लेकर राजनीति के राजपथ तक अपने अधिकारों के प्रति संघर्षशील है। उसने शोषण–प्रक्रिया के विरुद्ध कहीं विद्रोह, कहीं असहयोग और कहीं अविश्वास व्यक्त कर अपनी आवाज़ को बुलन्द किया है।"[24] जन–मन में इस विद्रोह का पनपना स्वाभाविक भी है क्योंकि आज़ादी मिलने के समय जनता के मन में जो आशाऐं बंधी थी वो स्वप्न धीरे–धीरे खण्डित होने लगे। हालात यह है कि जनता की रोटी, कपड़ा, मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताऐं भी पूरी नहीं हो पा रही है। भ्रष्ट सत्ताधारियों के प्रति उनके मन में जो क्रोध उत्पन्न हो रहा है वह जनता की कुंठा, यातना का ही परिणाम है। युगीन भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह भाव व्यक्त कर हाड़ौती अंचल के कवियों ने अपने दायित्व का निर्वाह भली–भाँति किया है। कवि बजरंग लाल "विकल" तो भ्रष्ट सत्ताधारियों को सत्ता से निकालने का आह्वान तक करते हैं। उन्होंने '**भ्रष्टाचारियों को निकालो**' शीर्षक कविता में अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करते हुए कहा है–

"परचम को ऊँचा और हवाओं में उछालो।
इन भ्रष्टाचारियों को अब सत्ता से निकालो।।
रक्षक ही जब भक्षक बने, तो कैसे चलेगा।
विष से जिसे सींचा, वह वृक्ष कैसे फलेगा।।
सूरज के बिना यह अँधेरा कैसे हिलेगा।।
तुम तेज पुंज ज्वाल हो,
नव युग की मशालों।
इन भ्रष्टाचारियों को.....।।
गाँवों में गरीबी के, घराने न कम हुए।
दुःखों मुसीबतों के जमाने न कम हुऐ।।
उनके बने बनाऐं, बहाने न कम हुऐ।

बदलेगा अपने आप सब,

यह भ्रम नहीं पालो।

इन भ्रष्टाचारियों को................।।"[25]

कवि बजरंग लाल "विकल" वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था से असंतुष्ट है। राजनीति के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए वे राजनीतिक समस्याओं के दौर के विरुद्ध आज की पीढ़ी में क्रान्ति भाव पैदा करना चाहते हैं। भ्रष्ट शासन व्यवस्था को खत्म करने के लिए कवि जनवादी क्रांति के सहारे ठोस परिवर्तन की उम्मीद करते हैं। कवि को विश्वास है कि आने वाली युवा पीढ़ी शासन व्यवस्था की अकर्मण्यता एवं शोषण को सहन नहीं करेगी व धोखा एवं झूठा आश्वासन देने वाले सत्ताधारियों के विरुद्ध क्रांति अवश्य करेगी। कवि बजरंगलाल "विकल" ने अपनी कविता '**क्रांति के चौराहे पर**' में अपने इसी विश्वास को अभिव्यक्त किया है। यथा–

"नारों से अब टूट नहीं पायेगी बेड़ी,
ठोस काम करने होगें जनता की खातिर।
बीत गया है दीर्घ काल आश्वासन देते,
पीड़ित जनता कब तक जुल्म सहेगी आखिर।।

बहकाने की भी सीमा होती है भाई,
अधिक समय तक धोखा नहीं चला करता है।
बहुत शीघ्र खो देता चमक झूँठ का रोगन,
सत्य सदा सूरज की तरह जला करता है।।

आश्वासन के सब्जबाग दिखलाओं चाहे,
देश नहीं कर सकता है अब अधिक प्रतिक्षा।
जिससे यह युग की सीता पावन हो जाये,
देनी ही होगी तुमको वह अग्नि परीक्षा।।"[26]

कवि 'विकल' का यह आक्रोश शासन की दोगली नीतियों के विरुद्ध है। अपने युग में शासन व्यवस्था की विसंगतियों से इनका हृदय उद्वेलित हो उठता है

और अपने इसी उद्वेलन को इन्होंने कविता में उकेरा है। कवि "विकल" की कविताओं को पढ़ने के पश्चात् यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कवि बजरंग लाल "विकल" राष्ट्रभावापन्न कवि है।

हाड़ौती अंचल के इन कवियों के काव्य के अनुशीलन के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि हाड़ौती अंचल के इन कवियों की कविता समकालीन राजनीति के नए संदर्भों, नये प्रश्नों एवं नयी चेतना का रचनात्मक रूप है। इन्होंने स्वतंत्रता के पश्चात् राजनीति में उभरकर सामने आयी समस्याओं के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत किया है ही साथ ही राजनीतिक परिवेश की परिवर्तित स्थितियों के प्रति चिन्तन करते हुए भविष्य से जुड़े संवेदनात्मक परिदृश्य को भी काव्य में अभिव्यक्त किया है। हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने काव्य–कर्म द्वारा जन–जागरण का कार्य किया है वह इनकी राष्ट्रीय भावना को दर्शाता है। प्रतिकूल राजनीतिक परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने का कार्य भी किया है। इन कवियों ने कविता द्वारा राजनीतिक चेतना उत्पन्न कर अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य का निर्वाह किया है। सचमुच इन कवियों की कविताएँ युग परिदृश्य की द्योतक है।

4:2 सामाजिक परिवेश और राष्ट्रीयता

समय परिवर्तनशील है। समय की गति के साथ मानव समाज का स्वरूप भी बदलता रहा है। मनुष्य का परिवर्तित जीवनानुभव समाज में नये पहलुओं को उद्घाटित करता है जिससे सामाजिक संगठनों, प्रक्रियाओं एवं स्थितियों में अनेक परिवर्तन होते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् भी भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन हुए हैं। परतंत्र भारतीय समाज की कुछ विकट समस्याएँ स्वातंत्र्योत्तर परिवेश के जनतंत्रवादी समाज में समाप्त हुई तो स्वतंत्रता के पश्चात् उत्पन्न अनेक नई समस्याओं ने समाज को जकड़ लिया। "आज आपसी रिश्तों के विघटन, आत्मकेन्द्रित दृष्टिकोण, संयुक्त परिवार प्रणाली के टूटन एवं बिखराव और उपयोगितावादी अवधारणाओं की स्वीकृति के मूल में अर्थकेन्द्रित दृष्टि ही है। 'जिससे लाभ हो, उसी को स्वीकारों' का सिद्धान्त सर्वोपरि हो गया। अर्थप्रधान दृष्टि से नारी को जहाँ स्वतंत्र चिन्तन, व्यक्तित्व और कार्यक्षेत्र मिला है वहाँ दाम्पत्य संबंधों की नींव चरमरा गई है। मातृत्व और पत्नीत्व की अवधारणाओं में अप्रत्याशित परिवर्तन उभरा है। यौनशुचिता, पातिवृत्य, मातृत्व की अनुभूति, पर्दाप्रथा आर्थिक परतंत्रता, सतीत्व, पुरुष के एकाधिकार जैसी मान्यताओं पर प्रश्नचिह्न लग गए हैं।"[27] आज़ादी के बाद जिस आदर्श समाजवाद की स्थापना का संकल्प भारतीयों द्वारा किया गया उसे जातिवाद, सम्प्रदायवाद, स्वेच्छाचरण एवं बढ़ती बेकारी जैसे अवरोधक तत्त्वों ने पूरा नहीं होने दिया है। ऐसी परिस्थितियों में अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह करते हुए साहित्यकार स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक परिवेश की इन सच्चाइयों को काव्य में प्रतिबिम्बित कर रहे हैं। हाड़ौती अंचल के कवियों ने भी समाज की विकृत स्थितियों को परिमार्जित एवं परिवर्तित करने के लिए सामाजिक परिवेश के विभिन्न पहलुओं को काव्य में निरूपित कर रहे हैं।

स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक परिवेश की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि समाज में अपने लोगों के बीच रहकर भी आम आदमी असुरक्षित महसूस करता है। "आज आम आदमी असुरक्षा, अनस्तित्व बोध और अस्मिता संकट से पीड़ित है। वह कहीं सामाजिक दृष्टि से अपने लिए चिंतित है तो कहीं अपनी पत्नी और बेटी के लिए।

वह अविश्वास और संशय की स्थिति में असुरक्षा के एहसास से व्याकुल हो उठता है।"[28]

समाज में बढ़ रहे अपराधों के कारण आम आदमी ऐसा महसूस करता है भले ही हम आज़ाद भारत के नागरिक है लेकिन अब भी वह उन्मुक्त वातावरण दूर है जहाँ बिना भय के जीवन जिया जा सके। कवि **प्रेमचन्द विजयवर्गीय** ने **'और कहीं चल'** शीर्षक कविता में समाज में निरन्तर बढ़ रही विकृत स्थितियों और अशान्त वातावरण को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं कि विसंगतियों से भरे इस सामाजिक परिवेश में शान्त एवं सुरक्षित जीवन व्यतीत करना मुश्किल है। इन्होंने लिखा है–

धर्म कर्म कैद हुआ अधर्म–कारागार में,
पुण्य को ग्रहण लगा पाप–राहु–केतु से;
सूख गई शान्ति की गङ्गा विश्व भूमि पर
आणविक शस्त्रों के हाथ उठे प्रेम–से।
घिर आए मानवता पर दानवीय दल,
शक्ति के विहग तू और कहीं चल!
अर्थ का रथ–चक्र परार्थ को कुचल रहा,
पूँजी की जोंक न्याय–रक्त पिए जा रही;
धर्म–युग बीता, राजनीति युग–धर्म हुई,
पैसे की हार में है प्रीति बिके जा रही।
श्वास यहाँ घुट रही , चेतना हुई विकल,
मुक्त नभ–चारी तू और कहीं चल!"[29]

समाज में संकीर्ण मनोवृत्ति वाले कुछ व्यक्तियों द्वारा स्वार्थ पूर्ति हेतु उपद्रव, षड्यंत्र एवं असुरक्षा का वातावरण उत्पन्न किया जाता है। समाज में बढ़ता जातिवाद ऐसे लोगों की विकृत मनोवृत्ति का ही परिणाम है। समाज में जातीयता का यह सिद्धान्त इतना गहरा हो चुका है कि आज लगभग प्रत्येक क्षेत्र व स्तर पर इसका प्रभाव दिखाई देता है। "जात–पाँत का एहसास पारस्परिक मेलजोल का अवरोधक

है, मानवीय मूल्यों का भंजक है और सामाजिक एकता का विनाशक है। यह एक ऐतिहासिक साक्ष्य है कि जात–पात के परिणामस्वरूप मानवीय संस्कृति के ऐतिहासिक पृष्ठ रक्तरंजित है और बर्बरता एवं क्रूरतापूर्ण कृत्य आज भी हमारे रौंगटे खड़े कर देते हैं।"[30] समाज में कुछ जातियाँ उच्च स्थान पर स्थापित है तो कुछ जातियाँ निम्न दर्ज़े की मानी जाती है। जाति के आधार पर किया जाने वाला ऊँच–नीच का यह भेदभाव समाज में अस्पृश्यता जैसे बुराई को जन्म देता है। कवि **दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'** ने सामाजिक असमानता से जुड़े भावों को एकलव्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। यथा–

"जन्म के घर की उच्चता या नीचता ही
एकमात्र प्रमाण होगी
इसका मुझे पता न था
शुद्र के घर जन्मा
इसमें मेरा क्या दोष है
जन्म तो जन्म है
जन्म पर मेरा अपना अधिकार तो न था
जन्म कहीं भी हो उससे क्या
व्यक्ति का गुण, कर्म, स्वभाव
उसकी प्रतिभा, उसका सामर्थ्य
घर के चूल्हें में नहीं
उस अपने में छिपे होते हैं।"[31]

विभिन्न जातियों के मध्य होने वाला संघर्ष राष्ट्रीय एकता के मार्ग में अवरोधकता पैदा करता है। भारतीय समाज में यह जाति–प्रथा कब से विद्यमान है, इसके बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता लेकिन वर्तमान लोकतांत्रिक युग में जातिवाद का यह विष सामाजिक और राष्ट्रीय एकता को नुकसान पहुँचा रहा है। "राजनीतिज्ञ अपने हितों और स्वार्थों के लिए जातिवाद का उपयोग करने से नहीं हिचकते। प्रायः विभिन्न पदों पर नियुक्तियाँ और उन्नतियाँ जाति के आधार पर की

जाती हैं। राजनीतिक दल अपने–अपने उम्मीदवारों की सफलता के लिए लोगों की जातीय भावना को उकसाते हैं। अधिकारीगण अपनी जाति वालों को प्राथमिकता देते हैं। यह स्थिति किसी भी देश की राष्ट्रीय और सामाजिक एकता के लिए दुखदायी है।"[32] भले ही आज कुछ युवाओं द्वारा अन्तर्जातीय विवाह करके इस जातीयता के कठोर बंधन को तोड़ा जा रहा है लेकिन समाज में जाति का मोह गहराई तक विद्यमान है जिसे आसानी से खत्म नहीं किया जा सकता है।

आधुनिक भारतीय समाज में जातिवाद के साथ सम्प्रदायवाद जैसी दुष्प्रवृत्ति भी विद्यमान है। अपने धर्म के प्रति श्रेष्ठ एवं दूसरे धर्म के प्रति निकृष्टता का भाव अपनाकर कुछ लोग समाज में अलगाव की स्थिति उत्पन्न करते हैं। ऐसे व्यक्तियों द्वारा अपने धर्म के प्रति कट्टर रुख अपनाया जाता है जिससे समाज में द्वेष एवं नफ़रत के भाव पनपते हैं। अपने धर्म के प्रति अधिक उन्मादकता का यह भाव समाज के विघटन के लिए तो जिम्मेदार है ही साथ ही समाज में हिंसक एवं पाशविकतापूर्ण कार्यों को पनपने के कारण भी है। "साम्प्रदायिकता ही देश के विभाजन का एक मुख्य कारण बनी और आज भी देश की आज़ादी के लिए यह एक बड़ा खतरा सिद्ध हो रही है। सम्प्रदायवाद के लिए न केवल मुस्लिम सम्प्रदायवादी उत्तरदायी हैं, बल्कि हिन्दू सम्प्रदायवादी भी कम उत्तरदायी नहीं हैं। दोनों ही जातियों के साम्प्रदायिक सम्मेलन असहिष्णुतावादी तत्त्वों के हाथ मजबूत करते रहे हैं।"[33] हाड़ौती अंचल के कवि **डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'** धर्म के ऐसे ठेकेदारों के प्रति कड़ा रुख अपनाते हैं। वह कहते हैं कि किसी भी व्यक्ति को धर्म के अमानवीय बंधनों में अपने आप को नहीं जकड़ने देना चाहिए। प्रत्येक मज़हब मानवता का पथ आलोकित करता है इसलिए सभी धर्मों में विश्वास एवं आस्था का भाव अपनाया जाना चाहिए। कवि 'राकेश' ने **'धर्म के प्रश्नकर्ता से'** शीर्षक कविता में अपने भावों इस प्रकार अभिव्यक्त किया है–

"पूछ रहे हो मुझसे क्या मज़हब है मेरा,
हर दीपक से अपना पथ ज्योतित करता हूँ.
बुद्ध, अशोक, मुहम्मद, ईसा, नानक सबकी,
सदा एक ही मंदिर में पूजा करता हूँ.

तुम मेरे विश्वासों को झकझोर रहे हो,
सीमाओं में बाँध रहे हो मेरा पानी.
मेरी भावुकता को सपना पिला रहे हो,
भुला रहे मेरी गलियां जानी पहचानी.

मैं उस मंदिर में जाता हूँ जिसके द्वारे,
नहीं किसी का मस्तक ठुकराया जाता है.
जहाँ शब्द के भेदभाव को आग लगाकर,
सदा आरती का वंदन गाया जाता है."[34]

कवि द्वारकालाल 'गुप्त' ने भी धर्म की आड़ में किये जाने वाले अमानुषिक कृत्यों का वर्णन किया है। **'धर्म'** शीर्षक कविता में कवि गुप्त नये संदर्भों में धर्म की व्याख्या प्रस्तत करते हैं। धर्म को अफीम की गोली बताकर कवि ने समाज के प्रत्येक व्यक्ति को सम्प्रदायवाद के इस नशे से दूर रहने का सन्देश दिया है। कवि द्वारकालाल 'गुप्त' ने लिखा है–

"धर्म अफीम की गोली है
इसकी नींव पोली है
खोखली है
यह एक ठिठोली है
परन्तु
सोचो मेरे दोस्त
आज जब हम हुए धर्म से दायें-बायें
तो देख रहे हो परिणाम
भ्रष्टाचार, सम्प्रदायवाद, हिंसा का नर्तन
असमानता का तांडव
भाई

भाई का बन गया दुश्मन।

काले नागों की तरह डस रहे हैं

एक-दूसरे को

अखबार का हर सफा रंगा है खून से

बलात्कार, व्यभिचार के जुनून से

सदियों से तोड़ा है देश को

समाज को

गलत व्याख्या कर धर्म की

अब तो

भोगना ही पड़ेगा

जैसा बोया हैं

काटना ही पड़ेगा हमें

और

प्रस्थापित करना पड़ेगा धर्म को

नये सन्दर्भों में

नये प्रतिमानों में

तब

संगठित होगा समाज

सुख-शान्ति का होगा राज।"[35]

सम्प्रदायवाद और जातिवाद के अतिरिक्त भारतीय समाज की प्रमुख समस्या नारी-सुरक्षा, नारी-सम्मान एवं नारी-अधिकारों से संबंधित हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् महिलाओं के हित में भले ही अनेक कानून, योजनाऐं एवं अधिकारों का निर्माण कर दिया गया है परन्तु स्त्री के प्रति अनादर की भावना भारतीय समाज में आज भी बनी हुई है। व्यावसायिक काम-काज करने में पुरुष के समकक्ष अधिकार उसे अवश्य मिल रहा है लेकिन पुरुष के समाज सम्मान की अधिकारिणी उसे आज भी नहीं माना जा रहा है। "यह कैसी विडम्बना है कि बलात्कार की घटना के बाद

बदनामी अपराध करने वाले की नहीं बल्कि निर्दोष नारी की होती है। ऐसी ही स्थिति विवाह विच्छेद के संबंध में होती है। विधवा नारी आज भी शादी, संतान उत्पत्ति, जन्मदिन, सगाई जैसे पवित्र उत्सवों पर आगे जाकर भाग नहीं ले सकती है। शादी नहीं होना सबसे बड़ा कलंक माना जाता है। विवाहित जोड़े के संतान नहीं होने पर बांझपन का अभिशाप नारी को ही भुगतना पड़ता है, जबकि इसके लिए पुरुष व स्त्री के दोषी होने की संभावना बराबर की ही होती है।"[36] आज भी समाज में कुछ संकुचित मानसिकता वाले लोग बलात्कार जैसे अपराध से गुजरने के पश्चात् भी नारी की मानसिक संवेदना पर संवेदना प्रकट करने के बजाय अपराध का दोषारोपण महिलाओं पर करने लगते हैं। आधुनिक समाज में ऐसी विकृत मानसिकता वाले लोगों पर खीझ तो उत्पन्न होती ही है साथ ही अफसोस भी होता है कि स्वतंत्र भारत में महिलाओं को सुरक्षित एवं सम्मानित जीवन क्यों नहीं मिल पा रहा है। कवि द्वारका लाल 'गुप्त' ने '**नारी**' शीर्षक कविता में समाज की उस अशिष्ट एवं पाशविक स्थिति का वर्णन किया है जहाँ महिलाओं की अस्मिता, भावनाओं एवं अस्तित्व को कुचलने का प्रयास किया जाता है। कवि की उक्त कविता से इस भाव की प्रतीति होती है कि समाज में क्रूर एवं अनैतिक आचरण वाले व्यक्तियों द्वारा स्त्रियों का यौन शोषण कर उनको इतनी शारीरिक एवं मानसिक यातना पहुँचायी जाती है कि उनकी दुःखद स्थिति की कल्पना करने मात्र से ही पीड़ा एवं कष्ट का अनुभव होता है। कवि द्वारका लाल 'गुप्त' ने अपने मनोभाव अभिव्यक्त करते हुए लिखा है–

"पुरुष बन गया है
आदमखोर पशु
वह तलाशता है
उसकी मांसल देह में
केंचुए की तरह
सरक–सरक कर
हाथ की अंगुलियों से

मन की संतुष्टि और सुख

वह तोड़ देता है

खिलौने की तरह

खेल कर

उसके अस्तित्व को

टांग दी है

उसकी नंगी तस्वीर

बाजारू इश्तिहार की तरह

जगह–जगह

उड़ाता है मज़ाक

उसकी नारी सुलभ भावनाओं की

हर घड़ी ।"[37]

स्त्री–अस्मिता की समस्या की छवि कवि 'गुप्त' की कविता **'दामिनी'** में भी दिखाई देती है। यथा–

"राजीव पुल के पास

पड़ी है एक लड़की की लाश

हिसंक पशुओं की तरह

हबशियों ने

नोंच लिया है उसका अस्तित्व

फिर गला घोंट कर

डाल दिया है पुल के पास।

फिर होती हैं

कागजी घोड़ों की दौड़

जाँच होगी, आयोग बिठाया जायेगा

ताकि लोग भूल जायें हादसे को

और लग जायें अपने काम–धंधों में

पुलिस–प्रशासन नहीं डालता हाथ

क्योंकि अपराधी हैं बड़े बाप के बेटे।"[38]

कवि 'गुप्त' के ये मनोभाव समाज का कटु यथार्थ है। भले ही आज हमारे देश में लड़कियाँ हर क्षेत्र में चाहे राजनीति हो या साहित्य या फिर कला क्षेत्र, वह अपनी प्रतिभा से उपलब्धियों के शिखर पर निरन्तर आगे बढ़ रही है फिर भी परम्परावादी भारतीयवादी भारतीय समाज में स्त्रियों का शोषण आज भी हो रहा है।

आधुनिक भारतीय समाज में मौजूद विद्रूपताओं व विसंगतियों को दूर करने एवं समाज के सर्वांगीण विकास के लिए युवाओं का योगदान अत्यन्त आवश्यक है परन्तु समाज में बढ़ती बेरोजगारी के कारण युवाओं का चिन्तन–मनन स्वयं तक सिमट कर रह गया है। "जिस युवा शक्ति का उपयोग राष्ट्र निर्माण में होता था आज वह या तो बेरोजगारी से दुविधाग्रस्त हो विनोशोन्मुखी कृत्यों में संलग्न है या उचित मार्ग निर्देशन के अभाव में वैमनस्य और गुटबंदी में उलझी है। युवा आक्रोश का एकमात्र कारण यह है कि युवा चारित्रिक पवित्रता, त्याग, सेवा, आस्था, प्रेम, विश्वास, आदर्श, धर्म अपना मूल्य खो चुके हैं और नई पीढ़ी को इनमें विश्वास नहीं रह गया है।"[39] परिस्थितियोंवश युवा वर्ग जीवनयापन हेतु कार्य ढूँढ्ने के दांव–पेंच में ही लगा रहता है। आर्थिक दारिद्रय के चलते वह अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाना ही उसकी प्राथमिकता हो रही है। इसीलिए सामाजिक समृद्धि की योजनाओं में वह अपनी पूर्ण सहभागिता एवं सहयोग नहीं कर पा रहा है। कवि **बजरंग लाल 'विकल'** समाज में बढ़ रही इस बेरोजगारी से व्यथित हैं। उन्होंने **'शिक्षित बेकारों के नाम'** शीर्षक कविता अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि बढ़ती बेरोजगारी युवा वर्ग में विवशता, चिन्ता एवं निराशा के बीज पैदा करती है। ज्ञान–विज्ञान से युक्त मस्तिष्क रखने के पश्चात् भी युवा वर्ग नौकरी प्राप्त करने के लिए सिफारिशों को बंटोरने एवं दफ़्तरों के चक्कर लगाने में लगा रहता है लेकिन इतना सब कुछ करने के बाद भी नौकरी प्राप्त करना बड़ा मुश्किल होता है। कवि बजरंग लाल 'विकल' ने लिखा है–

"नौकरी आज लेकिन गूलर का फूल हुई,

वह जाने किस चाँदनी रात में खिलती है।

कितनी लम्बी है अँधियारे की राह, मगर,
जल जल कर चलते रहो न मंजिल मिलती है।।
वह सिफारिशों के रेशम तकियों पर सिर रख,
लेटी है कुर्सीदार पलँग कालीनों पर।
उसके सरकारी महल अटारी ऊँचे है,
तुम धूल भरे डगमगा रह हो जीनों पर।।"[40]

भारतीय समाज की इस ज्वलंत समस्या से कवि कवि हृदय का व्यथित होना स्वाभाविक ही है।

वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य की विभिन्न समस्याओं पर चिन्ता प्रकट करते हुए हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने आस्था एवं विश्वास के भाव भी व्यक्त किये हैं। समाज के बिगड़ते हालातों को देखने के बावजूद भी कवि का मन आश्वस्त है कि सामाजिक समरसता से परिपूर्ण एवं शोषण मुक्त समाज की स्थापना अवश्य होगी। समकाल समाज के संकट एवं उत्पीड़न को महसूस कर हाड़ौती अंचल का कवि नये समाज के निर्माण के लिए आस्था भाव व्यक्त करता है। वर्तमान भारतीय समाज में व्यक्ति आशा एवं निराशा के बीच दिग्भ्रमित होकर जीवन जीने का मार्ग नहीं ढूँढ पा रहा है। इस अन्तर्विरोधात्मक स्थिति को दूर करने के लिए आवश्यक है कि हम परस्पर जुड़े रहें। एक दूसरे पर विश्वास करने पर ही समाजवाद की संकल्पना को पूरा किया जा सकता है। मानवीय संबंधों के विकास हेतु ऐसा करना आवश्यक भी है। कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने एक ऐसे नये समाज की आकांक्षा व्यक्त की है जिसमें दीनता, अधर्म एवं भेदभाव नहीं हो तथा सामाजिक समानता के भावों से युक्त आचरण को अपनाया जाये। कवि प्रेमचन्द की यह आकांक्षा '**नया समाज**' शीर्षक कविता में अभिव्यक्त हुई है। यथा–

"नया समाज मनुष्यता जहाँ नहीं कराहती,
स्वर्ण द्वार पर जहाँ न दीनता पुकारती,
पेट के लिए जहां न धर्म शर्म लुट सके,
भोग के लिए जहाँ न दीन मान लुट सके!
लोक साम्य हेतु आज आ रहा नया स्वराज,
बन रहा नया समाज, जग रहा नया समाज!"[41]

कवि बजरंग लाल 'विकल' भी संकटों से मुक्त एक ऐसे ही समाज का स्वप्न देखते हैं जिसमें सभी लोगों की जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी हो सके। भाईचारे की भावना एवं प्रेमिल संबंधों के कारण जहाँ किसी भी व्यक्ति को कष्ट एवं पीड़ा को नहीं भोगना पड़े। सुख–सम्पन्नता से परिपूर्ण ऐसा समाज कवि बजरंग लाल 'विकल' का स्वप्न है। इन्होंने **'सर्वजन हिताय'** शीर्षक कविता में अपने मनतव्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है–

"कभी न कोई भूखा सोये कभी न कोई दुख से रोये।
सोना बरन देश की माटी सबका प्यार सँजोये।।

आँसू अगर एक भी छलके, दृग पुतली की कोर से।
दूजा हाथ पौंछ दे उसको, शुष्क वस्त्र के छोर से।।
एक–एक मन मुतियन वाला, बँधे प्रेम की डोर से।
एक सूत्र में तन–मन डोले, ऐसा हार पिरोये।।
कभी ना कोई.................................।

रोजी रोटी मिले सभी को, सब को मिले मकान रे।
सबका स्वर गीता, रामायण, मानव हो भगवान रे।।
मेरा हिन्दुस्थान यहाँ की धरती स्वर्ग समान रे।
काश्मीर में केसर, मानसरोवर मोती बाये।।
कभी ना कोई.................।"[42]

उक्त पंक्तियों से से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि समाज की निर्मम व्यथाओं से कवि बजरंग लाल 'विकल' पूर्णतया हताश एवं निराश नहीं हुए है। आस्थावादी कवि 'विकल' समाज में सकारात्मक विचारों का प्रसार करना चाहते हैं जिससे समाज उन्नति एवं प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ सके। समाज के बिगड़ते इन हालातों में आशावादी दृष्टिकोण रखना अत्यन्त आवश्यक है। इतिहास साक्षी है कि समय–समय पर भारतीय समाज में आयी तमाम विपदाओं एवं संकटों को भारतीय जन ने उम्मीदों एवं मनोबल के सहारे दूर किया है। प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए इस आशा, विश्वास, साहस एवं संकटों को भारतीय जन ने उम्मीदों एवं

मनोबल के सहारे दूर किया है। प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए इस आशा, विश्वास, साहस एवं उमंग का लोगों में होना जरुरी भी है। वर्तमान संकटकालीन परिस्थितियों में भी लोगों में आशा एवं विश्वास का भाव मौजूद है। यही कारण कि अनेक बाधाओं के पश्चात् भी भारतीय समाज विकास के पथ पर अग्रसर है। ऐसे समय में कवि का भी यह कर्त्तव्य होता है कि समाज की विसंगतियों को उजागर करने के साथ–साथ आशा एवं विश्वास के भावपूर्ण विचाराभिव्यक्ति द्वारा समाज के लिए नयी दिशा व मार्ग प्रशस्त करें। हाड़ौती अंचल के कवि **अम्बिका दत्त** ने अपने इस कर्त्तव्य को बखूबी निभाया है। "अम्बिका दत्त के पास कोई जादुई आशावाद नहीं है, तब भी वे हताश कवि नहीं हैं। सब कुछ डुबो देने वाले और अंधेरे में लिपटा खाक–धूल हुआ भविष्य देखने या घोषित करने वाले कठिन दिनों में आशा ही कवि का कवच है। यह आशा निर्मम व्यवस्थाओं के बीच से आती है जो असंख्य लोगों की बर्बाद और अनादरणीय उपेक्षित और क्लांत जिन्दगियों में साहस और उमंग भर देती है।"[43]

कवि अम्बिका दत्त ने अपनी कविताओं में समाज के लोगों की लाचारी एवं कमजोरियों का ही वर्णन नहीं किया है अपितु उन्होंने व्यक्ति के आत्मविश्वास की ताकत को कवि ने पहचाना है। कवि विश्वास व्यक्त करता है कि आत्मविश्वास की ताकत से समाज को विद्रूपताओं एवं समस्याओं से मुक्त किया जा सकता हैं। **'नदी दर्शन**' शीर्षक कविता में कवि अम्बिकादत्त ने नदी के माध्यम से मनुष्य की आत्मविश्वास शक्ति को स्पष्ट करते हुए आत्मविश्वास की ताकत का अभिवादन किया है। इन्होंने लिखा है–

"अब मैंने नदी को देख लिया है
और पहचान लिया है
नदी की पत्थर काटने की ताकत को
बिना घिसे–जमीन के ऊपर बहते रहकर
मैं नदी को अभिवादन करता हूँ
प्रणाम करता हूं"[44]

सारांशतः कहा जा सकता है कि स्वातंत्र्योत्तर भारतीय परिवेश के इन हालातों पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इन कवियों ने समाज के संकट एवं कष्टों पर भारतीय जन का भी ध्यानाकर्षित करना चाहा है। समाज के समकाल संकट को काव्यांकित कर इन कवियों ने विषम सामाजिक परिस्थितियों, विसंगतियों के प्रति जनमानस में विरोध करने के भाव उत्पन्न करना चाहा है। भारतीय जन को समाज कल्याण हेतु प्रोत्साहित करना इन कवियों का प्रयोजन रहा है। काव्य रचनाओं में सामाजिक दशाओं में सुधार करने की बात कहकर इन रचनाकारों के राष्ट्रीय एकीकरण का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इतना ही नहीं सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करने के साथ इन कवियों ने आशावादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए समाज की अच्छाइयों को काव्य में समेटने की कोशिश की है। वर्तमान समाज कल्याण हेतु इन कवियों का यह रचना–कर्म गौरव करने योग्य है।

4:3 आर्थिक व्यवस्था और राष्ट्रीयता

स्वातंत्र्योत्तर काल में आर्थिक व्यवस्था को सम्मुन्नत करने हेतु उद्योग–धन्धें को बढ़ावा दिया गया परन्तु इन उद्योग धन्धों ने उपयोग एवं उपभोग के स्तर पर भारतीय अर्थव्यवस्था को बहुत प्रभावित किया है। औद्योगिकीकरण से नगरीकरण को बढ़ावा मिला साथ ही भौतिकवादी विचारधारा का भी प्रसार हुआ। आर्थिक असमानता और बेकारी का प्रमुख कारण भी उद्योग–धन्धे ही रहे हैं। औद्योगिक प्रगति ने आर्थिक असमानता की ऐसी खाई तैयार कर दी है जिसे पाटना बहुत मुश्किल है। एक तरफ पूँजीपति वर्ग सब सुख–सुविधाओं का उपभोग करता है तो दूसरी ओर आर्थिक जर्जरता में आम–आदमी गरीबी एवं बेरोजगारी की त्रासद पीड़ा को झेलता है। "देश में आर्थिक विपन्नता की खाई निरन्तर चौड़ी होती जा रही है। झोंपड़ियों और महलों का बढ़ता हुआ अन्तर दिलों की एकता के मार्ग में गम्भीर काँटा है। घोर आर्थिक विषमताओं, निरन्तर बढ़ती हुई महँगाई, देश की जनसंख्या के बड़े भाग के लिए जीवन–पोषण की कठिनाई आदि ने सामाजिक मूल्यों का ह्रास किया है और फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता के सूत्र कमजोर हुए है।"[45] यह सच भी है कि गरीबी एवं बेकारी की व्यथा से त्रस्त व्यक्ति को राष्ट्रीयता का पाठ नहीं पढ़ाया जा सकता। राष्ट्रीयता जैसे उच्च आदर्शों एवं भावनाओं का विकास गरीबी एवं बेकारी को मिटाकर ही किया जा सकता है। स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में धनिक और सुविधाभोगी वर्ग तो अन्धाधुन्ध कमाई के द्वारा सम्पन्न एवं समृद्धशाली बनता है परन्तु विपन्न वर्ग के जीवन में गुजर–बसर का संकट बढ़ता ही जा रहा है। इध ार बेकारी की समस्या से ग्रस्त युवा की निराशा एवं हताशा बढ़ती जा रही है। निरन्तर बढ़ती यह आर्थिक विषमता राष्ट्रीय एकता के विकास का बाधक तत्त्व बनती जा रही है। "हमारे देश में गरीबी और बेकारी बहुत बुरी फैली हुई है। जिसको भूख मिटाने के लिए दो टाइम रोटी न मिले, बीमारी में बच्चों के लिए दवा न मिले, उससे यह आशा नहीं की जा सकती कि वह एकता जैसी चीज की परवाह करेगा। वह तो जातिवाद, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता या अन्य किसी भी तत्त्व के नाम पर कुछ कमाने की चेष्टा करेगा। लोगों में उच्च आदर्शों और भावनाओं का प्रसार करने के

लिए यह अनिवार्य है कि देश में गरीबी और बेकारी को मिटाया जाए। एक भूखे के लिए आदर्श बहुधा कोई मूल्य नहीं रखता।"[46] आर्थिक परिवेश की इन जटिलताओं एवं समस्याओं को हाड़ौती अंचल के कवियों ने भली-भाँति देख, परख व समझकर काव्यबद्ध किया है ताकि समाज को इन समस्याओं के प्रति सचेत व जागरुक बनाने का कार्य किया जा सके। भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास एवं समुन्नत स्वरूप ही इन कवियों का स्वप्न है।

स्वतंत्रता के बाद नवीन यंत्रों के उत्पादन की प्रगति से भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं, परिवर्तन नहीं हुआ तो देश के लोगों की निर्धनता में। ऐसा लगता है कि देश में यांत्रिक आविष्कार पर अधिक ध्यान केन्द्रित है और ग़रीब लोगों के हालात सुधारने पर कम। कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने **'रोकेट और रोटी'** शीर्षक कविता के अन्तर्गत यही ध्यानाकर्षित करना चाहा है कि यांत्रिक प्रगति एवं उन्नति से अधिक आवश्यकता निर्धनता एवं भूखमरी को मिटाने की होनी चाहिए। गगन, नक्षत्रों की खोज से अधिक महत्त्व इस बात का है कि देश से ग़रीबी को कैसे दूर किया जाये ? कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने लिखा है-

"जा रहा है तू कहाँ फिर खोजता,
नये मानव-मानवी की हाट बस्ती,
देख तो तेरे मिटाने के लिये क्या,
इस धरा के मानवों की भूख कुछ मोटी नहीं है।
चाँद पर रोकेट, धरा पर रोटी नहीं है।
तू चला गिनने गगन के तारकों को,
पर, धरा के आँसुओं को भी गिना है?
विज्ञान के इस देवता के ओ पुजारी!
कह मनुज की मूर्ति भू लोटी नहीं है?
चाँद पर रोकेट, धरा पर रोटी नहीं है।
आज दूरी काल छोटे हो गये हैं,
बढ़ न पाया किन्तु मानव का हृदय तो,
झुक गये हैं शिखर भू के और नभ के,

किन्तु जीवन की उठी चोटी नहीं है।

चाँद पर रोकेट, धरा पर रोटी नहीं है।"[47]

निर्धनता वर्तमान भारत की प्रमुख समस्या है। आज आम भारतीय गरीबी की समस्या से त्रस्त बदहाली और परेशान भरी ज़िन्दगी जी रहा है। निर्धनता की समस्या से पीड़ित लोगों की रोज़मर्रा की ज़िन्दगी तो तंगहाल है ही, उदरपूर्ति का अभाव भी उनके जीवन में दिखाई देता है। निर्धनता की समस्या के कारण ही विकासशील स्वर्णिम भारत का भविष्य अंधकारमय नज़र आता है। निर्धनता के विविध कारणों में से प्रतिकूल भौतिक वातावरण एक प्रमुख कारण है। भारत प्रमुखतया कृषि प्रधान देश है। कभी अतिवृष्टि तो कभी अनावृष्टि से देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचता रहा है। बार–बार उत्पन्न होती इन समस्याओं ने भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता को उत्पन्न किया है। ग्रामीण कृषकों की आर्थिक दुर्दशा का प्रमुख आधार अकाल और बाढ़ की समस्या है। डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' की '**अकाल**' शीर्षक कविता के अन्तर्गत अकाल से उत्पन्न भीषण एवं विषादपूर्ण स्थितियों का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देता है। यथा–

"बिखेरती
विस्तीर्ण सूखे मरुस्थल में
दम तोड़ते ढोरों की
पार्थिव देहें;
जिन्हें नोच–नोच खाने को
कहीं आ बैठे हैं गिद्ध
कहीं कौवे, श्वान, सियार।
दे रहे हैं कंकाल
दुर्गन्ध अपार
फैली है जुगुप्सा विकराल।
किसने पढ़े हैं
भाग्य–भित्ति पर लिखे
विधना के अदृश्य लेख?

झांकती है केवल दृष्टि

सूने गगन की ओर, निर्निमेष

गाबगा खञ्जरी पर मल्हार

मांगती है बार–बार

सावन की बांसुरी से

रिमझिमी फुहार

थोड़ी–सी हरयायी बहार।"[48]

भूख की समस्या को दूर करने के लिए सरकार द्वारा बड़ी–बड़ी योजनाओं का नियोजन किया गया परन्तु उपभोग के स्तर पर इन योजनाओं एवं हरित क्रांति जैसे प्रयासों में खोखलापन ही अधिक रहा है। डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' ने '**हरित क्रान्ति**' शीर्षक कविता में योजनाओं से जुड़ी सत्यता को बखूबी उद्‌घाटित किया है। कवि ने लिखा है–

"योजनाओं के पृष्ठों पर उगी

हरित क्रान्ति की लहलहाती फसलों को

चुपचाप लुटेरे आंकड़ों ने काट

बेच दिया है

जौहरी पत्रकारों के हाथ।

भूख

वृक्षों पर गिद्धों–सी बैठी

खुली आँखों देख रही है

यह वीभत्स रंगारंग नाटक।

चालान करना ही होगा

इन लुटेरों का नहीं

इन पुलिस वालों का

जिनकी नाक के ठीक नीचे

घट रही है यह संगठित घटना।"[49]

कवि दयाकृष्ण 'विजय' ने उक्त कविता में यह स्पष्ट करना चाहा है कि योजनाओं की बेईमानीपूर्ण क्रियान्विति के कारण इनके लाभ से उच्च वर्ग ही समुन्नत हुआ है। आम भारतीय आज भी गरीबी, बदहाली और परेशान भरी ज़िन्दगी व्यतीत कर रहा है।

निर्धनता के समान **आर्थिक विषमता** भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी विकट समस्या है। आज देश जागीरदारी और जमींदारी की सामंती संस्थाओं से मुक्त अवश्य हो गया है लेकिन अब ऐसा प्रतीत होता है कि पूँजीवादी व्यवस्था ने उस जागीरदारी व्यवस्था का स्थान ले लिया है। "स्वतंत्रता-पूर्व अंग्रेज शोषक बने और भारत की जनता शोषित बनी किन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् देश के ही मुट्ठीभर शक्तिशाली, सम्पन्न लोग शोषक बन गए और देश की अपार जनता शोषित।"[50] स्वातंत्र्योत्तर भारत में आर्थिक विषमता एवं असंतुलन से इन दो वर्गों, पूँजीपति वर्ग और श्रमिक वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ। आर्थिक आय की अत्यधिक असमानता के कारण ही आज अमीर व गरीब के बीच की खाई और भी गहरी होती जा रही है। एक तरफ आर्थिक दृष्टि से साधन सम्पन्न, पूंजीपति वर्ग सभी सुविधाओं का उपभोग करते हुए शासन व्यवस्था में दबदबा एवं प्रभुत्व बनाये हुए हैं तो दूसरी तरफ अभावों में जीवन बीताता हुआ गरीब वर्ग विविध समस्याओं एवं परेशानियों के शिकंजे में कसा हुआ है। मौजुदा लोकतांत्रिक व्यवस्था को देखकर तो समाजवाद का नारा थोथा प्रतीत होता है। कवि शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश' ने अमीर एवं गरीब की जीवन शैली के अन्तर को बखूबी जाना-पहचाना और समझा है। उनकी कविता **'नग्नता और वस्त्र'** में इन दोनों वर्गों के मध्य की असमानता स्पष्ट परिलक्षित होती है। कविता के अन्तर्गत कवि 'राकेश' ने अर्थाभाव के कारण जीवन जीने की अनिवार्य सुविधाओं की उपलब्धि के अभाव में जीवन बिताने वाले लोगों के प्रति संवेदना प्रकट की है। कवि 'राकेश' ने लिखा है-

"खूँटियों पर वस्त्र लटकते हैं-
और इन्सान नंगा सोता है।
इतिहास का सोना अँधेरे में डूब गया है-

और मैं भूगोल के लिए लड़ता हूं।
ऊँची मीनारों से झरता है दूध–
और बदबूदार कीड़ों के झुण्ड उमड़ते हैं।
चाँदनी गुलदस्ते सजाती है–
और अंधियारा काला मुँह करता है।
अमृत टपकता है
और प्यास विधवा है।
खूँटियों पर वस्त्र लटके रहते है–
और इन्सान नंगा पड़ा रहता है।"[51]

यह सच भी है कि समाज में व्यक्ति का सम्मान व्यक्ति की आर्थिक स्थिति के आधार पर होने लगा है। समाज में धनवान व्यक्तियों को उच्च सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और निर्धन व्यक्ति को निम्न कोटि का माना जाता है। समाज में हो रहे इस आर्थिक वर्ग विभाजन से कवि द्वारका लाल 'गुप्त' का मन त्रस्त है। आर्थिक विषमता की विसंगतियों से प्रताड़ित लोगों की शोचनीय स्थिति के प्रति दुःख प्रकट करते हुए कवि द्वारका लाल 'गुप्त' निम्न वर्ग को अस्तित्व रक्षा हेतु खड़े होने का साहस अपनाने का संदेश देते हैं। कवि 'गुप्त' का आक्रोशित मन आम आदमी को अपनी शोषित एवं अपमानित स्थिति के प्रति विद्रोह करने हेतु प्रेरित करते हैं। कवि द्वारका लाल 'गुप्त' की **'सड़क का आदमी'** शीर्षक कविता में उनका विद्रोही रुख स्पष्ट दिखाई देता है। यथा–

"लेकिन, कब तक चलता रहेगा
यह दौर
कालू को बदलना होगा
अपने तेवर
स्वयं लड़ना होगा
अपनी लड़ाई

भ्रष्टाचार, मंहगाई, भूख, गरीबी के विरुद्ध

स्वयं तोड़ना होगा

नेता, अफसर और अपराधियों का

गठबंधन

इसी सड़क पर

बजाना होगा

विद्रोह का बिगुल

उसकी मदद के लिए

नहीं आएगा

आसमान से कोई फरिश्ता

यह जोखिम

किसी को तो

उठाना ही पड़ेगा।"[52]

कवि द्वारका लाल 'गुप्त' का सामाजिक आर्थिक विषमता के प्रति विद्रोही एवं विचलित होना स्वाभाविक है क्योंकि भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही अमीर द्वारा गरीब के शोषण की परम्परा को समाज कल्याण एवं देशहित हेतु खत्म करना परम आवश्यक है। कवि बजरंग लाल 'विकल' भी ओजस्वी लेखन द्वारा शोषण की इस परम्परा के विरुद्ध अपना आक्रोश प्रकट करते हैं। उनके हृदय में उफनती राष्ट्रीयता के कारण आर्थिक कारणों से उत्पन्न सामाजिक विसंगतियों के प्रति उनके तीखे स्वर प्रकट हुए हैं कवि 'विकल' को यह विश्वास भी है कि लगातार विद्रोह एवं आक्रोश से एक दिन पूँजीवादी व्यवस्था को खत्म किया जा सकेगा। कवि बजरंग लाल 'विकल' ने अपनी कविता '**होटल का लड़का**' में लिखा है-

"फिर न शोषण जुल्म होगा, फिर न यूँ निर्बल मरेगें।

दूध की उजली पर फिर न यूँ बादल घिरेगें।।

आयेगा वह दिन, मुझे विश्वास है मेरी कलम पर।

आदमी मुँहताज जब होगा न पूँजी के रहम पर।।"[53]

स्वातंत्र्योत्तर भारत के आर्थिक परिवेश की एक ओर विडम्बना **बेरोजगारी व बेकारी की समस्या** है। बेरोजगारी व बेकारी ने देश के युवा वर्ग के राष्ट्र के प्रति आस्था भाव को तो कमजोर किया ही है साथ ही समाज में अपराध प्रवृत्ति को भी बढ़ावा दिया है। "बेकारी के कारण व्यक्ति निष्क्रिय बना रहता है और उसे भर पेट भोजन भी नहीं मिल पाता। उसकी आय का कोई साधन नहीं रहता। इस स्थिति का स्वाभाविक परिणाम यह होता है कि बेकार व्यक्ति अपराध को अपनी आय का साधन बनाता है और अपराध की ओर प्रेरित होता है। अपर्याप्त आय भी अपराधों की संख्या बढ़ाती है। अधिकांश कृषक काम के अभाव में प्रायः शहरों की ओर जाते हैं और जब इन अपरिचित व्यक्तियों को शहरों में सुलभता से कार्य नहीं मिलता तो भूख और निराशा की स्थिति में वे अपराध की ओर प्रवृत्त होते हैं।"[54] ग्रामीण युवाओं को ही नहीं अपितु शिक्षित एवं शहरी युवाओं को भी बेरोजगारी एवं बेकारी में जीवन यापन करने को विवश होना पड़ रहा है। इन बेरोजगार युवाओं को गरीबी से नीचे वाली रेखा पर जीवन निर्वाह करना पड़ रहा है। कवि बजरंग लाल 'विकल' ने ऐसे शिक्षित बेरोजगारों के प्रति अपनी संवेदनशीलता अभिव्यक्त की है। उन्होंने **'शिक्षित बेकारों के नाम'** शीर्षक कविता में कहा है कि देश के भविष्य निर्माण में जिस युवा वर्ग की महत्ता को निर्विवाद रूप से स्वीकारा जा रहा है वह युवा काम–धन्धों की तलाश में भूखा, निराश व हताश सड़कों पर भटकता रहता है। कवि "विकल" ने बेरोजगार व बेकार युवाओं की खीझ, नैराश्य और विवशता इत्यादि भावनाओं को कविता में अंकित किया है। कवि ने लिखा है–

"पढ़ते पढ़ते आँखों की नींद हराम हुई,
हो गई अँगुलियाँ कुन्द घिसते घिसते।
मिल सका न कोई काम, हक नहीं जीने का,
कागज की रद्दी से भी है मानव सस्ते।।

तुम हो ऐसी सीढ़ियाँ की जिन पर चढ़ भविष्य
सीधा विकास की मंजिल पर ही जाता है।

युवकों के ही दृढ़ कन्धों पर होकर सवार,
कल्पना स्वर्ग साकार धरा पर आता है।।

तुम भूखे नंगे फिरो घूमते सड़कों पर,
शक्ति आशा, आँखों में धुआँ अँधेरे का।
अपना अस्तित्व बचाने की चिन्ता में घुल,
तुम पता पूछते फिरते नये सवेरे का।।

जो जीवन यापन का न सफल आधार बने,
वह सारा का सारा निर्माण निरर्थक है।
चाहे जितना हो उच्च मर्म पर कर्म बिना,
वह ज्ञान ध्यान सारा अज्ञान समर्थक है।।"[55]

वर्तमान भारत के विकास हेतु आवश्यक है कि समाज केन्द्रित अर्थ–व्यवस्था का निर्माण किया जाये। आम आदमी की आर्थिक आवश्यकताओं एवं प्राथमिकताओं की पूर्ति के लिए एक संतुलित व्यवस्था को अपनाया जाना आवश्यक है। इस संतुलित अर्थव्यवस्था के लिए बढ़ती महँगाई को नियंत्रित करना आवश्यक है। **बढ़ती महँगाई** से तंगहाल एवं विवशतापूर्ण जीवन बिताना स्वतंत्र देश के नागरिक के लिए न्यायसंगत भी नहीं है लेकिन आज बढ़ती महँगाई के कारण आम आदमी के हालात बहुत बुरे हैं। "झुग्गियों के बसेरों, निम्न स्तर के मजदूरों तथा समाज के छोटे व मझोले लोगों में इस महँगाई के कारण विवशता का करुण आर्तनाद देखने को मिल रहा है। पता नहीं भूख से इस उमड़ते तूफान में कितने ही बच्चों, बेबस गृहणियों, जीर्णता के पाश में फंसे बूढ़ों की जानें रोटी के एक–एक टुकड़े के लिए तरसती उड़ रही हों। विश्व की अपेक्षा भारत में यह स्थिति दयनीय है।"[56] देश के लोगों के इन हालातों को देखकर क्या यह कहा जा सकता है कि देश का विकास हो रहा है। कवि बजरंग लाल 'विकल' ने भी कहा है कि देश यह कैसा विकास है जहाँ पैदावार तो बढ़ाने पर जोर दिया जाता है लेकिन लोगों के लिए अनाज महँगा कर दिया जाता है, शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शिक्षण संस्थान खोले जाते है परन्तु

शिक्षा को महँगा कर दिया जाता है, अस्पताल एवं स्वास्थ केन्द्र की स्थापनाओं की चर्चाओं पर जोर दिया जाता है परन्तु दवाइयों की कीमत को आम आदमी की पहुँच से दूर ही रखा जाता है। कवि 'विकल' के ये मनोभाव उनकी कविता **"विकास"** में प्रतिबिम्बित हैं। यथा–

"उन्होंने पैदावार बढ़ाई,
और, अनाज महँगा कर दिया।
उन्होंने नहरें बनाई,
कूप खनाये। मगर पानी की,
कीमत चौगुनी हो गई।
उन्होंने स्कूल खोले,
मगर शिक्षा को,
आकाश कुसुम बना दिया।
डिग्रियाँ बांटी, व्यवसाय खोले।
उद्योग लगाये, और,
बेरोजगारों की,
लम्बी फौज खड़ी कर दी।
अस्पताल बनायें
स्वास्थ्य केन्द्र खोले,
और दवाओं के दाम,
आसमान छूने लगे।"[57]

देश में महँगाई से पीड़ित आम आदमी की इन मजबूरियों एवं दुख–दर्द को पहचानने और उसे काव्य में आत्मीय रूप देने का कार्य कवि अम्बिकादत्त ने भी किया है। उनकी **'माया बाजार'** शीर्षक कविता में बढ़ती महँगाई से त्रस्त आम आदमी की ज़िन्दगी की परेशानियों की छवि को देखा जा सकता है। कवि अम्बिका दत्त ने लिखा है–

"बाज़ार में एक जादूगर है, जो कमाल करता है एक हाथ का पैसा दूसरे हाथ में जाने का जादू दिखाता है/पता नहीं चलता
कैसे पैसा गायब हो जाता है/और अंततः वह किसी और की जेब में नज़र आता है माया बाजार में, मेरे लिए तो सिर्फ, छाता सस्ता हुआ है अकाल के दिनों में।"[58]

कवि अम्बिकादत्त की इस कविता में महँगाई के कारण विवश एवं मजबूर जीवन बिताने वाले लोगों की मनोस्थिति को भली–भाँति पहचाना जा सकता है।

साराशंतः यह कहा जा सकता है कि हाड़ौती अंचल के इन कवियों के काव्य में निहित आर्थिक चिन्तन से ऐसा मालूम होता है कि भले ही स्वातंत्र्योत्तर काल में देश की आर्थिक प्रगति एवं उन्नति हुई है परन्तु देश की अर्थ व्यवस्था को आज भी ठीक तो नहीं कहा जा सकता। अब भी आर्थिक उन्नति का लाभ ग़रीब एवं पिछड़े वर्ग तक नहीं पहुँच पा रहा है। वैश्वीकरण के इस युग में देश के आम जन के जीवन स्तर में कोई खास वृद्धि नहीं हुई है। हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने देश की आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं ग़रीबी, आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, महँगाई इत्यादि पर चिन्तन–मनन एवं विश्लेषण करते हुए राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुकूल जो काव्य सृजन किया है वह देश की अर्थनीति की सही पहचान आम जन को कराता है। इन कवियों का यह प्रयास देश को आगे बढ़ाने सम्बन्धी मसलों पर सही आर्थिक दिशा प्रदान कर रहा है। देश की आर्थिक व्यवस्था के बिगड़ते हालातों पर इन कवियों की भावाभिव्यक्ति से राष्ट्रीय समन्वय उत्पन्न होता है जिससे भविष्य की सही रीति–नीति निर्धारित हो सकती है।

4:4 राष्ट्रीय एकता और मानवतावाद

देश के स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था के बिगड़ते हालातों ने भले ही राष्ट्र की छवि को खराब किया है लेकिन भारतीय जन के अन्तर्मन में राष्ट्रीयता के पावन एवं निर्मल भाव अब भी विद्यमान है। यही कारण है कि अनेक विसंगतियों, विडम्बनाओं एवं समस्याओं से घिरे होने के बावजूद भी देश की एकता व अखण्डता आज भी सुरक्षित है। आज भी राष्ट्रीय संकट की स्थिति उत्पन्न होने पर भारतीय जन मज़हब व जाति से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की भावना को अभिव्यक्त करता है। "राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की भावना राष्ट्रीय चेतना का महान बल और अनिवार्य शर्त है। इसी भावना के आधार पर स्वतंत्रता पूर्व गुलामी की संवेदना जागृत कर स्वतंत्रता की अभिलाषा की पूर्ति की गई। इस संदर्भ में कहा जा सकता है कि राष्ट्र के निर्माण और उसके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए युग और परिस्थितियों के अनुरूप राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की भावना निर्माण करना अनिवार्य होता है।"[59] देश के प्रति अनुराग की भावना से ही राष्ट्रीय एकता का निर्माण होता है। राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना राष्ट्रवासियों के हित के लिए कार्य करने हेतु प्रेरित करती है। आज राष्ट्रीय उत्थान हेतु जन-मन में संकुचित एवं संकीर्ण भावनाओं को त्यागकर राष्ट्रीय एकता जैसी संकल्पनाओं को भरना जरुरी है। आज साम्प्रदायिकता व जातिवाद जैसे संकीर्ण विचारधाराओं के आधार पर अनेक विघटनकारी ताकतों द्वारा राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को कमजोर करने का प्रयास किया जा रहा है। अनुकूल अवसर पाकर इन ताकतों के द्वारा राष्ट्रीय एकता को हानि पहुँचायी जाती है। इतिहास में झेली जा चुकी विभाजन की त्रासदी को दोहराया न जा सके इसके लिए जरुरी है कि देश के कण-कण के प्रति अनुराग भाव को अपनाया जाये। हिन्दी के अनेक साहित्यकारों ने देश की एकता व अखण्डता के संरक्षण हेतु राष्ट्रीय भावों से सम्बद्ध रचनाओं का सृजन किया है। हाड़ौती के हिन्दी कवियों ने भी राष्ट्र की विसंगतियों एवं समस्याओं के चित्रण द्वारा राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने का प्रयास तो किया ही साथ ही देश में विद्यमान राष्ट्रीय एकता जैसे उदात्त भावों को भी प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया है।

हाड़ौती अंचल के कवि डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने कहा है कि हमारे देश में ध
ार्म व जाति का भेद भले ही नज़र आता है लेकिन राष्ट्रीय हित व कल्याण के लिए सर्वस्व त्याग करने का भाव भारतीयों में दिखाई देता है। **'कौमी एकता-1'** शीर्षक कविता में सभी देशवासियों से राष्ट्रीय एकता का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा-

"धर्म जाति का भेद भले हो, रंग एक है रक्त का,
रहे एकता बल जन-जन में, यही तकाजा वक्त का।
इसी एकता-हित गाँधी ने, इन्दिरा ने बलिदान दिया,
इसी एकता-हित 'गणेश' ने बन शंकर विषपान किया।
आओ हम भी इसी एकता हित जीवन उत्सर्ग करें,
भारत के इस महाकाव्य में, सर्व प्रेम का स्वर्ग रचें।"[60]

कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय को विश्वास था कि हम हिन्दुस्तानियों की एकता व अखण्डता को विखण्डित नहीं किया जा सकता क्योंकि देश के मान, सम्मान व एकता के संरक्षण हेतु सभी देशवासियों में त्याग व उत्सर्ग की भावना मौजूद है। **'एक हमारा हिन्दुस्तान'** शीर्षक कविता में अपने विश्वास को प्रकट करते उन्होंने लिखा है-

"एक हैं हम सब हिन्दुस्तानी, एक हमारा हिन्दुस्तान।
नहीं हमारी अखण्डता को
भंग कोई कर सकता
नहीं हमारी आजादी को
छीन कोई भी सकता।
रक्षा सदा करेंगे इसकी, देकर तन मन प्राण।
एक हैं हम सब हिन्दुस्तानी, एक हमारा हिन्दुस्तान।
इसी स्वतंत्रता हित लाखों ने
अपनी जान गँवाई।
लाखों ने घर-बार लुटाए
सुख की नींद भुलाई।

अब भी अर्पित करके सब कुछ, रक्खे उसका मान।

एक हैं हम सब हिन्दुस्तानी, एक हमारा हिन्दुस्तान।"[61]

देश की एकता की विघटनकारी ताकतों को ललकारते हुए कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय कहते हैं कि देशवासियों के मध्य नफरत की आग फैलाने का भरसक प्रयत्न करने के बावजूद भी देश की एकता व अखण्डता को नुकसान नहीं पहुँचाया जा सकता क्योंकि आपसी समन्वय एवं प्रेम देशवासियों में गहराई तक विद्यमान है। कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने **'हम जानते हैं'** शीर्षक कविता में कहा है–

"मत लगाओं आग नफरत की यहाँ पर पागलो!

इस आग को हम प्यार–पानी से बुझाना जानते हैं!

तुम न बांधों स्वर्ण–पाशों से हमारे हाथ को,

ये हथकड़ी और बेड़ियाँ हम तोड़ना भी जानते हैं!"[62]

देश की अखण्डता को खण्डित करने वाले तत्त्वों के प्रति सचेत करते हुए कवि डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' ने भी कहा है कि देश में अलगाव की स्थिति उत्पन्न नहीं होने देने के लिए देशवासियों के मध्य प्रेम एवं समन्वय भावना को अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने **'अलगाव का रावण'** शीर्षक कविता में लिखा है–

"नानक ने फैलाया था प्रेम का हाथ

सभी की ओर

उनकी वाणी ने छिये थे

मानवता के दिव्य छोर

उसे कलंकित मत होने दो

अलगाव की विषैली हवा मत बहने दो

समन्वय की गंगा को

गंगोत्री से गंगा सागर तक बहने दो।"[63]

देश के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में भले ही अनेक भिन्नताएँ नज़र आती है लेकिन फिर भी देशवासियों के मध्य आत्मीय लगाव विद्यमान है जिसने

देश के मूल स्वरूप को बनाये रखा हुआ है। राष्ट्र के प्रति नागरिकों के इस प्रेम व आपसी समन्वय को देखकर ही कवि द्वारका लाल 'गुप्त' का आशावादी मन भारत के उस संगठित भारत के स्वरूप को स्थापित करने का स्वप्न संजोता है जिसमें सभी समस्याओं से रहित भारत मानवीयता के पथ पर आगे बढ़कर विश्वगुरु के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को स्थापित कर सके। कवि द्वारका लाल 'गुप्त' ने '**सूरज की एक किरण**' शीर्षक कविता में अपने मनोभावों को इस प्रकार व्यक्त किया है–

"नये भारत की प्रतिमा
संगठित भारत का स्वरूप
जो उच्च सिंहासन पर बैठ
विश्व को देगा सत्य–अहिंसा का संदेश
प्रदान करेगा आध्यात्मिक उर्जा
और
स्थापित करेगा एक ऐसा साम्राज्य
जिसमें शेर और बकरी
पानी पियेंगे एक ही घाट।"[64]

यह सत्य है कि आज अनेक राष्ट्रघाती तत्त्व देश की एकता व अखण्डता को नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन राष्ट्र के जनमानस में आज भी राष्ट्रीय अस्मिता और उसके मूल्यों का स्वर प्रमुख है। राष्ट्रीय उत्थान की मानवीय शक्ति को देश का नागरिक अच्छी तरह जानता व समझता है। अपनी उदार राष्ट्रीय भावना के कारण राष्ट्र का नागरिक जाति, प्रांत के भेद को राष्ट्रीयता पर हावी नहीं होने दे रहा है। वास्तव में सम्पूर्ण विश्व में यह गौरव भारत को ही प्राप्त है कि विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, भाषा व जाति का समन्वय व एकाकार स्वरूप यहाँ विद्यमान है। कवि बजरंग लाल "विकल" को देश की इस एकता व अखण्डता पर गर्व महसूस होता है।

कवि का मानना है कि देशवासियों की राष्ट्रीय एकता की भावना के द्वारा देश पर आये प्रत्येक संकट व मुसीबतों से निज़ात पाया जा सकता है। उन्होंने **'राष्ट्र एकता के प्रति'** कविता में देश की एकता के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करते हुए लिखा है–

"हम पृथक पृथक भाषा भाषी।
पर, सर्वप्रथम भारतवासी।।
यह हिन्दुस्थान हमारा है।
हमको प्राणों से प्यारा है।।
दुश्मन से कह दो बढ़े नहीं।
सेना लेकर वह चढ़े नहीं।।
हम ऐसी चपत लगायेगें।
सब होश ठिकाने लायेगें।।"[65]

कवि बजरंग लाल "विकल" ने धर्म, भाषा, जाति संबंधी भेदों के होते हुए भी राष्ट्र की परम शक्ति एकता व अखण्डता पर भी चिन्तन किया है। उनका मानना है कि देश में अनेक विसंगतियों एवं समस्याओं के होने के बावजूद भी देशवासियों की व्यापक एवं उदार दृष्टि के कारण सर्वधर्म–समभाव की भावना राष्ट्र में विद्यमान है। भारतीयों के इन्हीं संस्कारों के कारण उनके हृदय की उदारता राष्ट्र प्रेम के अतिरिक्त मानवतावाद से भी जुड़ी हुई है। कवि बजरंग लाल ने मानव प्रेम की अवधारणा को भी काव्यबद्ध किया है। "यह सच है कि सच्ची राष्ट्रीयता में स्व–राष्ट्र के साथ मानवतावादी अनूठी भाव–धारा होती है। दीनदयाल उपाध्याय ने मानवतावादी राष्ट्रीयता के महत्त्व को स्वीकार करते हुए लिखा है, "अपने राष्ट्र के संपूर्ण मानव जाति के लिए भी सोचना चाहिए और राष्ट्र का मानव जाति से मेल होना चाहिए।" राष्ट्रीयता का यही प्रभावी रूप है जिसमें वैश्विक चिंतन और मानवतावाद से जुड़ा सर्वजन हिताय का मधुर परिवेश होता है।"[66] कवि बजरंग लाल "विकल" ने **'राष्ट्र संघ के नाम'** शीर्षक कविता में मानवतावाद से जुड़ी अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा है–

"तुमने जो दीप जलाया है मानवता का,
इसलिए कि जन संस्कृति का रथ गतिमान रहे।
यों मिलता रहे उजाला सूनी राहों को,
सच्चे माने में धरती पर इंसान रहे।।

सभ्यता करे श्रृंगार, कलायें मंडित हों,
जीवन सौ सौ धाराओं में फूलै-फैले।
सावन आये, फागुन गाये फुल बगिया में,
आमें पर नई बहार रोज झूला झूले।।

सर्जना स्वयंवर रचे खेत खलिहानों में,
सुख शांति विराजे नव युग के सिंहासन पर।
पद दलित धूल पहिनें विकास का राज मुकुट,
जम सके न कोई धूल प्यार के दर्पण पर।।

हर छत से ब्याह सगाई गौना करे किरण,
हर आँगन में हो चहल पहल चाँदनियों की।
हर घर में चौक पुरे, चौबारे रांगोली,
पनघट-पनघट बाँसुरी बजे साँवरिया की।।

काले-गोरे सम्पन्न-विपन्न बड़े-छोटे,
ये भेद भाव की दीवारें सब ढह जायें।
कुछ ऐसा ज्वार उठे नव युग की आँधी से,
विद्वेष घृणा पशुता का मलबा बह जायें।।"[67]

कवि बजरंग लाल "विकल" की ही भाँति कवि अम्बिका दत्त ने 'सर्वजन हिताय' की भावना को काव्यबद्ध किया है। वर्तमान मानव जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि भौतिक समृद्धि एवं वैज्ञानिक प्रगति की अंधी दौड़ में संवेदनशीलता व भावना कमज़ोर होती जा रही है। मानव जीवन में संतुलित स्थिति बनाये रखने के लिए मस्तिष्क व आत्मा में संतुलन का होना आवश्यक है। "हमारे वर्तमान

समय में भी वैश्विक मानव समाज उसके अन्तर्गत भारतीय मानव समाज जिस प्रकार के संकट में फंस गया है और अमानवीयकरण की दिशा में दौड़ रहा है वह भयावह है। पूंजीवादी साम्राज्यवाद पतनशीलता की चरम अवस्था में पहुँच गया है, भारत जैसे बहुत से देशों में सामंती मूल्य और संस्कारों की जड़ता ने इसे और गहरा दिया है। मनुष्य प्रजाति और सम्पूर्ण पृथ्वी के ही विनाश की चिन्ता गहराने लगी है। यही वे स्थितियाँ है जिनमें हम आम तौर पर मनुष्य और समाज तथा उसकी विभिन्न सत्ताओं की संवेदनहीनता की शिकायत करते पाए जाते हैं।"[68] कवि अम्बिका दत्त मानव विरोधी इन स्थितियों को दूर करने के लिए विभिन्न राष्ट्रों के मध्य घृणा के स्थान पर प्रेम की स्थापना करना चाहते हैं। उन्होंने **'विश्वयुद्ध'** शीर्षक कविता में अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए लिखा है–

"यह आवश्यक तो नहीं
कि सभी युद्धों का आधार
सिर्फ घृणा हो
क्या प्रेम की महती आकांक्षाओं के लिए
निर्णायक युद्ध नहीं लड़े जा सकते?
पूर्णता से परिपूरित
ओ गंधाश्वरोहियों
आओ!
प्रेम की उदात्त भावनाओं से प्रेरित
एक घमासान
विश्वयुद्ध रचें
"अप्रेम" के खिलाफ।"[69]

कवि अम्बिका दत्त अपने समकाल संकटों को पहचानते हैं, इसलिए वे चाहते हैं कि विभिन्न देश प्रेम द्वारा परस्पर जुड़े रहें। अपने कवि होने की जिम्मेदारी को निभाते हुए उन्होंने मानवतावादी स्वर को कविता में अभिव्यक्त किया है।

हाड़ौती के इन कवियों द्वारा राष्ट्र की ख़ामियों को उजागर करने के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता से संबंधित विविध पहलुओं को देखने और समझने का प्रयास किया

है। इतना ही नहीं इन कवियों ने देशवासियों के मन में मानवतावादी भाव भरने के लिए भी अपने प्रभावी उद्‌बोधन काव्य में प्रस्तुत किये हैं। कुल मिलाकर कहा जाये तो इन कवियों ने काव्य में राष्ट्रीय चेतना व वसुधैवकुटुम्बकम् की भावना का मिश्रण दिखाई देता है। "इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत की उन्नति के लिए कवि सभी जातियों, सम्प्रदायों, पंथों, धर्मों, भाषाओं और प्रांतों में सच्चा मेल चाहते हैं। इसी कारण एक ओर, वे एकता का प्रचार करते हैं, तो दूसरी ओर फूट-बैर, मत्सर, द्वेष और कलह का निषेध करते हैं। भारतीय एकता को खंडित करने वाली सबसे बड़ी समस्या है हिन्दु-मुस्लिम बैर। धर्म के नाम पर हिन्दु-मुस्लिम का जितना लहू बहाया गया है, शायद ही इतना अन्य संघर्षों में बहाया गया हो। यह देखकर कवियों को असीम दुःख हुआ और उन्होंने विशेष रूप से आग्रहपूर्वक हिन्दु-मुस्लिम को राम-रहीम तथा "भारतमाता" की दो आँखें कह कर एकता का प्रचार किया। इस एकता में बाधा पहुँचाने वाले का भी उन्होंने यथार्थ-चित्रण कर एकता की आवश्यकता का प्रबलता से प्रतिपादन किया है।"[70] हाड़ौती अंचल के कवियों द्वारा राष्ट्रीय भावना के विकास हेतु किया गया रचना कर्म सराहनीय एवं गौरव करने योग्य हैं।

♦ ♦ ♦ ♦

संदर्भ-सूची

1. समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी – डॉ. ब्रजमोहन शर्मा– पृ.सं.–14
2. वही, पृ.सं.–15
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास–सं. डॉ. नगेन्द्र–पृ.सं.–655
4. हाड़ौती वाणी–प्रकाशक : श्री भारतेन्दु समिति, कोटा–अंक 3 जून 69–पृ.सं.–10
5. देश का दर्द–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–09
6. श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–पृ.सं.–24–25
7. इतने वर्ष–डॉ. शान्ति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–21–22
8. लालकिला बनाम लोकतंत्र–द्वारका लाल गुप्त–पृ.सं.–66
9. हाड़ौती वाणी–प्रकाशक : श्री भारतेन्दु समिति, कोटा–अंक : जून 69–पृ.सं.–10
10. शंखनाद–बजरंगलाल 'विकल'–पृ.सं.–107
11. लोग जहाँ खड़े हैं–अम्बिका दत्त–पृ.सं.–84
12. समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी – डॉ. ब्रजमोहन शर्मा– पृ.सं.–14
13. युग–वीणा – डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–68
14. समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी – डॉ. ब्रजमोहन शर्मा–पृ.सं.–68
15. युग–वीणा – डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–26–27
16. साठोत्तर हिन्दी काव्य में राजनीतिक चेतना : डॉ. एस. गंभीर–पृ.सं.–71
17. देश का दर्द – डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–21
18. श्वेत शिखरों का धूप बिम्ब – डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–पृ.सं.–24
19. लालकिला बनाम लोकतंत्र – द्वारका लाल 'गुप्त'– पृ.सं.–92
20. कही–अनकही – द्वारका लाल 'गुप्त'– पृ.सं.–78
21. साठोत्तर हिन्दी काव्य में राजनीतिक चेतना – डॉ. एस. गंभीर– पृ.सं.–223–224
22. शंखनाद – बजरंग लाल 'विकल'– पृ.सं.–114
23. पर्यस्विनी – बजरंग लाल 'विकल'– पृ.सं.–9
24. समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी – डॉ. ब्रजमोहन शर्मा–पृ.सं.–69
25. शंखनाद – बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–112
26. वही, पृ.सं.–83–84

27. समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी – डॉ. ब्रजमोहन शर्मा–पृ.सं.–13
28. वही, पृ.सं.–49
29. देश का दर्द – डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–52
30. समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी – डॉ. ब्रजमोहन शर्मा–पृ.सं.–51
31. अभिनन्दन ग्रंथ : सारस्वत अनुष्ठान के मृत्युंजय मंत्र, दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–प्रबन्ध सम्पादक : डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–142
32. भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं समस्याएँ – डॉ. एम.एम. लवानिया–पृ.सं.–157
33. भारतीय समाज में सामाजिक समस्याएँ एवं सामाजिक परिवर्तन –डॉ. एम. एम.एम. लवानिया–पृ.सं.–157
34. इतने वर्ष – डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'– पृ.सं.–73
35. लालकिला बनाम लोकतंत्र – द्वारका लाल 'गुप्त'– पृ.सं.–55
36. महिला सशक्तिकरण – मानचन्द खंडेला– पृ.सं.–6–7
37. लालकिला बनाम लोकतंत्र – द्वारका लाल 'गुप्त'– पृ.सं.–63
38. कही–अनकही – द्वारकालाल 'गुप्त'– पृ.सं.–48
39. समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी – डॉ. ब्रजमोहन शर्मा–पृ.सं.–13
40. शंखनाद – बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–34
41. युग–वीणा – डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–33
42. शंखनाद – बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–52
43. अम्बिकादत्त – संपादक : विनोद पदरज–पृ.सं.–14–15
44. लोग जहाँ खड़े हैं – अम्बिकादत्त–पृ.सं.–13
45. भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं समस्याएँ – डॉ. एम.एम. लवानिया–पृ.सं.–159
46. वही–पृ.सं.–159–160
47. युग–वीणा – डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय– पृ.सं.–43
48. श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब – डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–पृ.सं.–64
49. वही, पृ.सं.–51

50. आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा : राष्ट्रीयता और मानवतावाद–सम्पादक : प्रो. नरेश मिश्र–पृ.सं.–148
51. समय की धार – शांति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–53
52. लालकिला बनाम लोकतंत्र – द्वारका लाल 'गुप्त'–पृ.सं.–67
53. शंखनाद – बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–61
54. भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं समस्याएँ – डॉ. एम.एम. लवानिया–पृ.सं.–75
55. शंखनाद–बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–36
56. हमारी समस्याएँ–हरिनन्द शास्त्री–पृ.सं.–55
57. पयस्विनी – बजरंग लाल 'विकल'– पृ.सं.–70
58. आवों में बारहों मास – अम्बिका दत्त–पृ.सं.–56
59. आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा : राष्ट्रीयता और मानवतावाद–सम्पादक : प्रो. नरेश मिश्र–पृ.सं.–219
60. देश क दर्द – डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–10
61. वही, पृ.सं.–14
62. वही, पृ.सं.–32
63. श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब – डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–पृ.सं.–42
64. लालकिला बनाम लोकतंत्र – द्वारका लाल 'गुप्त'–पृ.सं.–26
65. शंखनाद – बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–81
66. आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा : राष्ट्रीयता और मानतावाद–सम्पादक : प्रो. नरेश मिश्र–पृ.सं.–12
67. शंखनाद – बजरंग लाल 'विकल'–पृ.सं.–18
68. अभिव्यक्ति : सामाजिक यथार्थवादी साहित्य की पत्रिका–सम्पादक : महेन्द्र नेह–पृ.सं.–39
69. लोग जहाँ खड़े हैं – अम्बिका दत्त–पृ.सं.–84
70. पूर्व स्वतंत्रता कविता में राष्ट्रीय एकता – डॉ. कृष्ण भावुक–पृ.सं.–196

पंचम अध्याय

हाड़ौती अंचल के राष्ट्रीय
स्वरूप के हिन्दी काव्य का शिल्प–विधान

पंचम अध्याय

हाड़ौती अंचल के राष्ट्रीय स्वरूप के हिन्दी काव्य का शिल्प-विधान

शिल्प रचना प्रक्रिया का अनिवार्य पक्ष है। प्रत्येक रचनाकार को अपने अनुभव एवं संवेदन को अभिव्यक्त करने के लिए शिल्प का चयन करना पड़ता है। रचनाकार की अनुभूति एवं अमूर्त भावों की बाह्य अभिव्यक्ति शिल्प के माध्यम से ही संभव है। शिल्प वह माध्यम है जो रचनाकार की अनुभूति को रचनात्मक आधार प्रदान कर कृति की ओर मोड़ देता है। किसी भी रचनात्मक कृति में भाव पक्ष एवं शिल्प पक्ष का समान महत्त्व होता है, एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व प्रायः संभव नहीं है। भाव पक्ष व शिल्प पक्ष का सन्तुलित एवं समन्वित स्वरूप ही रचनाकार तथा रचना के लिए सफलता की कसौटी होती है। वर्ण्य-विषय एवं कथ्य सामग्री को सम्प्रेषणीय बनाने के लिए शिल्प पक्ष का योगदान महत्त्वपूर्ण रहता है।

काव्य-कृति के सृजन हेतु भी शब्द और अर्थ का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध अनिवार्य होता है। हृदय के भिन्न-भिन्न भावों तथा विचारों को शब्दों द्वारा प्रकट करने की कवि की कला उसकी कुशलता को दर्शाती है। "प्रत्येक शब्द में अपना वजन होता है और वाक्य या भाषा में उसकी अपनी जगह होती है, जिसकी चौकीदारी वह बड़ी जागरुकता से करता है। यदि कवि उसे गलत जगह पर बैठाता है तो शब्द की अपनी जिम्मेदारी समाप्त हो जाती है। शब्द-पारखी कवि इस दायित्व को बड़ी सतर्कता से निभाता है और वह प्रत्येक शब्द की सही नाप-तोल करके ही उसका स्थान देता है, किन्तु इससे काव्य की सहजता बाधित नहीं होती शब्दों की परताल में सूक्ष्मतम प्रयत्न होता है।"[1] प्रत्येक रचनाकार अपने भावों एवं विचारों के अनुरुप शब्दों का चयन करता है ताकि वह अपनी अनुभूतियों को सफल अभिव्यक्तिदे सके। रचनाकार में इस सक्षमता एवं समर्थता का होना आवश्यक भी है। शब्द रूप अथवा भाषा के अतिरिक्त, अलंकार, छन्द, सूक्ति प्रयोग, बिम्ब व

प्रतीक–विधान भी काव्य के शिल्प पक्ष के महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं। कविता के इन अभिव्यंजना तत्त्वों के द्वारा कवि एक प्रभाव पैदा करना चाहता है। काव्य में अलंकारों के प्रयोग द्वारा कवि जहाँ अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति को प्रभावात्मक बनाता है, काव्य के भाषिक–सौन्दर्य के चरमोत्कर्ष में वृद्धि करता है, वहीं प्रतीकों का प्रयोग कवि की अनुभूति को सबल एवं व्यंजनात्मक बनाते हैं। इसी तरह बिम्ब भाषा का तात्त्विक गुण होते हैं। "बिम्ब मूलतः कवि के मानस–चित्र हैं जो कवि–कौशल से सहृदय की मनोभूमि पर उतरकर उसे आनंदित करते हैं। अतएव काव्यगत आनन्द के प्रदान का साधन भी बिम्ब हैं और आदान का साधन भी बिम्ब ही हैं। सामान्य सार्थक एवं सफल भाषा भी बिम्बहीन नहीं हो सकती।"[2] शिल्प के इन उपकरणों के समुचित समायोजन के उपयोग द्वारा कवि अमूर्त भावों को मूर्तवान और साकार बनाता है। काव्य कृति में प्रयुक्त सानुपातिक प्रतीक, प्रभावात्मक बिम्ब, उपयुक्त शब्द चुनाव, भावानुकूल छंद एवं सहज आलंकारिक प्रयोग से कृति का शिल्प–पक्ष सशक्त बनता है।

समयानुसार कविता के प्रयोजन में ज्यों–ज्यों परिवर्तन आया है उसी के अनुरूप कविता का शिल्प–विधान भी परिवर्तित होता रहा है। नये कवियों ने नये ढंग से, नवीन शब्द व नवीन उपमान एवं प्रतीकों के द्वारा अपनी अनुभूतियों को कलात्मक स्वरूप दिया। "नए कवियों की भाषिक सजगता एवं संरचनात्मक क्षमता अद्‌भुत है। शब्दचयन में अनिषेध प्रवृत्ति ने काव्यवस्तु को यथार्थदर्शी बनाया है। शब्दों के अर्थानुपंगों के फलस्वरूप उनकी अर्थवत्ता को बल मिला है। भाषिक सौंदर्य में जनभाषा की टोन, लय द्वारा संवृद्धि हुई है। इन कवियों में अनेक भाषागत भंगिमाएँ रूप पकड़ रही हैं। एकालाप, संवाद, शब्दों का उदारतापूर्ण सहसंयोजन आदि का विधान इनमें प्रमुखता पाता जा रहा है।"[3] आज कविता में सपाटबयानी को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। तुकान्त एवं छन्दोबद्ध रचनाओं की जगह अतुकान्त एवं छन्द मुक्त रचनाओं का सृजन किया जा रहा हैं काव्य के शिल्प विधान में हो रहे सृजनात्मक प्रयोगों से नये कवियों की विचार क्षमता का परिचय तो मिलता ही है साथ ही समकालीन संस्कृति व कवि व्यक्तित्व भी अच्छी तरह प्रकाशित होता है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि काव्य का शिल्प–विधान अनेक अभिव्यंजना तत्त्वों से निर्मित होता है। काव्य में शिल्प तत्त्वों का उचित समायोजन ही रचनाकार एवं रचना की सफलता व कुशलता का परिचायक होता है। कृति की सफलता एवं प्रभावात्मकता के लिए रचनाकार को विषय व भाव के साथ अभिव्यंजना पक्ष के प्रति भी सतर्क एवं जागरुक रहना पड़ता है। काव्य कृति के शिल्प पक्ष का विश्लेषण कवि के व्यक्ति एवं कृति के कलात्मक सौष्ठव का मूल्यांकन होता है। हाड़ौती अंचल के प्रतिनिधि हिन्दी कवियों की राष्ट्रीय भावनाओं से सम्बद्ध रचनाओं के शिल्प का विश्लेषण इन्हीं अभिव्यंजना तत्त्वों के आधार किया जा सकता है। इन कवियों की काव्य–कृतियों के अभिव्यंजना तत्त्वों के आधार किया जा सकता है। इन कवियों की काव्य–कृत्तियों के अभिव्यंजना पक्ष का तात्विक अध्ययन का प्रयास उक्त अध्याय में किया गया है।

5 : 1 भाषा

रचनाकार के भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा है। भाषा की कलात्मक अभिव्यक्ति से ही रचना के शिल्प का निर्माण होता है। भाषा का रूप जितना प्रभावी होता है भावों का सम्प्रेषण उतना ही सक्षम होता है। भावों के अनुरूप भाषा का प्रयोग कृति को प्रभावशाली बनाता है। काव्यभाषा का अर्थ काव्य में प्रयुक्त सृजनात्मक शब्दों के सामूहिक स्वरूप से है। काव्य कृति में संवेदना के अनुसार शब्द चेतना का विकास कवि के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। "कविता में शब्दों का प्रयोग अत्यन्त संतुलित होना चाहिए अन्यथा कविता के प्रभाव में अन्तर आ जाता है। व्यर्थ शब्दों के प्रयोग से कविता का प्रभाव कम हो जाता है। पुरानी कविता व गीतों में प्रभाव, कविता के गठन लय, छन्द आदि पर आधारित होता था और इन सबके लिए कुछ शब्द, जिनका अर्थ की दृष्टि से अपेक्षाकृत कम महत्त्व होता था, कभी–कभी जोड़ना आवश्यक होता था परन्तु जब कविता ने लय व छन्द का बाना तोड़ दिया तो उनमें शब्द की सार्थकता का महत्त्व अपेक्षाकृत बढ़ गया।"[4] हिन्दी काव्यभाषा का आधार रूप कई बार बदलता रहा है। क्षेत्रीय बोलियों व भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से काव्य भाषा का स्वरूप बदल रहा है। नये प्रयोग के कारण शब्द पुराने अर्थ को छोड़कर नया अर्थ ग्रहण कर रहे हैं। भाषा के सहज, सरल किन्तु प्रभावी स्वरूप के प्रयोग को आज अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। भावों की अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न भाषाओं की शब्दावलियों का भी प्रयोग काव्यभाषा में हो रहा है। नये प्रतीकों एवं बिम्बों के प्रयोग से काव्य भाषा का रूप गढ़ा जा रहा है। नयी चेतना की अभिव्यक्ति हेतु काव्य भाषा का यह नया स्वरूप नये कवियों का रचनात्मक प्रयोग है। वैसे प्रत्येक कवि की काव्य भाषा का स्वरूप विशिष्ट एवं दूसरों से भिन्न होता है। जिस कवि का शब्द चयन जितना अच्छा होता है उतना ही प्रभावी उसकी रचना का शैल्पिक सौन्दर्य होता है। हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों में भी काव्यभाषा का भिन्न–भिन्न स्वरूप दृष्टिगोचर होता है।

हाड़ौती अंचल के द्विवेदीयुगीन कवि पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की खड़ी बोली हिन्दी की काव्य परम्परा में रचना करने वाले

कवि थे। "यह वह समय था, जब काव्य–भाषा के स्वरूप निर्धारण पर विवाद मचा हुआ था, परन्तु इस अँचल में खड़ी बोली में काव्य का सृजन प्रारम्भ हो चुका था।"[5] काव्य भाषा के रूप में ब्रज एवं खड़ी बोली व विवाद से यह अंचल मुक्त रहा। "काव्यभाषा के संदर्भ में राज्यों की नीति स्पष्ट होने से तथा खड़ी बोली के इसी अंचल से विकसित होने से भाषा आमजन के अधिक नज़दीक रही। उसका मुख्य कारण राजा का हिन्दी खड़ी बोली तथा उर्दू में स्वयं कविता लिखना भी रहा। उत्तर भारत में जब भाषा को लेकर घमासान मचा हुआ था, तब झालावाड़ के राजा भवानी सिंह ने सौरभ पत्रिका में भाषा के सन्दर्भ में जो अपने विचार प्रस्तुत किए थे वे आज भी अनुकरणीय हैं।"[6] इस समय कवि **गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'** भी खड़ी बोली हिन्दी में काव्य रचना कर रहे थे। उनकी हिन्दी कविताओं की भाषा में एक ओर संस्कृतनिष्ठ सामासिक पदावली युक्त भाषा का स्वरूप नज़र आता है तो दूसरी ओर बोल–चाल की सरल भाषा का रूप भी परिलक्षित होता है। कवि 'नवरत्न' संस्कृत, गुजराती, ब्रजभाषा व उर्दू में भी सृजनरत थे। शायद यही कारण था कि उनकी हिन्दी कविताओं पर अन्य भाषा के शब्दों का भी प्रभाव पड़ा। तत्सम, तद्भव, ब्रज व उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग कवि की हिन्दी कविताओं की भाषा में दिखाई देता है। स्वदेश–प्रेम एवं राष्ट्रीय भावों से परिपूर्ण कवि की 'मातृ–वन्दना' कृति के निम्न छन्दों में कवि 'नवरत्न' का यह भाषा स्वरूप दिखलाई देता है–

"होती क्या है मजबूती, जानते ही नहीं कुछ,
बड़े ही मुलायम हैं, नज़ाकत छाए हैं।
मरदानगी की वेशभूषा की है बात कैसी,
माँग कढ़वाए डाढ़ी–मूँछ मुँडवाए हैं।
हाँ–ना का इन की नहीं किसी को भरोसा कछु,
ताली दे–दे हँसने के मन्त्र सीख पाए हैं।
गले थे हिमालय में हींजड़े हज़ार कईं,
आज हिन्द बीच वही राजा हो–हो आये हैं।"[7]

इन पंक्तियों में **कुछ, मूँछ** जैसे तद्‌भव शब्द विद्यमान है तो **नज़ाकत, हज़ार** जैसे उर्दू, अरबी व फारसी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। कवि नवरत्न के हिन्दी काव्यभाषा में चित्रात्मकता एवं ध्वन्यात्मकता के गुण भी विद्यमान है।

जिस खड़ी बोली हिन्दी काव्यभाषा का संस्कार एवं परिष्कार कवि 'नवरत्न' जैसे द्विवेदीयुगीन रचनाकारों ने किया उसी खड़ी बोली हिन्दी का प्रांजल एवं परिनिष्ठित स्वरूप कवि **सुधीन्द्र** की काव्य-रचनाओं में दिखलाई देता है। "सुधीन्द्र खड़ी बोली की उस शक्ति को बढ़ाने वालों में से थे जो उसे प्रांजलता और परिनिष्ठता प्रदान करती है। इसमें संदेह नहीं कि इससे उनकी भाषा में 'पांडित्यपूर्ण झलक' नज़र आने लगी थी लेकिन यह उनके पद संयोजन की विशेषता थी कि वह एक प्रवाह और स्फूर्ति से बंधी रहती थी। इस कवि की यह विशेषता थी कि उसने शिल्प के प्रति असावधानी नहीं करती और छंद को लय, गति से विछिन्न नहीं होने दिया।"[8] कवि सुधीन्द्र की काव्यभाषा संवेदनानुकूल व साफ सुथरी है। उसमें प्रवाह प्रेषणीयता का गुण विद्यमान है। राष्ट्रीय भावों के आवेग को प्रकट करने वाले शब्दों का चयन एवं अपरिमित शब्द-शक्ति के प्रयोग के कौशल से कवि पाठक को प्रभावित करता है। "उनकी भाषा पांडित्यपूर्ण होते हुए भी कहीं लड़खड़ाती नहीं है; न वहाँ गति-भंग दोष नज़र आता है। एक निपुण कवि की तरह वे अपनी रचनाओं में वर्णन-चातुर्य का विस्तार करते हैं और उन कवियों की परम्परा का अनुशीलन करते नज़र आते हैं जो राष्ट्र और समाज को वृहत्तर बनाने के लिए कविता को बड़ी भाव-भूमि से जोड़ते हैं।"[9] कवि सुधीन्द्र की राष्ट्रीयता से प्रतिबद्ध काव्य रचनाओं की ओजस्वी भाषा के शब्दों में प्रवाह एवं उल्लास की पर्याप्त मात्रा है। काव्य भाषा की कुशलता के कारण स्वाधीनता की रक्षा का आह्वान आत्मा को छूता है। कवि सुधीन्द्र की भाषा व शिल्पगत माधुर्य को उनकी कृति 'जौहर' की निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है-

"मैं वह ज्वाला हूं कि यहाँ जो स्वतंत्रता व्रतधारी हैं
वे सब मेरे ही शोले हैं, मेरी ही चिनगारी हैं
मैं वह चंडी, असिधारी ये जिसके परम पुजारी हैं

मैं स्वतंत्रता शत-शत अनुचर जिसके संगरचारी हैं
है स्वतंत्र कण-कण के आगे स्वर्ण-महल नीरस-निस्सार
स्वतंत्रता के शरण-वरण पर अमरण स्वर्गिक सुख-बलिहार
चारों ओर करुण गायन था, यहाँ छिड़ा था मंगल-गीत
गुंजित होता था कानों में भारत का वह स्वर्ण-अतीत"[10]

स्वतंत्रता पूर्व पराधीनता की स्थिति एवं सामाजिक दुर्दशा की भावना को अभिव्यक्त करने वाली कृति 'क्रान्ति-किरण' के रचयिता हाड़ौती अंचल के कवि **मदनलाल पवाँर** की काव्यभाषा सहज व प्रभावी है। खड़ी बोली हिन्दी में शब्द चयन के प्रभावी रूप को कवि की 'क्रान्ति-किरण' कृति में देखा जा सकता है। शब्दों की कसावट उनकी रचना में विद्यमान है। भावों के अनुकूल कवि के शब्द उपयुक्त और अनुकूल है। भावों की अभिव्यक्ति हेतु कवि ने तत्सम, तद्भव व फुटकर रूप में उूर्द, अरबी, फारसी के शब्दों का भी प्रयोग कवि पवाँर ने किया है। काव्य की भाषा की गति कहीं अवरुद्ध नहीं होती और कविता सहज एवं अविरल रूप से बहती है। उनकी काव्य-कृति में प्रत्येक शब्द अपने स्थान पर महत्त्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ-

"कब्र के इस गर्भ में भी
शान्ति से सोने न पाते,
हैं गुलामी में मरे
इस पाप को धोने न पाते।
तड़फड़ाती हैं रुहें
आज़ाद भारत देख पाये,
मूक कण्ठों से सभी
'जय हिन्द' के नारे लगायें।
रंज है सारे बिरादर
भूल बैठे रास्ता हैं,
फ़कत उनको तो 'जिन्हा'
'पाकेस्तां' से वास्ता है।"[11]

हाड़ौती अंचल की राष्ट्रीय–सांस्कृतिक हिन्दी काव्य परम्परा में ही **डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय** की काव्य–कृतियों में देश–प्रेम से संबंधित अनुभूतियों एवं समसामयिक समस्याओं संबंधी विचारों को अधिक अभिव्यक्ति मिली है। राष्ट्रीय सोच व विचारों को कवि ने बड़े सहज एवं सरल ढंग से प्रस्तुत किया है। सहज सम्प्रेषणीयता के कारण ही कवि के भाव एवं अनुभूतियाँ पाठक तथा श्रोता के मन को प्रभावित करती है। जनता तक अपनी बात पहुँचाने के लिए कवि प्रेमचन्द ने सरल, बोधगम्य एवं प्रचलित शब्दों को अपनाया है। "भाषा सहज व सरस है। वस्तु के भाव ग्राह्य होने से संक्षिप्तता, सांकेतिकता का आना स्वाभाविक ही था, उसका निर्वाह भी कोमलतम शब्द चयन से हुआ है।"[12] कवि प्रेमचन्द की प्रसादमयी भाषा अनुभूति के अनुकूल रही है। उदाहरणार्थ–

"पुण्य भाव, पुण्य वेष, पुण्य भूमि भारती!
रखा हिमाद्रि भाल पर किरीट–सा सुशोभता,
अंजलि भरे समुद्र नित चरण पखारता,
सजा सहस्त्र दीप नभ उतारता है आरती।
पुण्य भाव, पुण्य वेष, पुण्य भूमि भारती!
प्रभात की प्रथम किरण तुम्हें तिलक लगा रही,
विहग कुमारिकाएं मधुर स्वत्ययन गा रहीं,
प्रकृति तुम्हारे रूप पर सहस्त्र फूल वारती।
पुण्य भाव, पुण्य वेष, पुण्य भूमि भारती!"[13]

हाड़ौती अंचल के बहुआयामी साहित्यकार **डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'** की काव्य कृतियों में भावगत विविधता के साथ–साथ शिल्पगत विविधता भी विद्यमान है। राष्ट्रीयता से संबंधित हृदयस्पर्शी संवेदना एवं उद्दीप्त भावों को प्रकट करने के लिए कवि ने अधिकतर संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा को अपनाया है। संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग कवि की काव्यभाषा में अधिक मिलता है। ओजस्वी प्रसंगों में ओज गुण कवि की काव्यभाषा में विद्यमान है। राष्ट्रपरक भावानुभूतियों की तीव्रता एवं गहनता के अनुकूल गंभीर, सरल और प्रवाहमान भाषा कवि की

कविताओं में परिलक्षित है। यथा–

"शांति,
प्रेम,
सत्य
अहिंसा
जीवन के मंत्र है अवश्य
पर आतताई के विरुद्ध
चूड़ियों वाले हाथों तक ने उठाई है कृपाण।
यहां
भीनी–भीनी चदरिया
ज्यों–की–त्यों धर देने वालों ने
सौन्दर्य और शक्ति की
अनुराग और अमरता की
साथ–साथ गाई है
ग़ज़ल और गीता।"[14]

काव्यभाषा काव्यकर्मी की अन्तरात्मा की आवाज़ होती है। विचारों की जरुरत के अनुसार भाषा का प्रयोग रचनाकार के भाषिक प्रयोग की कुशलता को प्रकट करता है। काव्य में भाषा के सक्षम एवं समर्थ प्रयोग का यह कौशल हाड़ौती अंचल के कवि **डॉ. शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश'** में भी विद्यमान है। डॉ. 'राकेश' की काव्यभाषा जनसाधारण द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से कवि ने शब्द चुने हैं और बहुत प्रभावात्मक ढंग से प्रस्तुत किये हैं। कवि की भाषा सहज एवं सरल होते हुए भी कवि के अनुभवी एवं परिपक्व रचनाकर्म का साक्ष्य प्रस्तुत करती है। भाषा की सहजता एवं बोधगम्यता के कारण ही कवि के गम्भीर विचार व अनुभूतियाँ भी पाठक की अनुभूतियाँ बन जाती है। कवि की कविताओं की भाषा में एक आक्रामकता दिखायी पड़ती है। उदाहरणार्थ–

"संततियों के प्रति
यह मेरा कितना भारी अपराध रहा
कि देव मंदिरों के रक्तरंजित कपाटों से
टपकती बूंदों को देखकर भी
मेरा प्रश्न खड़ा नहीं हुआ–
कि यह खून किसका है?
देसी का कि विदेशी का?"[15]

काव्य में भाषा की सहजता एवं सरलता से पाठ्क या श्रोता में रचना का अर्थ प्रभावशाली संवेदना उत्पन्न कर देता है। कवि **द्वारका लाल 'गुप्त'** ने भी अपने पूर्ण कौशल के साथ समाज व राष्ट्र में व्याप्त विसंगतियों को सरस, सरल और बोधगम्य भाषा में अभिव्यक्त किया है। कवि की अनुभूत्यात्मक सोच आम बोलचाल की भाषा में ही अधिक प्रकट हुई है। गंभीर विषय भी भाषा की सहजता के कारण सरलता से अभिव्यक्त हुए हैं। उदाहरणार्थ आस्था और अंधविश्वास को दर्शाते निम्न काव्यांश में भाषा की सहजता के कारण ही कवि की अनुभूतियाँ पाठक के मानस को गहराई तक प्रभावित करती है–

"वह
सिमट रही है
फिर भी
गंगा माँ है
शुद्ध है, सनातन है
पतित पावन है
यह आस्था है
या
अंधविश्वास
आज के संदर्भ में।"[16]

कवि बजरंगलाल ''विकल'' ने भी राष्ट्रीय भावों से परिपूर्ण कविताओं में आम बोलचाल व लोकभाषा का प्रयोग किया है। कवि "विकल" का मानना है लोकभाषा में प्रचारात्मकता अधिक रहती है। ग्रामीण जन–जीवन का चित्रण करने में कवि ने ग्रामीण शब्दों का भी प्रयोग किया है। कवि ने **मुहावरें एवं लोक प्रचलित वाक्यावलि** का भी प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ पड़ौसी देश चीन की हठधर्मिता और दुस्साहस के विरुद्ध अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करने में कवि की मुहावरेदार भाषा रूप को देखा जा सकता है–

"लोन्गजू छीनने वाले चीन होश में आ,
तू बीज विष भरी बर्बरता के बोता है।
दोस्ती आज दुश्मनी बनी जा रही देख,
आँखों का तारा दिल का काँटा होता है।।"[17]

उक्त काव्यांश में 'आँखों का तारा' मुहावरे का प्रयोग हुआ है।

आधुनिक युग की विद्रूपताओं, युग की विसंगतियों, प्रगतिशील शक्तियों एवं आमजन की पीड़ाओं को कवि **अम्बिकादत्त** ने भी काव्याभिव्यक्त किया है। कविता में भावों की व्यंजना भले ही गूढ़ है पर सम्प्रेषण की भाषा अभिधा ही रखने की कोशिश रही है। कविता में लाक्षणिकता भी विद्यमान है। कवि अम्बिकादत्त जी के अनुसार भाषा का संस्कार उन्होंने तारसप्तक के कवियों अज्ञेय, रघुवीर सहाय, मुक्तिबोध से सीखा है। कवि अम्बिकादत्त के काव्य संग्रह 'लोग जहाँ खड़े हैं' की भूमिका में कवि नंद चतुर्वेदी ने लिखा है– "अम्बिकादत्त की कविताओं में अपने दुःखों को पहचानने की और उसे आत्मीय भाषा देने की एक खास कोशिश है। भाषा के साधारणीकरण के दौरान इस तथ्य को प्रायः याद रखना मुश्किल हो जाता है कि कविता से भाषा का एक अजीब रिश्ता है; एक ऐसा रिश्ता जो भाषा और कवि अनुभव को जीवन के अनेक स्तरों से गुजारता है, और इस तरह की ज़िन्दगी भी अधिक समृद्ध हुई लगती है।"[18] अभावग्रस्त जीवन जीने वाले लोगों तथा ग्राम्य जन–जीवन की स्थितियों को प्रकट करने के लिए कवि ने जिस आत्मीयतापूर्ण भाषा का उपयोग किया है उससे अर्थवत्ता को बल मिला है। यथा–

“अब बस रहे हैं/गांव/फिर से शहरों के सहारे
पास जो थे जंगल घने/अब नहीं रहे
दूर होते जा रहे हैं/दृष्टि से भी
जमीनें जो बची हैं अब, सब बंजर होने के लिए हैं
कौन जाने कब तक रहेंगी, बची/बोने के लिए
ईश्वर भी आखिर कब तक, रह सकता है विपन्नता में”[19]

कवि अम्बिकादत्त की काव्यभाषा पर आंचलिकता का प्रभाव भी दिखाई देता है। “उनकी भाषा हाड़ौती अंचल लोकजीवन में इतनी रच–बस गई है कि अनायास ही उनकी...सयत काव्याभिव्यक्ति में भी लोक–मुहावरों की कहन आ जाती है।”[20]

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि हाड़ौती अंचल के इन हिन्दी कवियों के काव्य में काव्यभाषा के स्तर अनेक विशेषताएँ देखने को मिलती है। काव्यात्मक वर्ण्य विषय एवं कथ्य सामग्री को सम्प्रेषणीय बनाने के लिए हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने बोलचाल की भाषा को अधिक अपनाया है। युग परिवेश की आपाधापी, विसंगतियों, समस्याओं का स्वाभाविक एवं जीवन्त वर्णन प्रस्तुत करने के लिए इन कवियों ने भाषा के सहज, सरल स्वरूप को अपनाना शायद सही भी रहा है। प्रत्येक कवि ने अपने भावों के अनुरूप भाषा के उपयोग का प्रयास किया है प्रत्येक कवि का अपने भावों के सम्प्रेषण का तरीका भिन्न रहा है। वैसे भाषिक सौन्दर्य की अपेक्षा इस अंचल के कवियों का समाज एवं राष्ट्र की वास्तविकता को सरलतापूर्वक पाठक वर्ग तक सम्प्रेषित करना प्रमुख उद्देश्य रहा है। यही कारण है कि भावों के अनुरुप इनकी काव्यभाषा का रूप समर्थ एवं सक्षम नज़र आता है। इन कवियों के काव्य में संस्कृतनिष्ठ सामासिक पदावली युक्त भाषा का प्रयोग भी हुआ है तथा अरबी, फारसी व उर्दू शब्दों का स्वाभाविक एवं रचनात्मक प्रयोग भी काव्यभाषा में हुआ है। आंचलिक शब्दों, लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग भी काव्य भाषा में दिखलाई देता है। अंततः कहा जा सकता है कि अर्थसंप्रेष्य एवं संदेश–सापेक्ष काव्यभाषा ही उक्त अंचल के इन हिन्दी कवियों के काव्य के शिल्प पक्ष की विशिष्ट पहचान है।

5:2 सूक्ति प्रयोग

सूक्ति वह सारगर्भित तथ्य होता है जिसे हर कसौटी पर कसा जा सकता है। सूक्ति भावों एवं विचारों का सार होती है। वह भाव, विषय एवं विचारों की त्रिवेणी संगम का नवनीत है। काव्य में सूक्ति प्रयोग रचनाकार के कलात्मक कौशल को दर्शाने वाला शिल्प तत्त्व है। सूक्ति प्रयोग द्वारा रचनाकार अपने व्यापक अनुभव एवं गंभीर चिन्तन को सार रूप में कह देना चाहता है। रचनाकार द्वारा अपने भावों के विस्तार को एक वाक्य में सिमेटने से सूक्ति का सृजन होता है। सूक्ति दृश्य रूप में एक बूँद है लेकिन उसे व्याख्यायित करने पर भावों का महासागर समाहित रहता है। सूक्ति बुद्धिमत्तापूर्ण विचार है, सूक्तियाँ परम्परा से ही हमें मिली हैं। हमारे पुराने शास्त्रों, उपनिषदों में लोककल्याण हेतु हज़ारों सूक्तियाँ बनायी गयी थी। आज भी साहित्य मनीषियों द्वारा काव्य में सूक्ति प्रयोग किया जा रहा है। काव्य में सूक्ति प्रयोग की उपादेयता यह है कि सूक्ति प्रयोग से काव्य सौन्दर्य में वृद्धि होती है। सूक्ति भाषा में मारकता पैदा करती है। वह काव्य में व्यंग्यार्थ, उक्ति वैचित्र्य एवं भाव गांभीर्य पैदा करती है।

हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों–पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न', सुधीन्द्र, मदनलाल पवाँर, डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय, डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय, डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश', द्वारका लाल 'गुप्त', बजरंग लाल 'विकल', अम्बिकादत्त के काव्य में भले ही सूक्तियाँ कम है लेकिन जितनी भी सूक्तियों का प्रयोग हुआ है वह पाठक को चमत्कृत करती है, पाठक को एक जीवन–सूत्र देती है तथा हमारी मानसिकता एवं विचारों का निर्माण करती है। इन कवियों के काव्य में प्रयुक्त सूक्तियाँ उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

"भाग्य! तुम केवल भ्रामक भ्रान्ति
पराजय–असफलता के नाम
तुम्हीं जड़ता के आश्रय एक
असता के गृह, अघ के ग्राम"[21]

– कवि सुधीन्द्र

"दान धरा का धर्म अटल है
दान नियति की गति का संबल,
दान दया का कर्म नहीं है
दान सदा कर्तव्य प्रबल।"[22] **–कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय**

x x x x x x

"समय बड़ा बलवान है, मनुज नहीं बलवान।"[23]

–कवि डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'

x x x x x x

"धर्म अफीम की गोली है, इसकी नींव पोली है"[24]

–कवि द्वारकालाल 'गुप्त'

x x x x x x

"आयुध से बड़ा होता है संकल्प।
अमृत से भी महान् होती है जिजीविषा।"[25]

–डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'

x x x x x x

"जनसमर्थन के बिना कानून का क्या मायना है।
आम जनता ही हुकूमत का आईना है।"[26]

– कवि बजरंग लाल "विकल"

हाड़ौती अंचल के इन कवियों द्वारा प्रयुक्त सूक्तियों में परम्परा, संस्कृति एवं जीवन का सार समाहित है। इन सूक्ति प्रयोग ने इनके काव्य की शोभा को बढ़ाया है। कवियों का यह सूक्ति प्रयोग सराहनीय है।

5:3 प्रतीक विधान

प्रतीक, काव्य–शिल्प का प्रमुख एवं उपयोगी तत्त्व है। कवि की अनुभूति की अभिव्यंजना को सक्षम बनाने एवं उत्कर्ष प्रदान करने में प्रतीक महत्त्वपूर्ण होते हैं। प्रतीक काव्य में प्रयुक्त वह शब्द होता है जो मूल–भाव एवं मूल–विचारों का सूचक व प्रतिनिधि होता है। "प्रतीक संकेतात्मक होता है लेकिन उसकी गूंज अभिधेयार्थ के परे बहुत दूर तक पहुँचती है, जो उससे बहुत अधिक अर्थ देता है, जितना हम अभिधा से प्राप्त कर सकते हैं।"[27] प्रतीकों का प्रयोग अर्थ–संप्रेषण में सूक्ष्म वक्रता उत्पन्न करता है। प्रतीक में व्यंजन शक्ति होती है जिससे भावाभिव्यंजना प्रभावी बनती है। प्रतीक काव्य में सूक्ष्मता, संक्षिप्तता तथा अर्थ–सौन्दर्य की सृष्टि करता है। "कवि विशेष जब परिवेश भाव मनोविकार आदि को निरुपित करने में असमर्थता अनुभव करता है, जब शब्द अभिलषित विषय को या वस्तुविशेष को बाँधने में पूर्ण नहीं दे पाते तब कलाकार प्रतीकों का सहारा लेकर विषय को सजीव, सप्राण एवं स्पंदित बना देता है।"[28] सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति को सफल बनाने तथा अनुभूति को व्यंजनात्मक बनाने के लिए कवि द्वारा प्रतीकों का प्रयोग प्रभावोत्पादक रहता है। समाज एवं राष्ट्र की कमजोरियों एवं विसंगतियों पर प्रहार करने के लिए कवि कभी–कभी साधारण अर्थ संप्रेषण से हटकर काव्य भाषा में प्रतीकों के प्रयोग से टेढ़ी भंगिमा देता है। समकालीन हिन्दी कविता में जनसमस्याओं, मजबूरियों, विवशताओं की रचनात्मक अभिव्यक्ति में हिन्दी काव्य में विभिन्न प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। प्रतीक अनेक प्रकार के होते हैं। जैसे–पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि।

हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों ने राष्ट्रीय भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न प्रतीकों का प्रयोग काव्य में किया है। कवियों द्वारा प्रयुक्त प्रतीक कवि की भावोद्बोधन शक्ति को प्रस्तुत करते हैं। इन कवियों ने समाज, राजनीति, धर्म, प्रकृति इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों से प्रतीकों को चुना है। कवि **गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'** ने अंग्रेजों एवं सामन्तों पर अपनी तिलमिलाहट को अभिव्यक्त करने के लिए अपनी कविताओं **मच्छर** एवं **चूहों** जैसे प्रतीकों को प्रयुक्त किया है। उदाहरणार्थ–

"यदि और पराक्रम हो करना, इन चूहों को मारना बहतर है"[29]

कवि 'नवरत्न' की भाँति ही कवि सुधीन्द्र ने अंग्रेज शासकों के विरुद्ध क्रान्तिकारी एवं विद्रोही भावों को प्रकट करने के लिए **जौहर, कोकिल** व **प्रलयवीणा** आदि प्रतीकों का प्रयोग किया है। 'जौहर' स्वतंत्रता के लिए उत्सर्ग एवं समर्पण भाव का प्रतीक है। "'प्रलय' वस्तुतः पराधीनता के विरुद्ध एक पूरे राष्ट्र के विफल होते संघर्ष का ही प्रतीक है।"[30] प्रबल राष्ट्रीय आवेग एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए कवि द्वारा इन प्रतीकों का प्रयोग सार्थक ही है। यथा–

"वैभव से फटते महलों में,
तू प्रलय–लहर लहरा कोकिल!
अब छोड़ प्रलय की तान अरी,
अब गीत प्रलय के गा कोकिल!"[31]

कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय के काव्य में भी प्रतीकों का प्रयोग सहज रूप में हुआ है। उन्होंने **लाल सवेरा, नव–बसन्त** जैसे प्रतीकों का प्रयोग नयी समाज व्यवस्था एवं राष्ट्र–पुनर्निमाण हेतु किया है। भारत–पाकिस्तान के विभाजन पर क्षोभ प्रकट करते हुए कवि प्रेमचन्द ने स्वतंत्र भारत के लिए **खण्डित सूर्य प्रतीक** का प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ–

"क्योंकि वे जाने से पूर्व
खण्डित सूर्य ही हमें देना चाहते थे;
पर पूर्ण सूर्य के स्थान पर
खण्डित सूर्य स्वीकार करने के
दोषी तो हम ही थे।
अब यदि उस खण्डित सूर्य से
प्रकाश के स्थान पर रक्त बह रहा है
तो हम किसे दोष दें?"[32]

कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय ने इन विशिष्ट प्रतीकों के माध्यम से कविता को गंभीर बनाया है।

प्रतीकों के कलात्मक प्रयोग में डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' हाड़ौती अंचल के विलक्षण एवं विशिष्ट रचनाकार रहे हैं। कवि ने अपनी सांस्कृतिक-राष्ट्रवादी विचारधारा को प्रभावी बनाने के लिए पौराणिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक इत्यादि प्रतीकों को अपनाया है। "'क्षमा नहीं करोगी शकुंतला' में पौराणिक प्रतीकों की नए सन्दर्भों में व्याख्या है 'यशोदा', 'एकलव्य', 'शकुन्तला' नए संदर्भों में व्याख्या है 'यशोदा', 'एकलव्य', 'शकुन्तला' नए संदर्भों में यहाँ प्रस्तुत हैं। यह उनकी सांस्कृतिक पक्षधरता की सूचक है, परन्तु यहाँ उनका राजनैतिक सोच, एक पक्षकार की तरह अपनी बात भी रख रहा है।"[33] कवि 'विजय' के 'आञ्जनेय' महाकाव्य में भी श्री हनुमान का चरित्र श्रेष्ठ मानव-मूल्यों के विकास के प्रतीक रूप में प्रस्तुत हुआ है। आधुनिक जीवन, सांस्कृतिक परम्परा, हिन्दी भाषा, राष्ट्रबोध एवं समसामयिक समस्याओं से संबंधित कवि का उत्कृष्ट व गंभीर चिन्तन **गौरी चिड़िया**, **सफेद हाथी**, **अंधेरे जंगल**, **कटी नाक**, **गुलाब** जैसे अनेक प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है। अलगाव, अन्याय, आतंक जैसी वर्तमान युगीन समस्याओं को **रावण** के प्रतीक के माध्यम से कवि 'विजय' ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

"विपरीत सोच का रावण
मरता है मरे
अलगाव का दशकंधर
गिरता है गिरे
गुरु ग्रंथ साहब का
एक पन्ना न जले
अखिल विश्व इतना ज्ञान वरे।"[34]

कवि 'विजय' की कविता में विविध प्रतीकों का हुआ उचित प्रयोग सार्थक एवं सराहनीय है। कवि की भावप्रवणता एवं कल्पनाशीलता को इन प्रतीकों के माध्यम से उचित अभिव्यक्ति मिली है।

कवि शांति भारद्वाज 'राकेश' ने युगीन यथार्थ की प्रभावी अभिव्यंजना हेतु प्रतीकों को चुना है। कवि 'राकेश' का 'परीक्षित' खण्डकाव्य एक प्रतीकात्मक रचना है। "'श्रीमद्भागवत महापुराण' के इतिवृत्तात्मक आधार को कवि ने प्रतीकार्थ व्यंजना के स्थूल माध्यम के रूप में अधिगृहीत किया है। कवि ने अलौकिक कथा प्रसंगों का संस्कार युग चेतना के परिपार्श्व में किया है। पुराण–कथा के युग सम्वेद्य भाव–बोध और प्रतीक व्यंजना में कवि का प्रयास निश्चयतः अभिनन्दनीय है।"[35] राजा परीक्षित के माध्यम से कवि 'राकेश' ने आधुनिक विसंगतियों, जीवन मूल्यों के विघटन, नैतिक मूल्यों के ह्रास को प्रस्तुत करते हुए मानवीय धर्म का प्रतिपादन किया है। यथा–

"जन–सेवा ही सुकार्य, नृप के अनुरंजन का।
शासक है बस प्रतीक युग के अभिव्यंजन का।।"[36]

वर्तमान समय में स्त्री–अस्मिता पर गहराते संकट का प्रयोग जैसे गंभीर विषय की अभिव्यक्ति के लिए कवि द्वारका लाल 'गुप्त' द्वारा **दामिनी** प्रतीक बहुत सार्थक प्रतीत होता है। उदाहरणार्थ–

"अब भी मोहन
उदास–अनमना सा
दौड़ रहा है
सूनी–सुनसान सड़कों पर
एक घर से दूसरे घर
कर रहा है
अपनी लड़की दामिनी की
खोज खबर
उसकी सहेलियों से।"[37]

कवि 'गुप्त' की रचना 'लालकिला बनाम लोकतंत्र' में **लालकिला** प्रतीक आम आदमी की स्वतंत्रता एवं उसके अस्तित्व के लिए प्रयुक्त हुआ है।

कवि बजरंग लाल 'विकल' ने भी प्रकृति क्षेत्र से **करील, गुलमोहर, कमल, झील** जैसे प्रतीकों का चुनाव कर राजनैतिक, सांस्कृतिक चिन्तन को प्रस्तुत किया है। वर्तमान राजनीति में योग्य व्यक्तियों के स्थान पर जिस तरह अयोग्य व्यक्तियों का चुनाव हो रहा है उस पर व्यंग्य करते हुए कवि ने लिखा है–

"उकट गये सब गुल मुहर सब, फूले फले करील।
कमलों पर आतंक है, कीचड़ ढोती झील।।"[38]

उक्त पंक्तियों में प्रतीकात्मकता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

कवि अम्बिकादत्त चतुर्वेदी ने भी आम आदमी के जीवन संघर्ष, व्यथा व उसकी जीजिविषा की भावाभिव्यक्ति हेतु **चिमनी, पेड़, रेत, आग** इत्यादि प्रतीकों का प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ–

"माहौल जब भर जाए
कचरे और सीलन से
तब–बिल्कुल भी मत डरो
उमंगहीन नसीहतों से
आग का खेल खेलो।।"[39]

सारांशतः कहा जा सकता है कि भावाभिव्यक्ति को सक्षम बनाने के लिए प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है। काव्य सौन्दर्य को द्विगुणीत करने में प्रतीक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। हाड़ौती अंचल की हिन्दी कविता में प्रकृति, समाज, राजनीति, विज्ञान इत्यादि सभी क्षेत्रों से प्रतीकों का चुनाव किया गया है। राष्ट्र की समस्याओं, विसंगतियों, विद्रूपताओं व उपलब्धियों को इन प्रतीकों में अभिव्यक्ति मिली है। उक्त अंचल के कवियों की प्रतीक योजना, प्रभाव व संप्रेषण श्रेयस्कर है।

5:4 छन्द विधान

छन्द काव्य में लय, तुक एवं नाद सौन्दर्य पैदा करने वाला तत्त्व है। यति, गति, गणों, वर्ण एवं मात्राओं के नियमों में बद्ध रचनात्मक इकाई छन्द है। छन्द काव्य को मधुरता एवं संगीतात्मकता से सम्प्रेषित करने का प्रमुख साधन होता है। "छन्द स्वरों को स्पष्टतर करता है। छन्द भाषा की गति को धीमा करता है क्योंकि स्वरों की मात्रा बढ़ाता है। दीर्घतर स्वर अपनी पूरी अनुगूँज के साथ सामने आते हैं। उनकी सच्ची रंगत पहचानी जाती है। स्वरों की रंगत भावना की रंगत है। अतः छन्द के द्वारा स्वर अर्थ की वृद्धि करते हैं। छन्दमय उक्ति हमें शब्दार्थ भर ही नहीं देती बल्कि रंजना विशिष्ट भावार्थ भी देती है।"[40] कविता में भाषा की गति की सहजता बनाये रखने के लिए छंद महत्त्वपूर्ण साधन है। छंद रचना की व्यंजना शक्ति को भी दुगुना कर देता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने छंद को एक शक्ति के रूप में स्वीकार किया है। उनका मत है कि– "वह (छन्द) एक समूहगत शक्ति है। चित्त के अनुभव को अनेक चित्रों में अनायास संचारित करने वाला महान् साधक है।"[41] हिन्दी साहित्य में छायावाद युग तक की अधिकांश कविताओं का स्वरूप छंदमय अधिक रहा। परन्तु कवि निराला द्वारा मुक्त छंद की प्रतिष्ठा करने के पश्चात् छंद की बंधी–बंधायी परिपाटी से भिन्न स्वतंत्र काव्य संगठन को अधिक अपनाया जाने लगा। विषम परिस्थितियों, समस्याओं एवं जीवन के यथार्थ संबंधी जटिल भावों एवं विचारों को सहज सम्प्रेषणीय अभिव्यक्ति हेतु मुक्त छन्द की रचना को आधुनिक हिन्दी कवियों ने आवश्यक समझा। "छन्द–मुक्ति के पक्ष में यह भी कहा जाता रहा है कि काव्य आवेश को किसी अनुशासन में ढालने से कवि की सम्पूर्ण ऊर्जा केवल साँचे या ढाँचे के रचाव में ही खर्च हो जाती है। काव्य आवेश का महत्त्वपूर्ण क्षण ईंट–पत्थर को जोड़ने–तोड़ने में ही जब व्यतीत हो जायेगा तब कविता के अन्दरूनी हलकों में सक्रिय चेतना की प्राण प्रतिष्ठा कैसे हो पायेगी? इस बात ने इस प्रत्याभूति को बल दिया कि कवि का लक्ष्य अपनी आत्म सम्भवा अनुभूति को ज्यों–का–त्यों प्रस्तुत कर देना ही कवि–कर्म का अन्तिम और पहला लक्ष्य है। अनुभूति यदि ताकतवर होगी तो वह अपने अनुकूल भाषा की तलाश कर लेगी। इस

अनुकूल भाषा को पा लेना कवि–कर्म में सबसे जटिल और संश्लिष्ट अवसर होता है।"[42] बौद्धिकता की कविता के कारण वर्तमान कविता छंद मुक्त अवश्य हो रही है परन्तु आज भी आधुनिक कवि कविता में लय बनाये रखना चाहता है। भले ही वह छंद के बंधनों को स्वीकार नहीं करता परन्तु भावानुकूल एवं स्वाभाविक लय योजना को अवश्य महत्त्व देता है। वैसे भी लय के अभाव में कविता गद्य के अधिक निकट जान पड़ती है। काव्य की प्रखरता एवं काव्यगत प्रवाह भी लय के अभाव में बाधित हो जाता है। आज कवियों की लम्बी श्रृंखला छन्द मुक्त काव्य रचना में प्रवृत्त हैं। इन कवियों द्वारा छंद के बंधनों को तोड़कर हिन्दी कविता को एक नयी छान्दिकता प्रदान की जा रही है। भले ही आज मुक्त छंद कविता का प्रचलन बढ़ रहा है परन्तु इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता है कि छंद काव्य की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। काव्यभाषा की संवेदनात्मक ताकत छंद प्रयोग से उपजती है।

हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों ने काव्य में परम्परागत छंदों के प्रयोग के साथ काव्य में नये–नये प्रयोग भी किये हैं। कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' ने **दोहा, कुण्डलियां** छंद प्रयोग के साथ **अतुकान्त छंद** का प्रयोग किया। "पण्डित जी ने काव्य में नये–नये प्रयोग करके हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि में अपना अपूर्व योग दिया है। द्विवेदी जी के काल में जब कोई कवि कविता में तुक छोड़कर लिखने की कल्पना भी नहीं कर सकता था उस समय आपने अपने 'सावित्री' प्रबन्ध काव्य में अतुकान्त छंदों का सफल प्रयोग किया है।"[43] कवि 'नवरत्न' के काव्य में अतुकान्त छन्द का प्रयोग उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

"मैं जो नया ग्रन्थ विलोकता हूं
भाता मुझे सो नव मित्र सा है
देखूं उसे मैं नित बार बार
मानो मिला मित्र मुझे पुराना"[44]

कवि सुधीन्द्र के 'जौहर' कृति **हरिगीतिका छन्द** का प्रयोग दिखाई देता है। "हरिगीतिका छन्द में लिखे 'जौहर' की छः ज्वालायें हैंः बीज, संघर्ष, संधि, दर्शन,

प्रत्यावर्त्तन, उत्सर्ग।"[45] कवि दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' की रचनाएँ 'देखन में छोटे लगे' व 'अणु से विराट' में दोहा छन्द तथा 'त्रिपादिका' एवं 'एक ओर वामन' में **हाइकु छन्द** का प्रयोग हुआ है। जापानी हाइकु छन्द के द्वारा समकालीनता से जुड़ने का कवि का प्रयास सराहनीय है। कवि विजय के अनुसार– "हाइकु त्रिपाद वर्ण वृत्त अक्षर छन्द है। अक्षरों की गणना पर आधारित। कहने को बात बहुत सरल है। पहली पंक्ति में पाँच दूसरी में सात तथा तीसरी में फिर पाँच अक्षर हो; परन्तु इतने अल्प शब्दों में अर्थ–सागर भर देना, यही इसकी महत्ता है।"[46] हाइकु छन्द में कवि ने सीमित अक्षरों में देश की समस्याओं की ओर संकेत किया है और पाठक को विचार करने हेतु प्रेरित किया है।

"भूखे कन्धों से
नहीं उठा है कभी
देश का बोझ।"[47]

कवि की 'देखने में छोटे लगें' जैसी दोहा सतसई में **दोहा छन्द** में अकाल वर्णन बहुत प्रभावी बन गया है। यथा–

"भू जन सारा पी गया, सूखी फसलें खेत,
रोती–खा–खा हिचकियां, धरती ढोती रेत।"[48]

कवि 'विजय' की इन छन्दबद्ध रचनाओं के अतिरिक्त 'क्षमा नहीं करोगी शकुन्तला', 'श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब', 'इन्द्रधनुष का आठवाँ रंग' इत्यादि मुक्त छन्द रचनाऐं हैं।

हाड़ौती अंचल के कवि द्वारका लाल 'गुप्त' ने भी अतुकान्त छन्द में राष्ट्रव्यापी जटिलताओं एवं विसंगतियों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कवि 'गुप्त' की रचना, 'कही अनकही' अतुकान्त काव्य संग्रह है। कवि की अतुकान्त कविताएँ समाज और समय का जीवन्त दस्तावेज प्रस्तुत करती है। कवि बजरंग लाल 'विकल' ने भी इस अतुकान्त छंद को अपनाया है। कविता में छंद प्रयोग के विषय में कवि 'विकल' ने लिखा है– "मेरी यह मान्यता है कि छन्द के बिना कविता का

कोई अस्तित्व नहीं है। नयी कविता में भी मैंने छन्द का प्रयोग किया है। निःसंदेह तुक, लय और गति भी काव्य में महत्त्वपूर्ण है। छन्द के प्रयोग में मैंने निराला जी और पंत जी के पद चिन्हों का अनुसरण किया है। पंक्तियाँ कहीं छोटी बड़ी हो सकती हैं। इसका कारण भाव के अर्थ को सशक्तता से अभिव्यक्त करने में है।"[49]

कवि शांति भारद्वाज 'राकेश', कवि अम्बिकादत्त चतुर्वेदी ने अधिकतर छन्द मुक्त कविताओं का सृजन किया है। कवि अम्बिकादत्त की कविताओं को छंद के किसी भी प्रकार के बंधन में नहीं बांधा गया है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को हरिगीतिका, दोहा इत्यादि पुराने छंदों में बद्ध करने का प्रयास भी किया है तथा अतुकान्द जैसे नये छंदो का प्रयोग काव्य में किया है। छंद के बंधनों से मुक्त होकर भी अपने राष्ट्रीय मनोभावों को अभिव्यक्त किया है। इन कवियों में काव्य के छंदगत स्वरूप में समय एवं भावों के अनुरूप परिवर्तित हुआ है। इन कवियों की छंद योजना में वर्ण, तुक, मात्रा इत्यादि तत्त्वों का रूप काफी बदल चुका है।

5:5 अलंकार प्रयोग

अलंकार काव्यशिल्प का महत्त्वपूर्ण अंग रहा है। अलंकार शब्द और अर्थ में चमत्कार उत्पन्न करने वाला तत्त्व है। भावों की प्रभावी अभिव्यक्ति व काव्य को सौन्दर्यवान बनाने के लिए अलंकार प्रयुक्त किए जाते हैं इसीलिए अलंकार को काव्य का आभूषण कहा जाता रहा है। अलंकारों से कविता रूप ग्रहण करती है। "अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं। भाषा की पुष्टि के लिए, राग की परिपूर्णता के लिए आवश्यक उपादान है,. ....वे वाणी के ह्रास, अश्रु, स्वप्न, पुलक, हावभाव हैं। जहाँ भाषा की जाली केवल अलंकारों के चौखट में फिट करने के लिए बुनी जाती है, वहाँ भावों की उदारता शब्दों की कृपण–जड़ता में बँधकर सेनापति के दाता और सूम की तरह 'इकसार' हो जाती है।"[50] रीतिकाल के अन्तर्गत काव्य में चमत्कार, प्रदर्शन की प्रवृति के कारण अलंकारों को साध्य रूप में भी अपनाया गया। अलंकारों के बोझ से कविता अनेक बार काव्य में कठिनाई एवं बोझिलता उत्पन्न हुई। आधुनिक कविता में अलंकार काव्य में साधन रूप में ही अधिक प्रयुक्त हुए हैं। काव्य में अलंकारों का सहज प्रयोग एवं अलंकारों की नूतनता आज की कविता में दिखाई देता है। "वस्तुतः आज के कविता की सबसे बड़ी समस्या और सबसे बड़ी माँग यही है कि वह व्यापक जन–जीवन से जुड़े तथा उसके अलंकार एवं सार्थक हों, साथ ही भावगत तीव्रता को कायम रखने और बढ़ाने में सहायक बनें।"[51] वैसे सत्य भी यही है कि काव्य में अलंकारों के सहज प्रयोग से ही काव्य सौन्दर्य में वृद्धि होती है।

हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों के काव्य में भी अलंकार सहज रूप में प्रयुक्त हुए हैं। अलंकारों का वह भार इन कवियों के काव्य में दिखाई नहीं देता हैं युग परिस्थितियों के यथार्थ चित्रण में अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग इनके काव्यशिल्प की विशेषता है। कवि पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' की कविता में **अनुप्रास अलंकार** का प्रयोग द्रष्टव्य है–

"मेरो धन, मेरो तन, मेरो मन, मेरो जीवन
मेरो सब लगे प्रभो! देश की भलाई में।"[52]

कवि सुधीन्द्र की 'जौहर' कृति में **उत्प्रेक्षा** एवं **दृष्टान्त** अलंकारों का प्रयोग परिलक्षित होता है। यथा–

"आयुध आगारों पर उस पल कौंध गयी मानों बिजली,
घर घर में ओठों–ओठों पर गरज उठी घन की अवली!"[53]

x x x x x x x

"असि–असि का शल–शल का पल–पल होता था घर्षण भीषण
असुर सुरों ने आज किया हो फिर जैसे सागर–मंथन"[54]

कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय की कविता 'भाषा की आग' की निम्न पंक्तियों में **उदाहरण अलंकार** का स्वरूप दिखलाई देता है। यथा–

"पंजाबी, राजस्थानी, उड़िया या काश्मीरी,
सभी भाषाएँ है, एक देश भारत की!
हिन्दी भी नहीं हैं केवल उत्तर या मध्य की–
वैसे ही, जैसे गंगा गोदावरी,
यमुना और कावेरी,
मेरी या तुम्हारी नहीं, भारत की नदियाँ हैं;"[55]

कवि बजरंग लाल "विकल" ने शहीदों के रक्त को गंगा जल से उपमा कर निम्न पंक्तियों में **उपमा अलंकार** का प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ–

"जिस जगह तुम्हारा गिरा रक्त गंगा जल सा,
वह तीर्थ वहाँ की धरती गौरवशाली है।"[56]

अलंकारों के द्वारा कविता को सजाने का हाड़ौती अंचल में इन हिन्दी कवियों ने नहीं किया है। राष्ट्र, समाज एवं जन–जीवन से जुड़े भावों व विचारों की अभिव्यक्ति पर इन कवियों का ध्यान अधिक रहा है। कविता के भावपक्ष पर इनका ध्यान

केन्द्रित रहा है। विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति में सहज व अनायास रूप में ही अलंकार कविता में प्रयुक्त हुए हैं। "जहाँ तक नूतन अलंकारों की आवश्यकता पर विशेष जोर देने की बात है, वहाँ यह स्पष्ट है कि आज के बदले युग एवं माहौल में परम्परागत एवं रूढ़िग्रस्त अलंकारों में वह सामर्थ्य भी नहीं कि युग की यथार्थ परिस्थितियों एवं कवि की जटिल एवं विषम भावानुभूतियों को सबल और सजीव अभिव्यक्ति प्रदान कर सकें।"[57] बदलते युग–संदर्भों के अनुकूल इन कवियों द्वारा काव्यगत माध्यमों को अपनाया गया। यही कारण है कि अलंकार हाड़ौती अंचल के इन कवियों के काव्य में स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त हुए है। काव्य में अलंकारों के प्रयोग को लाने की कोशिश हाड़ौती अंचल के इन आधुनिक कवियों द्वारा नहीं की गयी है। इन कवियों द्वारा काव्य में अलंकारों का यथावसर एवं स्वाभाविक प्रयोग सराहनीय है।

♦♦♦♦

संदर्भ-सूची

1. निराला के काव्य-बिम्ब और प्रतीक-वेदव्रत शर्मा-पृ.सं.-87-88
2. निराला के काव्य-बिम्ब और प्रतीक-वेदव्रत शर्मा-पृ.सं.-141
3. समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी-डॉ. ब्रजमोहन शर्मा-पृ.सं.-99
4. मुक्तिबोध काव्य का शैली तात्विक अध्ययन-ज्योत्सना पाण्डे-पृ.सं.-101
5. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास-डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी-पृ.सं.-103
6. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास-डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी-पृ.सं.-108
7. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास-डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी-पृ.सं.-160
8. हमारे पुरोधा-8 : सुधीन्द्र-नंद चतुर्वेदी-पृ.सं.-31
9. वही, पृ.सं.-38
10. वही, पृ.सं.-74
11. क्रान्ति-किरण-मदनलाल पवाँर- पृ.सं.-28
12. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास-डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी-पृ.सं.-246
13. युग-वीणा-डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय-पृ.सं.-02
14. श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब-डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'-पृ.सं.-20-21
15. इतने वर्ष-डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'-पृ.सं.-18
16. कही-अनकही-द्वारकालाल 'गुप्त'-पृ.सं.-18
17. शंखनाद-बजरंग लाल "विकल"-पृ.सं.-3-4
18. लोग जहाँ खड़े हैं-अम्बिकादत्त-पृ.सं. (भूमिका)
19. आँवों में बारहों मास-अम्बिकादत्त-पृ.सं.-19
20. अम्बिकादत्त-सम्पादक : विनोद पदरज-पृ.सं.-14

21. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–37

22. युग–वीणा–प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–07

23 स्मारिका : सहस्त्र चन्द्र दर्शनम् डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' जीवेम् शरद : शतम–प्रबन्ध सम्पादक : श्री रामेश्वर शर्मा "रामू भैया"–पृ.सं.–52

24. लालकिला बनाम लोकतंत्र–द्वारकालाल 'गुप्त'–पृ.सं.–55

25. द्वार खुले हैं–शांति भारद्वाज 'राकेश'–पृ.सं.–52

26. शंखनाद–बजरंग लाल "विकल"–पृ.सं.–17

27. मुक्तिबोध काव्य का शैली तात्विक अध्ययन–ज्योत्सना पाण्डे–पृ.सं.–130

28. समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी–डॉ. ब्रजमोहन शर्मा– पृ.सं.–101

29. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–161

30. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–43

31. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–89

32. देश का दर्द–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–पृ.सं.–16

33. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–223

34. श्वेत शिखरों का धूप बिम्ब–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' –पृ.सं.–42

35. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–पृ.सं.–318

36. परीक्षित–डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'– पृ.सं.–30

37. कही–अनकही–द्वारकालाल 'गुप्त'– पृ.सं.–46

38. पयस्विनी–बजरंगलाल 'विकल'– पृ.सं.–13

39. लोग जहाँ खड़े हैं–अम्बिका दत्त–पृ.सं.–55

40. समकालीन कविता में छन्द–सम्पादक : सच्चिदानन्द वात्स्यायन– पृ.सं.–67/68

41. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य बदलते मानदण्ड एवं स्वरुप– डॉ. कौशलनाथ उपाध्याय–पृ.सं.–209
42. समकालीन कविता में छन्द–सम्पादक : सच्चिदानन्द वात्स्यायन–पृ.सं.–78
43. नवरत्न–काव्य–शतक–सम्पादन : युगल किशोर चतुर्वेदी–पृ.सं.–04
44. मधुमती–गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक–पृ.सं.–185
45. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–पृ.सं.–38
46. त्रिपादिका–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–पृ.सं.(कवि कथन)
47. वही, पृ.सं.–30
48. स्मारिका : सहस्त्र चन्द्र दर्शनम् डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' जीवेम् शरद : शतम–प्रबन्ध सम्पादक : श्री रामेश्वर शर्मा "रामू भैया"–पृ.सं.–48
49. पयस्विनी–बजरंग लाल ''विकल''– पृ.सं. (आत्मनिवेदन)
50. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य बदलते मानदण्ड एवं स्वरुप–डॉ. कौशलनाथ उपाध्याय–पृ.सं.–202
51. वही, पृ.सं.–205
52. नवरत्न–काव्य–शतक–सम्पादनः युगल किशोर चतुर्वेदी–पृ.सं.–17
53. हमारे पुरोधा–8 : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी– पृ.सं.–77
54. वही, पृ.सं.–78
55. युग–वीणा–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय– पृ.सं.–18
56. शंखनाद–बजरंग लाल "विकल"–पृ.सं.–28
57. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य बदलते मानदण्ड एवं स्वरुप–डॉ. कौशलनाथ उपाध्याय–पृ.सं.–203/204

षष्ठम् अध्याय

उपसंहार

षष्ठम् अध्याय

उपसंहार

राष्ट्रीयता मानव में 'स्व' से ऊपर उठा हुआ मनोभाव है। यह एक ऐसा आदर्श है जिसके केन्द्र में राष्ट्र होता है। भूमि, जन, संस्कृति के प्रति आदर सम्मान का भाव राष्ट्रीयता का आधार है। राष्ट्रीयता की अवधारणा उतनी ही पुरानी है जितना राष्ट्र का निर्माण। आधुनिक राष्ट्रीय स्वरूप प्राचीन रूप से भिन्न है। आधुनिक युग में राष्ट्रीयता का स्वरूप क्षेत्रीयता की संकुचित भावना से ऊपर उठकर वृहत् एवं व्यापक हुआ है। यद्यपि आज जनमानस में राष्ट्रीयता के ओजस्वी–तेजस्वी भाव गहन रूप में विद्यमान है लेकिन विडम्बनीय स्थिति यह है कि वर्तमान भौतिकवादी युग में जनसमुदाय में राष्ट्रीय भावना धीरे–धीरे कमज़ोर पड़ने लगी है। व्यक्ति अपने स्वार्थ एवं महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति में इतना रमा हुआ है कि राष्ट्र कल्याण के कार्यों एवं कर्त्तव्यों को गौण समझने लगा है। हिन्दी रचनाकारों ने समय–समय पर कमज़ोर पड़ती राष्ट्रीय भावना को बलवती बनाने का प्रयास किया है। यही कारण है कि राष्ट्रीयता आधुनिक हिन्दी कविता की विशिष्ट प्रवृत्ति के रूप में उभर कर सामने आयी है।

हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों ने भी अपने कवि–कर्त्तव्य का निर्वहन करते हुए निरन्तर क्षय हो रही राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करने का सराहनीय कार्य किया है। राष्ट्रीय भावों की रचनाओं द्वारा इन कवियों ने जनहृदय में राष्ट्रीय भावना को संचारित किया है। देश के उत्थान–पतन के लिए उत्तरदायी कारणों पर प्रकाश डालकर उक्त अंचल के हिन्दी कवियों ने जनहृदय में राष्ट्रीय भावना को विकसित करने का कार्य किया है। स्वतंत्रता पूर्व से ही इन काव्यानुरागी कवियों द्वारा राष्ट्रीय भावना का उन्नयन किया गया। परतंत्रकालीन विषम परिस्थितियों में काव्य द्वारा आज़ादी का आह्वान करते हुए कवियों ने मातृभूमि के प्रति समर्पित भावों को प्रस्तुत किया। इन कवियों ने अंग्रेज शासकों के अन्याय एवं अत्याचारपूर्ण नीति का विरोध करते हुए देशवासियों में क्रान्तिकारी भावों एवं विचारों का भी स्फुरण किया। गुलामी की कठिन परिस्थितियों में देशवासियों ने जिस अदम्य साहस, शौर्य एवं

उत्साह से विदेशी सत्ताधारियों का मुकाबला करते हुए आज़ादी प्राप्ति हेतु प्रयास किया, उस शौर्य–प्रदर्शन की प्रवृत्ति को भी इन कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं में चित्रित किया है। इन कवियों ने न केवल देश के स्वाधीनता आन्दोलन में नवीन उत्साह का संचार किया अपितु इन्होंने देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। उस समय की सामन्ती व्यवस्था के प्रति कवियों ने तीव्र व्यंग्य भी प्रस्तुत किए हैं। तात्कालीन परिवेश में जागरुकता पैदा करने में भी ये कवि पीछे नहीं रहे थे। भारत के गौरवमय इतिहास के प्रेरणादायी प्रसंगों के माध्यम से उक्त अंचल के हिन्दी कवियों ने जन–मन को राष्ट्र–कल्याण हेतु प्रेरित करने का प्रयास किया। महापुरुषों की गौरव गाथाओं द्वारा कवियों ने भारतीयों में स्वाभिमान एवं विद्रोह का भाव जगाया। अंग्रेजों के शोषण व दमन के अंधकार में आशा का संचार करना उस समय की आवश्यकता थी। हाड़ौती अंचल के कवियों ने इस ज़रुरत को समझकर देशवासियों में हीन भावना के विरुद्ध आत्म–सम्मान का भाव जाग्रत करने का सराहनीय कार्य किया। स्वातंत्र्य भावना का आवेश कवियों के हृदय में गहराई तक विद्यमान था। पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' की ईश्वर प्रार्थना तक राष्ट्रीय भावों से ओत–प्रोत थी। बल–बलिदान एवं जन–जागरण के भावों से सजी कवियों की कविता ने मातृभूमि के प्रति सर्वस्व समर्पित करने के भाव व विचार व्यक्त किए। स्वाधीनता के संघर्षकाल में हाड़ौती अंचल के कवि सुधीन्द्र राष्ट्रीय काव्यकार थे। उनका काव्य राष्ट्रवासियों में नवीन आत्मबल, कर्मकौशल एवं उमंग पैदा कर देने वाला था। कवि की भावात्मक अनुभूतियाँ राष्ट्र की दुर्दशा एवं पीड़ा से जुड़ी हुई थी। उक्त अंचल में स्वतंत्रता पूर्व के कवि मदनलाल पवाँर ने भी देशवासियों में आत्मबल का संचार करने हेतु क्रान्तिकारी भावों व विचारों में आत्मबल का संचार करने हेतु क्रान्तिकारी भावों व विचारों को कवि ने अपनी रचना में समाविष्ट किया है। स्वतंत्रता पूर्व के इन कवियों ने देश के प्रति अपने दायित्व को भली–भाँति निभाया था। स्वराज्य की गहन आकांक्षा व शौर्य प्रदर्शन के भाव कवि हृदय में गहनता से जमे हुए थे। देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता के भावों का गहरा–प्रसार इनकी काव्य रचनाओं में दिखलाई देता है। मातृभूमि, स्वदेश–हित एवं स्वराज्य प्राप्ति से इन

कवियों को गहन अनुराग था। यही कारण था कि मातृभूमि वन्दना एवं स्वतंत्रता–प्रेम का सरस चित्रण इनके काव्य में अभिव्यंजित है। परतंत्र भारत की परिवेशगत सच्चाईयों का उद्घाटन हाड़ौती अंचल के इन कवियों के काव्य में हुआ है। इन कवियों के देश–प्रेम एवं भावोद्वेग को कभी भूलाया नहीं जा सकता। राष्ट्रीय काव्यधारा में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हाड़ौती अंचल के स्वतंत्रता पूर्व के इन हिन्दी कवियों को भले ही राष्ट्रीय हिन्दी काव्यधारा में वह स्थान नहीं मिल पाया जिस स्थान के वे अधिकारी थे परन्तु परतंत्र भारत में इन कवियों ने अपने कवि–कर्त्तव्य का जिस भाँति निर्वहन किया वह बहुत सराहनीय है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों की एक लम्बी शृंखला राष्ट्रीय भाव से प्रतिबद्ध रही है। स्वातंत्र्योत्तर पारिवेशिक विडम्बनाओं एवं विद्रूपताओं के विरुद्ध इस अंचल के हिन्दी रचनाकारों की रचनाओं में तीखी प्रतिक्रिया अभिव्यक्त हुई है। समयानुकूल परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल देश की बदलती राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व्यवस्था के स्वरूप की छवि को कवियों ने प्रस्तुत किया है। कवि प्रेमचन्द विजयवर्गीय, दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय', द्वारकालाल 'गुप्त', शांतिलाल भारद्वाज 'राकेश', बजरंग लाल "विकल", अम्बिकादत्त चतुर्वेदी जैसे कवियों ने देश की विसंगतिपूर्ण समस्याओं, उपलब्धियों, नये संदर्भों, नये प्रश्नों एवं नयी चेतना को रचनात्मक स्वरूप दिया है। आज़ाद भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था की राजनीतिक व्यवस्था में राजनेताओं के भ्रष्ट आचरण, दोगली नीतियों, सत्ता–लिप्सा, कथनी–करनी में अन्तर, झूठे आश्वासनों के यथार्थ अंकन के साथ–साथ जनहित एवं जनकल्याण के भावों को काव्य में समाविष्ट किया है। आज की भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था का काफी तीखा चित्रण इन्होंने अपनी कविताओं में किया है। जिस तरह आज निजी स्वार्थपूर्ति हेतु राजनेताओं द्वारा जातिवाद व भाषायी उन्माद को राजनीति की गर्म हवा से दहकाने का कार्य किया जा रहा है उस ओर भी इन कवियों का ध्यान गया है। राजनेताओं में सत्ता प्राप्ति की होड़ व आपाधापी के साथ प्रशासनिक कार्यालयों, कर्मचारियों में बढ़ते भ्रष्टाचार एवं अनुशासनहीनता पर कवियों ने रोष प्रकट किया है। युवा पीढ़ी में

शासन व्यवस्था के प्रति बढ़ते अविश्वास एवं विद्रोही प्रवृत्ति पर भी कवियों ने पैनी दृष्टि डाली है। शासन व्यवस्था की दोगली नीतियाँ व अन्तर्विरोधात्मक राजनीतिक स्वरूप इन कवियों के काव्य में चित्रित है। राजनीति में जातिवाद एवं सम्प्रदायवाद की स्थिति पर चिन्तन व्यक्त करते हुए इन कवियों ने देश की राजनीतिक व्यवस्था में ठोस परिवर्तन लाने की आकांक्षा को भी अभिव्यक्त की है।

स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक परिवेश के विभिन्न पहलुओं की सच्चाईयों को भी हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने उद्घाटित किया है। वर्तमान भारतीय समाज में विद्यमान जातिवाद, सम्प्रदायवाद, आतंक एवं भय का वातावरण, ग़रीबी, बेकारी इत्यादि विभिन्न समस्याओं के यथार्थ अंकन के साथ–साथ नये समाज निर्माण की कल्पना एवं अभिलाषा को कवियों ने अभिव्यक्त किया है। मूल्य परिवर्तन, आपसी रिश्तों में विघटन, अर्थकेन्द्रित दृष्टि, संयुक्त परिवार में बिखराव, दात्पत्य संबंधों में टूटन एवं स्त्री सशक्तिकरण जैसे विभिन्न पहलुओं पर भी इन कवियों ने ध्यानकेन्द्रित किया है। ऊँच–नीच का भेदभाव, अस्पृश्यता जैसी सामाजिक कुरीतियों पर उक्त अंचल के कवियों ने करारा व्यंग्य किया व विद्रोह किया है। बलात्कार जैसी मर्मांतक पीड़ा से गुजरने वाली महिलाओं के प्रति कवियों ने मार्मिक संवेदनात्मक विचारों को प्रस्तुत करते हुए उनके सुरक्षित एवं सम्मानित जीवन का समर्थन भी किया है। राष्ट्र निर्माण एवं विकास में युवा वर्ग की भागीदारी को ध्यान में रखते हुए युवा वर्ग की आशा, निराशा, कुण्ठा, घुटन एवं पीड़ा पर कवियों द्वारा चिन्तन किया गया है। समाज के विभिन्न वर्गों एवं समुदायों के मध्य प्रेमिल संबंधों का विकास करना इन कवियों का स्वप्न रहा है। समाज की संकटकालीन परिस्थितियों एवं निर्मम व्यवस्थाओं में सुधार करने का प्रयास कर इन कवियों ने देशोत्थान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। पारिवेशिक समस्याओं में सुधार लाने का प्रयास इन कवियों ने किया है साथ ही जनमानस को जनकल्याण हेतु अग्रसर करने का कार्य भी किया है।

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय अर्थव्यवस्था में समयानुसार बहुत अधिक परिवर्तन हुए हैं। औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण ने समाज में आर्थिक असमानता की उस खाई को तैयार किया जिसे आज भी नहीं भरा जा सकता है। निर्धनता एवं भूखमरी

ने देश की प्रगति एवं उन्नति को बाधित किया है। आय की असमानता से अमीर एवं ग़रीब वर्गों के मध्य जीवन शैली के स्तर में निरन्तर बढ़ रहे अन्तर पर उक्त अंचल का कवि दुःख प्रकट करता है। देश की आर्थिक व्यवस्था को सुधारने हेतु समय–समय पर बनायी जाने वाली सरकारी योजनाओं के खोखलेपन की सत्यता को इन कवियों ने बख़ूबी उद्घाटित किया है। देश की यांत्रिक प्रगति से ग्रामीण किसानों का शहरों की ओर पलायन करने से भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था को जो नुकसान पहुँच रहा है इस स्थिति को भी कवियों ने भली–भाँति पहचाना है। आज युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी एवं बेकारी तथा महंगाई की मज़बूरियों के दुःख दर्द में जीवन बिताते आम आदमी की ज़िन्दगी परेशानियों से घिरी हुई है। हाड़ौती अंचल के कवियों ने आम आदमी के जीवन की समस्याओं पर अपने संवेदनशील भावों को अभिव्यक्त करते हुए राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप देश के लिए नयी आर्थिक नीति को प्रस्तुत करते हुए समाज को नयी दिशा प्रदान करने की कोशिश की है। समतामूलक समाज के निर्माण पर भी इन कवियों ने जोर दिया है।

आज़ादी मिलने के बाद भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं एवं जीवन मूल्यों में भी बहुत अधिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। घटते सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति चिन्तन–मनन करते हुए हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति आस्था के स्वर भी व्यक्त किये हैं। राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' ने मानव मूल्यों को काव्य द्वारा प्रतिष्ठित करने का सराहनीय प्रयास किया है। यह सच भी है कि आज मानव मूल्यों द्वारा ही राष्ट्र एवं विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। वर्तमान भौतिकवादी युग में मानवता के संरक्षण एवं सहअस्तित्व की भावना के विकास हेतु सांस्कृतिक परम्पराओं एवं मानवीय मूल्यों का संरक्षण अति आवश्यक है। हाड़ौती अंचल के इन हिन्दी कवियों ने इस आवश्यकता को समझकर देश के सांस्कृतिक परिवेश के स्वरूप को काव्याभिव्यक्त किया है।

हाड़ौती अंचल के इन हिन्दी कवियों ने देश की बिगड़ती राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था पर तो चिन्तन–मनन किया है ही साथ ही देशवासियों में

विद्यमान एकता और अखण्डता की भावना को भी काव्यबद्ध किया है। देशवासियों के अन्तर्मन में आज भी देश के मान–सम्मान का भाव भरा हुआ है। आज देशवासियों के आपसी समन्वय से ही देश की एकता एवं अखण्डता सुरक्षित है। इन्हीं कारणों पर ध्यानकेन्द्रित करते हुए हाड़ौती अंचल के इन कवियों ने राष्ट्रघाती तत्त्वों के साथ–साथ उदात्त एवं सकारात्मक कार्यों से भी अवगत करवाया है। राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के संरक्षण हेतु इन कवियों ने राष्ट्र संबंधी उदात्त भावों को प्रभावकारी रूप में प्रस्तुत किया है। कवियों की आकांक्षा है कि देशवासी परस्पर जुड़े रहे इसलिए इन्होंने काव्य में मानवतावादी स्वर अभिव्यक्त किये हैं। इन कवियों ने देश की एकता व अखण्डता पर गर्व तथा अभिमान के जो मनोभाव व्यक्त किए हैं वह कवियों की राष्ट्र निष्ठा के परिचायक है। इन कवियों को यह विश्वास है कि जिस तरह आज तक देशवासियों ने राष्ट्रीय संकट की स्थितियों में धर्म एवं जाति के संकीर्ण बंधनों से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता को सुरक्षित रखा है उसी तरह भविष्य में भी राष्ट्रघाती तत्त्वों का साहस से सामना करते हुए राष्ट्रीय एकता को संरक्षित किया जायेगा।

निःसंदेह हाड़ौती अंचल के उक्त हिन्दी कवियों के काव्य की मूलधारा राष्ट्रीयता से अधिक जुड़ी रही है। इन कवियों ने जिस ईमानदारी एवं सच्चाई से स्वयं को राष्ट्रीय संदर्भों से जोड़े रखा है वह सराहनीय एवं प्रशंसा योग्य है। यह विडम्बनीय स्थिति ही है कि राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करने वाले इन कवियों का काव्य राष्ट्रीय हिन्दी काव्यधारा में उपेक्षणीय अधिक रहा है। भले ही हाड़ौती अंचल के अधिकांश हिन्दी कवि राष्ट्रीय हिन्दी काव्य की मुख्यधारा में जुड़ नहीं पाये लेकिन इन कवियों ने काव्य सृजन के माध्यम से जनजागरण के अपने कर्त्तव्य को बख़ूबी निभाया है। आंचलिक संस्कृति के उन्नयन में भी इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इन कवियों के देश–प्रेम एवं भावोद्वेग के जागरण भावों को कभी भूलाया नहीं जा सकता है। राष्ट्रीय हिन्दी काव्यधारा के विकास में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उक्त अंचल की राष्ट्रीय भाव की रचनाओं द्वारा हिन्दी साहित्य का विकास तो हुआ है ही साथ ही इन रचनाओं ने प्रारम्भ से आज तक देश–प्रेम, उन्नति एवं विकास

आदि भावनाओं को निरन्तर ताकत प्रदान करती रही है। इन कवियों के प्रखर चिन्तन ने देश में नित्यप्रति उठने वाले सवालों, समस्याओं एवं राष्ट्रीय संदर्भों का समाधान व संशोधन तलाशने का कार्य करते हुए समकालीन विचारों, स्थितियों एवं तथ्यों का रचनात्मक रूपान्तरण कर लोकहितकामी रचनाकार की भूमिका निभाई है। समाज में हो रहे परिवर्तनों के प्रति उक्त अंचल का कवि सदैव सजग रहा है। इन कवियों का काव्य पाठक को राष्ट्रहित की स्वस्थ प्रेरणा देता हैं तथा इनकी रचनाएँ पाठक की सोच एवं चिन्तन को गहरा एवं व्यापक बनाती है।

उम्मीद है कि हाड़ौती अंचल के इन कवियों के राष्ट्र–प्रेम एवं राष्ट्रीय भाव–बोध से अवगत होकर भावी पीढ़ी गौरवान्वित अवश्य महसूस करेगी। प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत हाड़ौती अंचल के हिन्दी कवियों की राष्ट्रीय भावना की विकास यात्रा के विवेचनात्मक अध्ययन को प्रस्तुत किया गया है। हाड़ौती अंचल के हिन्दी काव्य में समाविष्ट राष्ट्रीय भावना के स्वरूप से अवगत कराना ही प्रस्तुत शोध का लक्ष्य रहा है।

♦ ♦ ♦ ♦

साक्षात्कार

1. कवि डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'
2. कवि बजरंग लाल "विकल"
3. कवि अम्बिका दत्त चतुर्वेदी

एक साक्षात्कार : कवि दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय' के साथ

प्रश्न 1 आपका जन्म कब व किस स्थान पर हुआ?

उत्तर मूलतः ग्राम बरेड़ा तहसील खानपुर में मेरा परिवार था लेकिन मेरा जन्म ग्राम छजावा में 8 अप्रैल, 1929 को हुआ था।

प्रश्न 2 अपने परिवार के बारे में जानकारी दीजिए?

उत्तर मेरी माँ का नाम ब्रजकुंवर तथा पिताजी का मन्ना लाल जी था। मेरे पिता पटवारी थे। मेरे परिवार में मेरी पत्नी चाह कुँवर, मेरे पुत्र–पुत्री व पुत्रवधुएँ एवं पौत्र–पौत्री भी है।

प्रश्न 3 आपकी शिक्षा–दीक्षा कहाँ हुई?

उत्तर मैंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा कवाई, तहसील अटरू से की थी। सन् 1943 में मैं कोटा आया। यहीं से मैंने हाई स्कूल किया व कॉलेज में पढ़ाई की। कोटा से ही पीएच.डी., एल.एल.बी. एवं वकालत की है। प्रारम्भ से ही राजनीति, समाज एवं साहित्य में रुचि रही है।

प्रश्न 4. आपके परिवार के किस सदस्य का प्रभाव आप पर अधिक रहा?

उत्तर जब मैं तीन साल का था तभी मेरी माताजी का देहावसान हो गया था मुझ पर परिवार वाले का कोई प्रभाव नहीं पड़ा कारण यह है कि शुरु में मैं अकेला ही अधिक रहा था। मुझ पर प्रभाव आन्तरिक ही अधिक रहा है। अन्तः प्रेरणा का ही मेरे पर प्रभाव रहा है।

प्रश्न 5 आपकी जीवन यात्रा में घटित उन महत्त्वपूर्ण पहलुओं एवं घटनाओं के बारे में बताइये जिससे आपका जीवन अधिक प्रभावित हुआ?

उत्तर वैसे मुझे प्रेरणा देने वाली मेरी अन्तःप्रेरणा ही रही है लेकिन सन् 1957 में राजनीति में आने से मेरे जीवन में नया मोड़ आया। राजनीति में विधायक पद के कारण मुझे सम्मान मिला। इसके अलावा अखिल भारतीय विजयवर्गीय वैश्य महासभा, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, श्री भारतेन्दु समिति कोटा इन तीनों संस्थाओं ने मेरे जीवन को काफी प्रभावित किया है।

प्रश्न 6 आपको साहित्य सृजन की प्रेरणा कहाँ व कैसे मिली तथा आपने लिखना कब से प्रारम्भ किया?

उत्तर हाई स्कूल में मैं नाटकों में भाग लिया करता था। मैंने श्री हरि वल्लभ हरि के कायाकल्प नाटक में नायक नरेन्द्र का पाठ किया। इस तरह प्रारम्भ से ही साहित्य के प्रति मेरा रुझान रहा है। कक्षा 8 से ही मैं कविता लिखने लगा था। सबसे पहली कविता मेरी तुलसी जयन्ती पर थी।

प्रश्न 7 साहित्य की किन-किन विधाओं में आपने लेखन कार्य किया है और आपकी प्रिय विधा कौनसी है?

उत्तर मैंने गद्य एवं पद्य की कईं विधाओं में लेखन कार्य किया है। काव्य, कथा, नाटक, एकांकी मैंने लिखे हैं परन्तु काव्य ही मेरी सबसे प्रिय विधा रही है। कविता पर मेरी 20-23 किताबे हैं।

प्रश्न 8 आपकी रचना प्रक्रिया किस प्रकार की है?

उत्तर जैसा कि मैंने बताया कि साहित्य, समाज एवं राजनीति में शुरु से ही मेरा रुझान रहा है। मेरे अन्दर राष्ट्रीयता का भाव जगाने वाला राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ रहा है। प्रारम्भ में मेरी रचनाएँ प्रेम भाव से जुड़ी रही लेकिन बाद में मैंने राजनीति, समाज, दर्शन, संस्कृति सभी विषयों पर मैंने काव्य रचना की है।

प्रश्न 9 आपकी हिन्दी काव्य रचनाऐं देश की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवेश में से सबसे अधिक किससे जुड़ी हुई है?

उत्तर मेरी काव्य रचनाएँ देश के सामाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक परिवेश सभी से जुड़ी हुई है। मैंने देश पर होने वाले आक्रमणों के विरुद्ध लिखकर, सिपाहियों को प्रेरणा दी है तथा समाज को संस्कारित करने का कार्य भी किया है। दर्शन के प्रति मेरी जिज्ञासा सदैव ही रही है। मेरी रचनाओं में ये सभी भाव और विचार समाहित है।

प्रश्न 10 राष्ट्रीय समस्याओं व राष्ट्रीय उपलब्धियों के बारे में आप क्या सोचते हैं?

उत्तर देखिए! वातावरण हमेशा बदलता रहा है। आज समाज में भ्रष्टाचार, बाह्य आक्रमण की समस्या तथा अनेक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समस्याएँ हैं लेकिन देश ने विकास भी किया है। देश इस समय बहुत आगे बढ़ रहा है, इसमें बराबर विकास हो रहा है। विश्व में भारत नयी पहचान भी स्थापित कर रहा है।

प्रश्न 11 आपके कविता-संग्रहों में राष्ट्रीय स्वरुप की अभिव्यक्ति के बारे में जानकारी दीजिए?

उत्तर मैंने सन् 1942 के राजनैतिक आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था छिपाबड़ौद में बद्री प्रसाद चक्कीपति ने जुलूस निकाला था तो मैंने क्लास छोड़कर जुलूस में भाग लिया और जब जुलूस स्कूल के पास से निकला तो मैंने स्कूल में जाकर घंटी बजाकर छुट्टी करवा दी ताकि सब भाग ले सकें। उस समय मैं 13-14 साल का था। जिस व्यक्ति में अन्तस्फूर्त चेतना ज्यादा रहती है वही राष्ट्र के हित में काम करता है। मैंने यह सब किया है तथा राष्ट्रीय भावों को काव्यभिव्यक्त भी किया है। मेरी अनेक कविताएँ राष्ट्रीय स्वरूप से संबंधित है।

प्रश्न 12 आपकी हिन्दी कविताओं की भाषा-शैली के बारे में जानकारी दीजिए?

उत्तर मैंने अधिकतर संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषा में काव्य रचना की है। काव्य शैली विविध प्रकार की रही है।

प्रश्न 13 आप किन साहित्यक-सामाजिक संस्थानों से जुड़े रहे हैं?

उत्तर मैंने श्री भारतेन्दु समिति, विजयवर्गीय वैश्य महासभा, अखिल भारतीय साहित्य परिषद् तीनों संस्थाओं को जब वे मृत प्रायः जैसी हो गयी थी तब मैंने इन तीनों संस्थाओं में प्राण फूंके और इनका पहला प्रधानमंत्री बनकर पुनर्जीवित किया। इन तीनों संस्थाओं का राष्ट्रीय अध्यक्ष भी मैं बना।

एक साक्षात्कार : कवि बजरंग लाल "विकल" के साथ

प्रश्न 1 आपका जन्म कब व किस स्थान पर हुआ?

उत्तर मेरा जन्म 6 जनवरी 1938 को श्योपुर (म.प्र.) में हुआ था। यह संयोग ही था कि मेरी माँ अपने पीहर गयी और वहीं मेरे ननिहाल में मेरा जन्म हुआ।

प्रश्न 2 अपने परिवार के बारे में जानकारी दीजिए?

मेरे पिताजी श्री बद्रीलाल जी व माताजी सुन्नी बाई जी का निधन हो चुका है। अभी मेरी पत्नी सुशीला, एक पुत्र व पुत्रवधु तथा दो पुत्रियाँ मेरे परिवार में हैं। मेरे पिताजी ने मेरे लिए बहुत त्याग किया था और मेरी माताजी बहुत भोली-भाली महिला थी।

प्रश्न आपकी शिक्षा-दीक्षा कहाँ हुई?

उत्तर मेरे पिता वैसे कनवास के रहने वाले थे बाद में वे केशवरायपाटन आ गये थे तभी से मेरा परिवार यही है। मेरी प्रारम्भिक शिक्षा केशवरायपाटन में हुई बाद में मैंने कोटा से बी.ए. व एम.ए. किया। इसके बाद अध्यापक पद पर मैंने नौकरी की है।

प्रश्न4 आपके परिवार के किस सदस्य का प्रभाव आप पर अधिक रहा?

उत्तर वैसे प्रभावित तो मैं यूँ समझिए सभी से रहा। पिताजी व माताजी ने त्याग किया लेकिन मेरी दादीजी से मैं बहुत प्रभावित था। वह मुझे बहुत चाहती थी, उनकी वजह से ही मैं आगे पढ़ सका। उस समय बाल विवाह होते थे तो मेरा भी विवाह कर दिया था तथा पिताजी ने पढ़ाने से इन्कार कर दिया। मैं भी थोड़ा ढीला था और एक दिन अकेले ही पढ़ने के लिए कोटा निकल गया। मेरी दादीजी मेरे पीछे आयी और एक कोठरी में मेरे साथ रहने लगी उसी कोठरी में मैं पढ़ता था। मेरी दादीजी ने जो त्याग और तपस्या की मेरे लिए मैं उनको कभी विस्मरण नहीं कर सकता।

प्रश्न 5 आपकी जीवन यात्रा में घटित उन महत्त्वपूर्ण पहलुओं एवं घटनाओं के बारे बताइये जिससे आपका जीवन अधिक प्रभावित हुआ?

उत्तर ऐसा हुआ था जब मैं छोटा था तो सामने सौभाग्य बिहारी जी रहते थे। उनकी दृष्टि मुझ पर पड़ी और उन्होंने मेरी निगरानी की। उनकी बहन मुझे पढ़ाती थी। एक बार उनके पिताजी गोपाल जी (दाई साहब जी) ने मुझे एक बार थप्पड़ मार दिया तो मैं चार-पाँच दिन पढ़ने नहीं गया। एक दिन उनकी बहन मुझे घर आकर ले गयी और बहुत स्नेह दिया। उस समय मैं भी शरारती था एक दिन दाई जी मुझे संघ शाखा के कार्यालय में ले गये वहाँ कार्यालय में जब एक से पढ़कर एक कथा, कहानियाँ व अन्य किताबों को पढ़ा तो एक उत्तेजना पैदा होने लगी और मेरा झुकाव साहित्य की तरफ बढ़ता गया। वहाँ के साहित्य ने मुझे प्रेरणा दी। सातवीं कक्षा में ही मैं कविताएँ रचने लग गया।

प्रश्न 6 आपको साहित्य सृजन की प्रेरणा कहाँ व कैसे मिली तथा अपने लिखना कब से प्रारम्भ किया?

उत्तर देखिए! वैसे तो कविता हृदय से निकलती है। पर जैसा मैंने बताया कि संघ शाखा के कार्यालय में जाने से बहुत चाव से मैं प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी की कविताएँ पढ़ा करता था। हमारे उस समय एक कवि थे -बालचन्द जी। जब उन्होंने मेरी कॉप देखी जिसमें मैंने कविताएँ लिखी थी तब उन्होंने मेरी प्रतिभा को पहचाना और मुझे कविता रचने के लिए प्रेरित करने लगे। उस समय एक सामाजिक पत्र निकलता था जिसमें उन्होंने मेरी कविता भेजी थी। इस तरह मैं कक्षा 7 से ही मैंने काव्य रचना करना आरम्भ कर दिया था।

प्रश्न 7 साहित्य की किन-किन विधाओं में आपने लेखन कार्य किया है और आपकी प्रिय विधा कौनसी है?

उत्तर मैंने कहानी, गीत, कविता, ग़ज़ल व रुबाईयाँ लिखी हैं जो समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। 'मधुमती' व 'राष्ट्रधर्म'

जैसे पत्रों में मेरी ये रचनाऐं छपती थी। वैसे मुझे सभी विधाएँ अच्छी लगती है लेकिन फिर भी कविता मेरी प्रिय विधा रही हैं।

प्रश्न 8 आपकी रचना प्रक्रिया किस प्रकार की है?

उत्तर मैंने अपनी पहली कविता चन्द्रग्रहण पर लिखी थी जिसकी दो पंक्तियाँ मुझे अभी भी याद है– 'चन्द्र का यह रूप सारा जा रहा है, चन्द्रमा तू शोक क्यूँ अब ला रहा है।' इसके बाद मैं निरन्तर कविताऐं लिखता रहा। मैंने राष्ट्रीयता, प्राकृतिक दृश्यों, प्रेम, दर्शन सभी पर रचनाऐं की है। मैंने दो–चार हास्य रस की कविताऐं भी रची हैं। मुझे अपनी कविताओं को जीवित रखने में बहुत कठिनाई होती थी लेकिन मेरा मन कविताओं में रमा रहता था।

प्रश्न 9 आपकी हिन्दी काव्य रचनाऐं देश की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवेश में से सबसे अधिक किससे जुड़ी हुई है?

उत्तर सभी क्षेत्रों पर मैंने कविताएँ लिखी है। सभी क्षेत्रों से मेरी कविताएँ जुड़ी हुई है। कविताओं में राष्ट्रीय भाव तो प्रमुख है ही परन्तु जब बालक तथा स्त्री पर लिखी गई कुछ कविताएँ मेरे खुद के अनुभव की कविता थी जो 'शंखनाद' और 'पयस्विनी' काव्य संग्रह में संकलित है। कुछ कविताओं को तो मैंने सारी रात जागकर लिखा है।

प्रश्न 10 राष्ट्रीय समस्याओं व राष्ट्रीय उपलब्धियों के बारे में आप क्या सोचते हैं?

उत्तर उपलब्धियाँ तो देश ने निश्चित रूप से प्राप्त की है। हम आगे बढ़े हैं, देश आगे बढ़ा है लेकिन देश जिस दिशा में आगे बढ़ रहा है वह एक अंधी दिशा है जो देश को कहाँ लेकर जायेगी पता नहीं। स्वराज्य अभी भी नहीं मिला। हम विदेशी भाषा व अंग्रेजी पढ़ने में रूचि लेते हैं पर अपनी भाषा व स्वदेशी चीजों में कम रूचि रखते हैं। यह अन्धी दिशा ही तो है। टेक्नोलॉजी में मैं विदेशी चीजों को अपनाना फिर भी ठीक है। साम्प्रदायिकतावाद, जातिवाद जैसी समस्याओं को एक होकर ही दूर किया जा सकता है। साम्प्रदायिकतावाद के बारे में इतना ही कह सकता

हूँ कि हम एक–दूसरे धर्म का आदर करें, सहिष्णुता रखें। मेरे बहुत सारे मुसलमान मित्र हैं। मैंने इसाई बालक को भी लाखेरी में पढ़ाया है। देश के विकास में सभी की भागीदारी होना जरुरी है।

प्रश्न 11 आपके कविता–संग्रहों में राष्ट्रीय स्वरूप की अभिव्यक्ति के बारे में जानकारी दीजिए?

उत्तर राष्ट्रीयता मेरी कविताओं का प्रमुख भाव रहा है। राष्ट्र में एकता हो, स्वदेशी के आधार पर राष्ट्र का निर्माण होना चाहिए। इसी उद्देश्य से राष्ट्रीय भावों को काव्य में अभिव्यक्त किया है। मैंने हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम भी पैदा करना चाहा है। हिन्दी के प्रति प्रेम तो हृदय में बसा ही हुआ है।

प्रश्न 12 आपकी हिन्दी कविताओं की भाषा–शैली के बारे में जानकारी दीजिए?

उत्तर सामाजिक कविताओं में आम बोलचाल व लोकभाषा में काव्य रचना की है क्योंकि लोकभाषा में प्रचारात्मकता अधिक रहती है। काव्य शैली मेरी विभिन्न प्रकार की रही है। मेरी 'पयस्विनी' और 'शंखनाद' रचनाएँ एक अलग शैली में लिखी गयी रचनाऐं हैं और 'वाग्मिता' एक अलग तरह की शैली में है। 'वाग्मिता' में पंत व निराला ने जो शैली अपनायी थी उस तरह की शैली का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 13 आप किन साहित्यिक–सामाजिक संस्थानों से जुड़े रहे है?

उत्तर श्री भारतेन्दु समिति, कोटा व अखिल भारतीय साहित्य परिषद से में जुड़ा रहा हूँ। साहित्य श्री का सम्मान मुझे भारतेन्दु समिति, कोटा द्वारा दिया गया।

एक साक्षात्कार : कवि अम्बिका दत्त चतुर्वेदी के साथ

प्रश्न 1 आपका जन्म कब व किस स्थान पर हुआ?

उत्तर मेरा जन्म 20 जून, सन् 1956 को अन्ता, जिला बाराँ में हुआ है।

प्रश्न 2 अपने परिवार के बारे में जानकारी दीजिए?

उत्तर मेरे पिताजी श्री जुगलकिशोर चतुर्वेदी व माताजी श्रीमती चंचल देवी का निधन हो गया है। अभी मेरे परिवार में मेरी पत्नी श्रीमती इन्दिरा देवी व पुत्र तरुण व पुत्री वृन्दा है। हम तीन बहन-भाई है। मेरे भाई का नाम दिनेश व बहन का नाम मधु है।

प्रश्न 3 आपकी शिक्षा-दीक्षा कहाँ हुई?

उत्तर मेरे पिता चूंकि सरकारी नौकरी में थे तो उनके स्थानान्तरण के कारण मेरी आठवीं कक्षा तक की शिक्षा अलग-अलग कई जगहों पर हुई थी। कक्षा 9 व 10वीं की पढ़ाई मैंने अन्ता से की है। इसके बाद मैंने हिन्दी साहित्य, अंग्रेजी साहित्य व दर्शनशास्त्र विषय लेकर स्वयंपाठी के रूप में राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से बी.ए. किया। इसी समय यानी पढ़ाई के समय में ही सन् 1977 में मैंने एल.डी.सी. की सरकारी नौकरी मिल गयी तब मैंने आरोन गाँव में एल.डी.सी. की नौकरी की। बी.ए. के बाद मैंने अवैतनिक अवकाश लेकर उदयपुर में बी.एड. किया। बी.एड. करते समय ही मैंने R.T.S. की परीक्षा दी उसमें प्रथम प्रयास में सफल रहा व तहसीलदार बना। बाद में पदोन्नति होकर में R.A.S. बना।

प्रश्न 4 आपके परिवार के किस सदस्य का प्रभाव आप पर अधिक रहा?

उत्तर मेरे पिता के गृहस्थी जमाने में स्थायी स्वभाव न होने के कारण पूरा परिवार सदैव ही संकटापन्न रहता था लेकिन मेरी माँ सुदृढ़ता के साथ, अच्छे संस्कारों के साथ संघर्ष करते हुए जुड़ी रहती थी। इस तरह माता के संघर्ष, अनुशासन, उच्च आदर्श, उच्च संस्कार, स्वाभिमान से मैं बहुत

प्रभावित रहा हूँ । मेरी माँ के उस परिश्रम, साहस व संघर्ष ने मुझे सदैव प्रभावित किया है।

प्रश्न 5 आपकी जीवन यात्रा में घटित उन महत्वपूर्ण पहलुओं एवं घटनाओं के बारे में बताइये जिससे आपका जीवन अधिक प्रभावित हुआ?

उत्तर मेरी किशोरावस्था में ऐसा समय भी आया था जब बहुत आर्थिक विपन्नता का सामना मेरे परिवार को करना पड़ा था। मेरे पिता चूंकि बाहर रहते थे और वे अपने परिवार की ज्यादा चिन्ता नहीं करते थे। मेरे पिता नियमित नौकरी नहीं करते थे तो उनकी तनख्वाह भी रुक जाती थी या फिर वे सस्पेन्ड भी हो जाते थे तो पैसा भी मनीआर्डर से नहीं आ पाता था। ऐसे समय में मेरी माता मजदूरी करती थी, हलवाई वालों के पूड़ी बेलने भी जाती थी और मुझे भी कई बार लकड़ियाँ वगैरह जंगल से लानी पड़ती थी। हमने भोजन की उपलब्धता का अभाव भी देखा था। गरीबी के संकट के बहुत करीबी से हमने दर्शन किए हैं। उस संकट के समय में भी मेरी माता दृढ़ता के साथ अपने परिवार के साथ जुड़ी थी। अपनी माँ के संघर्ष के कारण ही मैं मैक्सिम गॉर्की की मदर के समान अपनी माँ को मानता हूँ। माँ के उस परिश्रमी व्यक्तित्व से मैं अपने जीवन में बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

प्रश्न 6 आपको साहित्य सृजन की प्रेरणा कहाँ व कैसे मिली तथा आपने लिखना कब से प्रारम्भ किया?

उत्तर पढ़ने की रूचि तो शुरु से ही थी। जब मेरे पिताजी पुस्तकालय प्रभारी थे तब उनके साथ जाता था तथा पुस्तकालय में पढ़ने लगता था। बाल्यकाल में जो समझ में आता था वह पढ़ता था। जब मैं 8वीं कक्षा में था तब ही मैं जासूसी उपन्यास पढ़ने लग गया था। बाद में मैंने अन्ता में प्रसाद, पंत, निराला इत्यादि साहित्यकारों का उच्च कोटि का साहित्य पढ़ा। इसी

समय में मैं लिखने भी लगा। 1977 में मधुमती में कविता छप गयी थी। जयपुर आकाशवाणी केन्द्र में भी मैं अपनी प्रस्तुति देने चला गया था। अन्ता की अणहद संस्था में भी मैं जुड़ा रहा जहाँ अनेक साहित्यकारों जैसे–गिरिधारी लाल जी, दुर्गा लाल सिंह गौड जैसे कवियों से जुड़ा रहा था। तब ही मैंने अपने प्रथम कविता संग्रह 'लोग जहाँ खड़े हैं' कि पाण्डुलिपि तैयार कर ली थी।

प्रश्न 7 साहित्य की किन–किन विधाओं में आपने लेखन कार्य किया है और आपकी प्रिय विधा कौनसी है?

उत्तर साहित्य में मैं मूलतः कवि रहा हूँ। हिन्दी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में कविताएँ है। मैंने कुछ लघु कथाएँ, कुछ व्यंग्य लेख, कुछ पुस्तकों पर समीक्षाऐं व कुछ स्वतंत्र लेख भी लिखे हैं। प्रिय विधा मेरी कविता ही है।

प्रश्न 8 आपकी रचना प्रक्रिया किस प्रकार की है?

उत्तर मैंने जीवनानुभवों पर रचनाऐं लिखी हैं। विविध भाव मेरी कविताओं में है। मेरी कविताओं की हर जगह संभावना हो सकती है। मैं सोचता हूँ कवि बहुत संवेदनाओं से जुड़ा व्यक्ति ही हो सकता है। प्रकृति, प्रेम, दर्शन, जीवन संघर्ष, राग, विराग, द्वेष, संताप व राष्ट्रीयता सभी अनुभूतियों पर मैंने कविताओं का सृजन किया है। अनुभूतियाँ मेरी कविताओं में प्रमुख है।

प्रश्न 9 आपकी हिन्दी काव्य रचनाऐं देश की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिवेश में से सबसे अधिक किससे जुड़ी हुई है?

उत्तर देखिए! कवि आस–पास के वातावरण का उपजीव्य होता है। जहाँ तक राष्ट्र को कमज़ोर करने वाले चीजें हैं तो उसकी चिन्ता कवि के काव्य में आती ही है चाहे किसी भी रूप में आयेगी। अगर हम अपने कार्य सही नहीं कर रहे हैं, अगर समाज में विसंगतियाँ बढ़ रही है, हम नौकरी ढंग

से नहीं कर रहे हैं तो ये सारी चिन्ताऐं लेखन में आती ही है। समाज के विविध पहलुओं पर कवि बात करता है तो वह राष्ट्र को बचाने की ही बात करता है। मैंने समाज के दबे, कुचले व्यक्ति की संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। मैं कविताओं में इस वर्ग के लिए समानता, उनकी गरीबी से मुक्ति की बात कहता हूँ। परोक्ष रूप से राष्ट्र को बचाने की ही बात कहता हूँ। मैं और मेरी कविता समाज के इस कमज़ोर वर्ग के साथ ही खड़ी है।

प्रश्न 10 राष्ट्रीय समस्याओं व राष्ट्रीय उपलब्ध्यिों के बारे में आप क्या सोचते हें?

उत्तर दरअसल किसी भी देश में प्रगतिशील एवं प्रतिगामी शक्तियाँ साथ–साथ चलती है। प्रतिगामी शक्तियों से कुरीतियाँ व विसंगतियाँ पैदा होती है लेकिन प्रगतिशील शक्तियों ने देश की उन्नति की है। आज़ादी के बाद हमारे देश ने आर्थिक, तकनीकि, कला, संस्कृति व वैचारिक उन्नति की हैं भौतिक संसाधनों में वृद्धि हुई है। इलेक्ट्रोनिक मीडिया का आना तो देश में चमत्कार की भाँति ही है। इन सबके बावजूद वर्तमान बहुत विसंगतियाँ है। जाति, वर्ग धर्म के आधार पर लोगों को आज भी जो पीड़ा भुगतनी पड़ रही है वह अब भी चिन्ताजनक है।

प्रश्न 11 आपके कविता–संग्रहों में राष्ट्रीय स्वरुप की अभिव्यक्ति के बारे में जानकारी दीजिए?

उत्तर देखिए! राष्ट्रीयता की प्रत्यक्ष बात करना तो आसान है लेकिन राष्ट्र को कमजोर करने वाले तत्त्वों को समझकर उन्हें सुधारने का प्रयास करना ही प्रमुख राष्ट्रीयता है। राष्ट्रीय चेतना तो लेखक के लेखन का आधार सदैव रही है। देशकाल, परिस्थितियाँ भले ही बदल जाती है पर राष्ट्र–चेतना, समाज सुधार व आदर्श चेतना प्रत्येक कवि के लेखन में सदैव विद्यमान रहती है। आज समय वैसा नहीं रह गया है कि देश के लिए कुर्बान होना, आन्दोलन करना ही राष्ट्रीयता हो। अब वैसे विचारों को बड़ा स्थूल विचार

कहा जायेगा। अब राष्ट्र को बनाने का काम है, देश की भक्ति का काम प्रमुख है। लेखक एक रैली निकालने का काम नहीं करता, आन्दोलन करने का काम नहीं करता, वह लेखन का काम करता है इसलिए उसके आस-पास का वातावरण उसका उपजीव्य बनता है। मैंने जीवनानुभूतियों की कविताओं के द्वारा राष्ट्र सेवा ही की है। मेरी कविताओं में कमजोर व दबे कुचले वर्ग के दुख दर्द व सम्मान का जो स्वर है वह भी परोक्ष रूप में राष्ट्रीयता का ही स्वर है। वह भी स्वतंत्रता, समानता और मुक्ति का ही स्वर ही है।

प्रश्न 12 आपकी हिन्दी कविताओं की भाषा-शैली के बारे में जानकारी दीजिए?

उत्तर दरअसल मुझे कविता का जो संस्कार मिला है वह आधुनिक हिन्दी कविता से मिला है। नयी कविता के काल से मिला है। तारसप्तक के जो कवि हैं रघुवीर सहाय, अज्ञेय, मुक्तिबोध है इसके अलावा धूमिल है इत्यादि कवियों से मैंने भाषा का संस्कार सीखा है। समकालीन कवियों में ऋतुराज, नंद चतुर्वेदी, हरीश भादानी आदि ने जो कविताऐं लिखी हैं उनसे भाषा का संस्कार किया है। मेरी कोशिश ये रही है कि कविता में जो व्यंजना है वह भले ही गूढ़ हो पर सम्प्रेषण की भाषा अभिधा हो। इसलिए मैंने आम बोल चाल की भाषा में कविताएँ लिखी है। मेरी कविता में लाक्षणिकता भी है।

प्रश्न13. आप किन साहित्यिक-सामाजिक संस्थानों से जुड़े रहे हैं?

उत्तर मैं कोई सांगठनिक व्यक्तित्व नहीं हूँ किन्तु कई मित्र व सहयोगियों के साथ मित्रता व सहृदयता जुड़ी रहने के कारण मैं कुछ संगठनों में सक्रिय रूप में कार्य किया है। 'अणहद' से मैं ज्यादा जुडा रहा हूँ प्रगतिशील लेखक संघ में भी मेरे मधुर संबंध रहे हैं। 'कचनार' पत्रिका में भी मैंने सक्रिय रूप से कार्य किया है। मैं किसी भी संगठन का पदाधिकारी नहीं रहा, आना-जाना कभी-कभी मेरा अवश्य रहा है।

♦ ♦ ♦ ♦

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

1. हाड़ौती का स्वतंत्रता आन्दोलन–सम्पादक : डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'–प्रकाशक : रा. वि. हाड़ौती शोध प्रतिष्ठान, कोटा–प्रथम संस्करण, 15 अगस्त 1973
2. हमारे पुरोधा : सुधीन्द्र–नंद चतुर्वेदी–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–प्रथम संस्करण, 1992
3. नवरत्न–काव्य–शतक–संकलन : सुश्री शकुन्तला रेणु–सम्पादन : युगलकिशोर चतुर्वेदी–प्रकाशक : पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्म शताब्दी समारोह समिति
4. क्रान्ति–किरण–मदनलाल पवाँर–मुद्रक : जैन प्रिन्टिंग प्रेस रामपुरा बाजार, कोटा
5. देश का दर्द–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–अर्चना प्रकाशन, अजमेर – प्रकाशन वर्ष : 1997
6. युग–वीणा–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–अर्चना प्रकाशन, अजमेर–प्रकाशन वर्ष : जनवरी 1978
7. गूँज रही शहनाई–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–कलायतन धानमंडी, कोटा–प्रथम संस्करण, 1962
8. सुधी–भीगा–मन–डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–अर्चना प्रकाशन, अजमेर–प्रथम संस्करण, 1983
9. श्वेत शिखरों पर धूप बिम्ब–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली–प्रथम संस्करण, 1987
10. आञ्जनेय–डॉ दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'– अर्चना प्रकाशन, अजमेर–प्रकाशन वर्ष : 1978
11. त्रिपादिका (हिन्दी हाइकु)–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय 'विजय'–विजय प्रकाशन, कोटा–प्रकाशन वर्ष : 2000
12. अभिनन्दन ग्रंथ : शाश्वत अनुष्ठान के मृत्युंजय मंत्र, डॉ. दयाकृष्ण 'विजय'–प्रबंध सम्पादक : डॉ. प्रेमचन्द विजयवर्गीय–डॉ. दयाकृष्ण विजयवर्गीय अमृत महोत्सव समिति, कोटा–प्रकाशन वर्ष : प्रथम, 2003
13. इतने वर्ष–डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'–गीतांजलि प्रकाशन, कोटा–सन् 1985
14. समय की धार–डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'–अंजलि सहकारी प्रकाशन, अजमेर
15. द्वार खुले हैं–डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'–गीतांजलि प्रकाशन, कोटा–प्रथम संस्करण, 1999

16. परीक्षित–डॉ. शांति भारद्वाज 'राकेश'–चित्रगुप्त प्रकाशन, अजमेर–प्रथम संस्करण, 1969
17. लालकिला बनाम लोकतंत्र–द्वारका लाल 'गुप्त'–स्वाति अकादमी, दिल्ली–प्रथम संस्करण, 2008
18. संकल्प–गीत–द्वारकालाल 'गुप्त'–अर्चना प्रकाशन, अजमेर–प्रथम संस्करण, 1989
19. कही–अनकही–द्वारका लाल 'गुप्त'–बाबा पब्लिकेशन, जयपुर–संस्करण, 2015
20. जीवन के रंग सात–द्वारका लाल 'गुप्त'–बाब पब्लिकेशन, जयपुर–संस्करण, 2013
21. राष्ट्र देवो भवः–द्वारका लाल 'गुप्त'–बाबा पब्लिकेशन, जयपुर–संस्करण, 2015
22. पयस्विनी–बजरंग लाल "विकल"–मुद्रण : विलास ऑफसेट प्रिन्टर्स नयापुरा, कोटा–प्रथम संस्करण 2002
23. शंखनाद–बजरंग लाल "विकल"–विकल प्रकाशन केशवरायपाटन, बून्दी–प्रथम संस्करण 2002
24. वाग्मिता–बजरंग लाल "विकल"–राघव पब्लिकेशन, जयपुर–संस्करण 2013
25. लोग जहाँ खड़े हैं–अम्बिकादत्त–चयन प्रकाशन, बीकानेर –प्रथम संस्करण, 1987
26. दामित आकांक्षाओं का गीत–अम्बिकादत्त–बोधि प्रकाशन, जयपुर–प्रथम संस्करण, 2000
27. आवों में बारहों मास–अम्बिकादत्त–बोधि प्रकाशन, जयपुर–प्रथम संस्करण, 2010
28. अम्बिकादत्त–सम्पादक : विनोद पदरज–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–प्रकाशन वर्ष : 2014
29. दूसरों के सहारे नहीं–बृजेन्द्र कौशिक–लोकहित प्रकाशन, कोटा–1999
30. थिरक उठेगी धरती–महेन्द्र नेह–शब्दालोक प्रकाशन, दिल्ली–प्रकाशन वर्ष : 2009
31. नदी के कछार पर–सम्पादक : अम्बिकादत्त–बोधि प्रकाशन, जयपुर–प्रथम संस्करण, 2011
32. हवन और हुंकार–वीरेन्द्र विद्यार्थी–शिवा प्रकाशन, कोटा–प्रथम संस्करण, 2006
33. कोटा–काव्य–गंधा–सम्पादक : डॉ. दयाकृष्ण 'विजय'–श्री भारतेन्दु समिति, कोटा–संस्करण, 1983
34. रण–रागिनी–गजेन्द्र सिंह सोलंकी–गागर प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स–संस्करण, 2004
35. हाड़ौती अंचल के कवि–सम्पादक : दयाकृष्ण विजय, बृजेन्द्र, कौशिक, शचीन्द्र उपाध्याय–श्री भारतेन्दु समिति, कोटा–प्रथमावृत्ति
36. स्वर्ण–कलश (कविता संकलन)–श्री भारतेन्दु समिति, कोटा–प्रथम संस्करण संवत 2035 विक्रमी

37. तेवर (काव्य संग्रह)– सम्पादक : प्रेम प्रकाश मिश्रा 'रोशन' कानपुरी–संगम : हिन्दी, उर्दू एवं हाड़ौती का सांस्कृतिक समन्वय मंच, कोटा–सितम्बर, 1978
38. सच के ठाठ निराले होंगे–महेन्द्र नेह–बोधि प्रकाशन, जयपुर–प्रथम संस्करण, 2004
39. रजत किरण–सम्पादक मण्डल : गजेन्द्र सिंह सोलंकी, श्री नन्दन चतुर्वेदी, जमुनाप्रसाद ठाडा 'राही'–श्री भारतेन्दु समिति, कोटा–प्रथम आवृत्ति 15 अगस्त 1973
40. हाड़ौती अंचल का विजय घोष–सम्पादक : गजेन्द्र सिंह सोलंकी–श्री भारतेन्दु समिति, कोटा–प्रथमावृत्ति–वर्ष प्रतिपदा संतव् 2029 वि.
41. हाड़ौती अंचल का स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य – श्री भारतेन्दु समिति, कोटा
42. महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण कृत वीर सतसई–सम्पादक : डॉ. कन्हैया लाल सहल, ईश्वरदान आशिया,पतराम गौड– राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर–तृतीय संस्करण, 1992
43. हाड़ौती अंचल की हिन्दी काव्य परम्परा और विकास–डॉ. नरेन्द्र चतुर्वेदी–बोधि प्रकाशन, जयपुर–प्रथम संस्करण, 2011
44. पूर्व स्वतंत्रता कविता में राष्ट्रीय एकता – डॉ. कृष्ण भावुक–शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली–प्रथम संस्करण, 1995
45. राष्ट्रीय काव्यधारा–सम्पादक : डॉ. कन्हैया सिंह–वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–प्रथम संस्करण, 1992
46. माखनलाल चतुर्वेदी और वि.दा. सावरकर की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना–डॉ. सुभाष महाले–चन्द्रलोक प्रकाशन, जयपुर–संस्करण, 1997
47. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह–राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली–प्रथम संस्करण, 1996
48. समकालीन कविता और लीलाधर जगूड़ी–डॉ. ब्रजमोहन शर्मा–नालन्दा प्रकाशन, नई दिल्ली–प्रथम संस्करण, 1993
49. साठोत्तर हिन्दी काव्य में राजनीतिक चेतना–डॉ. एस. गम्भीर–विद्या विहार, कानपुर–प्रथम संस्करण, 1992
50. महिला सशक्तिकरण–मानचन्द खंडेला–अरिहंत पब्लिशिंग हाउस, जयपुर–प्रथम संस्करण, 2002
51. आधुनिक हिन्दी राष्ट्रीय काव्यधारा : राष्ट्रीयता और मानवतावाद–सम्पादक : प्रो. नरेश मिश्र–संजय प्रकाशन, नई दिल्ली–प्रथम संस्करण, 2004
52. साठोत्तरी हिन्दी कविता में जनवादी चेतना–नरेन्द्र सिंह–वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली–प्रथम संस्करण, 1990

53. निराला के काव्य बिम्ब और प्रतीक–वेदव्रत शर्मा–आशा प्रकाशन गृह, नई दिल्ली–संस्करण 1973

54. मुक्तिबोध काव्य का शैली तात्विक अध्ययन–ज्योत्सना पाण्डे–गिरधर सन्स, जयपुर–जुलाई 1989 में प्रकाशित

55. समकालीन कविता में छन्द–सम्पादक : सच्चिदानन्द वात्स्यायन–नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली–प्रथम संस्करण, 1987

56. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य बदलते मानदण्ड एवं स्वरूप–डॉ. कौशलनाथ उपाध्याय–राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर–प्रथम संस्करण, 1994

57. काव्य के तत्त्व–आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा–लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–संस्करण, 1994

58. श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी–सम्पादक : डॉ. सरला अग्रवाल–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–प्रकाशन वर्ष, 2007

59. मधुमती : गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' जन्मशती विशेषांक–सम्पादक : प्रकाश आतुर–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–अंक : नवम्बर–दिसम्बर, 1985

60. राजस्थान साहित्यकार प्रस्तुति : डॉ. ओंकारनाथ चतुर्वेदी –सम्पादक : अतुल कनक – राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–प्रकाशन वर्ष : सन् 2008

61. हिन्दी साहित्य का इतिहास–सम्पादक : डॉ. नगेन्द्र–मयूर पैपर बैक्स, नौएडा–प्रथम संस्करण, 1973

62. स्मारिका : अखिल भारतीय साहित्य परिषद, शाखा–कोटा–वर्ष 1987

63. स्मारिका : जनकवि जमनाप्रसाद ठाड़ा 'राही', प्रथम स्मृति समारोह–जनवादी लेखक संघ, कोटा–31 अक्टूबर–1 नवम्बर, 1982

64. स्मारिका : पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का साहित्य और मूल्यांकन (अखिल भारतीय प्रबुद्ध परिचर्या)–दिनांक 19–20 जुलाई 1986

65. हिन्दी कविता में युगान्तर–डॉ. सुधीन्द्र–आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली–दूसरा संस्करण, 1957

66. भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं समस्याएँ – डॉ. एम.एम. लवानिया–कॉलेज बुक डिपो, जयपुर

67. भारत में सामाजिक समस्याएँ एवं सामाजिक परिवर्तन–डॉ. एम.एम. लवानिया–कॉलेज बुक डिपो, जयपुर

68. हमारी समस्याएँ–हरिनन्द शास्त्री–राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

69. मधुरम ब्लॉग : हमारे पुरोधा मास्साब मदन लाल पवाँर (लेख)–डॉ. नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी–बुधवार 4 दिसम्बर 2013

70. हमारे पुरोधा : डॉ. शान्तिलाल भारद्वाज 'राकेश'–सम्पादक : अम्बिकादत्त– राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर–प्रथम संस्करण 2013

71. डॉ. दयाकृष्ण 'विजय' व्यक्तित्व एवं कृतित्व–श्रीमती शांति उपाध्याय–अचर्ना प्रकाश, अजमेर–प्रथम संस्करण, 1985

72. हाड़ौती के बोलते शिलालेख–एस.आर. खान, जमनाशंकर पंचौली–राजस्थान हाड़ौती शोध प्रकाशन, कोटा–संस्करण 1998

73. नई कविता कथ्य एवं विमर्श–डॉ. अरुण कुमार–चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद–प्रथम संस्करण 1988

74. श्री गदाधर भट्ट का साहित्य : एक परिदृश्य–भट्ट प्रकाशन, झालावाड़–14 सितम्बर, 2012

पत्र–पत्रिकाएँ

1. मधुमती (मासिक पत्रिका)– राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
2. राष्ट्रधर्म (मासिक पत्रिका) लखनऊ, उत्तरप्रदेश
3. साहित्य चन्द्रिका (साहित्यिक–सांस्कृतिक मासिक पत्रिका), जयपुर
4. हाड़ौती वाणी (साहित्यिक मासिकी)–श्री भारतेन्दु समिति, कोटा
5. चिदम्बरा (त्रैमासिक पत्रिका)–श्री भारतेन्दु समिति, कोटा
6. साकेत (वार्षिक पत्रिका)–राजकीय महाविद्यालय, रामगंजमण्डी, कोटा सत्र 2000–2001
7. हाड़ौतिका (त्रैमासिक पत्रिका), कोटा
8. मरु गुलशन (त्रैमासिक लघु पत्रिका)–सं. अनिल अनवर–सर्जनात्मक संतुष्टि संस्थान, जोधपुर
9. अभिव्यक्ति–संपादक : महेन्द्र नेह (प्रताप नगर दादाबाड़ी, कोटा)

◆◆◆◆